Springboard ACADEMY

RAS FOUNDATION

राजस्थान का भूगोल

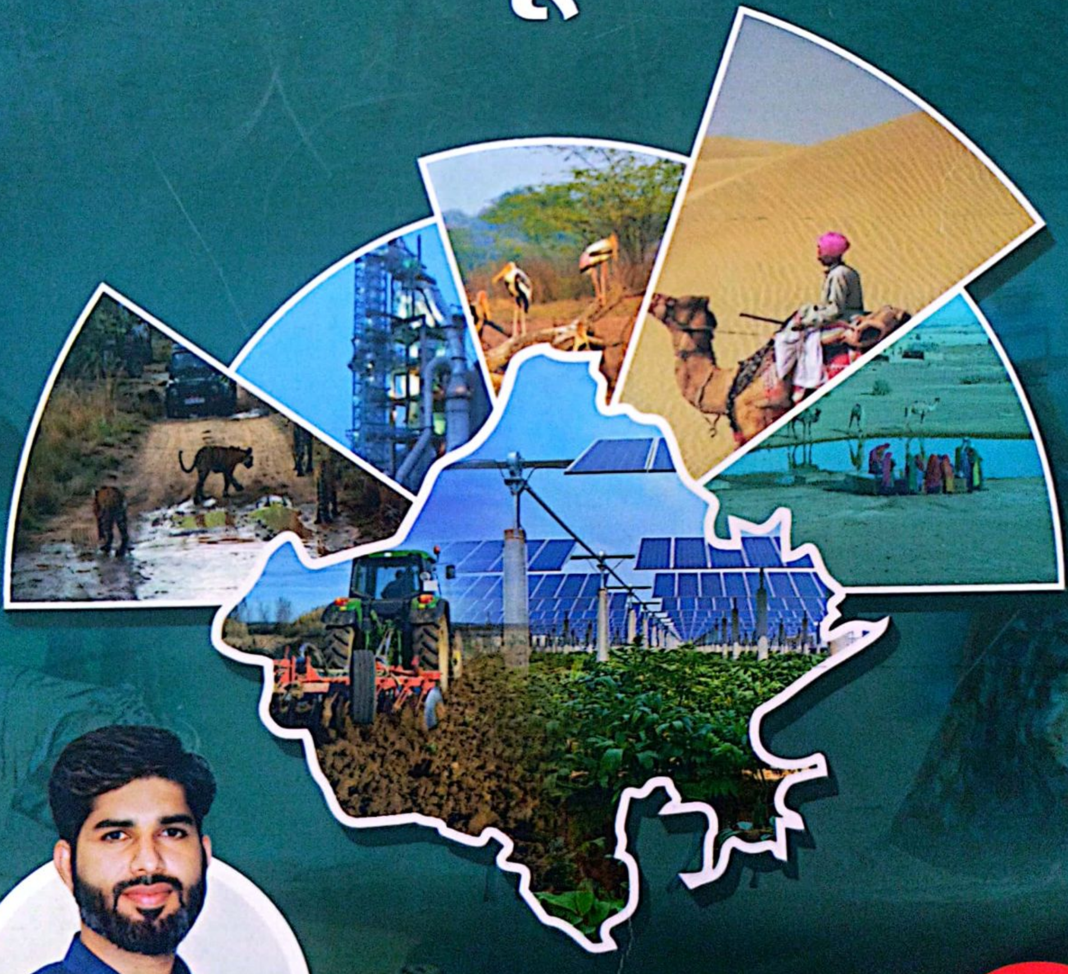

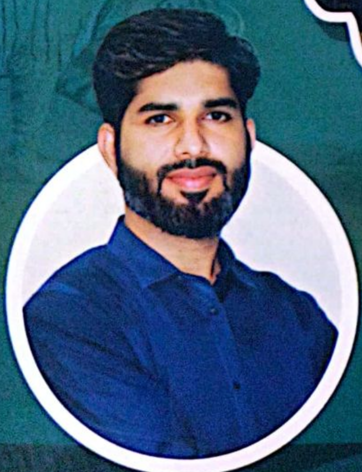

Vijay Sihag
Springboard Academy

New Edition 2024

CamScanner

MAHECHA
PUBLICATION

Springboard ACADEMY

राजस्थान का भूगोल

RAS FOUNDATION

CLASS NOTES

Available @ JAIPUR • JODHPUR
www.thenoteshub.com

The Notes Hub

Contact Now : **7610010054, 7300134518**

All Right Reserved with the **MAHECHA PUBLICATION**

CamScanner

राजस्थान भूगोल

TABLE OF CONTENTS

Page No.

CHAPTER-1 राजस्थान की उत्पत्ति .... [2-3]

CHAPTER-2 राजस्थान की स्थिति एवं विस्तार .... [4-13]

CHAPTER-3 भौतिक प्रदेश .... [14-49]

CHAPTER-4 जलवायु .... [50-65]

CHAPTER-5 अपवाह तंत्र और नदियाँ .... [66-90]

CHAPTER-6 झीलें .... [91-108]

CHAPTER-7 सिंचाई परियोजना .... [109-128]

CHAPTER-8 मिट्टी .... [129-139]

CHAPTER-9 खनिज - धात्विक व अधात्विक .... [140-164]

CHAPTER-10 वनस्पति .... [165-180]

CHAPTER-11 राज्य में जैव विविधता एवं वन्यजीव संरक्षण .... [181-192]

CHAPTER-12 कृषि .... [193-205]

CHAPTER-13 उद्योग .... [206-226]

CHAPTER-14 ऊर्जा संसाधन .... [227-252]

CHAPTER-15 जनसंख्या .... [253-264]

CHAPTER-16 पर्यटन-परिपथ / सर्किट एवं स्थल .... [265-276]

CHAPTER-17 यूनेस्को - भू- पार्क / Geo-Park, विश्व विरासत स्थल .... [277-281]

CHAPTER-18 जल संरक्षण तकनीक .... [282-289]

CHAPTER-19 पशुपालन .... [290-302]

CamScanner

राजस्थान भूगोल

✱ भौतिक भूगोल-
- ✔ राजस्थान की उत्पत्ति
- ✔ राजस्थान की स्थिति एवं विस्तार
- ✔ भौतिक प्रदेश
- ✔ जलवायु

✱ जलीय भूगोल-
- ✔ अपवाह तंत्र और नदियाँ
- ✔ झीलें
- ✔ सिंचाई परियोजना
- ✔ जल संरक्षण तकनीक

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

✱ संसाधन भूगोल
- ✔ मिट्टी
- ✔ वनस्पति
- ✔ वन्यजीव एवं संरक्षण
- ✔ खनिज - धात्विक व अधात्विक

✱ आर्थिक भूगोल
- ✔ कृषि / पशुपालन
- ✔ उद्योग
- ✔ ऊर्जा → परम्परागत / गैर परम्परागत - नवीकरणीय / अनवीकरणीय
- ✔ जनसंख्या
- ✔ पर्यटन

18. यूनेस्को - भू-पार्क / Geo-Park, विश्व विरासत स्थल।

1. राजस्थान की उत्पत्ति

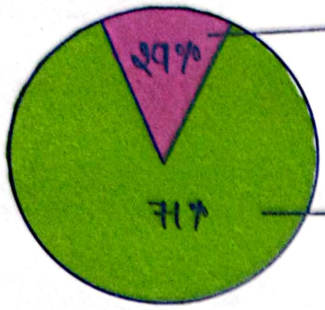

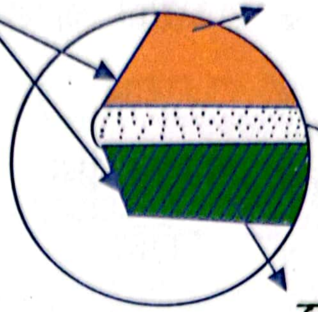

1. पेंजिया- अलफ्रेड वैगनर के अनुसार– सभी महाद्वीपों या सभी महाद्वीपों को संयुक्त रूप से पेंजिया कहा जाता है।

- वर्तमान में पेंजिया दो भागों में विभाजित है-

(i) अंगारालैण्ड / लौरेंशिया–
- पेंजिया का उत्तरी भाग
- महाद्वीप – • उत्तरी अमेरिका
  • यूरोप
  • उत्तरी एशिया

(ii) गोंडवाना लैण्ड–
- पेंजिया का दक्षिणी भाग
- महाद्वीप – • दक्षिण अमेरिका
  • अफ्रीका
  • द. एशिया
  • ऑस्ट्रेलिया
  • अन्टार्कटिका

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books 7300134518, 7610010054

CamScanner

२. पैंथालासा- "अलफ्रेड वैगनर" के अनुसार- सभी महासागरों को पैंथालासा कहा जाता है।

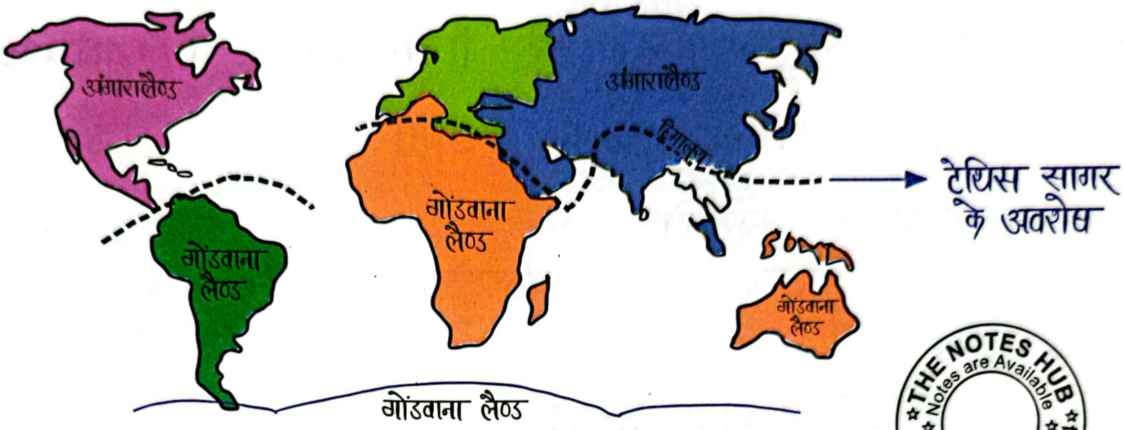

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- पैंथालासा का मूलभाग प्रशांत महासागर (46%) है।

3. टेथिस सागर-
   - यह एक भूसन्नति है जो अंगारा लैण्ड व गोंडवाना लैण्ड के मध्य स्थित है।

- हिमालय पर्वत माला, उत्तरी विशाल मैदान तथा थार मरुस्थल टेथिस सागर से बने हैं।

राजस्थान का निर्माण-

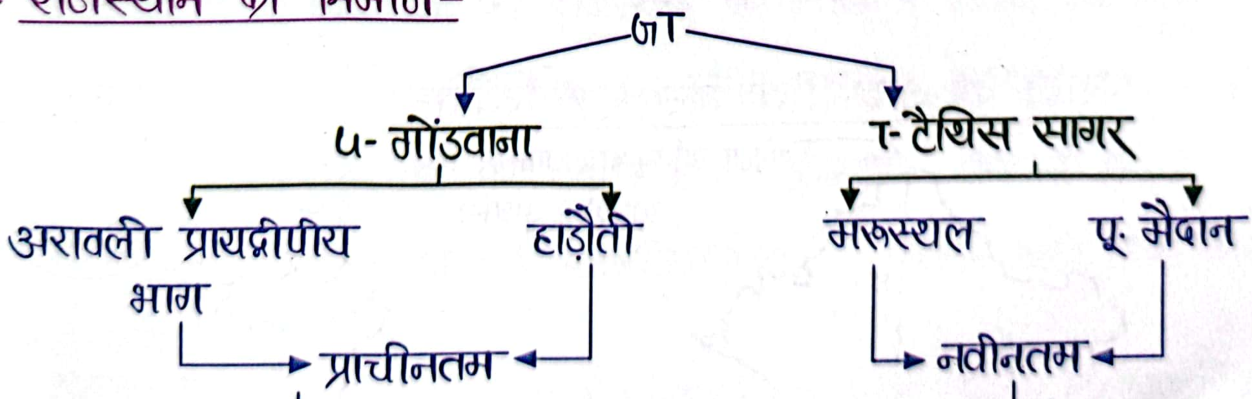

- भारत के प्रायद्वीपीय पठार का हिस्सा।
- भारत के उत्तरी विशाल मैदान का हिस्सा।

राजस्थान की स्थिति एवं विस्तार

- स्थिति → अक्षांश एवं देशान्तर (Latitude & Longitude)
- विस्तार → क्षेत्रफल, आकृति, सीमा

राजस्थान की स्थिति

अक्षांश | देशान्तर

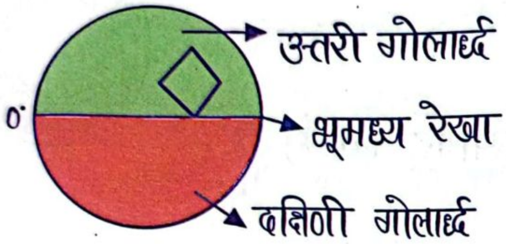

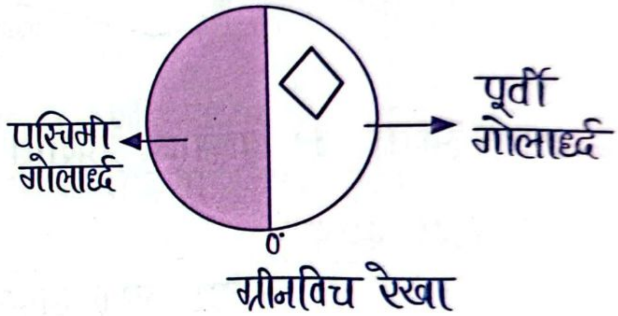

- अक्षांश व देशान्तर के अनुसार राज. की स्थिति → उत्तरी-पूर्वी
- भारत के अनुसार राज. की स्थिति → उत्तरी-पश्चिमी
- एशिया महाद्वीप के अनुसार राज. की स्थिति → द. प. एशिया

1. राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार / स्थिति-

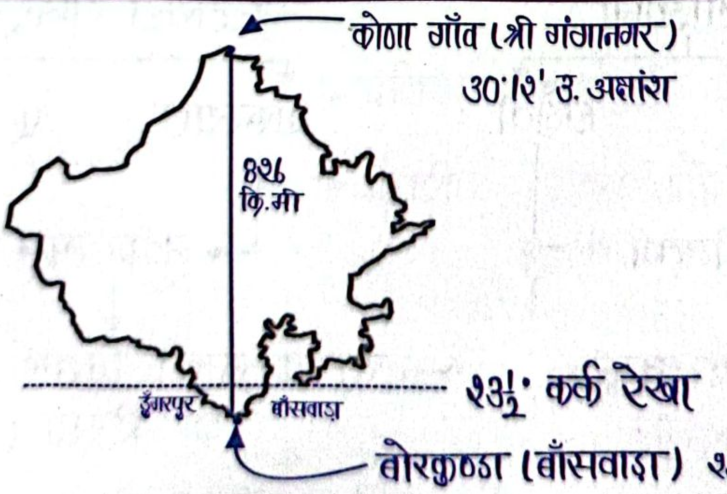

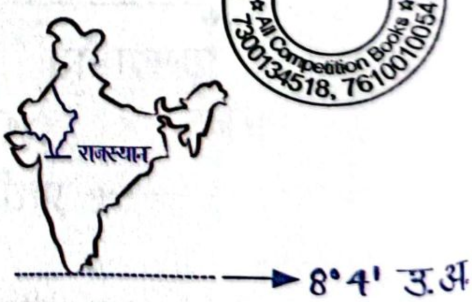

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

अक्षांश =	२३° 03' उ. अ.	→	30° १२' उ. अ.
स्थान =	बोरकुण्डा	→	कोणा गांव
जिला =	बाँसवाड़ा	→	श्री गंगानगर
दूरी =	८२६ कि.मी		उत्तर से दक्षिण

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

NOTE – अक्षांशों में राजस्थान का विस्तार– 7°9' (दूरी को बताने के लिए दिशा use होती है)

- २३ १/२° / २३°30' उत्तरी अक्षांश ⇒ कर्क रेखा
  उत्तरी अयनांत

२३१/२° कर्क रेखा

२१ June ← (SUN

दिन = 13 घंटे २७ मिनट

उत्तरी गोलार्द्ध का सबसे बड़ा दिन = २१ जून (बाँसवाड़ा मे सीधी किरणे

कर्क रेखा की राजस्थान में लम्बाई = २६ Km (बाँसवाड़ा में २४ Km)

कर्क रेखा के निकटतम स्थित शहर = कुशलगढ़ (बाँसवाड़ा)

राजस्थान में कर्क रेखा = डूँगरपुर, बाँसवाड़ा

२१ जून को कर्क सक्रांति कहते है, सबसे छोटी रात एवं सबसे बड़ा दिन।

2015 से २१ जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाता है।

अक्षांश रेखाओं को जलवायु रेखाएँ कहा जाता है।

- अक्षांश के बीच के भाग को कटिबंधीय कहते है
- राज. मे २१७ शहर - २०11 की जनसंख्या
- City के लिए 5000 से ज्यादा जनसंख्या
- जनघनत्व = 400/Km²
- Civic Bodies
- २०२४ - वसुधैव कुटुम्बकम् थीम
- Metrocity - 10 लाख से ज्यादा जनसंख्या

२. राजस्थान की देशान्तरीय स्थिति-

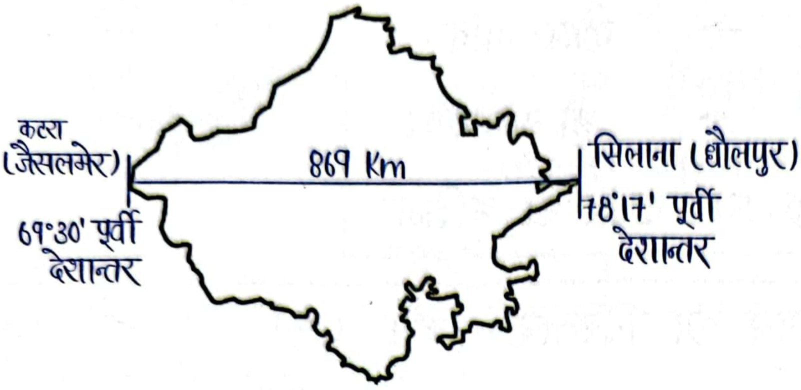

देशान्तर →	69°30' — 78°17'
स्थान →	कटरा — सिलाना
जिला →	जैसलमेर — धौलपुर
दुरी →	पश्चिम 869 Km पूर्व

> NOTE- • राजस्थान का देशान्तरीय विस्तार = 8°47'
>
> • मध्य गाँव = लाम्पोलाई (नागौर)
>
> • सेटेलाइट सर्वे के अनुसार मध्य गाँव = गगराना (नागौर)

→ देशान्तर रेखाओं को समय एवं तिथि रेखा कहा जाता है।

1° देशान्तर = 4 मिनट
1' देशान्तर = 4 sec.

→ राजस्थान पूर्व (धौलपुर) से पश्चिम (जैसलमेर) के मध्य समय का अन्तराल 35 मिनट 8 sec. है। (सूर्योदय में समय अन्तराल)

→ राजस्थान का विस्तार → क्षेत्रफल, आकार, सीमा

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

→ क्षेत्रफल → Area

वि. मी.	Mile²
3,42,239 km²	1,32,139 Mile²

> NOTE- देश के कुल क्षेत्रफल में राजस्थान का योगदान = 10.41 %
> (यह अस्तित्व 01 नवम्बर 1956 (एकीकरण) से बरकरार है)

- क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान सबसे बड़ा राज्य है।
- 01 नवम्बर 2000 के M.P के विघटन के बाद क्षेत्रफल में सबसे बड़ा राज्य बना।
- पुराना डाटा = राजस्थान में क्षेत्रफल की दृष्टि से

बड़े जिले — JBBJ: जैसलमेर (38401 Km²), बीकानेर, बाड़मेर, जोधपुर

छोटे जिले — DDDP: धौलपुर (3034 Km²), दौसा (3435), डूँगरपुर, प्रतापगढ़

- विश्व के कुल क्षेत्रफल में राजस्थान का योगदान = 0.25%
  भारत का (2.4%)
- वह देश जो राजस्थान के क्षेत्रफल के लगभग बराबर है-
  - F → फिनलैण्ड
  - G → जर्मनी
  - P → पौलेण्ड, जापान, नार्वे

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- राजस्थान - • ब्रिटेन का दो गुणा,
  - • श्रीलंका का 5 गुणा
  - • इजराइल से 17 गुणा बड़ा है।

2. आकृति- राजस्थान की आकृति 'विषमकोणीय चतुर्भुज' है।
   - → T.H हैण्डले के अनुसार
   - → पतंगाकार
   - → Rhombus Shape

CamScanner

प्रमुख जिलों की आकृति–

- हनुमानगढ़ – कुर्सीनुमा आकृति
- दौसा – धनुषाकार आकृति
- चित्तौड़गढ़ – घोड़े की नाल जैसी आकृति

3. सीमाएँ-

अन्तर्राष्ट्रीय 1070 Km + अन्तर्राज्यीय 4850 Km = **5920** (राजस्थान की कुल सीमा)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

अन्तर्राष्ट्रीय सीमाएँ-

- सर सिरिल रेडक्लिफ रेखा
  - ↓ निर्धारण = 17 Aug 1947
- राजस्थान में (स्थान) = हिन्दुमलकोट (श्री गंगानगर) से शुरू होकर बाखासर / शाहगढ़ (बाड़मेर) तक जाती है।
- राजस्थान की कुल सीमा में अन्तर्राष्ट्रीय सीमा का योगदान = 18 % (1070 कि.मी.)

पाकिस्तान
- पंजाब
  - बहावलनगर
  - बहावलपुर
  - रहीमयार खानपुर
- सिन्ध
  - घोटकी
  - सुक्कुर
  - खैरपुर
  - संघर
  - उमरकोट
  - थारपारकर

CamScanner

NOTE –
- अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर निकटतम जिला मुख्यालय = श्री गंगानगर
- अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर सर्वाधिक दूरी पर स्थित मुख्यालय = बीकानेर
- अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से सर्वाधिक दूरी पर स्थित जिला मुख्यालय = धौलपुर

अंतरराज्यीय सीमा-

- लम्बाई = 4850 कि.मी = 5 राज्य
- सबसे बड़ी सीमा (राज. के साथ) =

मध्यप्रदेश	>	हरियाणा	>	गुजरात	>	उत्तरप्रदेश	>	पंजाब
1600 Km		1262 Km		1022 Km		877 Km		89 Km

पड़ौसी राज्य	राजस्थान के जिले
1. पंजाब	श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़.
2. हरियाणा	हनुमानगढ़, चुरू, झुन्झुनू, नीम का थाना, खैरथल तिजारा, कोटपुतली-बहरोड़, अलवर, डीग। (अलवर) NOTE - सीकर, जयपुर, भरतपुर वर्तमान में हरियाणा सीमा पर स्थित नहीं है।
3. उत्तरप्रदेश	डीग, भरतपुर, धौलपुर
4. मध्यप्रदेश	• डांग क्षेत्र = धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर • हाड़ौती = कोटा, बारां, झालावाड़ • द. राज. = चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, भीलवाड़ा
5. गुजरात	अरावली के पश्चिम → बाड़मेर, सांचौर, सिरोही अरावली के पूर्व → उदयपुर, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा.

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

NOTE- 1. नीम का थाना → सीकर से अलग होकर नया जिला बना
2. खैरथल तिजारा → अलवर से अलग होकर नया जिला बना
3. बहरोड़ व कोटपुतली → जयपुर से अलग

अन्तरराज्यीय सीमा की विशेषताएँ-

1. राजस्थान के वो जिले जो दो राज्यों के साथ सीमा बनाते है

4 जिले -
- हनुमानगढ़ = पंजाब, हरियाणा
- डीग = HR, UP
- धौलपुर = UP, MP
- बाँसवाड़ा = M.P, गुजरात

2. कोटा व चित्तौड़गढ़ राजस्थान के वह जिले है जो M.P के साथ दो बार सीमा बनाते हैं।

3. कोटा राजस्थान का वह जिला है जो एक राज्य के साथ दो बार सीमा बनाता है किन्तु विखण्डित नहीं है।

4. चित्तौड़ राजस्थान का वह जिला है जो एक राज्य के साथ दो बार सीमा बनाता है किन्तु विखण्डित है।

5. भीलवाड़ा → चितौड़गढ़ को दो भागों में बाँटता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

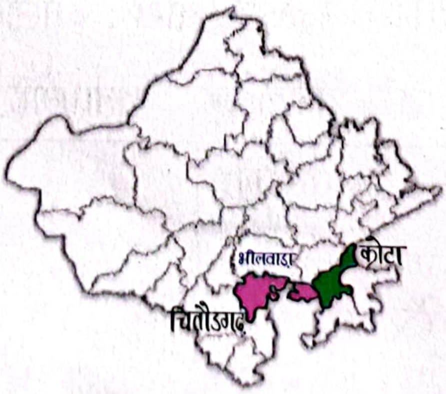

CamScanner

6.) अन्तरराज्यीय सीमा पर
- सबसे बड़ी सीमा - झालावाड़
- सबसे छोटी सीमा - बाड़मेर

7.) राजस्थान के सीमावर्ती जिले = 29
- 6 अन्तर्राष्ट्रीय → केवल अन्तर्राष्ट्रीय = 4
- 25 अन्तर्राज्यीय → केवल अन्तर्राज्यीय = 23

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

NOTE- श्रीगंगानगर, बाड़मेर वे जिले हैं जो दोनों सीमाओं पर स्थित है।

8.) वह जिला जो सर्वाधिक जिलों के साथ सीमा बनाते है - जयपुर ग्रामीण ← 11 जिलों के साथ

9.) वह जिले जो सबसे कम जिलों के साथ सीमा बनाते है -
1. जयपुर सिटी
2. जोधपुर सिटी
(दोनों 1-1 जिले के साथ)

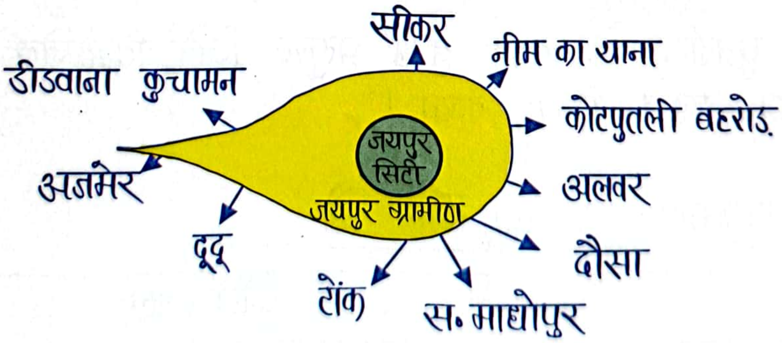

10.) सीमावर्ती विवाद = मानगढ़ पहाड़ी (बाँसवाड़ा)
↳ राजस्थान व गुजरात के मध्य
↳ यह स्थल मानगढ़ हत्याकाण्ड (17 NOV. 1913) के लिए प्रसिद्ध है

CamScanner

२०२२-२३ की बजट घोषणा एवं जिला पुनर्गठन :-

- मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के कार्यकाल में वर्ष २०२२-२३ की बजट घोषणा के अन्तर्गत, २१ मार्च २०२२ को एक उच्च स्तरीय जिला पुनर्गठन समिति बनाई गई, जिसकी अध्यक्षता श्री रामलुभाया (सेवानिवृत IAS) ने की।

- 17 मार्च, २०23 को बजट २०23-२४ के अन्तर्गत 19 नए जिलों और 3 नए संभाग बनाने की घोषणा की गई।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- नए जिलों एवं सम्भाग की –
  - अधिसूचना → 5 अगस्त, २०23
  - प्रकाशित → 6 अगस्त, २०23
  - लागू → 7 अगस्त, २०23

- CM गहलोत द्वारा विधिवत रूप से 19 जिलों की स्थापना की गई तथा तीन नये सम्भागों का गठन किया। जिससे राजस्थान में कुल 10 सम्भाग व 50 जिले हो गए है।

- उस नवीनतम पुनर्गठन के तहत कुछ प्रमुख जिले विभाजित कर नए जिलों का गठन किया गया।

वर्तमान में 10 सम्भाग तथा 50 जिले है-

सम्भाग (10)	जिले (50)
1. बीकानेर	बीकानेर, श्री गंगानगर, हनुमानगढ़, अनूपगढ़ (New)
2. सीकर (New)	सीकर, चुरु, झुंझुनूं, नीम का थाना (New)
3. जोधपुर	जोधपुर सिटी, जोधपुर ग्रामीण, फलौदी (New), बाड़मेर, बालोतरा (New), जैसलमेर।

CamScanner

५. अजमेर	अजमेर, ब्यावर (New), केकड़ी (New), नागौर, डीडवाना-कुचामन (New), टोंक, शाहपुरा (New)
5. जयपुर	जयपुर सिटि, जयपुर ग्रामीण, दूदू, कोटपुतली-बहरोड़ (New)
6. भरतपुर	भरतपुर, करौली, धौलपुर, सवाई-माधोपुर, डीग (New) गंगापुर सिटि (New)
7. पाली (New)	पाली, जालौर, सांचौर (New), सिरोही
8. उदयपुर	उदयपुर, चित्तौड़, राजसमंद, भीलवाड़ा (पहले अजमेर में) सलूम्बर (New)
9. कोटा (New)	कोटा, बूँदी, बारां, झालावाड़
10. बांसवाड़ा (60% से अधिक जनजाति निवास करती है।)	बांसवाड़ा, डूँगरपुर, प्रतापगढ़

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

NOTE- 1. अधिकतम जिलों वाले संम्भाग

→ जयपुर (7 जिले)

→ अजमेर (7 जिले)

२. न्यूनतम जिलों वाला सम्भाग - बांसवाड़ा (3 जिले)

CamScanner

३. भौतिक प्रदेश

- भौतिक प्रदेश का वर्गीकरण-
  1. व्यक्तिगत आधार पर
  2. भौगोलिक कारकों के आधार पर

1. व्यक्तिगत आधार पर वर्गीकरण-

प्रो. वी. सी मिश्रा के अनुसार राजस्थान सात भौतिक प्रदेशों में बंटा हुआ है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

1. नहरी प्रदेश
2. शुष्क प्रदेश
3. अर्द्धशुष्क प्रदेश
4. अरावली प्रदेश
5. पूर्वी कृषि एवं औद्योगिक प्रदेश
6. चम्बल एवं बीहड़ प्रदेश
7. द. पूर्वी कृषि प्रदेश

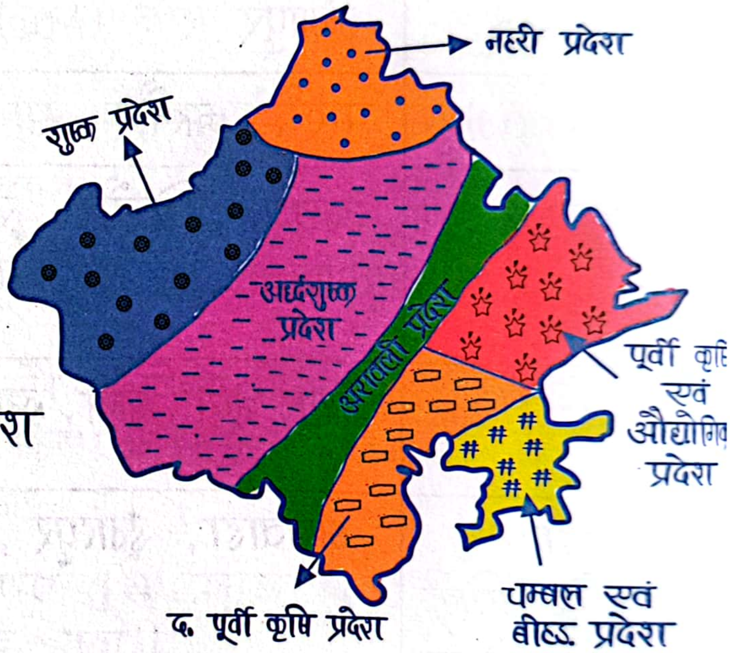

२. भौगोलिक कारकों के आधार पर वर्गीकरण-

- भौगोलिक कारकों (उच्चावच एवं जलवायु) के आधार पर राजस्थान को चार भौगोलिक प्रदेशों में बांटा जा सकता है-

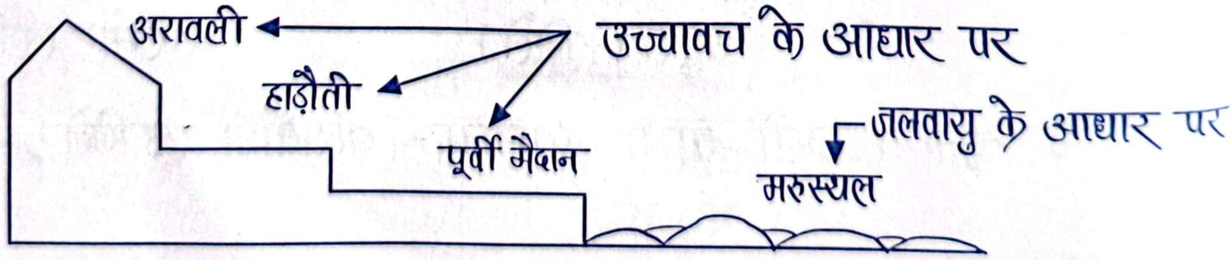

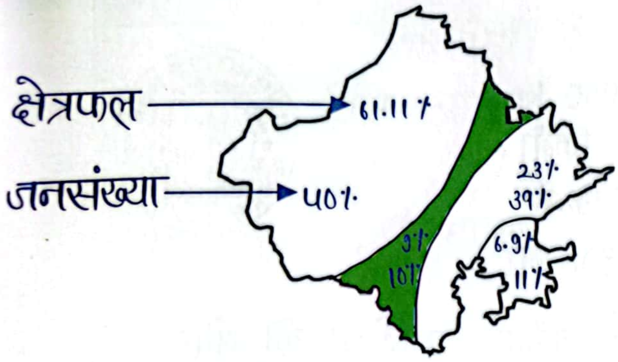

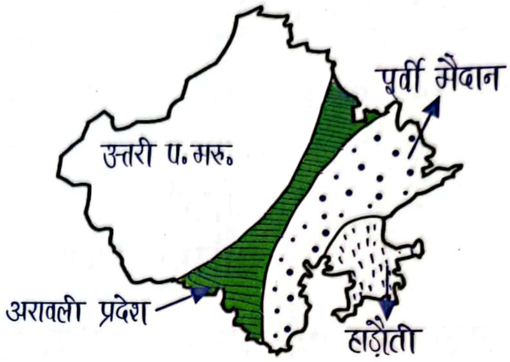

भौतिक प्रदेशों की सामान्य जानकारी-

	मरुस्थल	अरावली	पूर्वी मैदान	हाड़ौती
क्षे.	61.11 %	9 %	23 %	6.89 %
जनसंख्या	40 %	10 %	39 %	11 %
जिले	12 जिले	13 जिले मुख्यतः 7	10 जिले	7 जिले
मिट्टी	रेतीली/ बलुई मिट्टी	पर्वतीय/ वनीय मिट्टी	जलोढ़/ कछारी मिट्टी	काली मिट्टी
जलवायु	शुष्क व अर्द्धशुष्क जलवायु	उपार्द्र जलवायु	आर्द्र जलवायु	अति आर्द्र जलवायु

1. उत्तरी पश्चिमी मरुस्थल-

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- इसे 'थार मरुस्थल' भी कहा जाता है।
- निर्माण - टेथिस सागर से
- काल - टर्शियरी काल व प्लीसटोसीन काल

NOTE - वर्तमान काल = हेलोसिन

मरुस्थल का विस्तार→

- क्षे० = 1,75000 Km²
- ल० = 640 किमी
- चौड़ाई = 300 किमी
- औसत ऊँचाई = 200-300 मी.

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books 7300134518, 7610010054

मरुस्थल का ढाल→ उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर

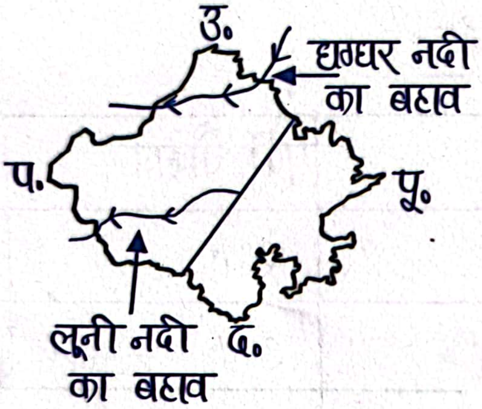

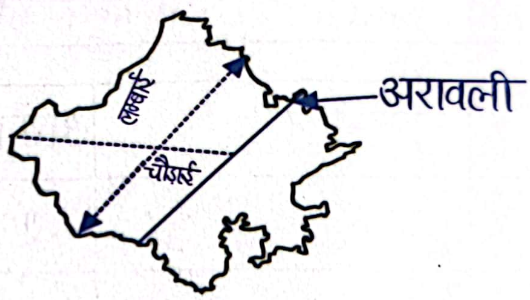

मरुस्थल का अध्ययन- अध्ययन की दृष्टि से मरुस्थल को दो भागों में बाँटा गया है-

शुष्क मरुस्थल	अर्द्धशुष्क मरुस्थल
वर्षा = 0-25 सेमी	वर्षा - 25-50 सेमी
क्षेत्रफल = 1 लाख	क्षेत्रफल - 75000

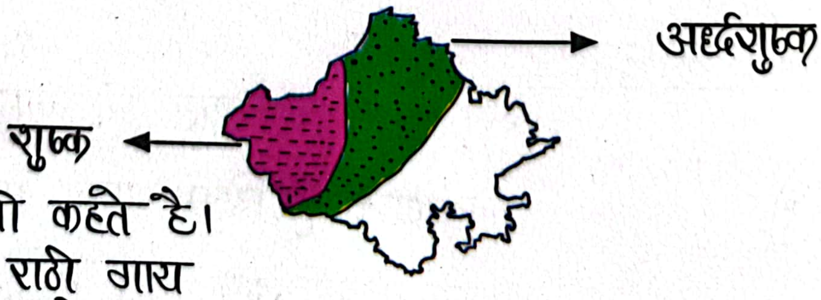

राठी प्रदेश भी कहते है। क्योंकि यहाँ राठी गाय पायी जाती है।

शुष्क मरुस्थल-

२५ सेमी से कम वर्षा वाले क्षेत्र को शुष्क मरु. कहा जाता है जिसे अध्ययन की दृष्टि से पुनः दो भागों में बाँटा जाता है-

1. बालुका स्तूप मुक्त प्रदेश = 41.5%
२. बालुका स्तूप युक्त प्रदेश = 58.5%

1. बालुका स्तूप मुक्त प्रदेश-

ऐसा क्षेत्र जहाँ बालुका स्तूप नहीं पाए जाते है क्योंकि यहाँ पथरीला मरुस्थल पाया जाता है जिसे 'हमादा' कहते है।

➤ राजस्थान में मुख्यतः 'हमादा' का विस्तार-

- जैसलमेर (अधिक) → पोकरण, रामगढ़, लोद्रवा
- जोधपुर → फलौदी
- बाड़मेर

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

२. बालुका स्तूप युक्त प्रदेश-

अर्थ → पवन + मिट्टी + निक्षेपण = बालुका स्तूप

➤ जब पवन के द्वारा मिट्टी का निक्षेपण (जमाव) किया जाता है तो निर्मित स्थलाकृति को बालुका स्तूप कहते हैं।

➤ राजस्थान में सर्वाधिक बालुका स्तूप = जैसलमेर

तथा सभी प्रकार के बालुका स्तूप = जोधपुर

बालूका स्तूप के प्रकार-

1. बरखान
2. अनुप्रस्थ बालुका स्तूप
3. अनुदैर्ध्य बालुका स्तूप
4. पैराबोलिक/ परवलयिक बालुका स्तूप
5. सीफ
6. तारानुमा बालुका स्तूप
7. श्रब कापीस बालुका स्तूप
8. नेटवर्क बालुका स्तूप
9.

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition
7300134518, 7610...

1. बरखान-

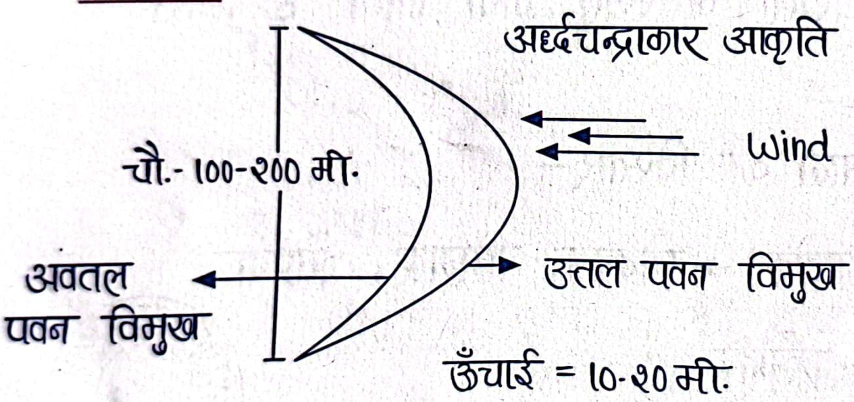

- जब पवन के द्वारा मिट्टी का निक्षेपण अर्द्धचन्द्राकार आकृति में होता है तो निर्मित स्थलाकृति को 'बरखान' कहते है।
- बरखान सर्वाधिक - शेखावाटी क्षेत्र में (चुरू के भालेरी गाँव में)
- विशेषताएँ-

  1. बरखान सर्वाधिक गतिशील व स्थानान्तरित बालूका स्तूप है इस कारण मरुस्थलीकरण में इनका योगदान अधिक है।

2. अनुप्रस्थ बालुका स्तूप-

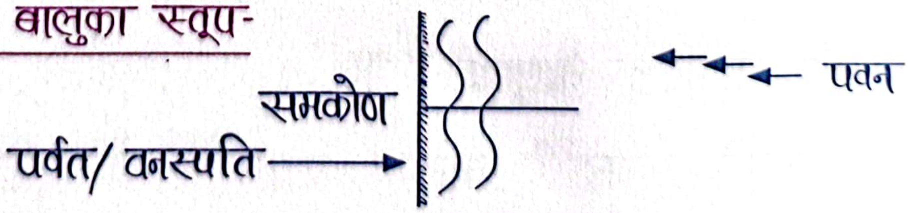

MAHECHA PUBLICATION

- जब पवन द्वारा मिट्टी का निक्षेपण समकोण पर होता है, तो निर्मित स्थलाकृति 'अनुप्रस्थ बालुका स्तूप' कहलाती है।
  - सर्वाधिक = बीकानेर में पाये जाते है।
  - विशेषता = सर्वाधिक स्थिर बालुका स्तूप

3. अनुदैर्ध्य / रेखीय बालुका स्तूप-

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

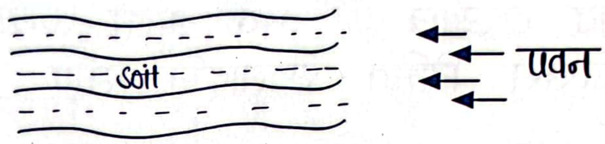

समानान्तर

- जब मिट्टी का निक्षेपण पवन की दिशा के समानान्तर होता है तो निर्मित स्थलाकृति को 'अनुदैर्ध्य / रेखीय बालुका स्तूप' कहते है।
  - सर्वाधिक = जैसलमेर में

NOTE यह बालुका स्तूप लूनी, जवाई, एवं घग्घर बेसिन के पास भी पाए जाते है।

4. पैराबोलिक / परवलयिक बालुका स्तूप-

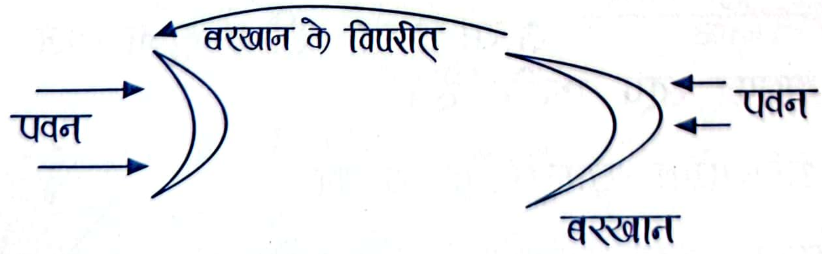

- पैराबोलिक बालुका स्तूप बरखान के विपरीत तथा Hairpin आकृति में बनते है।
- पैराबोलिक बालुका स्तूप राजस्थान में सर्वाधिक पाए जाते है क्योंकि इनका विस्तार सभी मरुस्थलीय जिलों में है।

CamScanner

5. सीफ बालुका स्तूप-

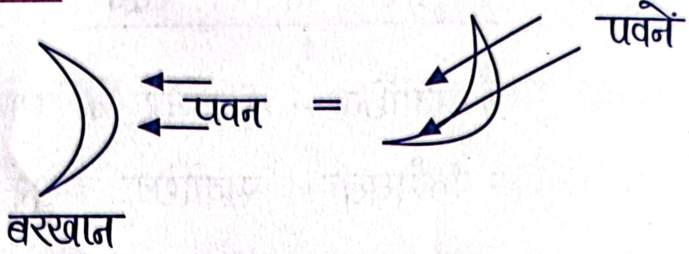

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- जब बरखान के निर्माण के समय में पवन की दिशा में परिवर्तन होता है तब बरखान की एक भुजा आगे की ओर बढ़ जाती है जिससे निर्मित स्थलाकृति सीफ बालुका स्तूप कहलाता है।

RAS Pre.

समकोणीय बालुका स्तूप	समानान्तरीय बालुका स्तूप
अनुप्रस्थ बालुका स्तूप	अनुदैर्ध्य बालुका स्तूप
बरखान बालुका स्तूप	सीफ बालुका स्तूप
पैराबोलिक बालुका स्तूप	

6. तारानुमा बालुका स्तूप –

3 या 3 से अधिक भुजा वाले स्थलाकृति तारानुमा बालुका स्तूप कहते है।

- निर्माण- अनियमित हवाओं के कारण
- यह बालुका स्तूप सर्वाधिक = जैसलमेर
  सूरतगढ़ (श्री गंगानगर)
  बीकानेर

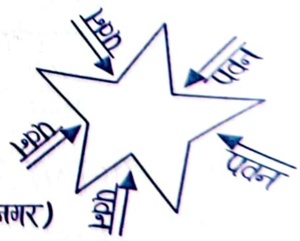

7. शब कापीस-

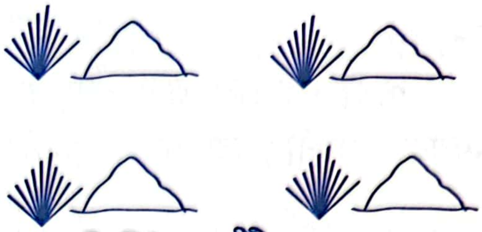

- मरुस्थल में झाड़ियों के पास निर्मित छोटे बालुका स्तूप को शब कापीस बालुका स्तूप कहते हैं।
- यह बालुका स्तूप सर्वाधिक - जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर, जोधपुर

NOTE- इन बालुका स्तूपों को 'नेबखा' भी कहा जाता है।

8. नेटवर्क बालुका स्तूप- एक-दूसरे से जुड़े हुए बालुका स्तूपों को नेटवर्क बालुका स्तूप कहा जाता है।

- यह सर्वाधिक- जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

अर्द्धशुष्क मरुस्थल / बांगड़ प्रदेश

- शुष्क मरुस्थल (25 cm) व अरावली क्षेत्र (50 cm) के मध्य स्थित भू-भाग को अर्द्धशुष्क मरुस्थल / बांगड़ प्रदेश कहा जाता है।

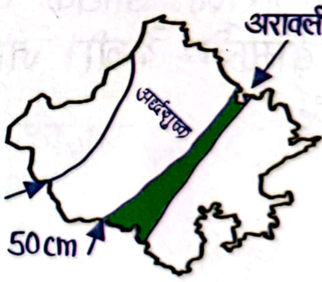

- अर्द्धशुष्क मरुस्थल का अध्ययन-

अध्ययन की दृष्टि से अर्द्धशुष्क मरुस्थल को पुनः चार भागों मे बाँटा जाता है।

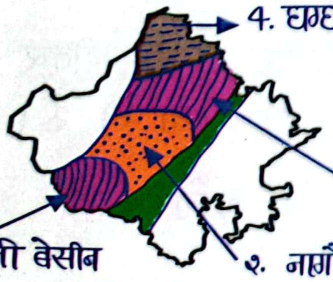

1. लूनी बेसिन-

लूनी बेसीन को गोड़वाड़ बेसिन भी कहा जाता है, जिसका विस्तार पाली, बाड़मेर, जालौर और जोधपुर में है।

➤ विशेषता-

(i) नेहड़ रन ➝ • यह लूनी बेसिन में जालौर जिलें में स्थित है।
• इस बेसिन में लवणीय पादप पाए जाते है।
• लवणीय पादप बालोतरा (बाड़मेर) में पाए जाते है

2. नागौरी उच्च भूमि-

नागौरी उच्च भूमि का विस्तार नागौर, डीडवाना, कुचामन एवं आंशिक रूप से अजमेर में स्थित है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

➤ विशेषता-

(i) कूबड़/ बांका पट्टी-

यह नागौर व अजमेर के मध्य स्थित है जहाँ फ्लोराइड अधिक पाया जाता है जिस कारण से यहाँ 'फ्लोरोसिस बीमारी देखी जाती है।

फ्लोरोसिस → हड्डियों का कमजोर व टेढ़ा होना और गर्दन के पास हड्डी का कूबड़ जैसा होना

(ii) लवणीय या खारे पानी की झीलें- इस क्षेत्र में अधिक पाई जाती है।

3. शेखावाटी अंतः प्रवाह क्षेत्र- इस क्षेत्र का विस्तार चुरू, सीकर, झुन्झुनू एवं नीम का थाना में है।

* विशेषताएँ - (i) जोहड़- शेखावाटी क्षेत्र में पानी के कच्चे कुओं को जोहड़ कहते हैं।

(ii) तोरावाटी- काँतली नदी के अपवाह क्षेत्र को 'तोरावाटी' कहा जाता है। जिसका विस्तार सीकर, झुन्झुनू एवं नीम का थाना में है।

(iii) सर- शेखावाटी में मानसून में बनने वाले तालाब को सर कहा जाता है।

(iv) बीड़- शेखावाटी क्षेत्र में चारागाह भूमियों को बीड़ कहा जाता है।

4. घग्घर बेसिन-

→ यह बेसीन गंगानगर, हनुमानगढ़ व अनूपगढ़ में स्थित है।

NOTE- घग्घर ज्यादा प्रवाह होने पर पाक के फोर्ट अब्बास तक जाती है।

विशेषताएँ-

(i) नाली / पाट- हनुमानगढ़ में घग्घर नदी को नाली / पाट कहते है।

(ii) काठी / बग्गी- घग्घर बेसिन की चिकनी एवं उपजाऊ मिट्टी को काठी / बग्गी कहा जाता है।

प्रमुख उत्पादित फसलें- गेहूँ, चावल, कपास, गन्ना।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

→ प्रश्न- शुष्क व अर्द्धशुष्क प्रदेश में अन्तर बताइए।

मरुस्थल के अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु-

(i)

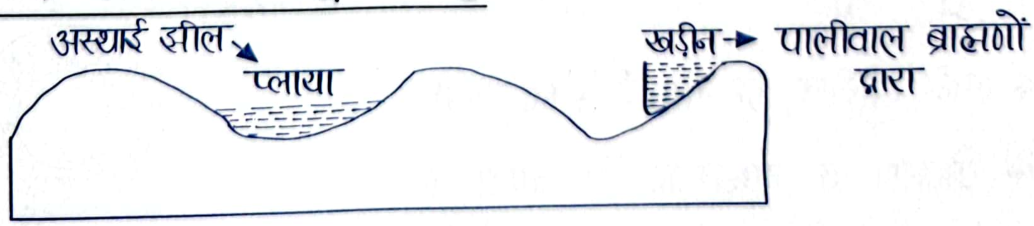

- मरूस्थल में अस्थाई पानी की झीलों को 'प्लाया' कहा जाता है।
- प. राजस्थान (जैसलमेर) में पालीवाल ब्राह्मणों द्वारा निर्मित झीलें को खड़ीन कहा जाता है।
- प्लाया व खड़ीन झीलें सर्वाधिक = जैसलमेर

(ii) रन / टाट / ढ़ाढ.—

मरूस्थल में लवणीय, दलदलीय एवं अनउपजाऊ भूमि व झीलों को रन / टाट / ढ़ाढ. कहते है।

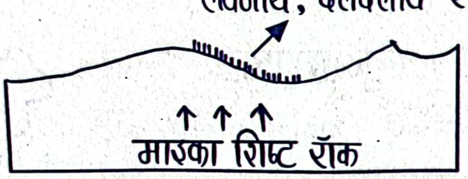

राज. में सर्वाधिक रन — जैसलमेर, बाड़मेर

NOTE ► राजस्थान के प्रमुख रन—

1. चुरू – तालछापर, पडिहारा
2. फलौदी – बाप, फलौदी
3. जैसलमेर – भाकरी, पोकरण
4. बाड़मेर – थोब

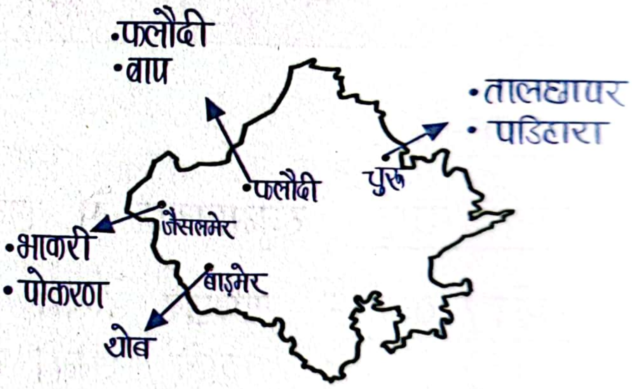

3. जल पट्टी या लाठी सीरीज-

- सरस्वती नदी के भूगर्भिक जलीय अवशेष को जल पट्टी या लाठी सीरीज कहते है।
- लाठी सीरीज की लम्बाई = 60 किमी
- पोकरण व मोहनगढ़ के मध्य स्थित

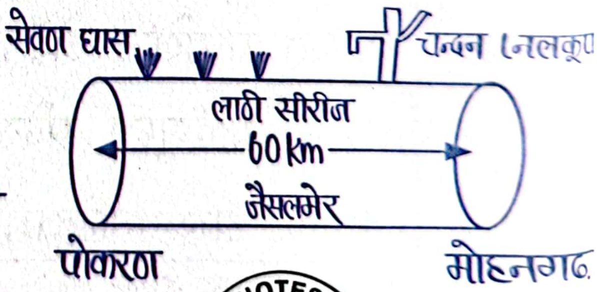

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- उस क्षेत्र में सेवण घास अधिक पायी जाती है जिसे गोडावण की शरणस्थली कहा जाता है।

- NOTE – राजस्थान की दूसरी जल पट्टी = बायतू (बाड़मेर) से सांचौर (जालौर)

(4) आकल वुड फॉसिल पार्क-

- स्थिति – राष्ट्रीय मरू उद्यान (जैसलमेर)
- जीवाश्म का निर्माण काल → जुरासिक काल (18 करोड़ / 180 मिलियन वर्ष पूर्व)
- लकड़ी के ये जीवाश्म भारत या राजस्थान के प्राचीनतम है।

(5) बाप-बोल्डर क्ले-

हिमनद/हिमानी के द्वारा जमा किये गये बड़े कंकड-पत्थर (Boulder) तथा बारीक अवसाद को 'बोल्डर क्ले' कहा जाता है।

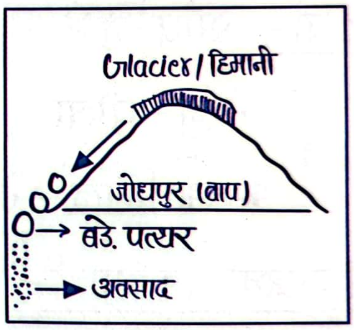

- निर्माण काल – पर्मो कार्बोनीफेरस काल
- स्थिति – फलौदी (जोधपुर)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

6. नखलिस्तान/ मरु उद्यान-

- मरुस्थल में जहाँ जल बेसिन पाए जाते है वहाँ वनस्पति उत्पन्न हो जाती है, इसे नखलिस्तान या मरु उद्यान कहते है।

- उदाहरण- कोलायत झील – बीकानेर
  गजनेर
  गड़ीसर (जैसलमेर)

(7) बालसन-

मरूस्थल में पहाड़ियों द्वारा घिरे हुए या मध्य के भाग को बालसन कहते है।

- उदाहरण - सांभर झील

(8) धोरे / धरियन-

- लहरदार बालुका स्तूप को धोरे कहते है।
- स्थानान्तरित व गतिशील बालुका स्तूप को धरियन कहते है।
- सर्वाधिक जैसलमेर में पाये जाते है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(9) पीवणा- साँप की एक प्रजाति (सर्वाधिक विषैला)

- रंग- पीला
- सर्वाधिक - जैसलमेर में।

(10) मरूस्थल का मार्च-

- मरूस्थल का स्थानांतरण या गतिशील होना मरूस्थल का मार्च कहलाता है।
- दिशा → द. प. से उ. पू. (हरियाणा)

NOTE- मरूस्थल के स्थानान्तरण में सर्वाधिक योगदान बरखान का है।

(11) थार मरूस्थल-

- सम्पूर्ण थार मरूस्थल का क्षे. 238254 Km²

राजस्थान = 62% (1,75000 Km²) ← भारत - 85% | पाक. - 15%

CamScanner

६ भारत में सर्वाधिक थार मरुस्थल वाले राज्य- 1. राजस्थान (६१%)
२. गुजरात
3. हरियाणा
4. पंजाब

१२. मरुस्थल का महत्व-

- पर्यटन
- नवीकरणीय ऊर्जा
- खनिज संसाधन
- परमाणु परीक्षण स्थल
- सैन्य प्रशिक्षण स्थल
- पशु सम्पदा
- जैव विविधता
- नमक उत्पादन

NOTE - बड़े उद्योग - अलवर , सर्वाधिक उद्योग - जयपुर

*** नवीकरणीय ऊर्जा-**

राजस्थान के उत्तरी-पश्चिमी भाग में नवीकरणीय ऊर्जा की सम्भावना सर्वाधिक है।
जैसे- सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा

*** खनिज-**

राजस्थान के उत्तरी-पश्चिमी भाग में जीवाश्म खनिज / ऊर्जा खनिज अधिक पाए जाते है।

जैसे- पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस, कोयला।
2023
सर्वाधिक उत्पादन - बाड़मेर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

*** परमाणु परीक्षण स्थल-** पोकरण को भारत की परमाणु परीक्षण स्थली कहा जाता है।

*** सैन्य प्रशिक्षण स्थल-** (i) चाँदन फील्ड फायरिंग रेंज (जैसलमेर)
(ii) महाजन फील्ड फायरिंग रेंज (बीकानेर)

CamScanner

* **पशु सम्पदा-** राज. के मरुस्थलीय क्षेत्र में पशुधन अधिक पाया जाता है।
प्रमुख जिले- बाड़मेर, जोधपुर

* **नमक सम्पदा-** मरुस्थल में नमक अधिक उत्पादित होता है क्योंकि यहाँ खारे पानी की झीलें अधिक पायी जाती है।

Ex. साम्भर, पचपदरा (सर्वाधिक गुणवत्ता वाला नमक) डीडवाना।

* **पर्यटन-** पश्चिमी राजस्थान की संस्कृति पर्यटन को आकर्षित करती है

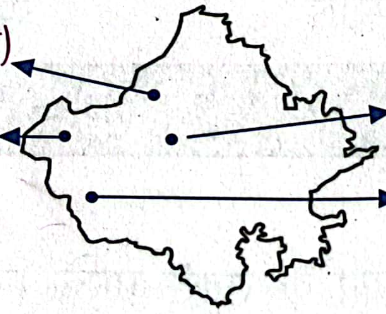

* **जैव विविधता-**
विश्व के अन्य मरुस्थलों की तुलना में थार मरुस्थल में अधिक जैव विविधता पाई जाती है।

* **खाद्यान्न उत्पादन-**
राजस्थान के उत्तरी-पश्चिमी भाग में मोटा अनाज अधिक उत्पादित होता है। Ex. बाजरा

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

अरावली पर्वत

- अरावली एक प्राचीनतम (निर्माण काल), वलित अवशिष्ट पर्वतमाला है।
- निर्माणकाल - प्राचीनतम - प्री कैम्ब्रियन काल
- निर्माण प्रक्रिया - वलित, वर्तमान स्थिति = अवशिष्ट

- कुल लम्बाई - 690 Km → राजस्थान में लम्बाई = 550 किमी. (80% हिस्सा)
- औसत ऊँचाई = 930 मीटर

*** अरावली की दिशा-**

- द. पूर्व से उत्तर पूर्व की ओर

*** अरावली का पिता-** अरब सागर

- क्योंकि अरावली की उत्पत्ति अरब सागर से होती है।

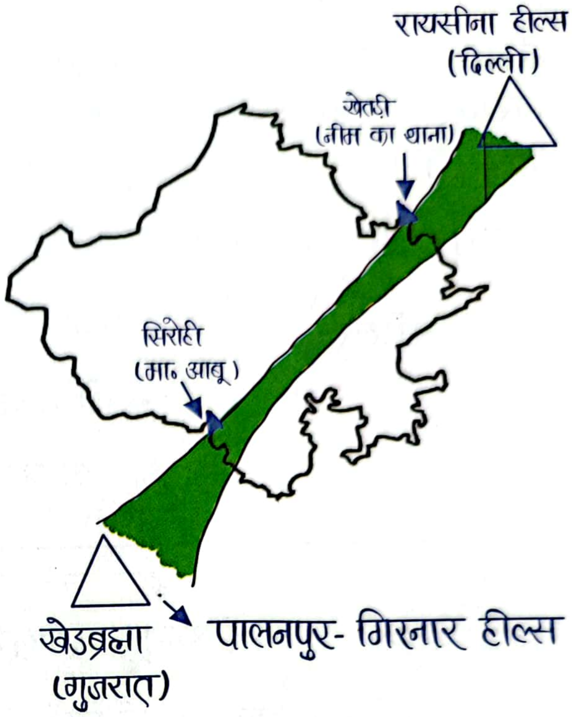

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

*** अरावली का अध्ययन-** अध्ययन की दृष्टि से अरावली को तीन भागों में बाँटा जाता है

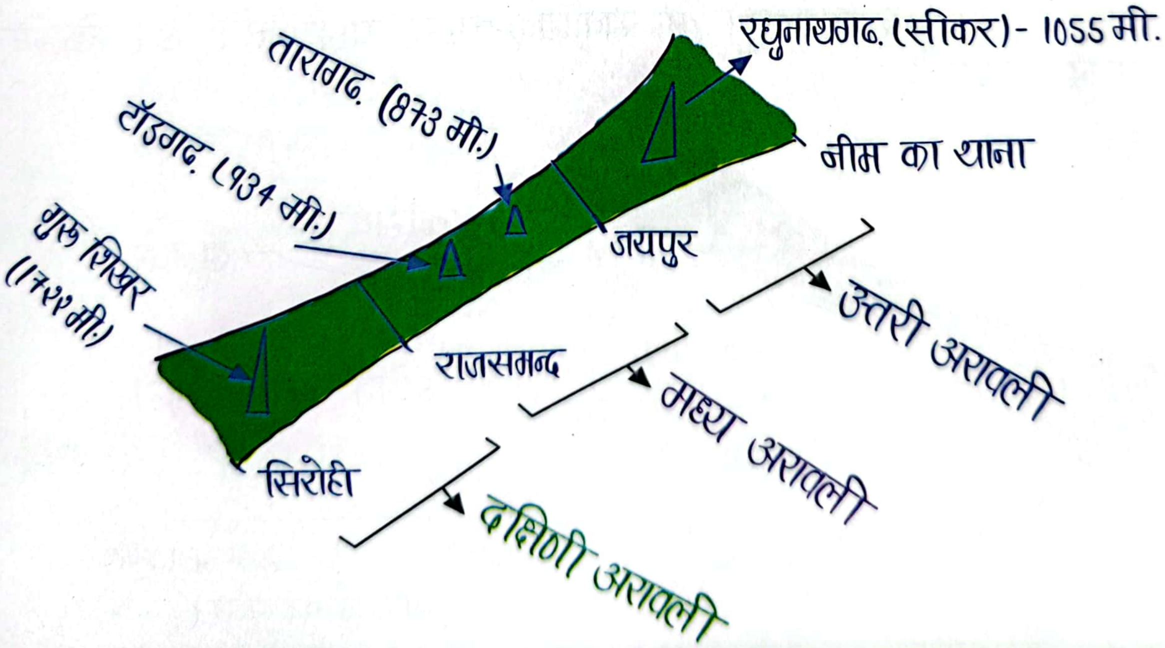

1. उत्तरी अरावली
- नीम का थाना व जयपुर के मध्य विस्तृत।
- सर्वोच्च चोटी - रघुनाथगढ़ (1055 मी.) → सीकर

2. मध्य अरावली
- जयपुर व राजसमन्द के मध्य विस्तृत।
- इसे मेरवाड़ा अरावली भी कहते है।
- सर्वाधिक विस्तार - अजमेर
- सर्वोच्च चोटी - • टोडगढ़ - 934 m (ब्यावर)
  - • तारागढ़ - 873 m (अजमेर)
  - • नाग - 795 m (अजमेर)

3. दक्षिणी अरावली
- राजसमन्द व सिरोही के मध्य विस्तृत।
- सर्वोच्च चोटी - गुरुशिख
- द. अरावली को पुनः दो भागों में बांटा गया है।

4. आबू अरावली
- विस्तार - सिरोही, पाली
- सर्वोच्च चोटी - गुरू शिखर

5. मेवाड़ अरावली
- विस्तार - उदयपुर, राजसमन्द
- सर्वोच्च चोटी - जरगा (1431) (उदयपुर)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* अरावली के पठार -

द. अरावली में सर्वाधिक पठार पाए जाते है। जिसमे प्रमुख पठार निम्न है -

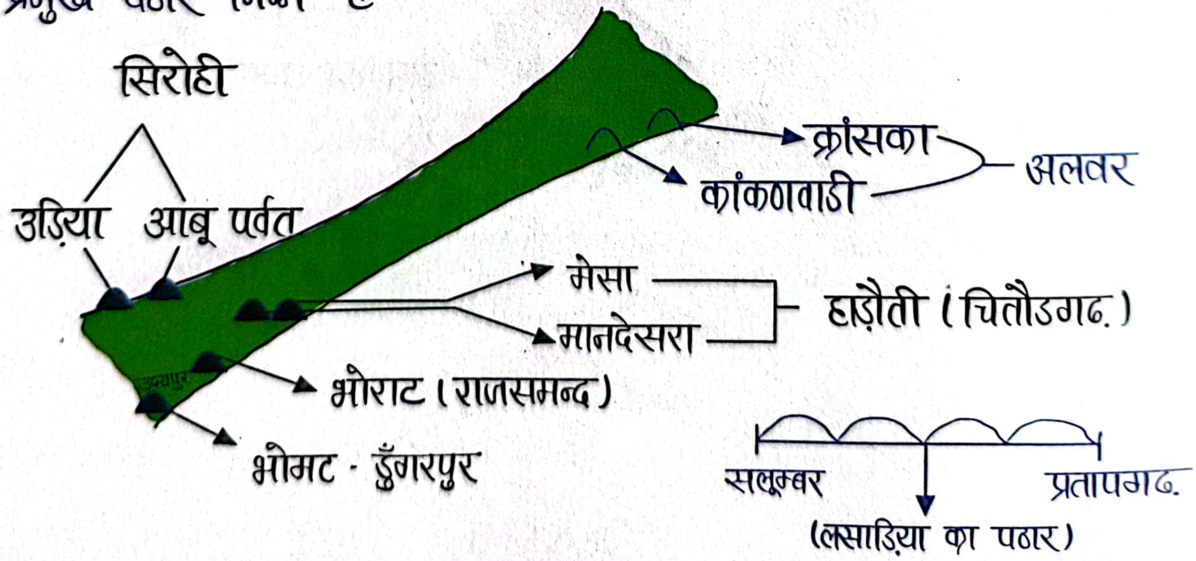

CamScanner

NOTE-सर्वाधिक वन = उदयपुर

1. उड़िया पठार- • यह दक्षिणी अरावली में सिरोही में स्थित है।
• उड़िया राजस्थान का सबसे ऊँचा पठार है।
• ऊँचाई - 1360 मी.

2. आबू पर्वत- • आबू पर्वत एक पठार है जो द. अरावली में सिरोही में स्थित है।
• यह सिरोही का दूसरा ऊँचा पठार है।
• ऊँचाई - 1200 मी.

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

→ आबू पठार गुम्बदाकार (बैथोलिथ संरचना) आकृति का उदाहरण है।

3. भोराट का पठार-
यह एक पठार है जो कुंभलगढ़ हिल्स (राजसंमद) व गोगुंदा हिल्स (उदयपुर) के मध्य स्थित है।

→ राजसमन्द का दूसरा ऊँचा पठार - भोराट (1225 मी.)

NOTE- जरगा पहाड़ी भोराट पठारीय क्षेत्र में स्थित है। जो मेवाड़ अरावली की सबसे ऊँची चोटी है।

4. भोमट पठार- • यह एक पहाड़ी एवं पठारी क्षेत्र है जिसका विस्तार उदयपुर एवं मुख्यतः डूँगरपुर में है।
• इस क्षेत्र में भील जनजाति सर्वाधिक पाई जाती है।

5. लसाड़िया का पठार- यह दक्षिणी अरावली में जयसंमद झील के पूर्व में स्थित है।
• वर्तमान स्थिति → सलूम्बर से प्रतापगढ़ (नये जिलों के अनुसार)
• पहले → उदयपुर से चितौड़

NOTE - लसाड़िया का पठार एक उत्खात (Bad Land) पठार है।

6. **क्रांसका एवं कांकणवाड़ी पठार-** यह पठार उत्तरी अरावली में अलवर सरिस्का में स्थित है।

* अरावली के दर्रे या नाल- (50 words Answer)

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

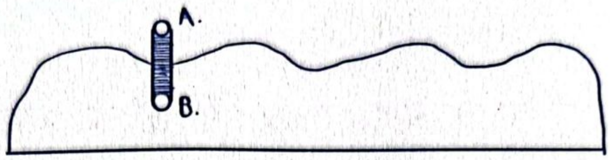

- पर्वतों के मध्य नीचा एवं तंग रास्ता जो पर्वतों के दोनों ओर के रास्तों को जोड़ता है, दर्रा या नाल कहलाता है।
- सर्वाधिक दर्रे- दक्षिणी अरावली में (राजसमंद)

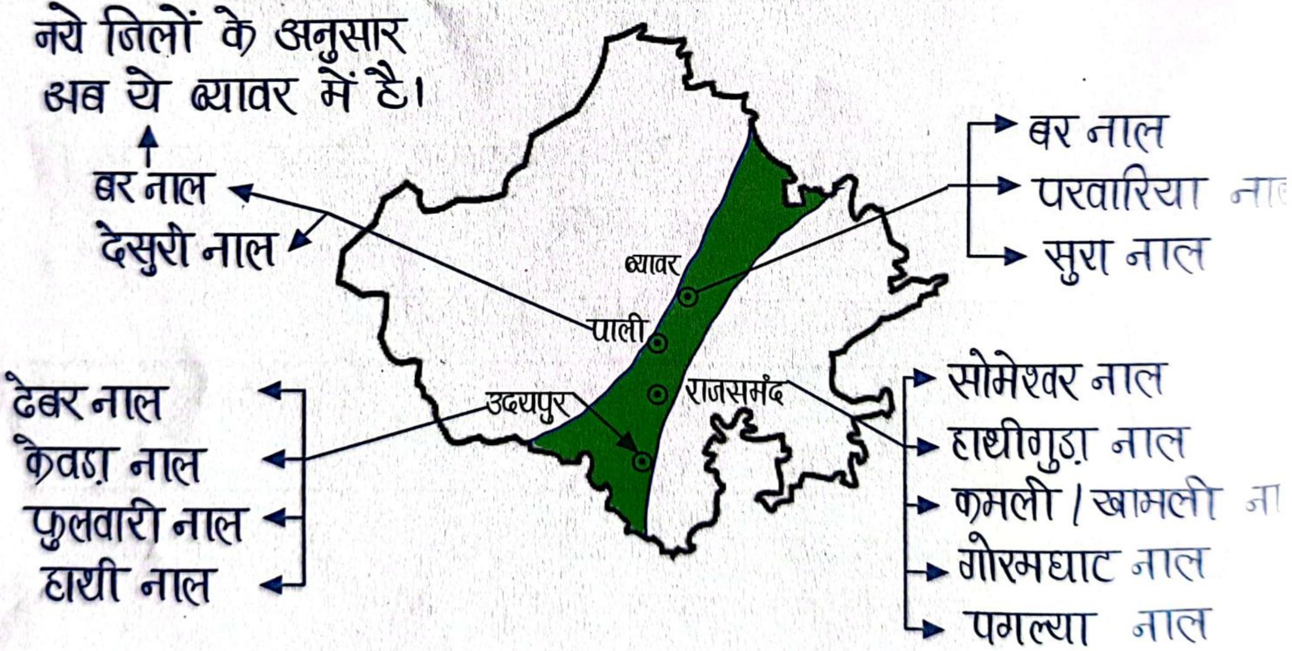

1. देबर नाल-

- यह नाल दक्षिणी अरावली में सलूम्बर में स्थित है।
- जयसमन्द झील इसी नाल में गोमती नदी पर स्थित है इस कारण जयसमन्द झील को देबर झील भी कहा जाता है।

NOTE – जयसमन्द झील → सबसे बड़ी कृत्रिम मीठे पानी की झील।

2. फुलवारी नाल-

यह दक्षिणी अरावली में उदयपुर में स्थित है।

- सोम, मानसी, वाकल नदियाँ इस नाल से बहती है।

3. हाथीगुड़ा नाल-

यह दक्षिणी अरावली में राजसमन्द में स्थित है।

- यह नाल राजसमन्द, गोगुन्दा (उदयपुर) तथा सिरोही को जोड़ती है।

4. पगल्या नाल-

- यह दक्षिणी अरावली में राजसमन्द में स्थित है।
- यह मेवाड़ (राजसमन्द) को मारवाड़ (पाली) से जोड़ती है।

5. देसुरी नाल-

यह दक्षिणी अरावली में पाली में स्थित है जो पाली को चारभुजा नाथ मन्दिर (राजसमन्द) से जोड़ती है।

6. बर नाल-

यह मध्य अरावली में ब्यावर जिले में स्थित है।

- यह मारवाड़ (जोधपुर, पाली) को मेरवाड़ा (ब्यावर व अजमेर) से जोड़ती है।

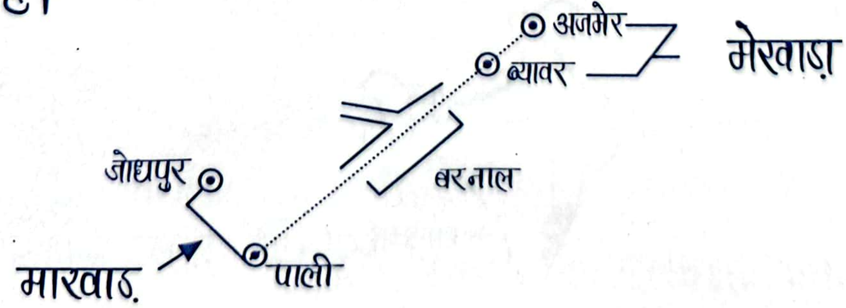

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

* अरावली की चट्टानें-

- राजस्थान की अरावली की भू- आकृतिक संरचना का अध्ययन-
- ए. एम. हैरोन के अनुसार- अरावली का निर्माण दिल्ली महासमूह चट्टानों से हुआ है।
- जिसमें शामिल समूह- • अजबगढ़ समूह
  - • अलवर समूह
  - • रायलो समूह

अरावली का महत्व- (50 words)

1. मरुस्थलीकरण- अरावली एक अवरोधक के रूप में मरुस्थलीकरण को रोकती है।

2. जैव विविधता- अरावली में जैव विविधता अधिक पाई जाती है क्योंकि यहाँ वनस्पति विस्तार अधिक है।

3. जनजातीय संरक्षण- राजस्थान की अधिकांश जनजातियाँ अरावली में पाई जाती है इस कारण अरावली को जनजातियों की शरणस्थली कहा जाता है।

   प्रमुख जनजातियाँ- मीणा (जयपुर)
   भील (उदयपुर)
   गरासिया (सिरोही)

4. खनिज- अरावली क्षेत्र में धात्विक खनिज अधिक पाए जाते है क्योंकि अरावली का निर्माण धारवाड़ चट्टानों से हुआ है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(v) अपवाह तंत्र एवं नदियाँ-

राजस्थान की अधिकांश नदियों का उद्गम अरावली से होता है।

(vi) जल विभाजक रेखा-

अरावली को राजस्थान की जल विभाजक रेखा कहा जाता है क्योंकि यह राजस्थान के अपवाह तंत्र को दो भागों में बाँटती है।

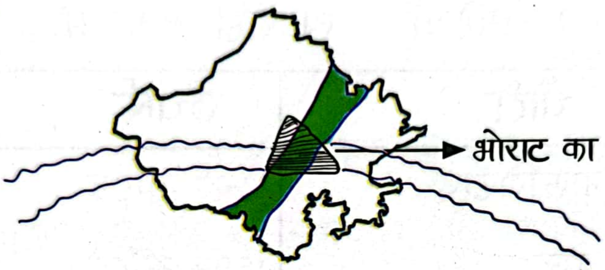

(vii) राजस्थान की अधिकांश झीलें (मीठे पानी) अरावली क्षेत्र (उदयपुर) में पायी जाती है।

(viii) पर्यटन→ अरावली पर्यटन को आकर्षित करती है, क्योंकि प्रसिद्ध धार्मिक स्थल (अजमेर-पुष्कर) तथा हिल स्टेशन (माउन्ट आबू) अरावली में स्थित है

(IX) सभ्यता→ अरावली को प्राचीन सभ्यता (आहड़, गिलुण्ड, बैराठ, गणेश्वर) एवं नवीन नगरीय सभ्यताओं (जयपुर, अजमेर, उदयपुर) की जन्म स्थली कहा जाता है।

(X) योजना प्रदेश→

अरावली पर्वत माला को राजस्थान का योजना प्रदेश कहा जाता है। क्योंकि अरावली प्रदेश में सरकार की अनेक योजनाएँ व बजट लागू होती हैं। जैसे- सभ्यता का संरक्षण, पर्यटन का विकास।

अरावली प्रदेश के अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु- (Pre)

1. पीडमांट-

Piedmont < Pied- Foot, पदीय; Mont- Mountain (पर्वत)

→ पर्वत पदीय क्षेत्रों को पीडमांट कहा जाता है, जैसे- देवगढ़ (राजसमंद)

२. अरावली की सर्वोच्च चोटियाँ- अवरोही क्रम में

Trick	चोटी	ऊँचाई	स्थिति
गुरु	गुरुशिखर	1722 मीटर	सिरोही
से	सेर	1597 मीटर	सिरोही
दिल से	देलवाड़ा	1442 मीटर	सिरोही
जरा	जरगा	1431 मीटर	उदयपुर
आस	अचलगढ़	1380 मीटर	सिरोही
कुंभा	कुंभलगढ़	1224 मीटर	राजसमन्द
रघुनाथ	रघुनाथगढ़	1055 मीटर	सीकर
ऋषि	ऋषिकेश	1017 मीटर	सिरोही
का	कमलनाथ	1001 मीटर	उदयपुर
सज्जन	सज्जनगढ़	938 मीटर	उदयपुर
मोर	मोरमजी (टॉडगढ़)	934 मीटर	ब्यावर
खोह में	खोह	920 मीटर	जयपुर ग्रामीण
सा	सायरा	900 मीटर	उदयपुर

CS CamScanner

त	तारागढ़	873 मीटर	अजमेर
बोली	बिलाली	775 मीटर	अलवर
रोज	रोजा भाकर	730 मीटर	जालौर

NOTE कर्नल जेम्स टॉड ने 'गुरुशिखर' को सन्तों का शिखर कहा था।

* राजस्थान में अरावली-

सर्वाधिक ऊँचाई → सिरोही

सर्वाधिक विस्तार → उदयपुर क्षेत्र

→ अरावली की न्यूनतम ऊँचाई व न्यूनतम विस्तार- अजमेर

* राजस्थान में अरावली की प्रमुख पहाड़ियाँ-

Trick-

(i) भाकर - सिरोही

(ii) पहाड़ी का नाम + भाकर → जालौर

(iii) पहाड़ी का नाम + मगरा → उदयपुर, राजसमन्द

(iv) पहाड़ी का नाम + डूँगर, डूँगरी → जयपुर, कोटपुतली बहरोड़

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

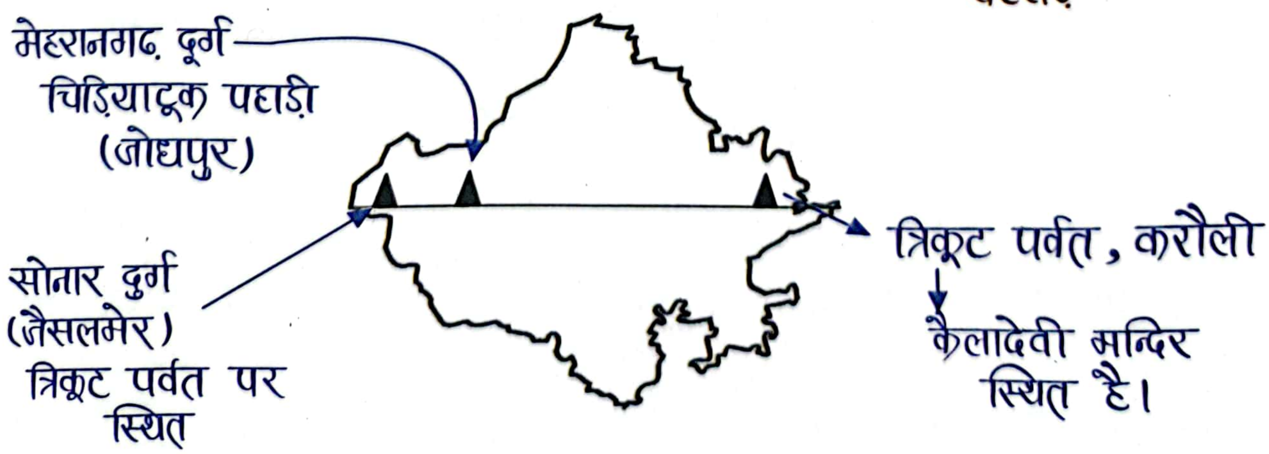

पहाड़ी/ पर्वत	स्थिति
·त्रिकूट पहाड़ी (सोनार दुर्ग)	जैसलमेर
·त्रिकूट पर्वत (कैलादेवी मन्दिर)	करौली
·चिड़ियाटूक (मेहरानगढ़ दुर्ग)	जोधपुर
· रोजा भाकर, ईसराना भाकर, झारोला भाकर	जालौर
· सुंधामाता - 1st Rope Way 2006 में ↳ भालू संरक्षित क्षेत्र	जालौर
· जसवन्तपुरा हिल्स (इसकी सबसे ऊँची चोटी) ↓ डोरा पर्वत - 869 मीटर	जालौर

NOTE- जालौर एवं बाड़मेर की पहाड़ियों में मुख्यतः ग्रेनाइट एवं रायोलाइट चट्टानें पाई जाती है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

सिरोही-

1. **भाकर-** दक्षिणी अरावली में छोटी, तीव्र ढाल एवं उत्खात (Bad band) पहाड़ियों को भाकर कहा जाता है।

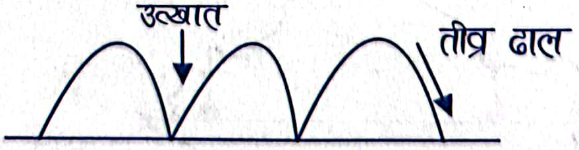

बेल का मगरा- इसमें वॉलेस्टोनाइट खनिज का भंडारण पाया जाता है।

↳ राजसमंद – रेल का मगरा

➥ उदयपुर – 1. हिरण मगरी

2. माछला मगरा → 2nd Rope way - 2008 में

➥ पिछोला झील / दूध तलाई के निकट स्थित है।

➥ मनसा पूर्णा करणी माता मन्दिर

3. मोती मगरी – फतेह सागर झील के निकट

4. जरगा पहाड़ी

5. रागा पहाड़ी

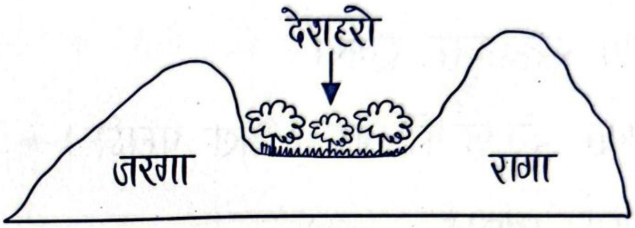

➥ उदयपुर में जरगा व रागा पहाड़ियों के बीच स्थित हरियाली वाला क्षेत्र देशहरो कहलाता है।

6. गोगुन्दा हिल्स– आयड़ व बेड़च नदियों का उद्गम स्थल।

7. बीछामेड़ी हिल्स– सोम नदी का उद्गम

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

*** राजसमन्द–**

(i) बिजराल – खारी
(ii) दिवेर – कोठारी

} बनास की सहायक नदी

(iii) खमनौर हिल्स – बनास नदी का उद्गम

*** पाली–** (i) काला-भूरा डूँगर → लूनी व बेसीन की पूर्वी सीमा पर स्थित है।

*** ब्यावर–** टॉडगढ़ पहाड़ी – 934 मी.

CamScanner

* **अजमेर-**

(i) तारागढ़ पहाड़ी - 873

(ii) नाग पहाड़ी - 795 मी.
- सर्पिलाकार होने के कारण
- लूनी नदी का उद्गम

* **जयपुर-** जयपुर सिटी

(i) मोती डूँगरी - गणेश मन्दिर

(ii) झालाना डूँगरी

(iii) ईगल हिल्स (चील पहाड़ी) → जयगढ़ किला स्थित है।

(iv) बाबाई

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* **कोटपुतली बहरोड़-**

(i) महादेव डूँगरी
(ii) गणेश डूँगरी
(iii) भीम डूँगरी
(iv) बीजक की पहाड़ी

— बैराठ सभ्यता से सम्बन्धित
→ (विराटनगर)

- बैराठ हिल्स - बाणगंगा का उद्गम - कोटपुतली
- सेवर हिल्स - साबी नदी का उद्गम
- मनोहरपुरा हिल्स - मेंथा / मेढा का उद्गम

> जयपुर ग्रामीण

- बरवाड़ा हिल्स - जयपुर ग्रामीण

* **सवाई माधोपुर**

(i) चौथ का बरवाड़ा - चौथ माता का मन्दिर

सीसा - जस्ता के भण्डारण

* झुंझुनू → बबाई हिल्स (नीम का थाना – वर्तमान में)

* सीकर →

(i) मालकेत / मालखेत पहाड़ी

(ii) खंडेला हिल्स – कांतली नदी का उद्‌गम

रोहिला क्षेत्र → यूरेनियम का भण्डारण

(iii) काजल हिल्स – जीणमाता मन्दिर → 6th रोप-वे

(iv) हर्ष पर्वत – हर्षनाथ मन्दिर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* अलवर –

- हर्षनाथ पहाड़ी
- उदयनाथ पहाड़ी – रूपारेल नदी का उद्‌गम
- भैंराच पर्वत
- भानगढ़ हिल्स
- सिरावास हिल्स

* बूँदी

- आड़ावाला / आरावाला पहाड़ी

* भीलवाड़ा –

- बीजासण हिल्स

NOTE - बीजासण माता मन्दिर इन्द्रगढ़ (बूँदी) में है।

राजस्थान की विशेष आकार की पहाड़ियाँ –

(i) 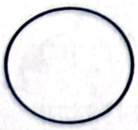 गोलाकार → बाड़मेर

(ii) 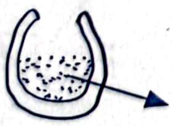 घोड़े की नाल → बाराँ (हाड़ौती)

जल भरा हुआ – रामगढ़ क्रेटर झील

(iii) 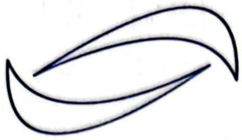 Disc shape (तस्तरीनुमा) – गिरवा पर्वतों की श्रंखला को

(iv) अर्द्धचन्द्राकार – बूँदी हिल्स
मुकुन्दरा हिल्स – कोटा, झालावा

(v) नाग हिल्स - अजमेर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

पूर्वी- मैदानी प्रदेश

- राजस्थान के पूर्वी मैदान का निर्माण नदियों द्वारा जमा किये गये अवसादों से हुआ है।
- निर्माण काल- प्लीस्टोसीन काल में
- पूर्वी मैदान का अध्ययन– अध्ययन की दृष्टि से पूर्वी मैदान को तीन भागों में बांटा जाता है–

1. माही मैदान
2. बनास – बाणगंगा मैदान
3. चम्बल मैदान

1. माही मैदान–

- राजस्थान के दक्षिणी मैदान को माही/ छप्पन/ बागड़ मैदान कहा जाता है।
- विस्तार- बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, प्रतापगढ़ (कांठल मैदान)

NOTE- बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ में माही के मैदान को "छप्पन का मैदान कहा जाता है, क्योंकि यह मैदान 56 गाँवों मे विस्तृत है।

- मिट्टी- माही मैदान में मुख्यतः लाल व चिकनी मिट्टी पायी जाती है।

- कृषि फसलें- • मक्का (बुआई) → माहीकंचन, माहीधवल
  • चावल (माही सुगंधा)
  • गन्ना

2. बनास- बाणगंगा मैदान-

(i) बनास मैदान- अध्ययन की दृष्टि से बनास के मैदान को दो भागों में बाँटा गया है- (A) मेवाड़ मैदान (B) मालपुरा करौली मैदान

(A) मेवाड़ मैदान-

- बनास के दक्षिण मैदान को मेवाड़ मैदान कहते है।
- विस्तार - CUBR (चितौड़गढ़, उदयपुर, भीलवाड़ा, राजसमन्द)

(B) मालपुरा- करौली मैदान-

- बनास के उत्तरी मैदान को।
- विस्तार - ATM (अजमेर, टोंक, सवाई माधोपुर)

- मिट्टी- बनास के मैदान में → भूरी मिट्टी

(ii) बाणगंगा मैदान-

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- बाणगंगा मैदान को रोही का मैदान भी कहते है।
  विस्तार → जयपुर, कोटपुतली बहरोड़, दौसा, भरतपुर
- मिट्टी → मुख्यतः जलोढ़ मिट्टी पाई जाती है।
- विशेषता → बाणगंगा मैदान में जनघनत्व अधिकतम पाया जाता है क्योंकि यहाँ सर्वाधिक उपजाऊ जलोढ़ मृदा पाई जाती

3. चम्बल का मैदान-

- चम्बल के मैदान को "बीहड़/डांग का मैदान" भी कहते है।

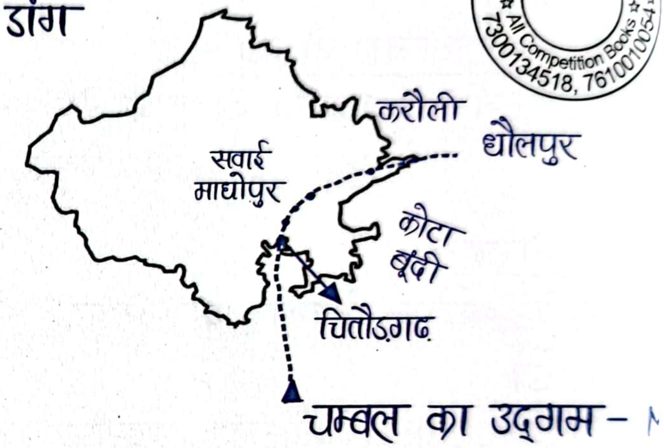

- चम्बल के अवनालिका अपरदन से निर्मित उत्खात स्थलाकृति 'बीहड़' कहलाती है।
- विस्तार- चितौड़गढ़, कोटा, बूँदी, सवाई माधोपुर, करौली, धौलपु
- मिट्टी- काली जलोढ़ मिट्टी पाई जाती है।

Q. पूर्वी मैदान का महत्व- (50 words)

(i) कृषि उत्पादकता-
पूर्वी मैदान में कृषि उत्पादकता अधिक होती है क्योंकि यहाँ सर्वाधिक उपजाऊ मृदा (जलोढ़) पाई जाती है।

(ii) जनघनत्व- अधिक होगा, क्योंकि यह अधिक उपजाऊ मैदान है।

CamScanner

(iii) आधारभूत अवसंरचना-

पूर्वी मैदान में आधारभूत संरचना अधिक विकसित है, जैसे- सड़क, विद्युत, परिवहन व शिक्षा।

(iv) उद्योग-

पूर्वी मैदान में अन्य भौतिक प्रदेशों की तुलना में अधिक विकसित है। जैसे- जयपुर, अलवर।

(v) पक्षी जैवविविधता-

- पूर्वी मैदान में पक्षियों की अधिक प्रजाति पायी जाती है।

Ex. बन्ध बारैठा, केवलादेव

* अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु-

- दिशाओं के अनुसार राजस्थान के मैदानी भाग-

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

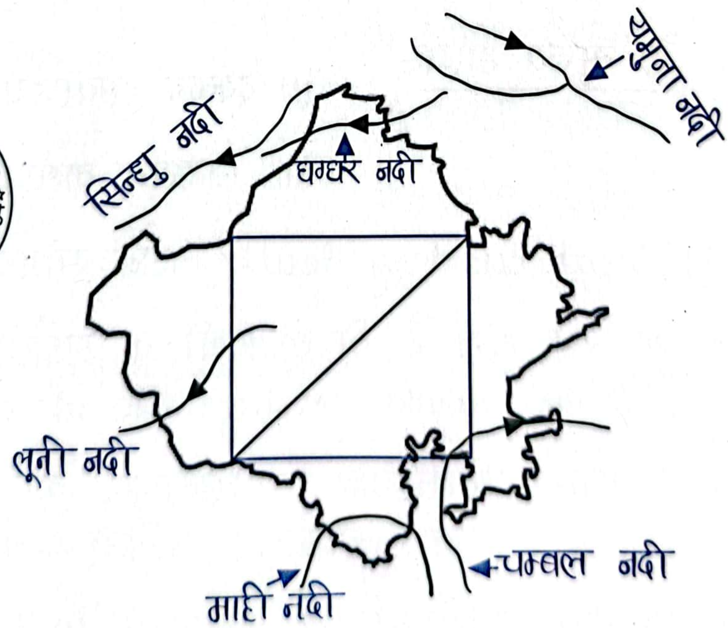

हाड़ौती का पठार / द०-पूर्वी पठार

- निर्माण- इसका निर्माण बेसाल्ट लावा चट्टानों से हुआ है।
- निर्माणकाल- क्रिटेशियस काल
- हाड़ौती की औसत ऊँचाई- 500 मीटर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

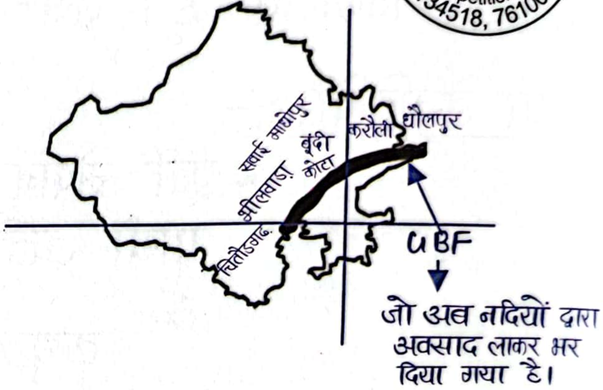

हाड़ौती पठार का अध्ययन-

अध्ययन की दृष्टि से हाड़ौती के पठार को दो मुख्य भागों में तथा तीन गौण भागों में बांट गया है।

हाड़ौती पठार के मुख्य भाग-

(i) दक्कन लावा पठार

(ii) विन्ध्यन कगार

NOTE- GBF [Great Boundary fault / महान सीमान्त भ्रंश]

- यह एक भ्रंश है जो अरावली व हाड़ौती के मध्य स्थित है। यह World Heritage site में शामिल है।
- विस्तार- चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, कोटा, बूंदी, सवाई माधोपुर, करौली, धौलपुर।

- GBF हाड़ौती के उत्तर-पश्चिम एवं अरावली के पूर्व में स्थित है।

CamScanner

(i) दक्कन लावा पठार-

यह हाड़ौती के दक्षिण में स्थित है। जिसका विस्तार-

- मालव प्रदेश
  - (प्रतापगढ़, झालावाड़)
- ऊपरमाल
  - बिजौलिया (भीलवाड़ा)
  - भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़)

(ii) विन्ध्यन कगार- यह हाड़ौती के द०-पूर्व में स्थित है, जिसका विस्तार-

- हाड़ौती
  - कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़
- डांग क्षेत्र
  - सवाई माधोपुर, करौली, धौलपुर

→ विन्ध्यन कगार की चट्टानें / खनिज-

(i) Sand Stone (बलुआ पत्थर)
(ii) Lime Stone (चूना पत्थर)
(iii) लाल पत्थर
(iv) कोटा स्टोन
(v) हीरा

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

हाड़ौती के तीन गौण (Subdivision) भाग-

1. अर्द्धचन्द्राकार पहाड़ी
   - बूंदी हिल्स
   - मुकुन्दरा हिल्स (कोटा, झालावाड़)
2. शाहाबाद उच्च भूमि (बारां)
3. डग गंगाधर उच्च भूमि (झालावाड़)

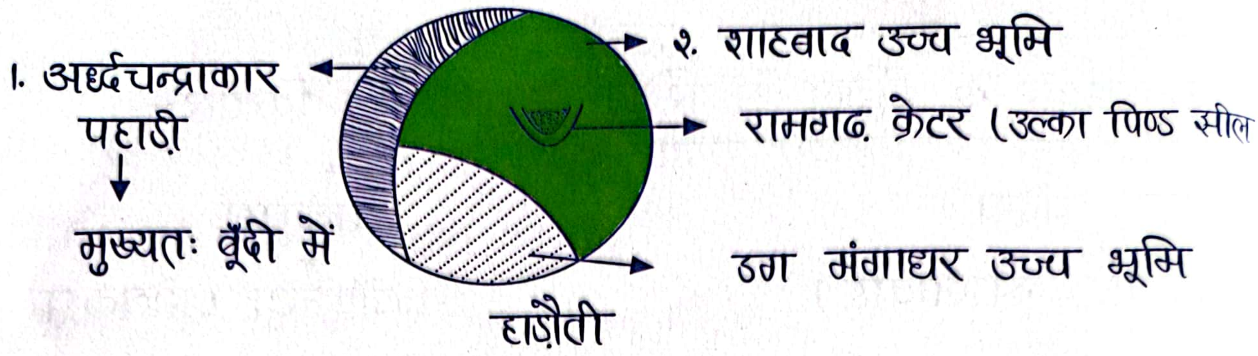

1. <u>अर्द्धचन्द्राकार पहाड़ी</u>-
- यह हाड़ौती के उ. प. द. में स्थित है।
- विस्तार- बूँदी हिल्स - 96 Km
  मुकुन्दरा हिल्स - 120 Km
  ↳ कोटा, झालावाड़

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

2. <u>शाहबाद उच्च भूमि</u>- यह मुख्यतः हाड़ौती के पूर्व में स्थित है।
विस्तार- बारां (मुख्य रूप से)

↳ इस क्षेत्र में घोड़े की नाल जैसी पहाड़ियाँ स्थित है जिनके मध्य रामगढ़ क्रेटर स्थित है।

↳ इस क्षेत्र में मुख्यतः सहरिया जनजाति पायी जाती है।

(iii) <u>डंग गंगाधार उच्च भूमि</u>- यह झालावाड़ में स्थित है।
↳ इस क्षेत्र में मुख्यतः काली मिट्टी अधिक पाई जाती है।
↳ सोयाबीन का अधिक उत्पादन होता है।

हाड़ौती का महत्व-

(i) <u>कृषि उत्पादकता</u>- हाड़ौती क्षेत्र में कृषि उत्पादकता उच्च पाई जाती है क्योंकि यहाँ काली मिट्टी / उपजाऊ मिट्टी पाई जाती है।

CamScanner

(ii) जनघनत्व- जनघनत्व अधिक पाई जाती है क्योंकि यहाँ उपजाऊ मिट्टी पायी जाती है।

(iii) खनिज- हाड़ौती में मुख्यतः पत्थर वाले खनिज अधिक पाए जाते है।
जैसे- बलुआ पत्थर, चूना पत्थर, रेड स्टोन (धौलपुर पत्थर)

(iv) जल उत्पादकता / सतही जल-
इस क्षेत्र में जल उत्पादकता अधिक होती है, क्योंकि इस भौतिक प्रदेश में नदियाँ अधिक पायी जाती है।

(v) जलीय जैव विविधता-

➜ हाड़ौती क्षेत्र जलीय जैव विविधता अधिक पायी जाती है।
जैसे- घड़ियाल, मगरमच्छ, उदबिलाव, गांगेय सूस (डॉल्फिन-Gangetic Sus)
↓
(सर्वाधिक गंगा नदी में)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

1. जलवायु का अर्थ
2. राजस्थान की जलवायु कैसी है ?
3. जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक
4. जलवायु वर्गीकरण
5. जलवायु ऋतु वर्गीकरण

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

1. जलवायु का अर्थ

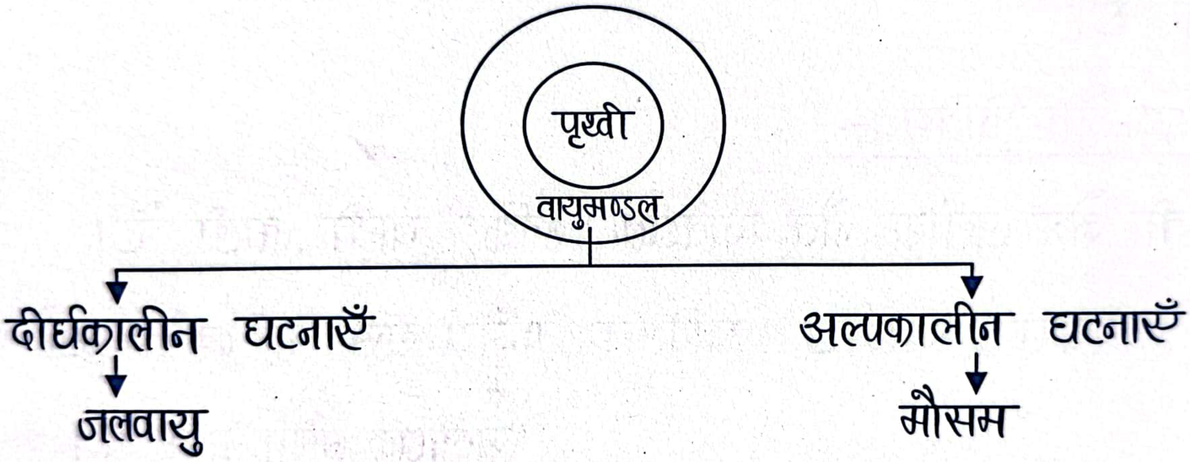

- पृथ्वी के चारों ओर वायुमण्डल की दीर्घकालीन घटनाओं को जलवायु कहा जाता है।
- जलवायु का निर्धारण 30 वर्षों की औसत मौसमी दशाओं पर कि जाता है।

2. राजस्थान की जलवायु कैसी है-

उपोष्ण एवं शुष्क तुल्य जलवा
राजस्थान में पायी जाती है।

3. जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक- भारत के भूगोल में है।

CamScanner

4. जलवायु वर्गीकरण-

(i) सामान्य वर्गीकरण - 5 प्रकार

(ii) व्यक्तिगत वर्गीकरण - 4 प्रकार

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books 7300134518, 7610010054

- आधार- (वनस्पति, वर्षा, तापमान) ← • कोपेन के अनुसार- 4 प्रकार
- आधार- वर्षा ← • ट्रिवार्था के अनुसार- 4 प्रकार
- आधार- (तापमान, वाष्पीकरण, वर्षा) ← • थार्नथ्वेट के अनुसार- 4 प्रकार

(1) सामान्य वर्गीकरण-

सामान्य जलवायु वर्गीकरण के अनुसार राजस्थान की जलवायु को पाँच भागों में बांटा गया है।

- इस वर्गीकरण का आधार तापमान, वर्षा है।

जलवायु के प्रकार	औसत वर्षा	भौतिक प्रदेश
• शुष्क कटिबन्धीय	0-20 cm.	मरुस्थल
• अर्द्धशुष्क	20-40 cm.	मरुस्थल
• उपार्द्र	40-60 cm.	अरावली
• आर्द्र	60-80 cm.	पूर्वी मैदान
• अति आर्द्र	80-120 cm.	हाड़ौती - माही बेसिन

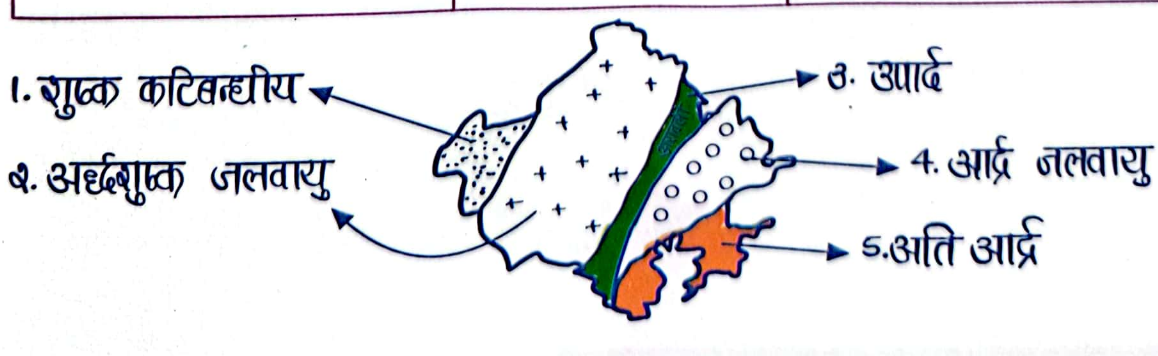

(2) व्यक्तिगत वर्गीकरण-

(i) कोपेन का जलवायु वर्गीकरण-

कोपेन के अनुसार राजस्थान की जलवायु को 4 भागों में बांटा गया है।

- इस वर्गीकरण का आधार वनस्पति (मुख्य), वर्षा व तापमान है

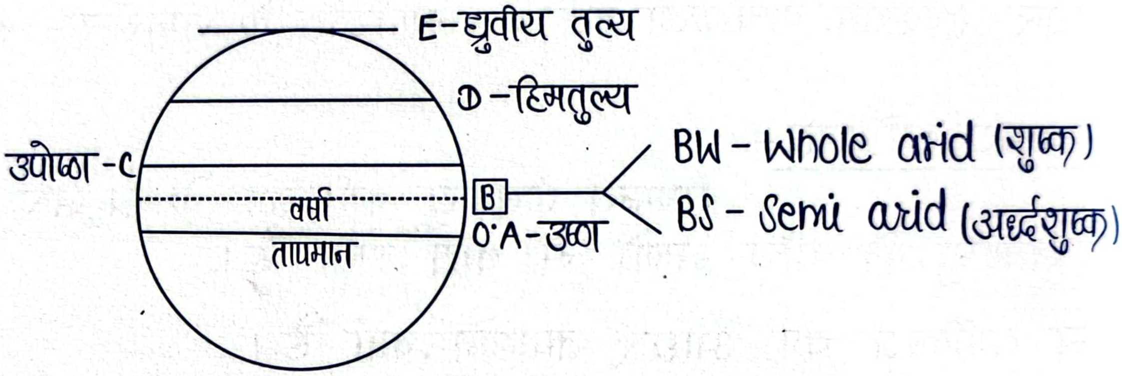

- D एवं E प्रकार की जलवायु राजस्थान में नहीं पाई जाती है।

- A → Aw → उष्ण
- B → BWhw → शुष्क
- B → BShw → अर्द्धशुष्क
- C → Cwg → उपोष्ण

w = winter dry
h = hot → औसत ताप 18°C से अधिक
g = gangetic → गंगा नदी का मैदान

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

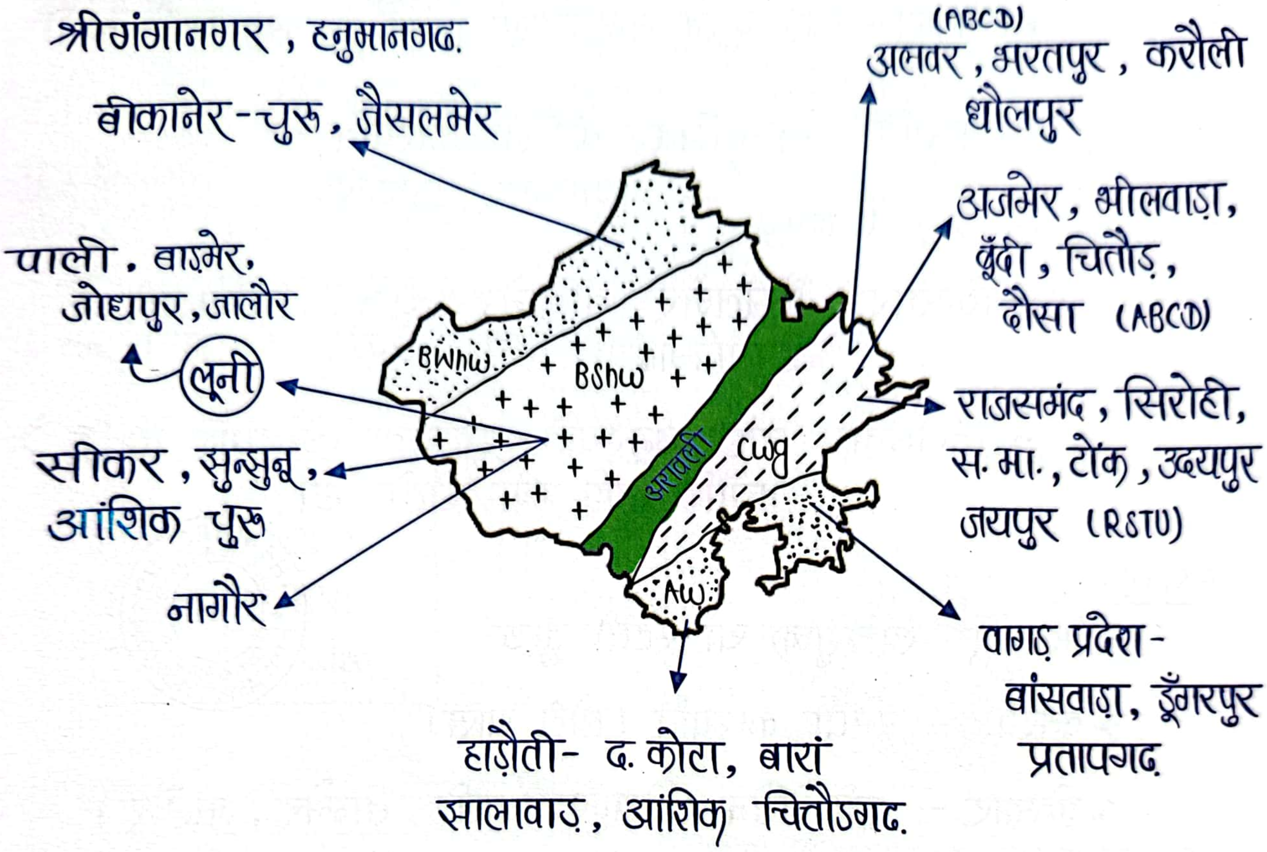

1. AW – उष्ण

- यहाँ उष्ण आर्द्र तुल्य जलवायु पाई जाती है।
- वनस्पति- सवाना वनस्पति अधिक विस्तृत है।

विस्तार

- वागड़ प्रदेश → बांसवाड़ा, डूँगरपुर, प्रतापगढ़
- हाड़ौती → द. कोटा, बारां, झालावाड़ व आंशिक चित्तौड़गढ़

- विशेषता- इस क्षेत्र में उच्च वनस्पति संघनता पाई जाती है, क्योंकि यहाँ वर्षा की मात्रा अधिक होती है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

MAH PUBLIC

२. BWhw-

- जलवायु- यहाँ शुष्क मरुस्थल तुल्य जलवायु पाई जाती है
- वनस्पति- मरुद्भिद / कंटीली वनस्पति
  (Cactus) → नागफनी, ढंडाथोर
- विस्तार- जैसलमेर, बीकानेर, चुरु, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़
- विशेषता- यहाँ वनस्पति सघनता कम पाई जाती है क्योंकि वर्षा कम होती है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

3. BShw-

- जलवायु- अर्द्धशुष्क या स्टेपी तुल्य
- वनस्पति- स्टेपी वनस्पति (छोटी घास)
- विस्तार - लूनी बेसिन (जोधपुर, पाली, बाड़मेर, जालौर) नागौर
  शेखावाटी- सीकर, झुन्झुनू, आंशिक चुरु
- विशेषता - पशु सम्पदा अधिक।

NOTE- कोपेन के अनुसार BShw राजस्थान का सबसे बड़ा जलवायु प्रदेश है।

4. Cwg :- (उपोष्ण-उपार्द्र तुल्य जलवायु प्रदेश)

- वनस्पति- शुष्क मानसूनी/ पतझड़
- विस्तार - ABCD→ अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर
  ABCD→ अजमेर, भीलवाड़ा, बूंदी, चित्तौड़गढ़, दौसा
  RSTU→ राजसमन्द, सिरोही, स० माधोपुर, टोंक, उदयपुर जयपुर।

- **विषेशता-**
  - कृषि उत्पादकता अधिक
  - जनघनत्व अधिक
  - उपजाऊ जलोढ़ मृदा

(B) ट्रिवार्था का जलवायु वर्गीकरण-

ट्रिवार्था के अनुसार राजस्थान की जलवायु को 4 भागों में बाँटा गया है।

वर्गीकरण का आधार- वर्षा (मुख्यतः)

कोपेन	ट्रिवार्था	औसत वर्षा
Aw	Aw	100 cm.
BWhw	BWh	10 cm.
BShw	BSh	30 cm.
Cwg	Caw	70 cm.

a= गर्म ग्रीष्म ऋतु

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(C) थॉर्नथ्वेट का जलवायु वर्गीकरण-

थॉर्नथ्वेट के अनुसार राजस्थान की जलवायु को 4 भागों में बाँटा गया है।

- वर्गीकरण का आधार- तापमान, वाष्पीकरण, वर्षा
- **वर्षा सम्बन्धित शब्दावली-**
  - A = अतिआर्द्र
  - B = आर्द्र
  - C = उपार्द्र
  - D = अर्द्धशुष्क
  - E = शुष्क

NOTE- A व B प्रकार की जलवायु राजस्थान में नहीं पाई जाती है।

- **तापमान सम्बन्धी शब्दावली-**

C → CA'w
D → DA'w, DB'w
E → EA'd

w → winter dry (शुष्क शीत)
d → प्रत्येक ऋतु शुष्क / अल्प वर्षा

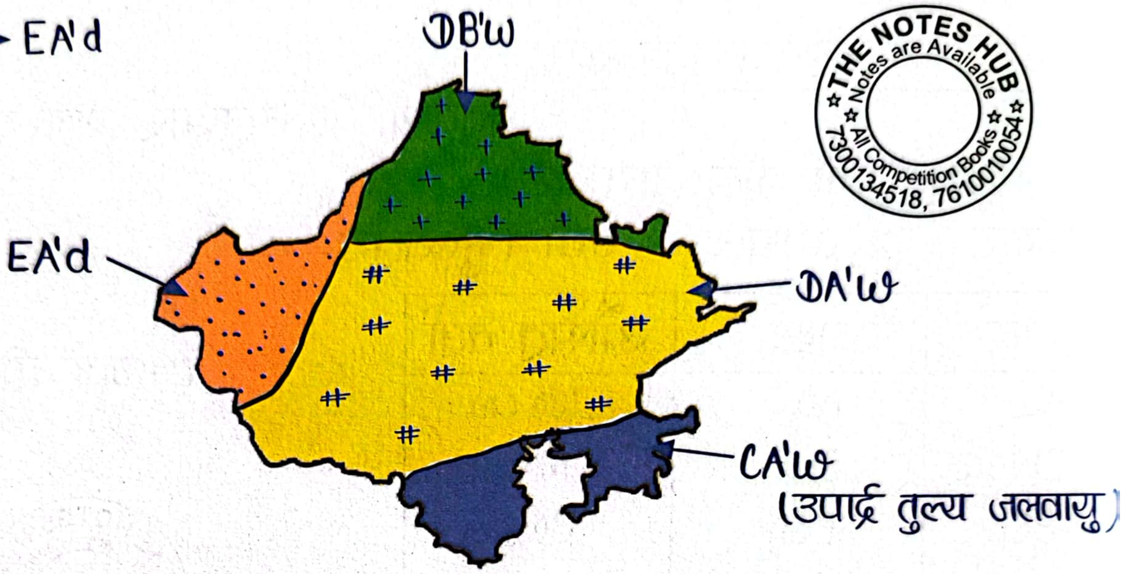

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

1. CA'w – जलवायु → उपार्द्र तुल्य जलवायु

विस्तार → वागड़ = प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, डूंगरपुर
हाड़ौती = द. कोटा, बारां, झालावाड़, आंशिक चितौड़

2. DA'w – जलवायु → अर्द्धशुष्क तुल्य

विस्तार →

ABCD → अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर
ABCD → अजमेर, भीलवाड़ा, बूंदी, चितौड़गढ़, दौसा
RSTU → राजसमन्द, सिरोही, स. माधोपुर, टोंक, उदयपुर सीकर।
PNJ → पाली, नागौर, जालौर, जयपुर, जोधपुर, झुन्झुनू

☞ थॉर्नथ्वेट के अनुसार DA'w राजस्थान का सबसे बड़ा जलवायु प्रदेश है।

3. DB'w → जलवायु - शुष्क अर्द्धशुष्क जलवायु

→ विस्तार - श्री गंगानगर - हनुमानगढ़, बीकानेर - चुरु

4. EA'd → जलवायु – शुष्क मरुस्थल तुल्य

→ विस्तार – जैसलमेर, बाड़मेर, प. जोधपुर, द. प. बीकानेर

→ व्यक्तिगत जलवायु वर्गीकरणों में थॉर्नथ्वेट का जलवायु वर्गीकरण अधिक मान्य है।

⑤ जलवायु-ऋतु वर्गीकरण –

जलवायु-ऋतु वर्गीकरण

- a. ग्रीष्म ऋतु → समय = मार्च - जून → लू, आँधी → धूल के चक्रवात, भभूल्या
- b. वर्षा ऋतु → मानसून (जून-सितम्बर)
- c. शरद ऋतु → oct.- Nov. → मानसून निवर्तन (लौटना), कार्तिक हीट
- d. शीत ऋतु → dec. – feb. → (मावठ - शीत लहर)

a. ग्रीष्म ऋतु –

i) लू → ग्रीष्म ऋतु में चलने वाली गर्म एवं शुष्क हवाओं को लू कहा जाता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

→ कारण → हवाओं का अभिवहनीय प्रवाह

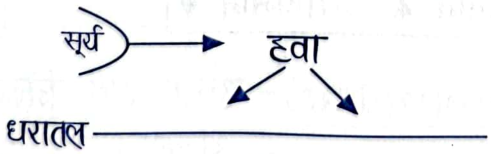

→ प्रमुख प्रभावी क्षेत्र → बाड़मेर (उ. प. राजस्थान)

(ii) आँधी – ग्रीष्म ऋतु में धूलभरी आर्द्रता युक्त हवाओं को आँधी कहा जाता है।

→ कारण – हवाओं का संवहनीय प्रवाह

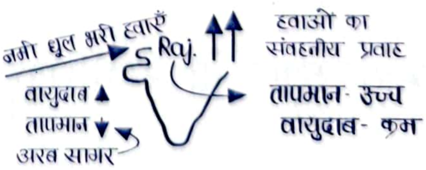

➜ आँधी से प्रमुख प्रभावी क्षेत्र– गंगानगर (27 दिन आँधी)
(उ. राजस्थान)

NOTE –
- ग्रीष्म ऋतु की वह घटना जो तापमान को बढ़ाती है ➜ लू
- ग्रीष्म ऋतु की वह घटना जो तापमान को कम करती है ➜ आँधी

(iii) भभूल्या ➜ ग्रीष्म ऋतु में धूल भरी एवं चक्रवातीय हवाएँ भभूल्या कहलाती है।

➜ कारण = केन्द्र में निम्न वायुदाब एवं परिधि में उच्च वायुदाब।

➜ प्रभावी क्षेत्र = बीकानेर (मुख्यत:)

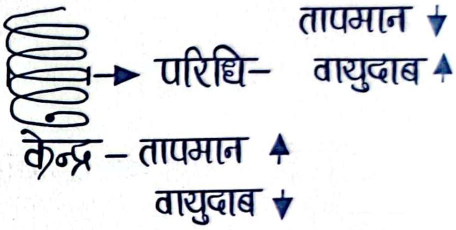

* **Important facts :–**

1. राजस्थान का सबसे गर्म महीना – जून

2. राजस्थान में सर्वाधिक गर्म जिला (स्थान) – जिला = चुरू
स्थान = फलौदी (जोधपुर)

3. राजस्थान में ग्रीष्म ऋतु – न्यूनतम तापमान/सबसे ठण्डा

ऊँचाई ↓	ऊँचाई ↑
तापमान ↑	तापमान ↓

- जिला- सिरोही
- स्थान- मा. आबू

4. तापान्तर (Range of Temperature) – उच्च एवं निम्न तापमान के बीच अन्तर।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

4 May –
- उच्च तापमान = 40°C
- निम्न तापमान = 18°C

22°C तापान्तर

➜ राजस्थान में सर्वाधिक तापान्तर –
- वार्षिक आधार पर – चुरू
- दैनिक आधार पर – जैसलमेर

CamScanner

(b) वर्षा ऋतु-

मानसून

- परिचय
- मानसून का नाम
- मानसून तिथियाँ
- मानसून की शाखाएँ
- मानसून का प्रभाव

1. परिचय- इसका मूल शब्द मौसिम है। यह अरबी भाषा का शब्द है।

- जनक = अल मसूदी
- अर्थ = ऋतु में परिवर्तन / मौसमी हवाओं की दिशा में परिवर्तन जो जल से थल की ओर चलती है।

2. मानसून का नाम- भारत या राजस्थान के मानसून को द. प. मानसून कहा जाता है जो हिन्द महासागर से आता है।

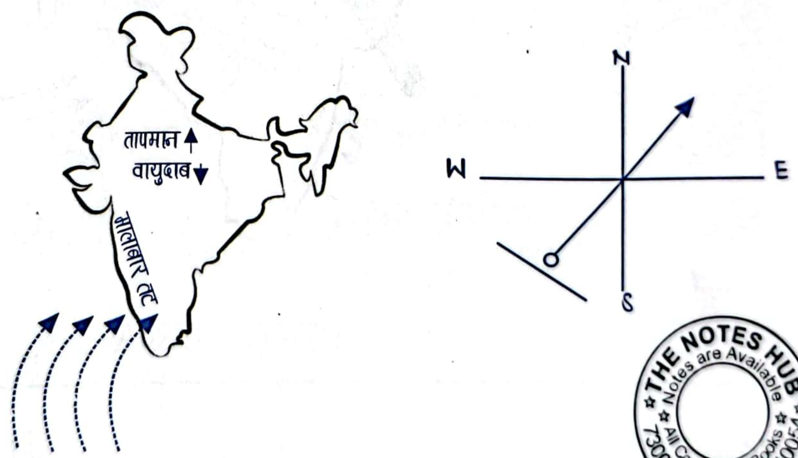

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(only RAS Pre)

3. मानसून की तिथि-

तिथि

- आगमन तिथि
  - भारत
  - राजस्थान
- निगमन तिथि
  - भारत
  - राजस्थान

- प्रथम आगमन (22 May) – अण्डमान निकोबार में
- मुख्य भूमि पर आगमन ↓ केरल (मालाबार तट) (1 जून)
- मुख्य भूमि पर आगमन ↓ बांसवाड़ा, डूंगरपुर (25 जून)
- उत्तरी भारत में (16 Sep. - 30 Sep.)
- पूर्ण भारत में (31 Oct.)
- 30 Sep

NOTE- राजस्थान में मानसून की प्रकृति → देरी से आना और जल्दी लौट जाना।

मानसून की शाखाएँ-

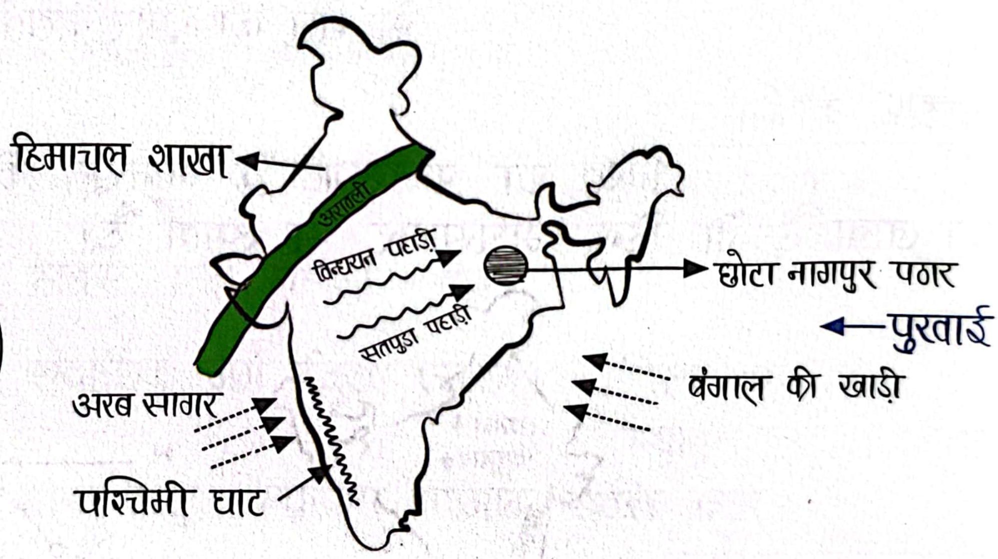

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

मानसून शाखाएँ

- अरब सागरीय शाखाएँ
  - पश्चिमी घाट शाखा
  - छोटा नागपुर शाखा
  - हिमाचल शाखा (राजस्थान)
- बंगाल की खाड़ी शाखाएँ
  - पूर्वी हिमालय शाखा
  - शिवालिक शाखा या उत्तर विशाल मैदान की शाखा (राजस्थान)

1. अरब सागरीय/ हिमाचल शाखा-

हिमाचल शाखा मानसून की वह शाखा है जो राजस्थान में सर्वप्रथम मानसून लाती है। परन्तु इससे अधिक वर्षा नहीं होती है क्योंकि यह शाखा अरावली के समानान्तर होती है।

- अरबसागरीय शाखा राजस्थान में आर्द्रता का प्रमुख स्रोत है।

2. बंगाल की खाड़ी शाखा/ शिवालिक शाखा-

इस शाखा का राजस्थान में सर्वाधिक वर्षा करवाने का सहयोग रहता है।

- **पुरवाई-** बंगाल की खाड़ी की ओर से आने वाली मानसूनी हवाओं को राजस्थान में 'पुरवाई' कहा जाता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

• मानसून का प्रभाव-

- सर्वाधिक
  - जिला → झालावाड़ (औसत वर्षा)
  - स्थान → माउण्ट आबू
- न्यूनतम
  - जिला → जैसलमेर, बीकानेर (10cm)
  - स्थान → सम (जैसलमेर)

राजस्थान की औसत वार्षिक वर्षा- 57.5 cm/ 575 mm

1. दिशा के अनुसार मानसून का प्रभाव-

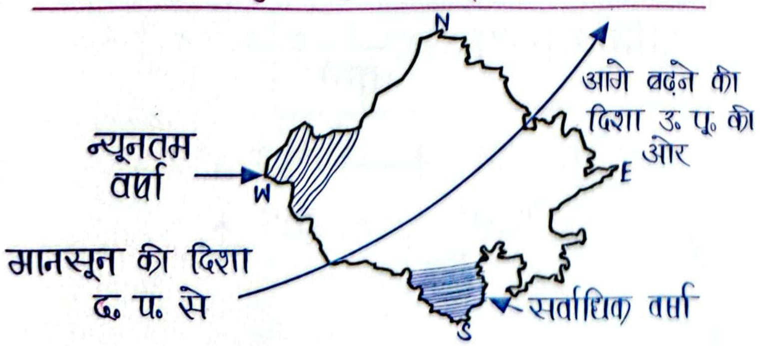

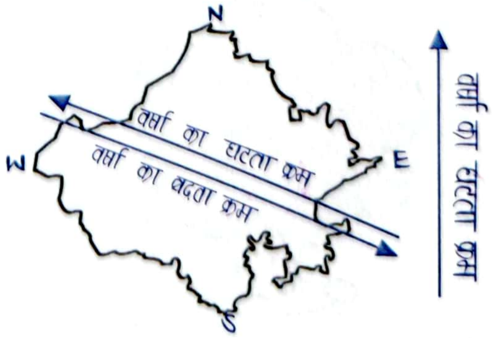

अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु-

• **समवर्षा रेखा-** मानचित्र में एक समान वर्षा वाले स्थानों को मिलाने वाली रेखा, 'समवर्षा रेखा' कहलाती है।

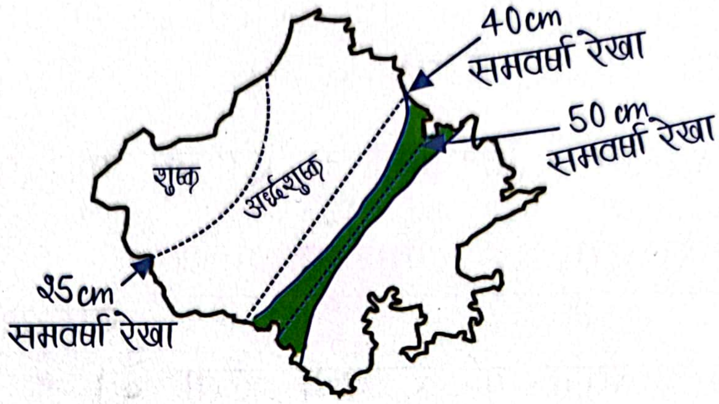

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

1. **25 सेमी. समवर्षा रेखा-** यह रेखा मरुस्थल को दो भागों में बाँटती है
   (i) शुष्क मरुस्थल (1 लाख Km²)
   (ii) अर्द्धशुष्क मरुस्थल (75000 Km²)

2. **40 सेमी. समवर्षा रेखा-** यह रेखा राजस्थान को दो बराबर भागों में बाँटती है। यह वर्षा रेखा प. मरुस्थल की पूर्वी सीमा है।

3. **50 सेमी. समवर्षा रेखा-** (500mm) यह समवर्षा रेखा अरावली पर स्थित है जो पूर्वी मैदान एवं प. मरुस्थल को अलग करती है।

② **मानसून की अनिश्चितता-** (मानसून की तिथियों में परिवर्तन)

$$\text{अनिश्चितता} \propto \frac{1}{\text{वर्षा}}$$

अनिश्चितता ↑ → वर्षा ↓
अनिश्चितता ↓ → वर्षा ↑

③ मानसून में परिवर्तनशीलता-
(वर्षा की मात्रा में परिवर्तन)

परिवर्तनशीलता ↑ तो वर्षा ↓
परिवर्तनशीलता ↓ तो वर्षा ↑

© शरद ऋतु (Autumn Season)-

✱ **मानसून निवर्तन**- मानसून के वापस लौटने की घटना को मानसून निवर्तन कहते है।

समय - Oct.- NOV.

✱ **कार्तिक या अक्टूबर हीट**-

➥ मानसून निवर्तन के दौरान अचानक तापमान का बढ़ना कार्तिक हीट कहलाती है।

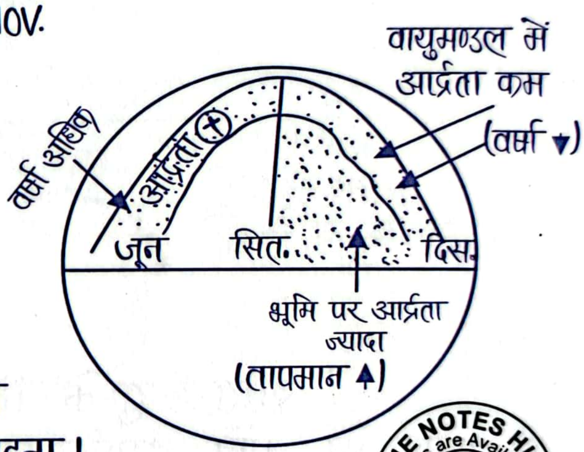

➥ कारण- वायुमण्डलीय आर्द्रता का कम तथा भूमि की आर्द्रता का बढ़ना।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

Ⓓ शीत ऋतु →

✱ **मावठ** = शीत ऋतु में होने वाली वर्षा जो भूमध्य सागर से पश्चिमी विक्षोभ (जेट स्ट्रीम) से आती है।

समय → दिसम्बर-मार्च

➥ **मावठ का सर्वाधिक प्रभाव**-

J.K, लद्दाख, H.P
UK, पंजाब, HR,
दिल्ली, उ. प्र. राज.

- मावठ से प्रभावित क्षेत्र- श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर (उ. प. राजस्थान)
- लाभान्वित फसल- रबी फसल (मुख्यत: गेहूँ)

NOTE- मावठ को 'गोल्डन ड्रॉप्स' भी कहते है क्योंकि इसमें सर्वाधिक लाभान्वित फसल गेहूँ होती है।

राजस्थान की कुल वार्षिक वर्षा
↓
2- प्रकार

मानसूनी	मावठ
90%	10%

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books * 7300134518, 7610010054 *

* शीत लहर-

शीत ऋतु में हिमालय की ओर से आने वाली हवाओं को शीत लहर कहते है।

- दिशा- उ. पू. से द. प. की ओर
- प्रभावी क्षेत्र→ चुरू (मुख्यत:), सीकर, बीकानेर

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

1. **समवायुदाब रेखाएँ-** मानचित्र पर एक समान वायु वाले स्थानों को मिलाने वाली रेखाएँ।

जनवरी ← समवायुदाब रेखाएँ → जुलाई

- जनवरी [तापमान ↓ वायुदाब ↑]
  - 1018 Mb
  - 1019 Mb
- जुलाई [तापमान ↑ वायुदाब ↓]
  - 997 Mb
  - 998 Mb
  - 999 Mb
  - 1000 Mb

1. जनवरी → तापमान ↓ वायुदाब ↑

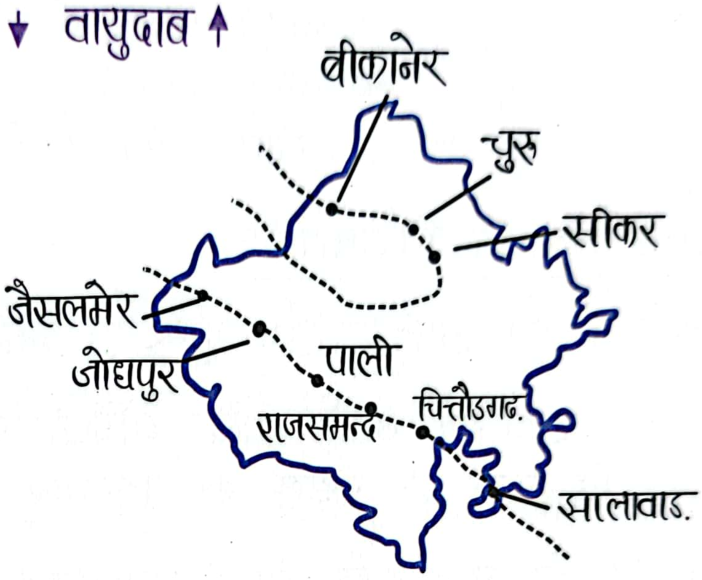

२. जुलाई - तापमान ↑ वायुदाब ↓

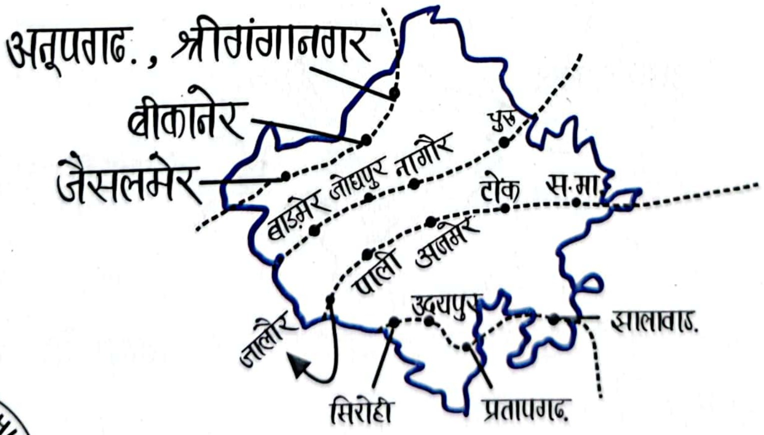

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

अपवाह तंत्र और नदियाँ

➤ राजस्थान में अपवाह तंत्र को संगम के आधार पर तीन भागों में बांटा जाता है-

1. अरब सागर की नदियाँ (17%)
2. अन्तः प्रवाही नदियाँ (60%)
3. बंगाल की खाड़ी की नदियाँ (23%)

अपवाह तंत्र की विशेषताएँ-

1. राजस्थान का अपवाह तंत्र मुख्यतः मानसून पर आधारित है।
2. देश की सर्वाधिक अन्तः प्रवाही नदियाँ राजस्थान में पाई जाती है क्योंकि यहाँ मरुस्थल का विस्तार अधिक है।
3. अरावली को राजस्थान की जलविभाजक रेखा कहा जाता है, क्योंकि यह अपवाह तंत्र को दो भागों में बाँटती है। जो अरब सागर एवं बंगाल की खाड़ी की नदियाँ है।

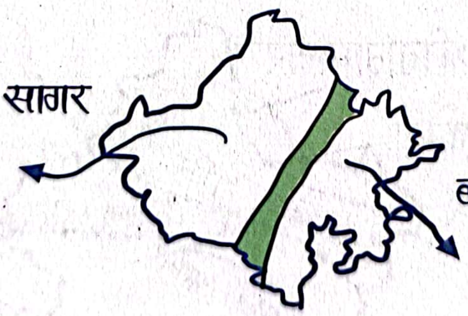

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

4. देश के कुल सतही जल एवं नदियों के जल में राजस्थान का योगदान 1.16% है।

NOTE- देश के कुल भूमिगत जल में राजस्थान का योगदान - 1.72%

5. राजस्थान के अपवाह तंत्र में → मुख्य बेसिन = 15
   उपबेसिन = 58

A. अरब सागरीय नदियाँ-

(i) लूनी नदी
(ii) माही नदी
(iii) प. बनास नदी
(iv) साबरमती नदी

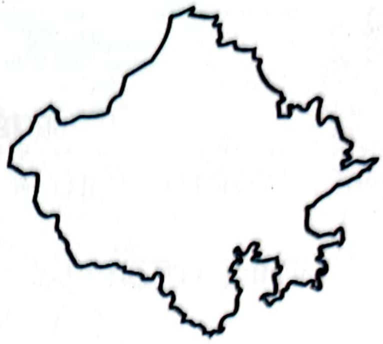

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(i) लूनी नदी-

- उद्गम - नाग हिल्स (अजमेर)
- संगम - कच्छ का रन (गुजरात)
- लम्बाई - 495 Km (राजस्थान में लम्बाई- 350 Km)

अपवाह क्षेत्र- "अपना बजाज" – Trick

- अजमेर, पाली, नागौर, बाड़मेर (बालोतरा), जालौर (सांचौर) जोधपुर

सहायक नदियाँ- 1.

Trick → 'सुकी बांडी खारी, जो जवाई से मिली' + गुहिया नदी

सुकी → सुकड़ी नदी, बांडी → बांडी नदी, खारी → खारी नदी, जो → जोजड़ी नदी, जवाई → जवाई नदी, से → सागी नदी, मिली → मीठडी नदी, लीलड़ी

→ **सुकड़ी नदी** = बांडी, खारी, जोजड़ी, जवाई, सागी, मीठडी, लीलड़ी, गुहिया।

> NOTE → बांडी नदी को 'राजस्थान की रासायनिक नदी' कहा जाता है।
> कारण - रंगाई व छपाई उद्योग

THE NOTES HUB Notes are Available All Competition Books 7300134518, 7610010054

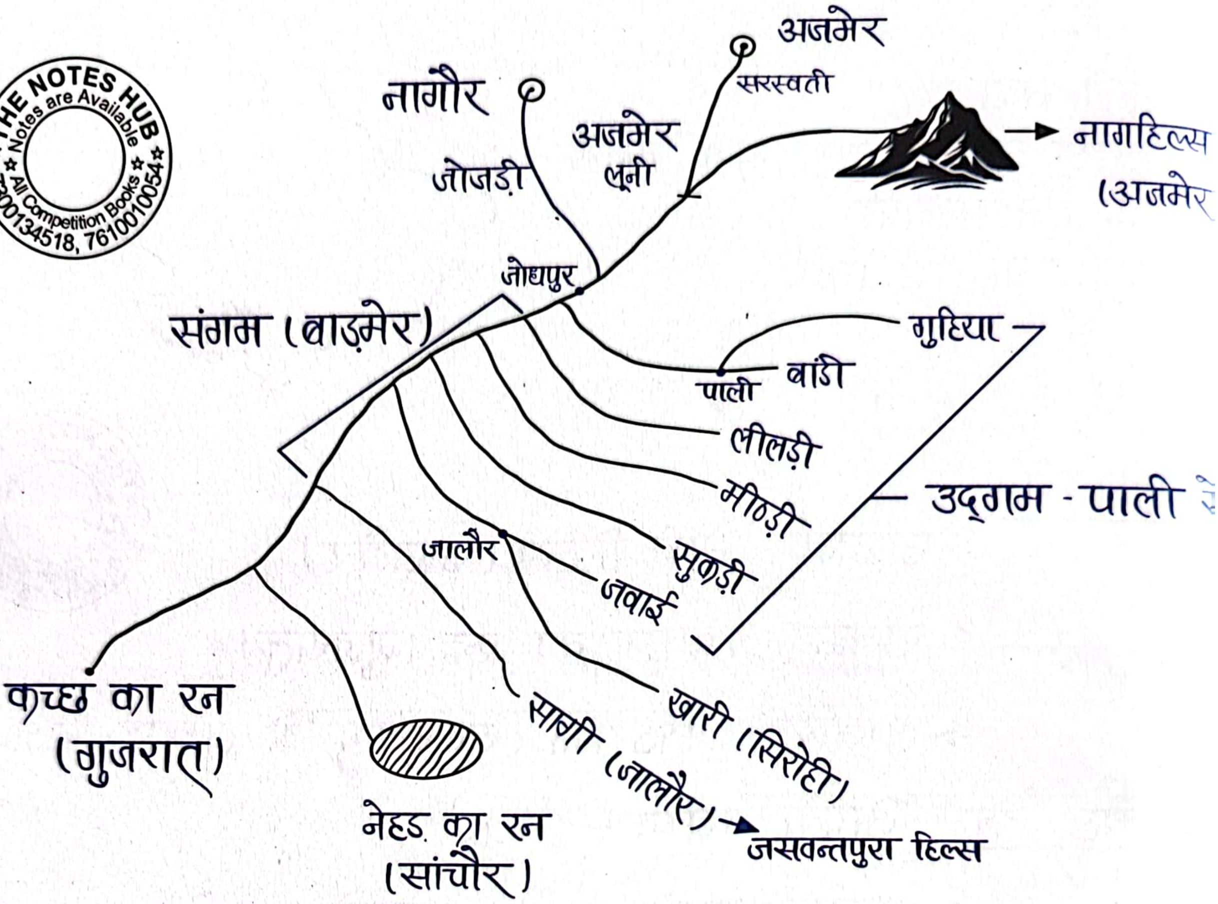

► **जोजड़ी** – लूनी की एकमात्र सहायक नदी जो दायीं ओर से आती है और एकमात्र सहायक नदी जो अरावली से उद्गमित नहीं होती ।

* लूनी की विशेषताएँ -

- अन्य नाम - सागरमती, लवणावती, आधी मीठी- आधी खारी, कालीदास के अनुसार (अन्तः सलीला)
- **रेल/नाडा** – लूनी के अपवाह क्षेत्र को जालौर- सांचौर में रेल/ नाडा कहा जाता है।
- राजस्थान के कुल अपवाह तंत्र में लूनी नदी का योगदान - 10.40
- लूनी नदी देश में मरुस्थल की सबसे लम्बी नदी है।

• बाँध परियोजना –

1. जसवन्त सागर / पिचिआक बाँध	→ जोधपुर	→ लूनी
2. हेमावास बाँध	→ पाली	→ बांडी
3. जवाई बाँध	→ पाली / सुमेरपुर	→ जवाई
4. बाँकली बाँध	→ जालौर	→ सुकड़ी

जवाई बाँध – सुमेरपुर (पाली)

- यह पश्चिमी राजस्थान का सबसे बड़ा बाँध है। जिसे 'मारवाड़ का अमृत सरोवर' कहते है।
- जलापूर्ति – पाली, जोधपुर, सिरोही, जालौर
- जब जवाई बाँध में पानी की कमी होती है तो जलापूर्ति सेई जल सुरंग (उदयपुर से पाली) से की जाती है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(ii) माही नदी-

- उद्गम – मेहंद झील (धार जिला, M.P)
  - ↳ अमरेरू हिल्स (विन्ध्यन पर्वत श्रेणी)
- संगम - खम्भात की खाड़ी (गुजरात)
- लम्बाई - 576 कि.मी. (राजस्थान में लम्बाई = 171 कि.मी)
- अपवाह क्षेत्र - बांसवाड़ा, डूँगरपुर, प्रतापगढ़ (वागड़ मैदान)
- माही नदी राजस्थान में खान्दू (बांसवाड़ा) से प्रवेश करती है।
- सहायक नदी –
  - Trick → 'ईरू जाखम सोम गयी अनास को साथ लेकर मोरेन चाप पर'

ईराव / ईरू (प्रतापगढ़), जाखम (प्रतापगढ़), सोम (उदयपुर), अनास (M.P), मोरेन (डूँगरपुर), चाप (बाँसवाड़ा)

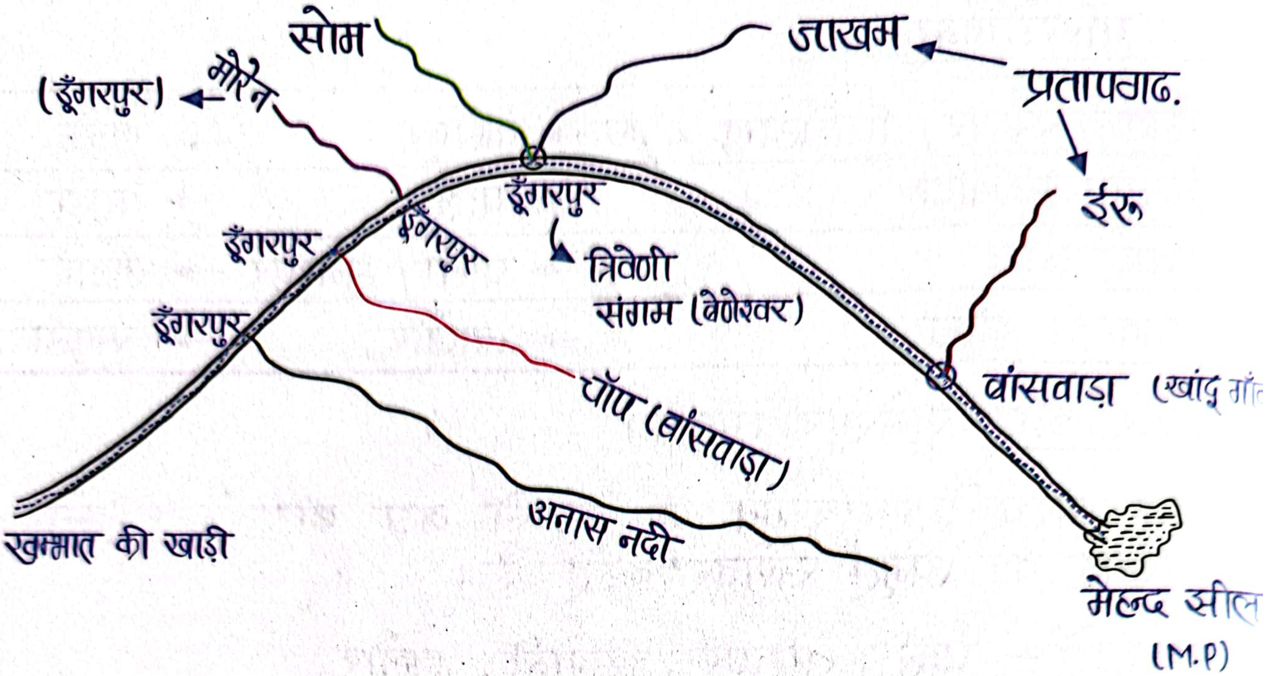

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

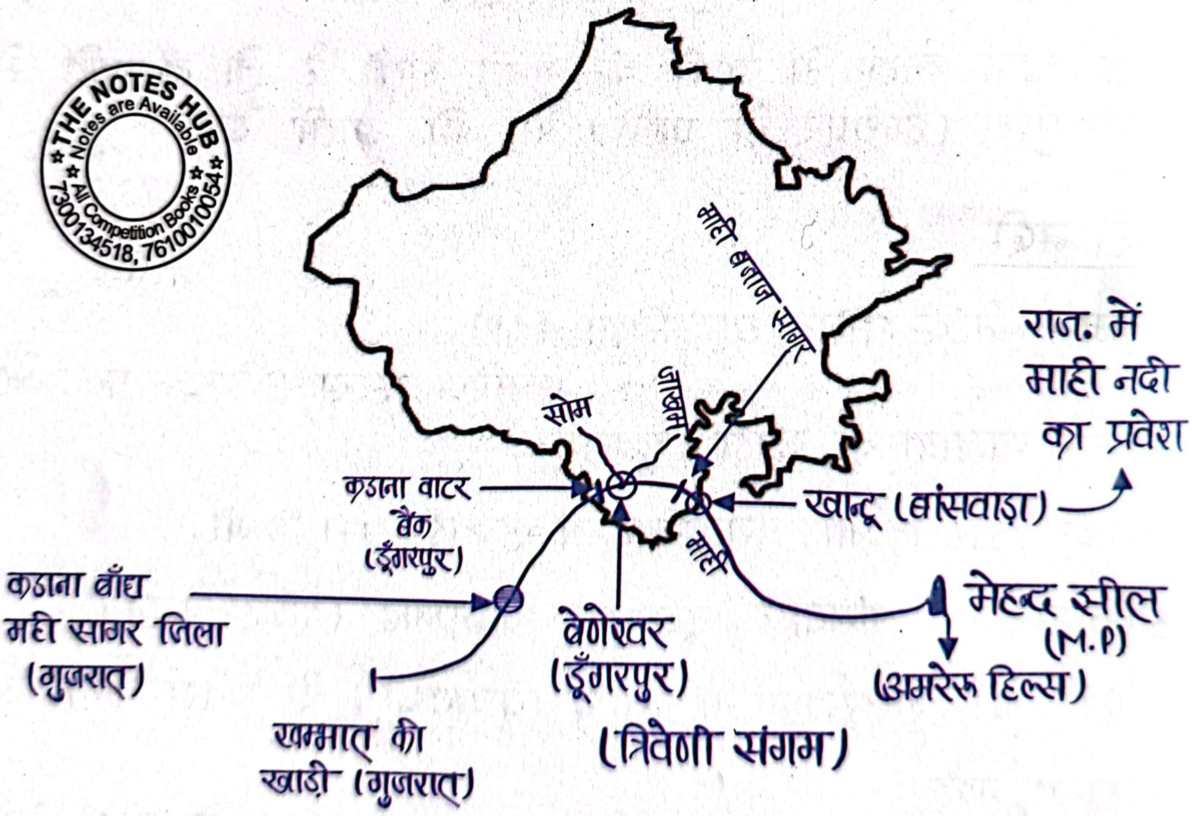

* माही की विशेषताएँ-

- उपनाम —
  - वागड़ की गंगा
  - आदिवासियों की गंगा
  - कांठल की गंगा (प्रतापगढ़)
  - द. राजस्थान की स्वर्णरेखा

- त्रिवेणी संगम- बेणेश्वर धाम (नवा टापरा, डूँगरपुर, बाँसवाड़ा
  ↳ सोम + माही + जाखम

NOTE → 'माघ पूर्णिमा' को यहाँ मेले का आयोजन होता है, जिसे 'आदिवासियों का कुंभ' कहा जाता है।
↓
(बेणेश्वर मेला)

- माही विश्व की एकमात्र नदी है जो कर्क रेखा को दो बार काटती है।

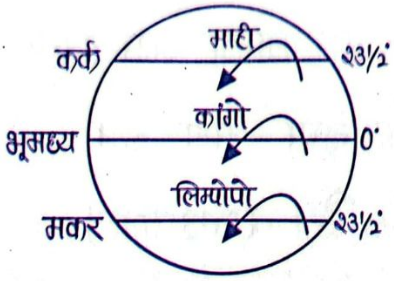

Trick- माँ का लि

- माही नदी के क्षेत्र में (बांसवाड़ा) टापूओं की संख्या अधिक पायी जाती है उस कारण बांसवाड़ा को 100- टापूओं का शहर कहा जाता है।

- माही राजस्थान की एकमात्र नदी जो दक्षिण से प्रवेश कर अन्त में पश्चिम की ओर बहती है।

- बाँध परियोजना-
  - (i) माही बजाज सागर → बांसवाड़ा
  - (ii) कागदी पिकअप → बांसवाड़ा
  - (iii) कडाना बैंक वाटर → डूँगरपुर
  - (iv) कडाना बाँध → गुजरात
  - (v) सोम- कागदर परियोजना → उदयपुर
  - (vi) सोम - कमला परियोजना → डूँगरपुर
  - (vii) जाखम बाँध → प्रतापगढ़

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

1. माही बजाज सागर-

➤ स्थिति- बोरखेड़ा (बांसवाड़ा)

➤ माही बजाज सागर राजस्थान का सबसे लम्बा बाँध है तथा आदिवासी क्षेत्र में सबसे बड़ा बांध है।

➤ इसकी कुल लम्बाई 3109 मीटर है।

२. जाखम बांध-

स्थिति - सीतामाता अभयारण्य (प्रतापगढ़)

➤ यह राजस्थान का सबसे ऊँचा बाँध है।

➤ जिसकी कुल ऊँचाई 81m है। (२५३ फीट)

साबरमती नदी-

- उद्गम- पदराणा हिल्स (उदयपुर)
- संगम- खंभात की खाड़ी
- लम्बाई- 416 किमी [राजस्थान में- 45 किमी
- अपवाह क्षेत्र- उदयपुर (मुख्यतः), डूंगरपुर

➤ सहायक नदियाँ- TRICK➤ "वैसे हमें मावा चाहिए"

- वैसे → वेतरक, सेई
- हमें → हथमती, हरनव, मेस्वा
- मावा → मानसी, माजम
- चाहिए → वाकल

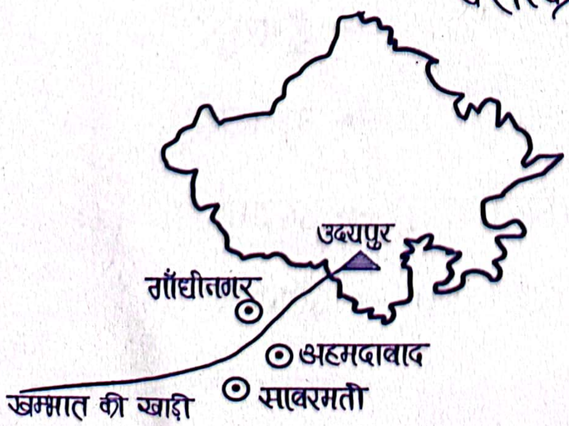

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

Springboard ACADEMY

CamScanner

विशेषताएँ-

1) जल सुरंगे

सेई जल सुरंग
- जवाई बाँध में जलापूर्ति (उदयपुर से पाली)
- राज. की प्रथम जल सुरंग

मानसी - वाकल जल सुरंग
- देवास परियोजना/ मोहनलाल सुखाड़िया परियोजना में जल आपूर्ति।
- राज. की सबसे लम्बी जल सुरंग। (11. किमी)

२) साबरमती राजस्थान की प्रथम नदी है जिस पर 'रिवर फ्रंट' (अहमदाबाद, गुजरात) बनाया गया।

पश्चिमी बनास-

- उद्गम - नया सानवारा हिल्स (सिरोही)
- संगम - लिटिल कच्छ (गुजरात)
- लम्बाई - २66 कि.मी (राजस्थान में - 50 कि.मी)
- अपवाह क्षेत्र - राजस्थान, गुजरात
- सहायक नदियाँ - सुकली/ सीपू कूकड़ी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

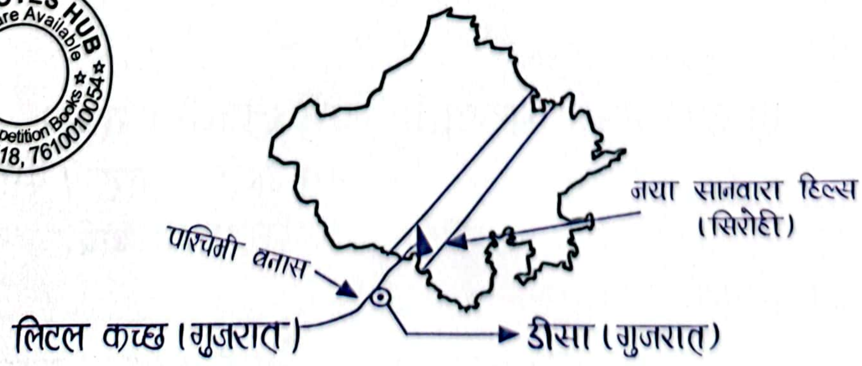

२. अन्तः प्रवाही नदियाँ

1. घग्घर
2. कांतली / काटली
3. साबी
4. बाणगंगा
5. रूपारेल
6. कांकनी / कांकनेय (मसूरदी)

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books 7300134518, 7610010054

1. घग्घर नदी–

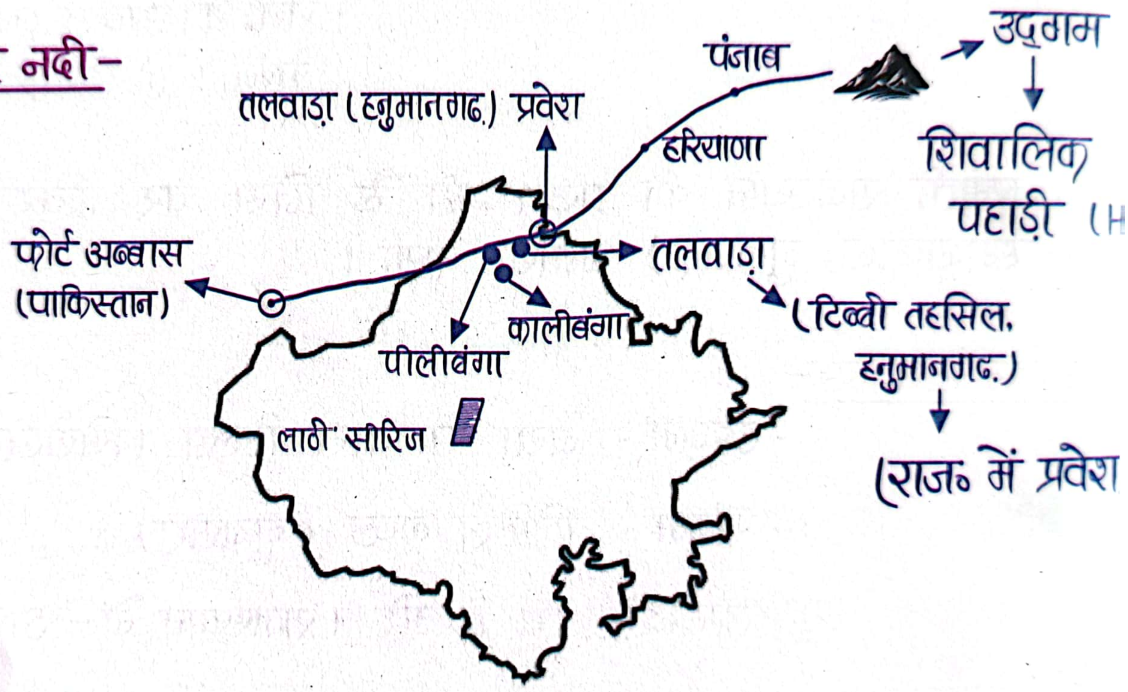

- उद्गम- शिवालिक पहाड़ी (कालका हिल्स) (H.P)
- अपवाह क्षेत्र- हनुमानगढ़, श्री गंगानगर, अनूपगढ़
- विशेषताएँ-
  - (i) उपनाम→ सरस्वती नदी (प्राचीन नाम)
    ↳ मृत नदी / नट / सोता नदी / दृषद्वती नदी
  - (ii) घग्घर का अपवाह क्षेत्र → हकरा (Pak.) / नाली / पाट (हनुमानगढ़)

(iii) घग्घर हिमालय से राजस्थान में आने वाली एकमात्र नदी है। (इंडोब्रह्म 04 शिवालिक)

(iv) घग्घर नदी देश / राजस्थान (की) सबसे लम्बी अन्तः प्रवाही नदी है।
जबकि राजस्थान (में) सबसे लम्बी अन्तः प्रवाही नदी- कांतली

(v) फोर्ट अब्बास - घग्घर का अंतिम स्थान है जो पाकिस्तान में स्थित है।

NOTE- सरस्वती नदी के प्राचीन मार्ग को खोजने के लिए श्रीराम वाडेरे व हनुवता राय को नियुक्त किया गया।

→ बीकानेर सम्भाग में एकमात्र नदी है।

२. कांतली नदी-

- उद्‌गम → खण्डेला (सीकर)
- अपवाह क्षेत्र → तोरावाटी (सीकर, झुन्झुनू, नीम का थाना)
  ↓
  (कांतली नदी के अपवाह क्षेत्र को कहते है)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

NOTE कांतली नदी - राजस्थान में सबसे लम्बी अन्तः प्रवाही नदी है। जिसकी कुल लम्बाई 100 कि.मी. है।

3. साबी/ साहिबी नदी (नफजगढ़ का नाला)-

- उद्गम- सेवर हिल्स (जयपुर ग्रामीण)
- अपवाह क्षेत्र- जयपुर ग्रामीण, कोटपुतली बहरोड़, खैरथल- तिजारा

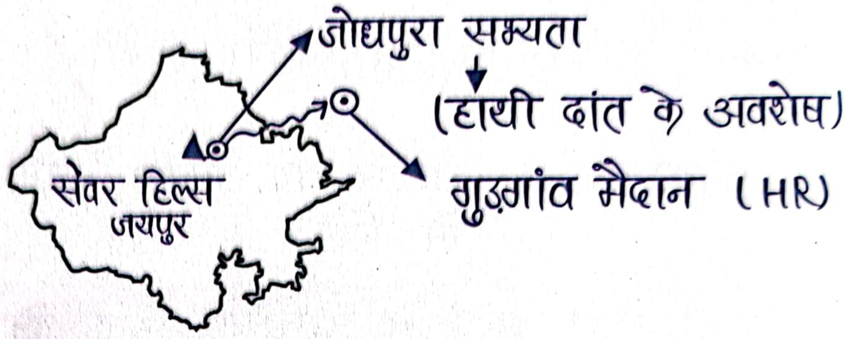

* विशेषताएँ-

साबी राजस्थान की एकमात्र नदी है जो हरियाणा के गुड़गांव मैदान में समाप्त होती है।

4. बाणगंगा नदी-

- उद्गम - बैराठ हिल्स (कोटपुतली बहरोड़)
- अपवाह क्षेत्र- • कोटपुतली बहरोड़
  • जयपुर ग्रामीण
  • दौसा
  • भरतपुर

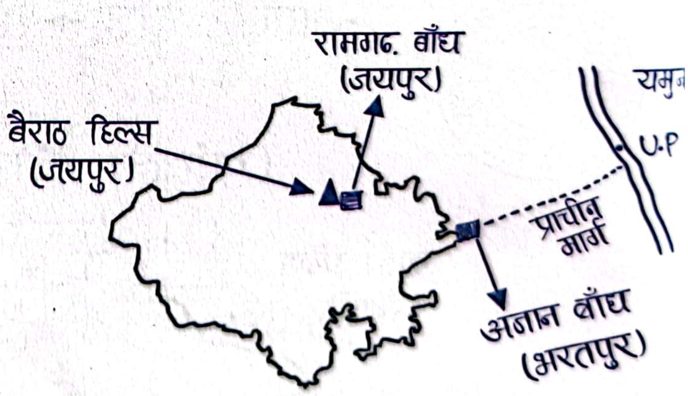

- विशेषताएँ-

1. उपनाम- • अर्जुन की गंगा
   • ताला नदी
   • रूण्डित नदी

(15 words)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

NOTE- 1. खण्डित नदी → वे सहायक नदियाँ जो मुख्य नदी में गिरने से पहले समाप्त हो जाती है।
Ex. बाणगंगा नदी

2. बाणगंगा नदी को 2012 से अन्तः प्रवाही नदी में शामिल किया जाता है।

* बाणगंगा की बाँध परियोजनाएँ-

(i) रामगढ़ परियोजना
↓
इसे ईसरदा बाँध से जलापूर्ति की जायेगी।
(सवाई माधोपुर)

(ii) केवलादेव (अजान बांध)
↓
पाचना बांध (करौली) व
↳ गम्भीर नदी
यमुना लिंक नहर से जलापूर्ति की जाती है।

5. रूपारेल नदी- (वराह नदी)
- उद्गम- उदयनाथ हिल्स (अलवर)
- अपवाह क्षेत्र- अलवर- डीग और भरतपुर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

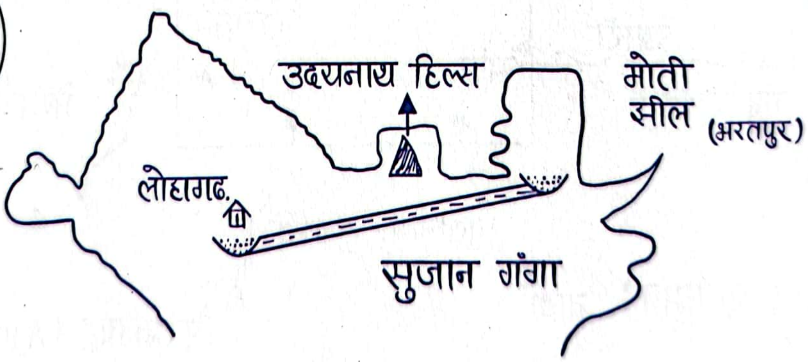

विशेषताएँ-

- **मोती झील**- यह एक मीठे पानी की झील है जो कि भरतपुर में स्थित है।
  ↳ इसे 'भरतपुर की जीवनरेखा' कहते है क्योंकि ये भरतपुर की सिंचाई के लिए जलापूर्ति करती है।

- इस झील में नील हरित शैवाल अधिक पाए जाते है उर्वरक बनाने में उपयोगी है।

- सुजान गंगा - यह एक लिंक/ चैनल है जो मोतीझील एवं लोहागढ़ को जोड़ता है।

6. कांकनी नदी/ काकनेय/ मसूरदी नदी-

- उद्गम- कोटरी गाँव (जैसलमेर)

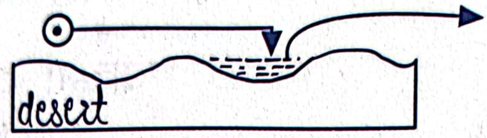

→ बूस झील (जैसलमेर)
↓
मीठे पानी की झील

→ राजस्थान की सबसे छोटी अन्तः प्रवाही झील

7. अन्य अन्तः प्रवाही नदियाँ -

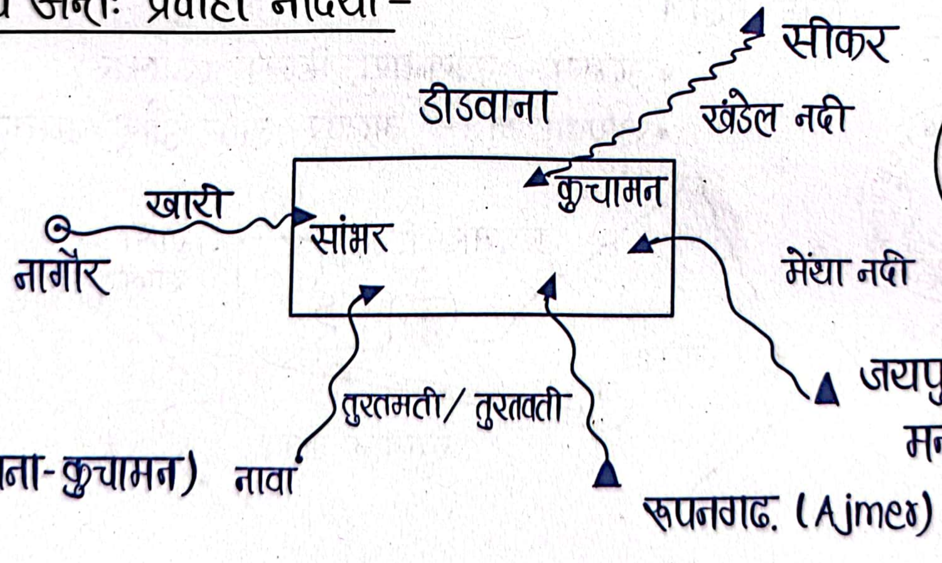

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

→ सांभर में सर्वाधिक लवणता जमा करने वाली नदी मेंथा है।

NOTE- सांभर झील अभिकेन्द्रीय नदी प्रतिरूप उदाहरण है

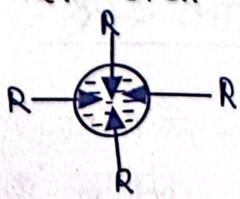

३. बंगाल की खाड़ी की नदियाँ

- चम्बल
- बनास
- बेड़च / आयड़
- गंभीर

गंभीरी - MP

① चम्बल नदी-

- उद्गम - जानापाव हिल्स (M.P)
  (इंदौर - माहू विन्धयन पर्वतमाला)
- संगम - यमुना (इटावा - U.P)
- लम्बाई -
  - 1051 KM (राजस्थान में = ३२२ कि.मी)
  - Old data = 966 कि.मी) - राज० में 135 Km
- अपवाह क्षेत्र
  - चित्तौड़ (राजस्थान में प्रवेश - चौरासीगढ़)
  - हाड़ौती (कोटा, बूंदी)
  - डांग (सवाई माधोपुर, करौली, धौलपुर)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

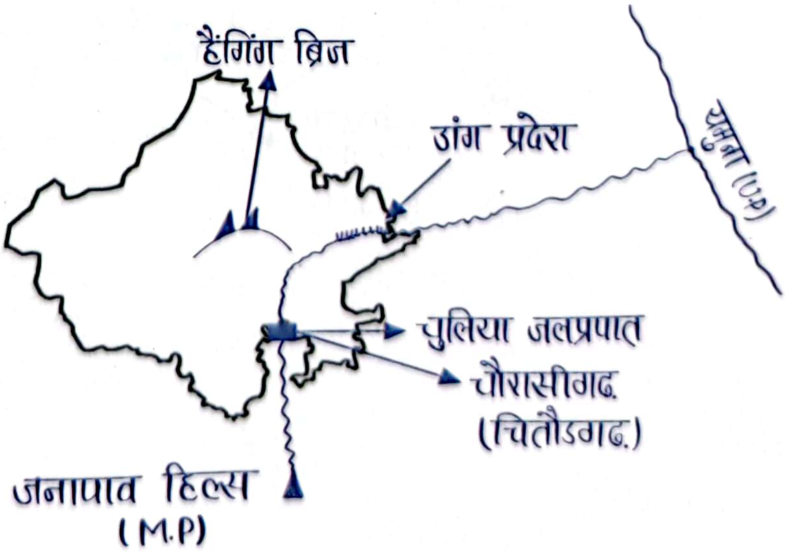

➜ सहायक नदियाँ-

नेवाज / निवाज   घोड़ा पछा

Trick ➜ गुस्से में मां पापा ने आज काले घोड़े

गुंजाली मेज मांगली पार्वती आहू कालीसिंध

पर वार वार चाकू से मारा

परवन बनास ब्राह्मणी चाकण सीप

कुन / कुनो / कुराल

NOTE-

1. बनास चम्बल की सबसे लम्बी सहायक नदी है।

2. कालीसिंध चम्बल में दायीं ओर से मिलने वाली सबसे लम्बी सहायक नदी है।

3. सामेला- कालीसिंध एवं आहू नदी के संगम को सामेला कहा जाता है।

➜ राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ जल दुर्ग (गागरोन) इस संगम के किनारे स्थित है।

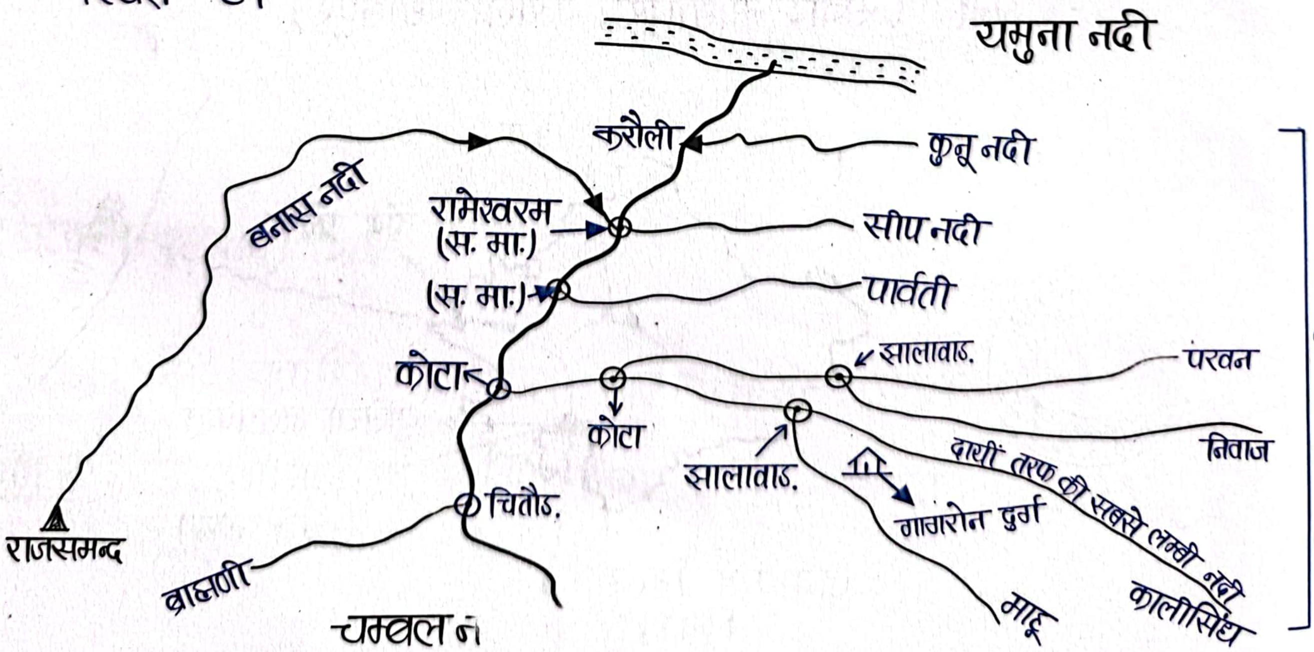

विशेषताएँ-

1. चम्बल के उपनाम-
   - चर्मण्वती (प्राचीन नदी)
   - कामधेनू
   - बारहमासी / बारमासा

2. त्रिवेणी संगम- रामेश्वरम घाट (पदरा गाँव - स॰ माधोपुर)
   - चम्बल
   - बनास
   - सीप

3. चम्बल में संरक्षित जीव-
   - घड़ियाल (घड़ियालों की शरण स्थली)
   - गांगेय सूस (डॉल्फिन)
   - उद्‌बिलाव

4. चुलिया जलप्रपात-

- भैंसरोड़गढ़ (चितौड़) में चम्बल नदी पर स्थित।
- यह राजस्थान का सबसे ऊँचा जल प्रपात है।
- इसकी कुल ऊँचाई 18 मी. है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

5. हैंगिंग ब्रिज-

- राजस्थान का एकमात्र हैंगिंग ब्रिज चंबल नदी पर कोटा में स्थित है।
- इसकी कुल लम्बाई 1.5 KM है।

NOTE- राजस्थान का प्रस्तावित हैंगिंग ब्रिज = माही नदी (बांसवाड़ा)

6. हैरिटेज रिवर फ्रंट-

- यह चम्बल नदी पर कोटा में स्थित है। जो राजस्थान में प्रथम रिवर फ्रंट है।

7. चम्बल राजस्थान की सबसे लम्बी एवं सबसे बड़ी नदी है।

8. चम्बल अंतर्राज्यीय सीमा (Raj. + M.P) पर सबसे लम्बी नदी है।

9. राजस्थान में सर्वाधिक गॉर्ज वैली (V-Shape Valley) चम्बल नदी पर स्थित है।

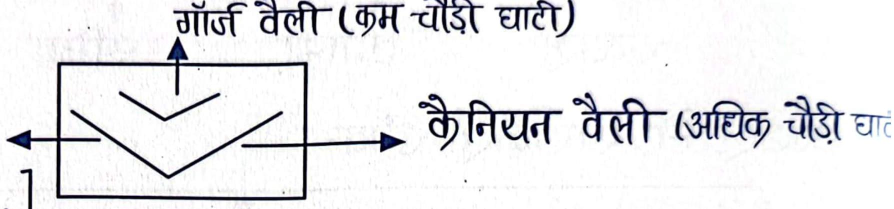

[V-आकार की घाटियों को गॉर्ज या कैनियन कहा जाता है]

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books 7300134518, 7610010054

10. बांध परियोजनाएँ-

?

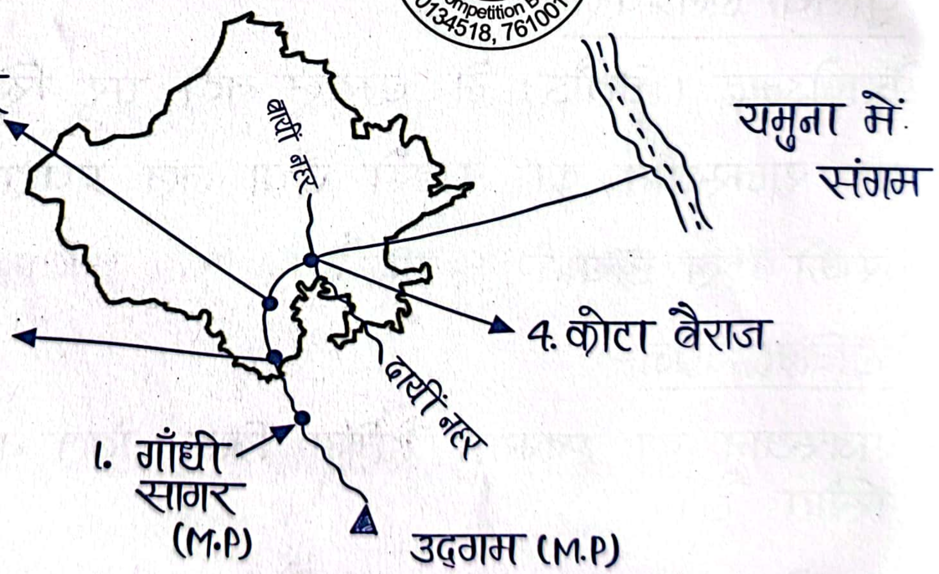

NOTE- राणा प्रताप सागर बांध राजस्थान का सबसे बड़ा बांध है
गाँधी सागर चम्बल पर स्थित सबसे बड़ा बांध है।

2. बनास नदी-

- उद्गम- खमनौर हिल्स (राजसमन्द)
- संगम - चम्बल (रामेश्वरम घाट - स. माधोपुर)

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- लम्बाई - 512 Km (पुरानी लम्बाई - 480 Km)

अपवाह क्षेत्र-

मेवाड़ मैदान (RBCU)
- राजसमन्द
- भीलवाड़ा
- चित्तौड़गढ़
- उदयपुर

मालपुरा करौली (ATM)
- अजमेर
- टोंक- केकड़ी
- सवाई माधोपुर

सहायक नदियाँ-

Trick-

काली → कालीसिल
डाकण → डाई
मासी → मासी
मेना → मेनाल
मोर → मोरेल
बांडी → बांडी

आम → आयड़ / बेड़च
को → कोठारी
खा → खारी
गई। → गलवा

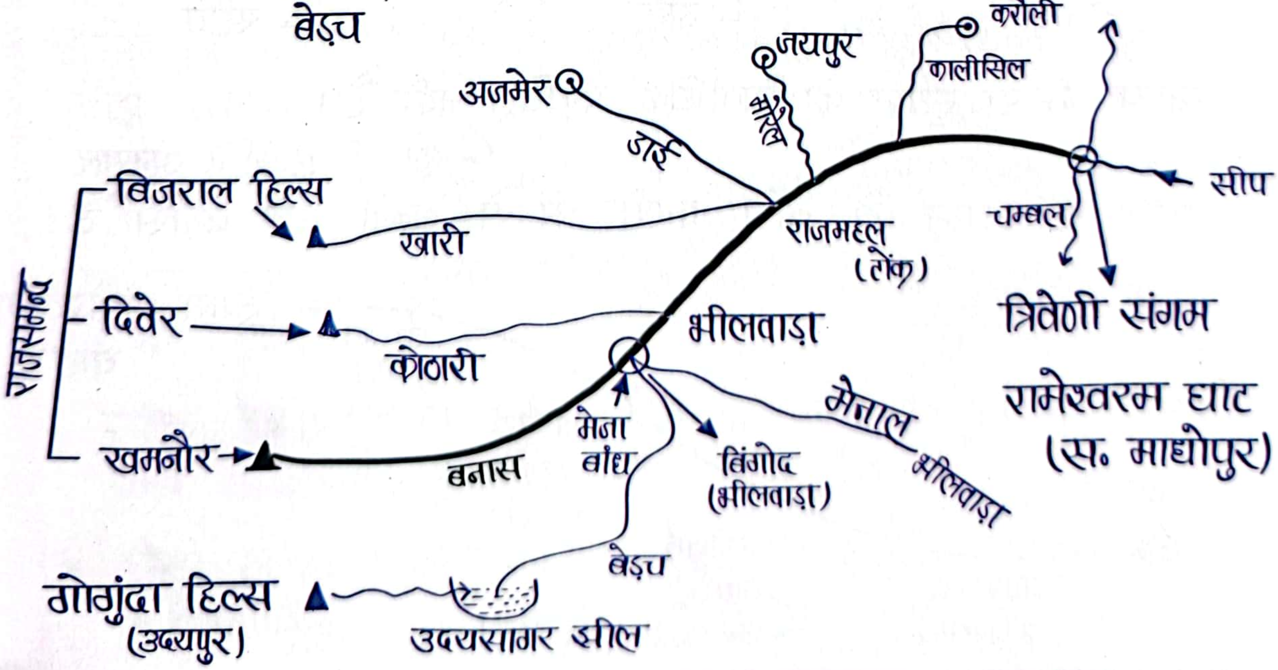

NOTE-
- खारी, बनास की सबसे लम्बी सहायक नदी है।
- बेड़च, बनास की दांई ओर से सबसे लम्बी सहायक नदी है।

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

↳ विशेषताएँ-

(i) उपनाम-
- वनों की आशा
- वर्णाशा
- वशिष्ठि

(ii) त्रिवेणी संगम- राजस्थान में सर्वाधिक त्रिवेणी संगम बनास नदी पर स्थित है।

बीगोद (भीलवाड़ा)	राजमहल (टोंक)	रामेश्वरम घाट (स. माधोपुर)
बनास	बनास	बनास
बेड़च	खारी	चम्बल
मेनाल	डाई	सीप

3. बनास नदी राजस्थान की सर्वाधिक प्रदूषित नदी है।
   ↳ 2017 की रिपोर्ट के अनुसार

4. केवल राजस्थान में बहने वाली सबसे लम्बी नदी बनास है।

5. बाँध परियोजनाएँ-

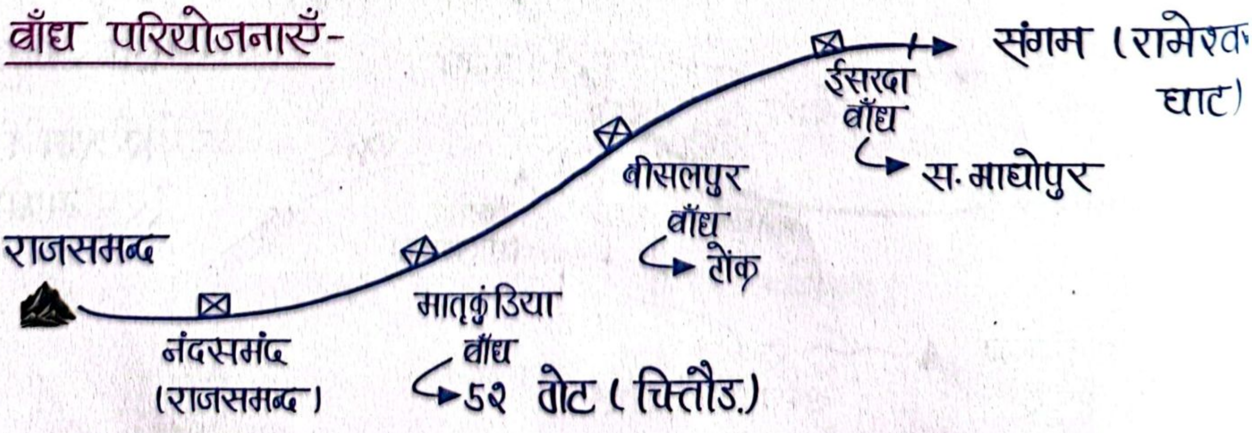

- → मोरेल बाँध (स. माधोपुर - दौसा) — मोरेल नदी
- → मेजा बाँध (कोठारी - भीलवाड़ा)
- → गलवा बाँध - टोंक — गलवा नदी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* बीसलपुर बाँध-

- यह बनास नदी पर टोंक में स्थित है।
- इस बाँध का निर्माण काल/ शुरुआत = 1999 ई.

→ बाँध की विशेषताएँ-

→ यह राजस्थान का सबसे बड़ा कंक्रीट बाँध है।

→ बीसलपुर बाँध राजस्थान की सबसे बड़ी पेयजल परियोजना है।

→ इससे जलापूर्ति
- → टोंक (पेयजल एवं सिंचाई)
- → अजमेर - नागौर
- → जयपुर - दौसा और सवाई माधोपुर

→ बीसलपुर बाँध को ERCP (Eastern Rajasthan Canal project) से जोड़ा जाएगा।

→ बीसलपुर के अतिरिक्त पानी को ईसरदा बाँध में छोड़ा जाएगा।

→ पर्यटन विभाग के द्वारा बीसलपुर बाँध को 'Mini Goa' का दर्जा दिया हुआ है।

→ रंगीन मछलियों का Fish एक्वेरियम एवं प्रजनन केन्द्र इसी बाँध के किनारे स्थापित किया गया है।

→ बीसलपुर राजस्थान का प्रथम Conservation Reserve Area है। (2008)

3. बेड़च/ आयड़ नदी-

- उद्गम- गोगुन्दा हिल्स, उदयपुर
- संगम- बनास (बींगोद- भीलवाड़ा)
- अपवाह क्षेत्र- UCB – (उदयपुर, चितौड़गढ़, भीलवाड़ा)
- सहायक नदियाँ- गम्भीरी, ओराई

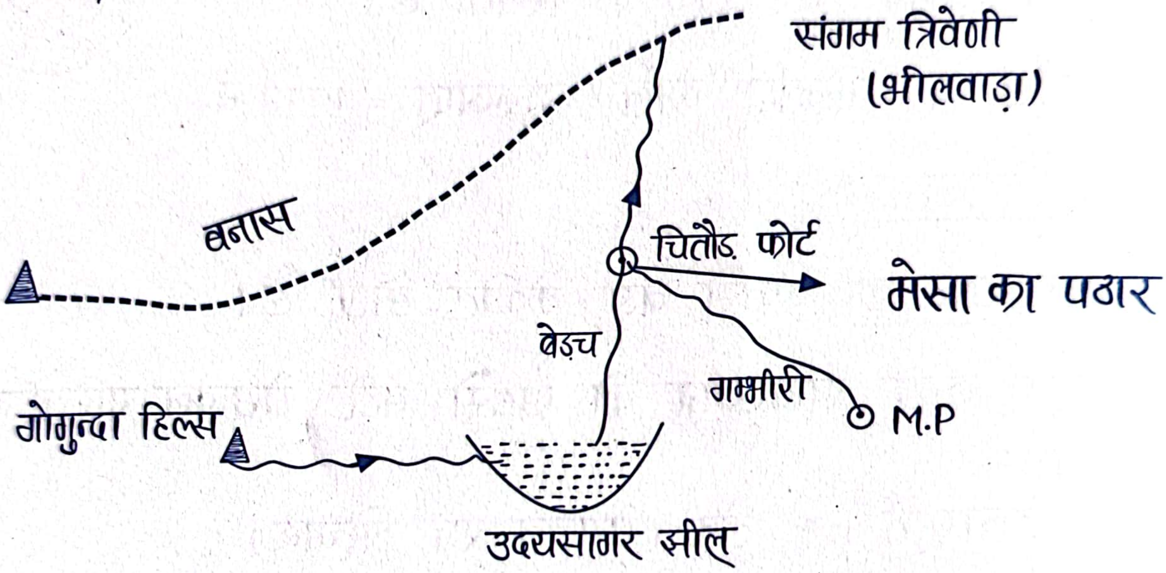

विशेषताएँ-

1. उदयसागर झील (उदयपुर) → आयड़ नदी इस झील में गिरने बाद बेड़च कहलाती है।
2. चितौड़ दुर्ग- यह बेड़च एवं गम्भीरी नदी के किनारे स्थित है।
3. बेड़च बनास में दाईं ओर से मिलने वाली सबसे लम्बी सहायक नदी है।

4. गंभीर नदी/ ऊंटगन नदी-

- उद्गम- सपोटरा तहसील (करौली)
- संगम - यमुना (मैनपुरी, UP)
- लम्बाई - 288 किमी

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

MAHECHA PUBLICATION

- अपवाह क्षेत्र - BCD (भरतपुर, करौली, धौलपुर)
- सहायक नदियाँ- पार्वती-II या पार्वती

TRICK→ अ मा भदार्वरी भैंस बहारखड़ी
↓
अटा माची भद्रावती भैंसावट बरखेड़ा

पाँचना बाँध (करौली)
↓
राजस्थान का सबसे बड़ा मिट्टी का बाँध है।

NOTE→ जब अजान बाँध में जल की कमी होती है तब जलापूर्ति पाँचना बाँध से की जाती है।

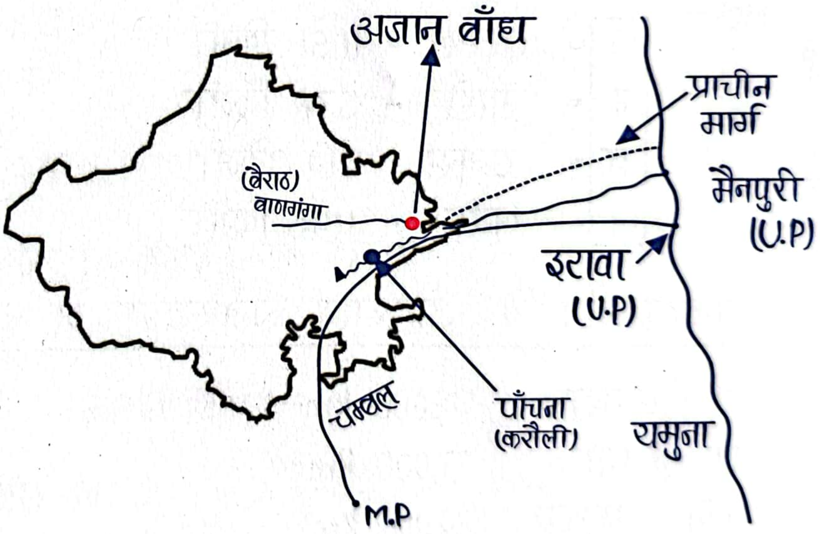

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

अपवाह तंत्र से सम्बन्धित अन्य महत्वपूर्ण तथ्य- (Only RAS Pre)

1. राजस्थान में

- सर्वाधिक नदियाँ
  - जिला → चित्तौड़
  - सम्भाग → कोटा
- न्यूनतम नदियाँ
  - जिला → बीकानेर, चूरू
  - सम्भाग → बीकानेर

2. राजस्थान की लम्बी नदियाँ-

(i) उत्तरी राजस्थान की सबसे लम्बी नदी - घग्घर

(ii) पश्चिमी राजस्थान या मरूस्थल में सबसे लम्बी नदी - लूनी नदी

(iii) द. राजस्थान / आदिवासी क्षेत्र की सबसे लम्बी नदी - माही नदी

(iv) पूर्वी राजस्थान / राजस्थान की सबसे लम्बी नदी - चम्बल नदी

NOTE- केवल / पूर्णतः राजस्थान में सबसे लम्बी नदी - बनास नदी

3. लम्बाई के अनुसार नदियों का क्रम (अवरोही क्रम)-

Trick-

च	चम्बल	1051 किमी
म	माही	576 किमी
ब	बनास	512 किमी
ल	लूनी	495 किमी

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

4. अपवाह क्षेत्र के अनुसार राजस्थान में नदियों का क्रम-

(i) बनास 45,000 Km² (लगभग)

(ii) लूनी 37,000 Km²

(iii) चम्बल 32,000 Km²

(iv) माही 16,000 Km²

(v) बाणगंगा - 8,800 Km²

(vi) साबरमती - 4000 Km²

NOTE- राजस्थान की वह नदी जिसका अपवाह क्षेत्र सबसे बड़ा है- (राजस्थान में) बनास

5. उपबेसीन के अनुसार नदियों का क्रम-

(i) लूनी = 12

(ii) बनास = 10

(iii) चम्बल = 7/8

(iv) माही = 6

CamScanner

6. जल उपलब्धता के आधार पर नदियों का क्रम -

(i) चम्बल
(ii) बनास
(iii) माही

7. राजस्थान की प्रमुख मुख्य नदियाँ एवं सहायक नदियाँ-

(i) सागी = लूनी
साबी = अन्तः प्रवाह

(ii) सुकड़ी = लूनी
सुकली = प. बनास

(iii) सीपू = प. बनास
सीप = चम्बल

(iv) प. बनास = अरब सागर

बनास (राजसमन्द) = बंगाल की खाड़ी

(v) मोरेन = माही
मोरेल (जयपुर) = बनास (S.M)

(vi) मांसी = बनास
मानसी = वाकल (साबरमती)

(vii) कालीसिंध = चम्बल (M.P)
कालीसिल = बनास (S.M)

(viii) पार्वती = चम्बल
पार्वती = गम्भीर

(ix) गंभीर = यमुना
गंभीरी = बेड़च (चितौड़ दुर्ग)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

(x) कांतली = तोरावाटी
कांकनी = जैसलमेर की मसूरदी

(xi) रूपारेल = अलवर से भरतपुर (मोती झील)
रूपनगढ़ (AJMR) = सांभर झील

(xii) बांडी = लूनी (अरब सागर) पाली
बांडी = अजमेर (बनास)

(xiii) खारी = शेरगाँव हिल्स (सिरोही) → लूनी (अरब सागर)
खारी = नागौर → सांभर झील (अन्तः प्रवाह)
खारी = बिजराल हिल्स (राजसमंद) → बनास

8. नदियों का महत्व-

- उपजाऊ मैदानों का निर्माण।
- भूमिगत जल स्तर को बढ़ाना।
- जैव विविधता को बढ़ाना।
- पेयजल आपूर्ति
- सिंचाई के लिए जलापूर्ति
- धार्मिक महत्व (त्रिवेणी संगम)
- मत्स्यपालन
- जल विद्युत (चंबल, माही, जाखम)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

झीलें

- पानी की प्रकृति के आधार पर राजस्थान की झीलों को २ भागों में बाँटा जाता है–

1. खारे पानी की झीलें
- कारण- टेथिस सागर के अवशेष
- सर्वाधिक- डीडवाना-कुचामन / नागौर

2. मीठे पानी की झीलें
- कारण- वर्षा जल व नदी जल पर आधारित
- सर्वाधिक - उदयपुर

1. खारे पानी की झीलें

- राजस्थान के उ. प. में खारे पानी की झीलें अधिक पाई जाती है, क्योंकि यहाँ झीलों के नीचे माईकाशिष्ट चट्टानें पाई जाती है।

1. सांभर = जयपुर ग्रामीण
2. पचपदरा = बालोतरा
3. डीडवाना = डीडवाना कुचामन
4. कुचामन = डीडवाना कुचामन
5. नावां = डीडवाना, कुचामन
6. डेगाना = नागौर → टंगस्टन की खानें

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

CamScanner

7. रैवासा = सीकर

8. कोछोर = सीकर

9. तालछापर = चुरु

10. लूणकरणसर = बीकानेर

11. फलौदी = फलौदी

12. कावोद = जैसलमेर
(काणोद)

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

① सांभर झील :-

- यह जयपुर ग्रामीण में स्थित खारे पानी की झील है।
- निर्माता - वासुदेव चौहान
  - (बिजौलिया शिलालेख के अनुसार)
- विशेषताएँ -

(i) सांभर का निर्माण पाँच नदियों से मिलकर हुआ है
- मेंथा - सर्वाधिक लवणता लाती है
- रूपनगढ़
- खारी
- तुरतमति
- खंडेल

(ii) सांभर राजस्थान की सबसे बड़ी एवं देश की तीसरी सबसे ब. खारे पानी की झील है।

Ist = चिल्का झील (odisha)
IInd = पुलीकट (A.P & Tamilnadu)

(iii) देश में सर्वाधिक नमक उत्पादन सांभर झील से होता है -
- भारत = 8.9 %
- राजस्थान = 80-90 %

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(iv) सांभर झील संयुक्त उपक्रम द्वारा संचालित है।

सांभर

- केन्द्र सरकार — HSL (हिन्दुस्तान साल्ट लिमिटेड) → 60%
- राज्य सरकार — SSL (सांभर साल्ट लिमिटेड) → 40%

(v) क्यार- सांभर से उत्पादित नमक को 'क्यार' कहते हैं।

(vi) सांभर झील रामसर साईट सूची में शामिल = 1990 में (दूसरी)

↓

राजस्थान की पहली रामसर साईट - केवलादेव (1981)

जिसमें संरक्षित जीव — कुरंजा, राजहंस (फ्लेमिंगोल)

NOTE- सर्वाधिक कुरंजा पक्षी - खींचन गाँव (फलौदी)

NOTE- हाल ही में (2019 में) सांभर झील कुरजा पक्षियों की मृत्यु के कारण चर्चा में था।

कारण- एवियन बोटुलिज्म
(बैक्टीरिया से होने वाली बीमारी – लकवा मारना,

7. सांभर झील देश में सबसे बड़ी अन्तः स्थलीय खारे पानी की झील है।

पचपदरा झील-

→ यह बालोतरा में स्थित एक खारे पानी की झील है।

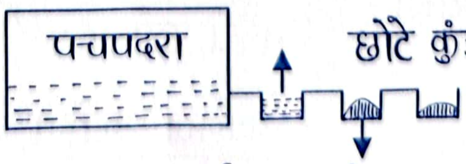

छोटे कुंड/ कुएँ = कोसिया

→ पानी के रिसाव के बाद बचा हुआ पदार्थ ← रेस्ता (उत्पादित नमक)

CamScanner

विशेषताएँ-

(i) इस झील से सर्वश्रेष्ठ नमक उत्पादित होता है। क्योंकि इस झील में 98% NaCl होता है।

(ii) खारवाल → यह एक जाति है जो पचपदरा से नमक उत्पादन करने का कार्य करती है।

(iii) मोरली → यह एक झाड़ी है। जो पचपदरा में नमक उत्पादन करने में उपयोगी है।

डीडवाना झील-

यह डीडवाना-कुचामन में स्थित एक खारे पानी की झील है।

विशेषताएँ-

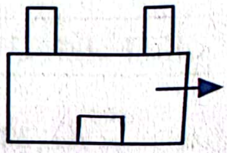

→ राजस्थान राज्य केमिकल वर्क्स 1964

Km^2

(i) इस झील से निम्न श्रेणी का नमक उत्पादन होता है, क्योंकि यहाँ पर NaCl के स्थान पर सोडियम सल्फेट पाया जाता है।

(ii) इस झील के निकट 'Rajasthan State Chemical Works-1964' डीडवाना में स्थापित किया गया।

* Na_2SO_4 के उपयोग-
- काँच उद्योग
- कागज उद्योग
- चमड़ा उद्योग

THE NOTES HUB All Notes are Available All Competition Books 7300134518, 7610010054

२. मीठे पानी की झीलें

- राजस्थान में मीठे पानी की झील सर्वाधिक अरावली (उदयपुर) में पाई जाती है।
- राजस्थान में सर्वाधिक झील उदयपुर में स्थित है।
- इस कारण उदयपुर को झीलों की नगरी कहते है।

1. **जयसमन्द झील / ढेबर झील** – (समन्द - अर्थ→ महासागर की तरह)

- स्थिति - सलूम्बर (ढेबर नाल)
- निर्माता - महाराणा जयसिंह
- निर्माण काल - 1685 - 1691 ई. में
- यह गोमती नदी पर स्थित है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

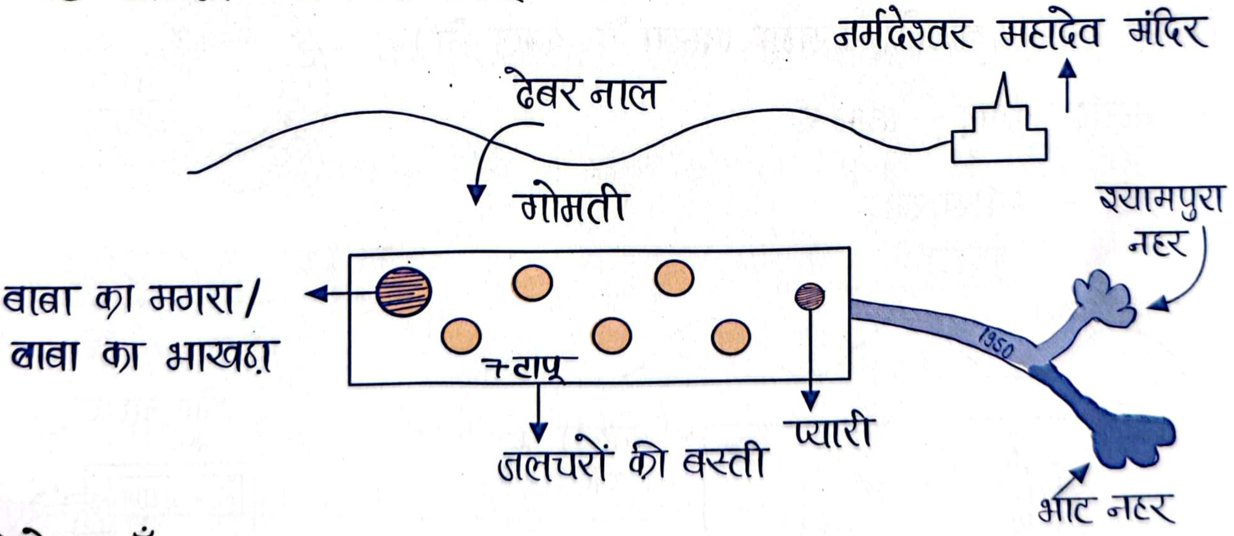

विशेषताएँ-

(i) जयसमंद झील मीठे पानी की सबसे बड़ी (कृत्रिम) झील है।

(ii) इस झील में सर्वाधिक टापू (7) स्थित है।

सबसे बड़ा टापू → बाबा का मगरा

प्यारी ← सबसे छोटा टापू

(iii) इस झील में निवास करने वाली जनजाति भील - मीणा है।

(iv) इस झील से सिंचाई के लिए दो नहरें निकाली गई।

जिसमें

- श्यामपुरा नहर
- भाट नहर

(v) नर्मदेश्वर महादेव मन्दिर एवं हाथियों की प्रतिमा इस झील के निकट स्थित है।

(vi) इस झील में जलीय जैव विविधता अधिक पाई जाती है।

↳ इस कारण इस झील को 'जलचरों की बस्ती' कहा जाता है

(vii) इस झील को 'ढेबर झील' कहा जाता है।

२. पिछोला झील - उदयपुर

↳ निर्माता - बन्जारे (राणा लाखा के काल में)

↳ निर्माण काल - 1388 ई.

↳ नदी - सीसारमा
बूसड़ा

THE NOTES HUB Notes are Available All Competition Books 7300134518, 7610010054

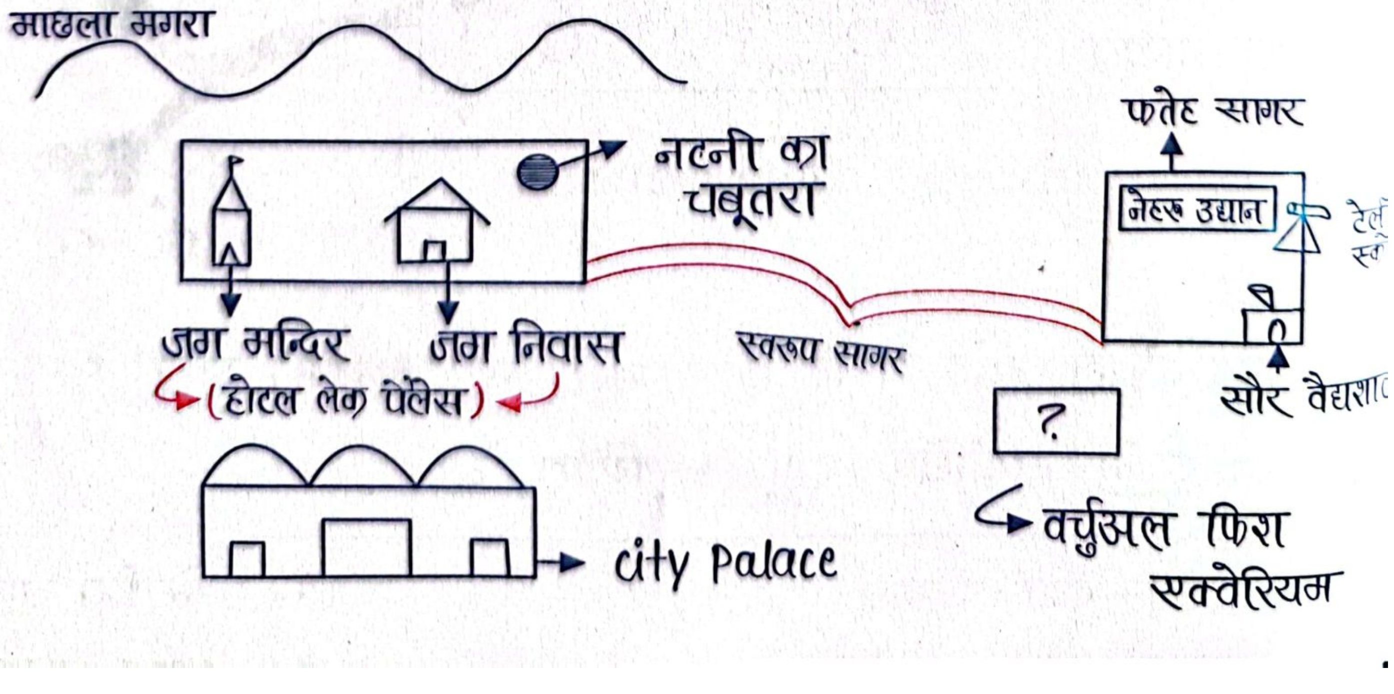

विशेषताएँ-

- पिछोला झील को बैलों की समृद्धि / याद में बनवाया गया।
- इस झील से संबंधित ऐतिहासिक धरोहर :-
  - नटनी का चबूतरा (राणा लाखा)
  - जगमन्दिर (जगतसिंह-I)
  - जगनिवास (जगतसिंह-II)
  - Udaipur City Palace

(iii) जगमन्दिर एवं जगनिवास महल वर्तमान में 'होटल लेक पैलेस' के रूप में संचालित है।

(iv) राजस्थान की प्रथम सौर नाव एवं इलेक्ट्रिक नाव इस झील में संचालित की गई।

(v) पिछोला झील के अतिरिक्त जल को 'फतेह सागर' में छोड़ा जाता है।

(vi) स्वरूप सागर चैनल → पिछोला झील को फतेहसागर से जोड़ा जाता है।

3. **फतेहसागर झील / देवाली तालाब / ड्यूक ऑफ कनॉट डैम-**

- स्थिति - उदयपुर
- निर्माता - महाराजा जयसिंह (1688 ई.)
- पुनः निर्माण - 1888 ई. महाराणा फतेहसिंह
- नदी - सीसारमा
  बूसड़ा

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

विशेषताएँ-

(i) इस झील के मध्य नेहरू उद्यान स्थित है। जो पर्यटन को आकर्षित करता है।

CamScanner

(iii) सौर वैद्यशाला, टेलीस्कोप और वर्चुअल फिश एक्वेरियम भी इस झील के निकट स्थित है।

(iv) इस झील में पानी की कमी होने पर मदार बाँध (बेड़च नदी) से जलापूर्ति की जाती है।

4. रंग सागर / अमरकूट-

- स्थिति- उदयपुर
- निर्माणकाल- अमरसिंह बिठला
- नदी - सीसारमा
  बूसड़ा

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

विशेषताएँ-

- यह झील पिछोला एवं स्वरूप सागर से जुड़ी हुई है।

5. बड़ी झील / जाना / जियान सागर)-

- स्थिति - उदयपुर (बड़ी गाँव)
- निर्माता - महाराजा जयसिंह
- निर्माण काल - 1652- 1680 ई.

विशेषताएँ-

(i) इस झील के निकट बाहुबली पहाड़ी स्थित है।

(ii) इस झील में महासीर मछली की प्रजाति पाई जाती है

(iii) यह झील Conservation Reserve में शामिल है।

6. उदयसागर – उदयपुर (1559-64 ई.)

- निर्माता - महाराणा उदयसिंह
- नदी - बेड़च / आयड़
- आयड़ नदी इस झील में गिरने के बाद 'बेड़च' कहलाती है

7. दूधतलाई - उदयपुर
↓
पिछोला के निकट स्थित
(दूध बावड़ी - सिरोही)

THE NOTES HUB Notes are Available All Competition Books 7300134518, 7610010054

8. नक्की झील (सिरोही)-

- यह एक क्रेटर झील / ज्वालामुखी झील का उदाहरण है।

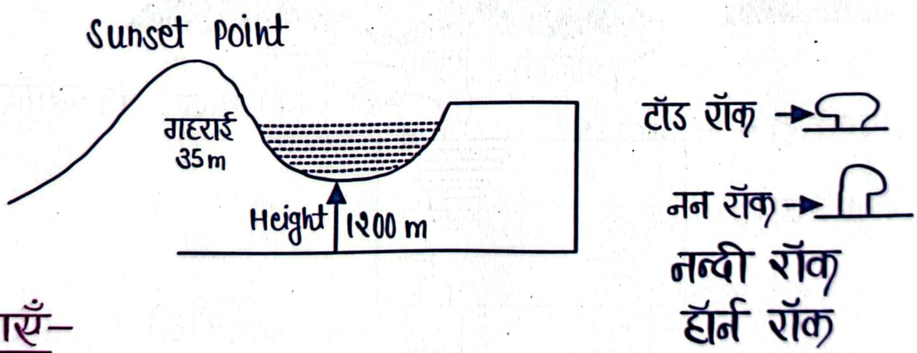

विशेषताएँ-

- लोक कहावतों के अनुसार इस झील का निर्माण नाखूनों से हुआ है।
- यह राजस्थान की सबसे ऊँची एवं सबसे गहरी झील है।
  (1200 मी.) (35 मी.)
- नक्की झील राजस्थान की सबसे ठण्डी झील है।
- राजस्थान में एकमात्र हिल स्टेशन वाली झील है।

- इस झील पर Sunset Point स्थित है। जो पर्यटन को आकर्षित करता है।
- गरासिया जनजाति के द्वारा अस्थियों का विसर्जन इसी झील में किया जाता है।

9. राजसमंद झील-

- स्थिति - राजसमन्द
- निर्माता - महाराजा राजसिंह
- निर्माणकाल - 1662-76 ई.
- नदियाँ - गोमती, ताली, केलवा

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

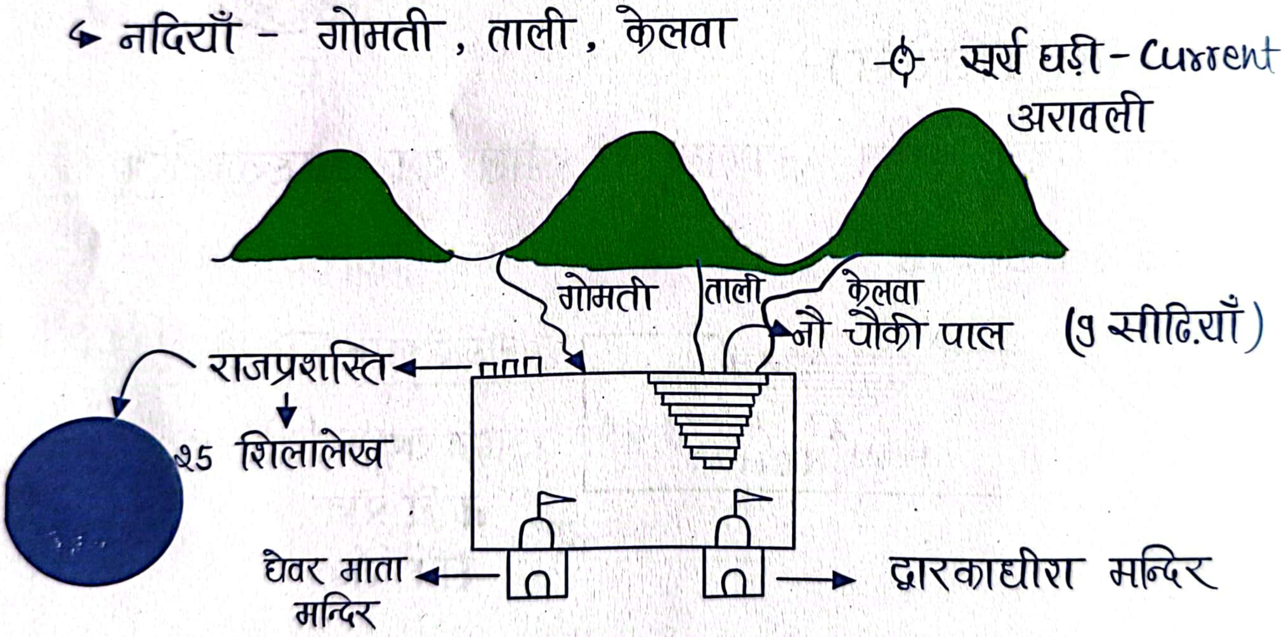

विशेषताएँ-

- राजसमंद झील राजस्थान की प्रथम अकाल राहत झील है।
- इस झील के निर्माण में सर्वाधिक लोगों (60,000) ने योगदान दिया है।
- घेवर माता मन्दिर व द्वारकाधीश मन्दिर इसी के किनारे स्थित है।

- इस झील के किनारे नौ चौकी पाल स्थित है।
- राजप्रशस्ति भी इसी झील के निकट स्थित है।

10. पुष्कर झील-

- पुष्कर झील अजमेर (पुष्कर) में स्थित है।
- जो क्रेटर या ज्वालामुखी झील का उदाहरण है।

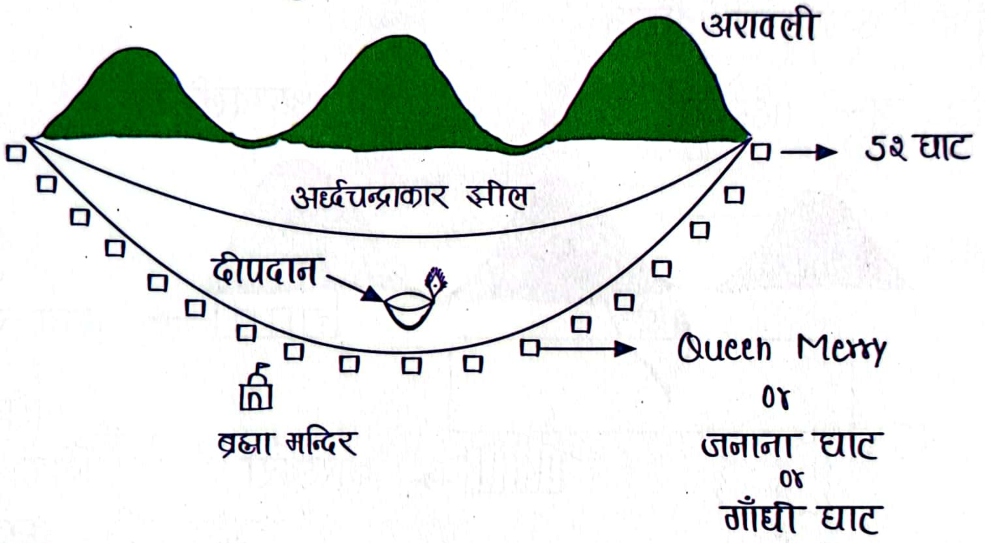

विशेषताएँ-

- पुष्कर राजस्थान की सबसे पवित्र झील मानी जाती है।
- इस झील में अस्थियों का विसर्जन अधिक होता है।
  जैसे-
  - गाँधीजी
  - अटल बिहारी वाजपेयी
  - बाल ठाकरे
  - किरोडी सिंह बैंसला
- कार्तिक पूर्णिमा को इस झील के किनारे मेले का आयोजन होता है। जिसे राजस्थान का रंगीला मेला कहा जाता है।
- झील के निकट ब्रह्मा जी का मन्दिर स्थित है।

- कार्तिक पूर्णिमा को इस झील में दीपदान किया जाता है।
- पुष्कर झील राजस्थान में सबसे बड़ी मीठे पानी की प्राकृतिक झील है।

11. आनासागर or अर्णोराज सागर-

- स्थिति - अजमेर शहर　　　　नदी - बांडी
- निर्माता - अर्णोराज चौहान
- निर्माणकाल - 1136-1137 ई.

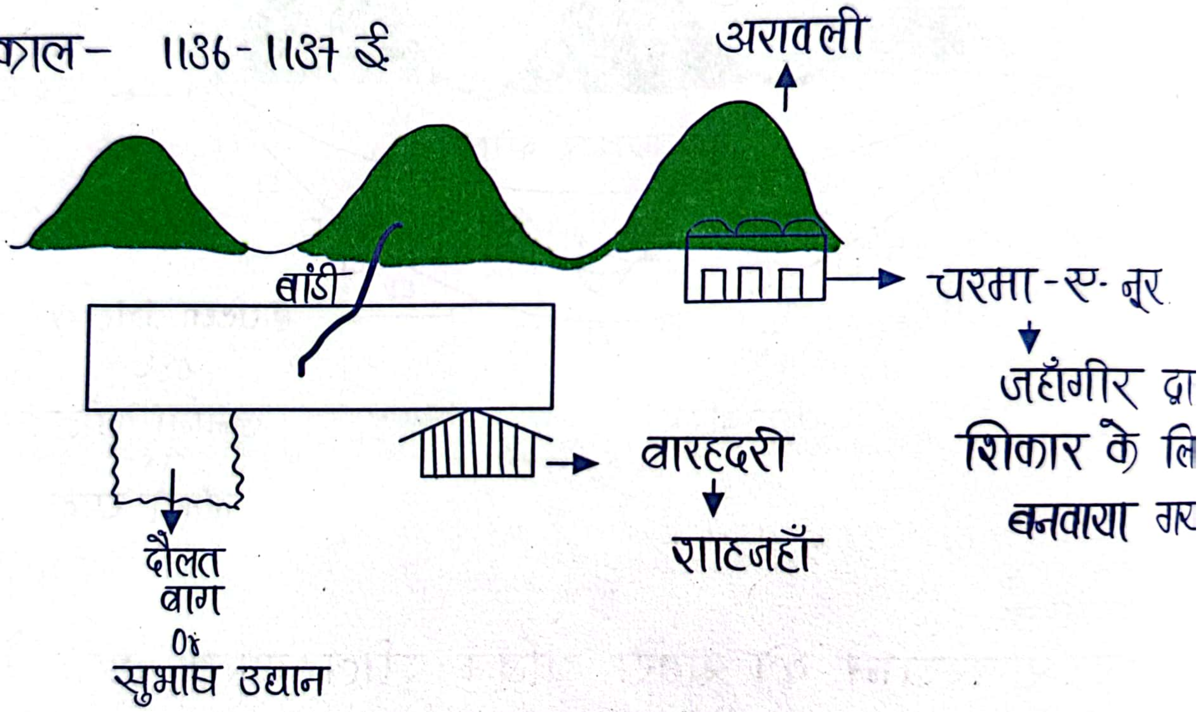

12. फॉय सागर-

- निर्माता - इंजीनियर फॉय
- निर्माण काल = 1891-92 ई.
- नदी = बांडी

- विशेषताएँ-

(i) राजस्थान की दूसरी अकाल राहत झील फॉय सागर है। (1st = राजसमंद = 1662 ई.)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

13. मानसागर - जयपुर

- निर्माता - मानसिंह
- निर्माण काल = 1610 ई.

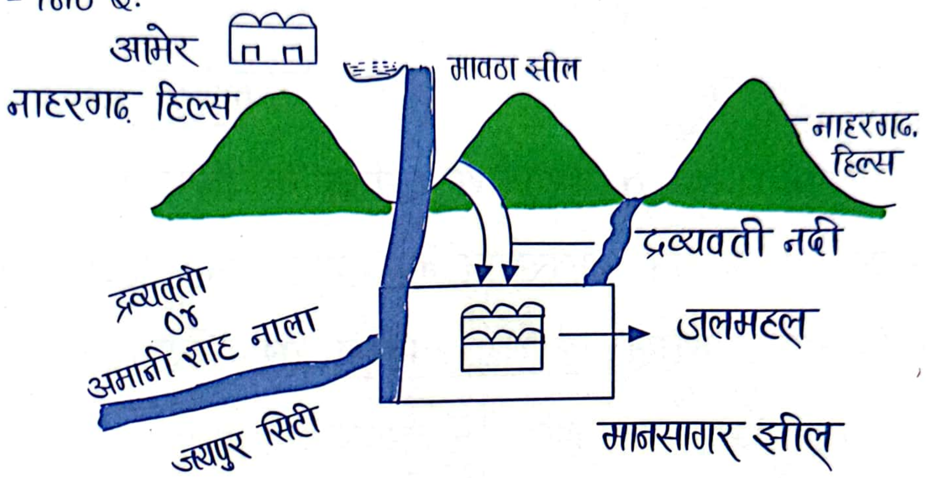

विशेषताएँ-

- मानसागर झील राजस्थान की सर्वाधिक प्रदूषित झील है।
- जल महल इसी झील में स्थित है।
- नाहरगढ़ पहाड़ी इस झील के निकट स्थित है।
- द्रव्यवती नदी या अमीना शाह नाला मानसागर झील से उद्गमित होता है।

14. मावठा झील-

- स्थिति- जयपुर (वर्षा जल पर आधारित)
- यह एक प्राकृतिक झील है जो आमेर दुर्ग के निकट स्थित है।

15. सिलीसेढ़ झील-

- स्थिति - अलवर (सरिस्का)
- निर्माता - महाराजा विनयसिंह

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

CamScanner

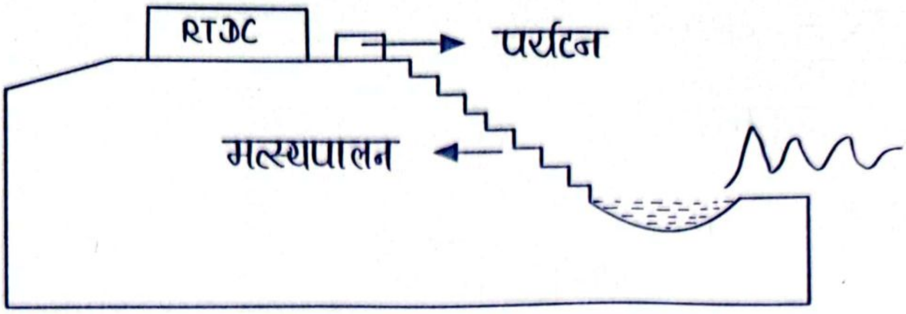

विशेषताएँ-

- मत्स्य पालन व स्थानीय पर्यटन के लिए प्रसिद्ध।
- इस झील को राजस्थान का 'नन्दन कानन' कहा जाता है।
- सिलीसेढ़ झील स्वर्णिम त्रिकोण पर स्थित है।
  - जयपुर
  - दिल्ली
  - आगरा

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

16. कायलाना झील- (सर प्रताप सागर झील)

- स्थिति - जोधपुर
- निर्माता- सर प्रताप सिंह
- निर्माण काल = 1872 ई.

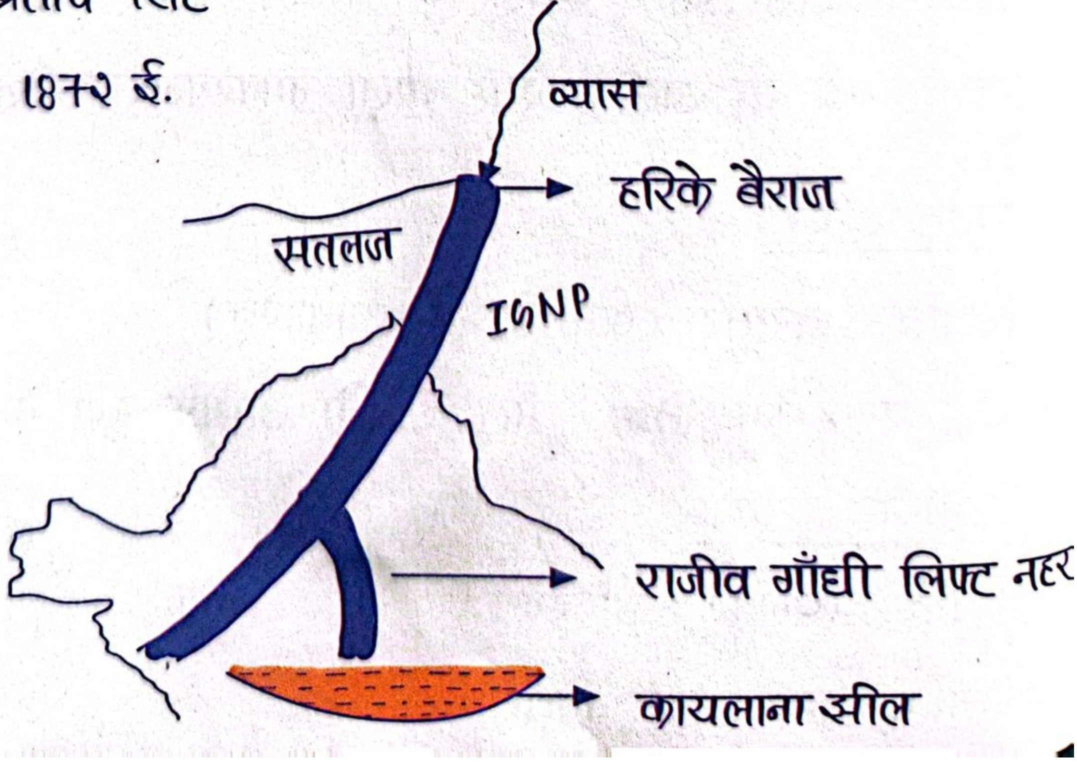

विशेषताएँ-

- कायलाना राजस्थान की एकमात्र झील है जो IGNP से जुड़ी हुई है।

17. कोलायत झील (कपिल सरोवर)- बीकानेर

- निर्माता - कपिल मुनि

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

विशेषताएँ-

(i) इस झील के किनारे 52 घाट स्थित है।

(ii) कार्तिक पूर्णिमा को इस झील के किनारे मेले का आयोजन होता है।

(iii) कार्तिक पूर्णिमा को इस झील में दीपदान किया जाता है।

NOTE→ चारण जाति कोलायत झील में भ्रमण (दर्शन) नहीं करती है क्योंकि यहाँ उनकी पूज्य करणी माता के गोद लिए हुए पुत्र की मृत्यु हुई थी।

18. गजनेर झील- (वर्षा जल पर आधारित)

- स्थिति - बीकानेर (गजनेर पैलेस के निकट)
- निर्माता - महाराजा गंगासिंह

NOTE→ गजनेर झील को 'पानी का शुद्ध दर्पण' कहा जाता है।

19. रामगढ़ झील-

- स्थिति - बारां

विशेषताएँ-

(i) यह एक क्रेटर/ उल्कापिंड झील का उदाहरण है।

(ii) यह झील घोड़े की नाल जैसी पहाड़ियों से घिरी हुई है।

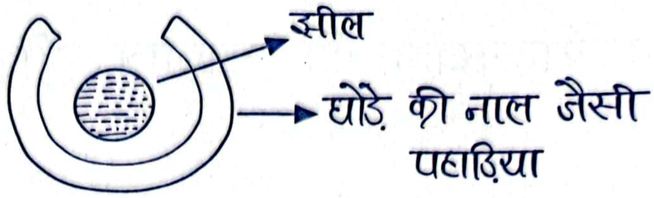

(iii) UNESCO के द्वारा इस झील को 2020 में भू-विरासत की सूची में शामिल किया गया।
(अधिसूचित = 2024)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

1. राजस्थान की अन्य महत्वपूर्ण झीलें-

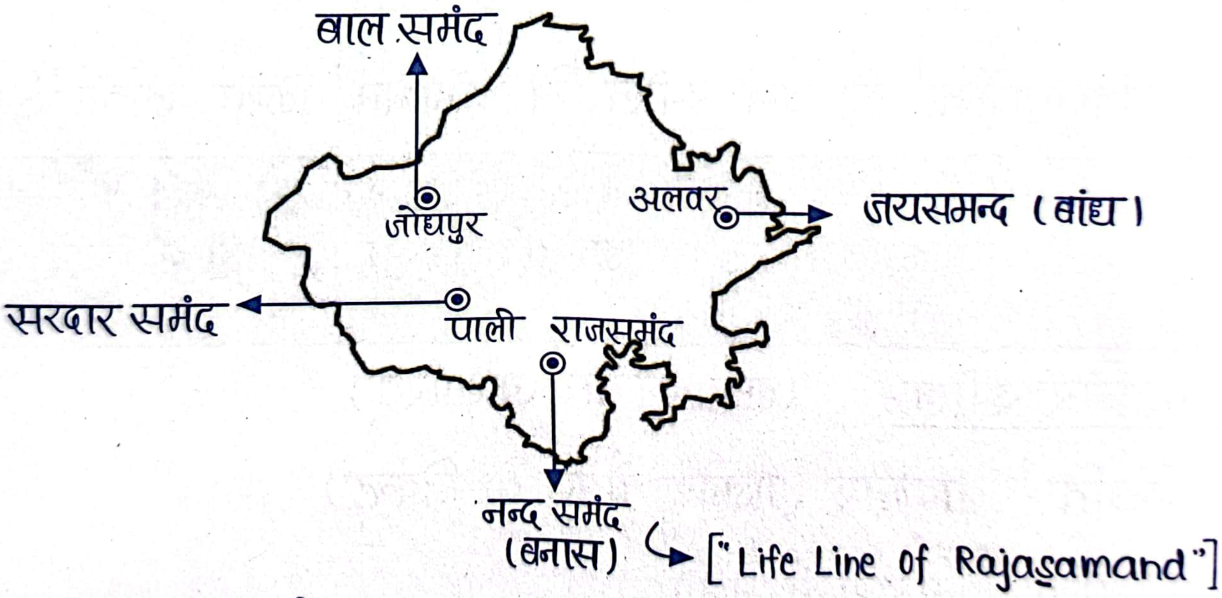

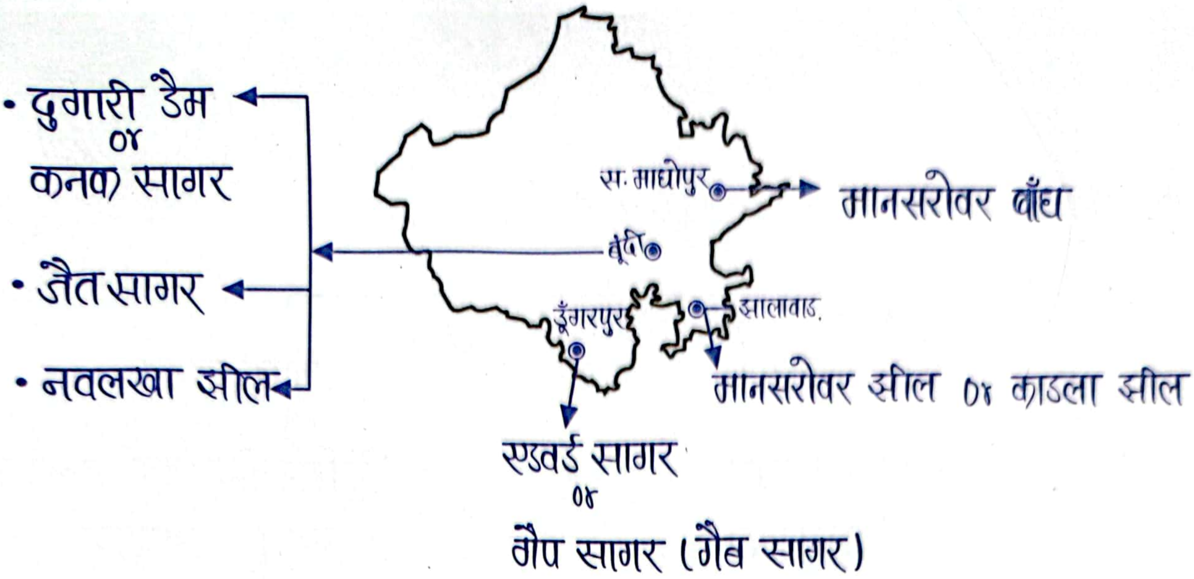

NOTE-

नवलखा → झील = बूंदी
नवलखा → तालाब = बारां
नवलखा → बावड़ी = डूँगरपुर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

राष्ट्रीय झील संरक्षण योजना-

- शुरुआत = 2001 / 1 अप्रैल 2016
- वित्तीय सहयोग = केन्द्र : राज्य

केन्द्र	राज्य
60%	40%

- इस कार्यक्रम में शामिल राजस्थान की झीलें - (6)

1. मानसागर (जयपुर)
2. पुष्कर (अजमेर)
3. आनासागर (अजमेर)
4. पिछोला (उदयपुर)
5. फतेहसागर (उदयपुर)
6. नक्की झील (सिरोही)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

राजस्थान के प्रमुख नलकूप / कुएँ-

- चाँदन नलकूप → 'थार का घड़ा' (जैसलमेर)
- बाटाड़ू कुआं → 'रेगिस्तान का जलमह
  - बायतू - बाड़मेर
  - मार्बल निर्मित

झीलों के महत्व-

- नमक उत्पादन → Ex. सांभर, पचपदरा, डीडवाना
- पर्यटन – Ex. नक्की, मानसागर, पुष्कर
- जल संरक्षण
- पेयजल – Ex. पिछौला, आनासागर
- सिंचाई
- जैव विविधता → जयसमंद
- मत्स्य पालन
- धार्मिक महत्व → पुष्कर, कोलायत, नक्क
- भू- जल संरक्षण

CS CamScanner

सिंचाई परियोजना

- सिंचाई के साधन
- सिंचाई परियोजनाओं का वर्गीकरण
- अन्य प्रमुख परियोजनाएँ

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

सिंचाई के साधन-

	नलकूप	नहर	कुएँ	तालाब	अन्य स्रोत
सिंचाई में योगदान	42%	30%	24%	1%	3%
सर्वाधिक	जयपुर	श्रीगंगानगर	जयपुर	भीलवाड़ा, पाली	

सिंचाई परियोजनाओं का वर्गीकरण-

सिंचित क्षेत्र के आधार पर सिंचाई परियोजनाओं को 3 भागों में बाँटा गया है-

	लघु सिंचाई परियोजनाएँ	मध्यम सिंचाई परियोजनाएँ	वृहद सिंचाई परियोजनाएँ
क्षे॰ =	0-2000 हैक्टेयर	2000-10,000 हैक्टेयर	10,000 या अधिक है.

NOTE- राजस्थान में सिंचाई में सर्वाधिक योगदान लघु सिंचाई परियोजनाओं का है।

बहुउद्देशीय परियोजनाएँ-

वे परियोजनाएँ जिनके दो या दो से अधिक उद्देश्य हो, उन्हें बहुउद्देशीय परियोजनाएँ कहते है।

जैसे- सिंचाई, पेयजल आपूर्ति, जल विद्युत।

CamScanner

> NOTE ➜ नेहरू जी ने बहुउद्देशीय परियोजनाओं को आधुनिक भारत के मन्दिर कहा था।

1. प्रथम बहुउद्देशीय परियोजना-

- विश्व → टेनेसी (U.S.A- १९३३)
- भारत → दामोदर (१९४८)
- राजस्थान → गंगनहर (1950 के बाद)

राजस्थान की प्रमुख बहुउद्देशीय परियोजनाएँ-

- नदी घाटी बहुउद्देशीय परियोजना
- नहर बहुउद्देशीय परियोजना

* नदी घाटी बहुउद्देशीय परियोजना-

1. चम्बल बहुउद्देशीय परियोजना
2. माही बहुउद्देशीय परियोजना
3. भाखड़ा-नागल (सतलज) बहुउद्देशीय परियोजना
4. ब्यास बहुउद्देशीय परियोजना
5. रेणुकाजी (गिरी) बहुउद्देशीय परियोजना
6. लखवार (यमुना) बहुउद्देशीय परियोजना

1. चम्बल बहुउद्देशीय परियोजना-

➜ राजस्थान + M.P की संयुक्त परियोजना है।
जिसमें सहयोग – राजस्थान (50%) + M.P (50%)

➜ इस परियोजना के तहत 3 चरणों में कुल 4 बाँधों का निर्माण किया गया।

(i) प्रथम चरण ➜ गाँधी सागर (M.P), कोटा बैराज

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

(ii) द्वितीय चरण → राणा प्रताप सागर (चित्तौड़गढ़)

(iii) तृतीय चरण → जवाहर सागर / कोटा डैम (कोटा-बूंदी)

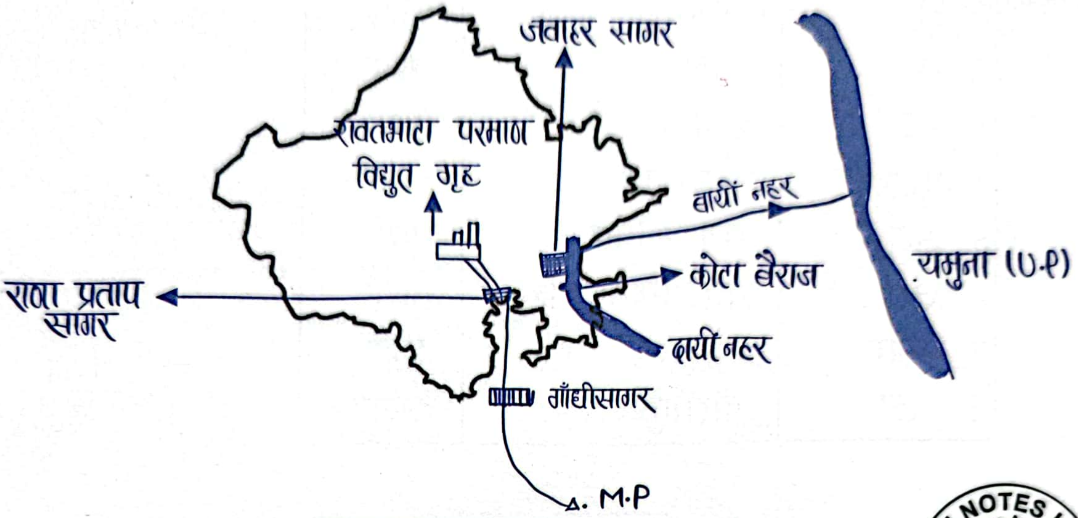

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

प्रथम चरण

गाँधी सागर (M.P)

- स्थिति - मंदसौर (M.P)
- चम्बल नदी पर सबसे ऊँचा व बड़ा बाँध है।
- जल विद्युत उत्पादन क्षमता
  ↓
  5 यूनिट × 23 Mega Unit
  = 115 M.W

कोटा बैराज

- स्थिति - कोटा
- इसे चम्बल का सिंचाई बाँध कहा जाता है।
- सिंचाई हेतु इस बाँध से दो नहरे निकलती है -
  - बायीं नहर → कोटा & बूंदी
  - दायीं नहर → कोटा - बारां & M.P

NOTE → दायीं नहर = इस नहर पर कुल 14 लिफ्ट नहरें स्थित है, जिनमें से 8 राजस्थान एवं 6 M.P में स्थित है।

* राजस्थान में स्थित लिफ्ट नहरें-

Trick	लिफ्ट नहर	जिले
1. दी	दिगोद	कोटा
2. प	पचेल	बारां
3. क	कचारी	बारां
4. गणेश	गणेशगंज	बारां
5. अा	अतां लिफ्ट	बारां
6. आ	अतां माइनर लिफ्ट	बारां
7. सो	सोरखंड	बारां
8. जा	जालीपुरा	कोटा

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010...

द्वितीय चरण
↓
राणा प्रताप सागर

- स्थिति – चितौड़
- राजस्थान का सबसे बड़ा बाँध है।
- राणा प्रताप सागर बाँध से ही रावतभाटा परमाणु विद्युत गृह को जल की जाती है।
- इस बाँध की जल विद्युत उत्पादन क्षमता - 4 Unit x 43 M.W = 172 M.W

तृतीय चरण
↓
जवाहर सागर डैम or कोटा बाँध

- स्थिति - कोटा - बूँदी
- जवाहर सागर को 'चम्बल का पिकअप बाँध' कहा जाता है।
- जल विद्युत उत्पादन क्षमता = 3 Unit x 33 = 99 M.W

CamScanner

NOTE-

- चम्बल बहुउद्देशीय परियोजना से उत्पादित कुल जल विद्युत उत्पादन = 386 M.W
- जिसमें - Rajasthan : MP
  193 MW : 193 MW

२. माही बहुउद्देशीय परियोजना-

- यह राजस्थान व गुजरात की सयुंक्त परियोजना है।
  - राजस्थान 45%
  - गुजरात 55%
- इस परियोजना के तहत माही नदी पर तीन बाँधों का निर्माण किया गया है।
  - माही बजाज सागर
  - कागदी डैम
  - कडाना डैम

(i) माही बजाज सागर- (3109m)

- स्थिति- बोरखेड़ा (बांसवाड़ा)
- यह राजस्थान का सबसे लम्बा एवं आदिवासी क्षेत्र का सबसे बड़ा बाँध है।

(ii) कागदी बाँध- बांसवाड़ा

- इसे 'माही का पिकअप बाँध' कहा जाता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(iii) कडाना बाँध-

- स्थिति- महीसागर (गुजरात)
- इस बाँध की जलविद्युत उत्पादन क्षमता = 140 MW

CamScanner

राजस्थान में माही नदी पर जल विद्युत उत्पादन क्षमता-

- I[st] चरण (१९८६) → २ यूनिट x २५ मेगावाट = ५० मेगावाट
- II[nd] चरण (१९८९) → २ यूनिट x ४५ मेगावाट = ९० मेगावाट

140 M.W कुल

- उत्पादित सम्पूर्ण जल विद्युत केवल राजस्थान के आदिवासी क्षेत्र में वितरित की जाती है।

3. भाखड़ा-नांगल (सतलज) बहुउद्देशीय परियोजना-

(भारत की सबसे बड़ी बहुउद्देशीय परियोजना)

- सहयोग- पंजाब, हरियाणा, राजस्थान (१५.२%)
- नदी= सतलज

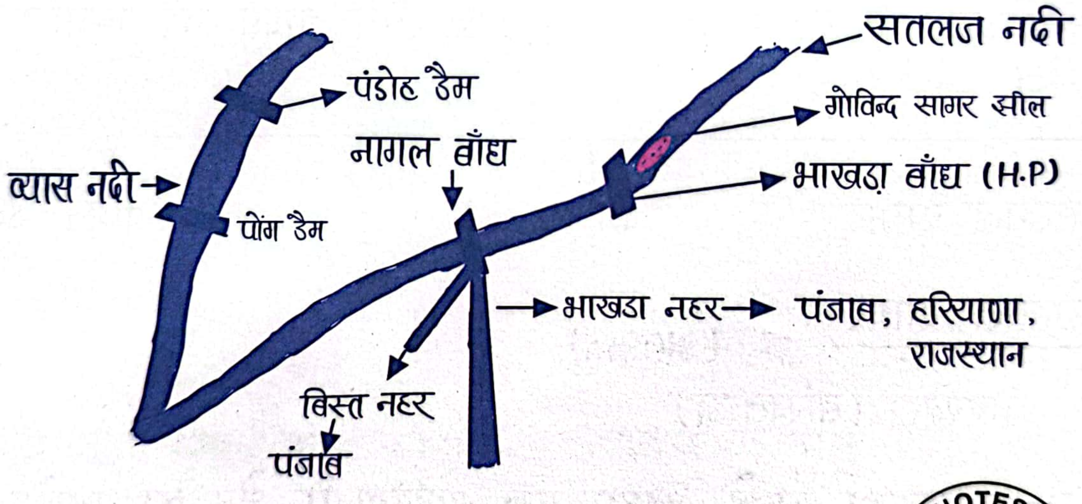

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(A) भाखड़ा बाँध-

- स्थिति - बिलासपुर (H.P)
- यह भारत का सबसे ऊँचा गुरुत्वीय बाँध (२६० मी.) है।
- गोविन्द सागर झील भाखड़ा बाँध के पीछे स्थित है।
- नेहरू जी ने भाखड़ा बाँध को "भारत की चमत्कारी विराट वस्तु" कहा

(B) नांगल बाँध-

- स्थिति - रोपड़ / रूपनगर (पंजाब)
- सिंचाई के लिए इस बाँध से दो नहरें निकाली गई है-

नांगल बाँध
- बायीं नहर → भाखड़ा नहर → पंजाब, हरियाणा, राजस्थान
- दायीं नहर → बिस्त नहर → पंजाब

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

विशेषताएँ-

(i) भाखड़ा-नागल भारत एवं राजस्थान की सबसे बड़ी बहु-उद्देशीय परियोजना है।

(ii) राजस्थान में इस परियोजना से सर्वाधिक लाभान्वित जिला – हनुमानगढ़.

4. व्यास बहुउद्देशीय परियोजना-

- सहयोग:- • पंजाब
  • हरियाणा
  • राजस्थान

[राजस्थान को लाभ = १. पोंग डैम (H.P) - ८७%
२. पंडोह (H.P) - २०%]

विशेषताएँ-

(i) जब शीत ऋतु में IGNP में पानी की कमी होती है तो 'पोंग बाँध से जलापुर्ति की जाती है।

(ii) राजीव गाँधी = लोंगोवाल सम्मेलन (१९८५)
इराडी कमीशन (१९८६)
] व्यास परि. से संबंध

5. रेणुकाजी बहुउद्देशीय परियोजना-

- स्थिति - सिरमौर (H.P)
- नदी - गिरि
- आर्थिक सहयोग - केन्द्र : राज्य
  90 : 10
- लाभान्वित राज्य - H.P, हरियाणा, उतराखण्ड, राजस्थान, नई दिल्ली
- जल विद्युत उत्पादन क्षमता = 40 MW

6. लखवार (यमुना) बहुउद्देशीय परियोजना-

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- स्थिति - देहरादून (U.K)
- नदी - यमुना
- वित्तीय सहयोग - केन्द्र : राज्य
  90 : 10
- लाभान्वित राज्य -
  H.P, हरियाणा, उतराखण्ड, राजस्थान, नई दिल्ली
- जल विद्युत उत्पादन क्षमता = 300 MW

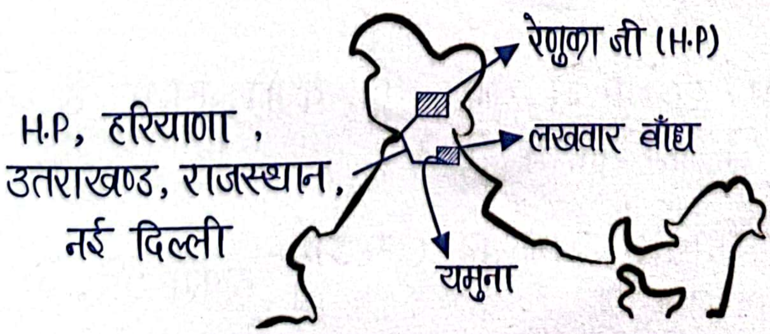

1. नहर बहुउद्देशीय परियोजना–

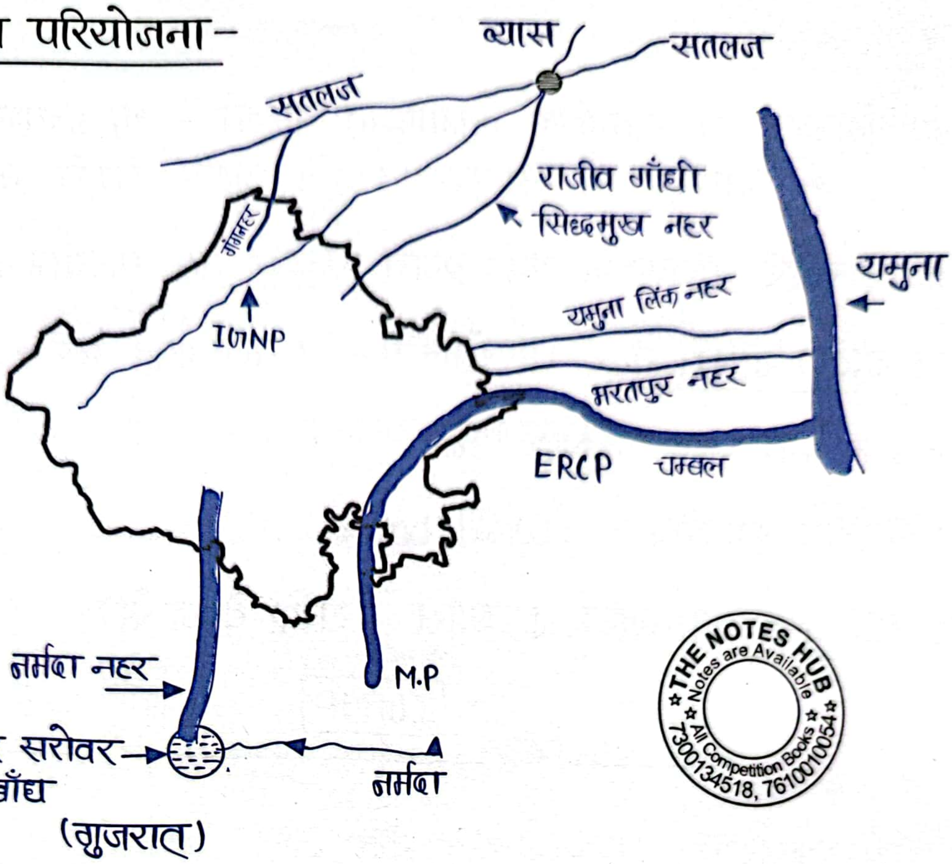

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books 7300134518, 7610010054

1. गंगनहर (बीकानेर नहर)–

- निर्माता - महाराजा गंगासिंह
  - 'आधुनिक भारत के भागीरथ'
- निर्माण काल - 1922-27 ई.
- नदी - सतलज

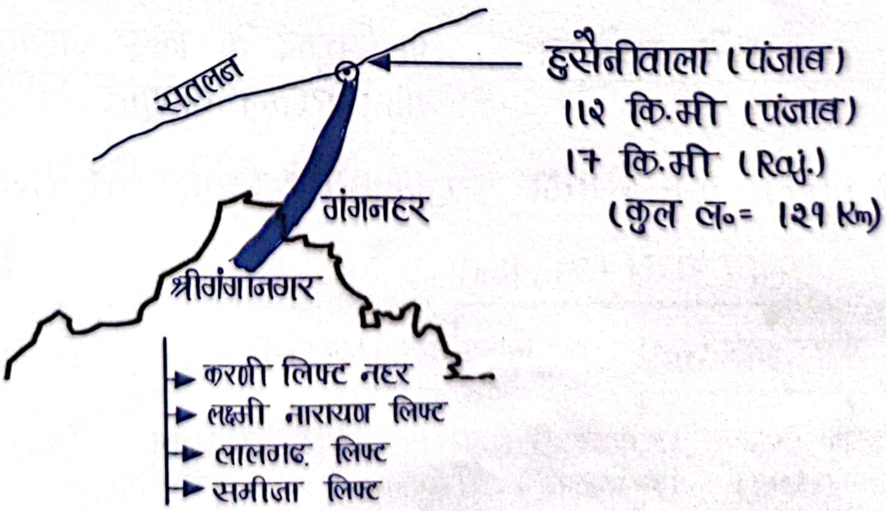

विशेषताएँ-

(i) गंगनहर से सर्वाधिक लाभान्वित जिला - श्री गंगानगर
↳ भारत या राजस्थान की प्रथम पक्की नहर।

(ii) गंगनहर राजस्थान की प्रथम बहुउद्देशीय परियोजना है।

२. इंदिरा गाँधी नहर परियोजना- (राजस्थान नहर→ शुरुआती नाम)

→ नाम परिवर्तन = २ NOV. 1984

→ वित्तीय सहयोग = World bank

→ नदियाँ = सतलज & व्यास (हरिके बैराज से)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

IGNP
- योजनाकार or कल्पनाकार → इंजी. कंवरसेन
- नींव → गोविन्द वल्लभ पंत द्वारा 31 मार्च 1958
- उद्घाटन → सर्वपल्ली राधाकृ... (1961)

NOTE- गोविन्द वल्लभ पंत ने राजस्थान नहर को 'मरुगंगा' कहा।

* **IGNP के उद्देश्य-** (i) सिंचाई के लिए जलापूर्ति
(ii) पेयजल आपूर्ति

* **IGNP का निर्माण-** IGNP का निर्माण दो चरणों में हुआ -

प्रथम चरण (393 Km)
- फीडर नहर (204)
  - हरीके बैराज (पंजाब)
  - मसीतावाली (हनुमानगढ़)
- मुख्य नहर (189 Km)
  - मसीतावाली (हनुमानगढ़)
  - पूगल (बीकानेर)

द्वितीय चरण (256 Km) — मुख्य नहर
- पूगल (बीकानेर)
- मोहनग... (जैसल...)

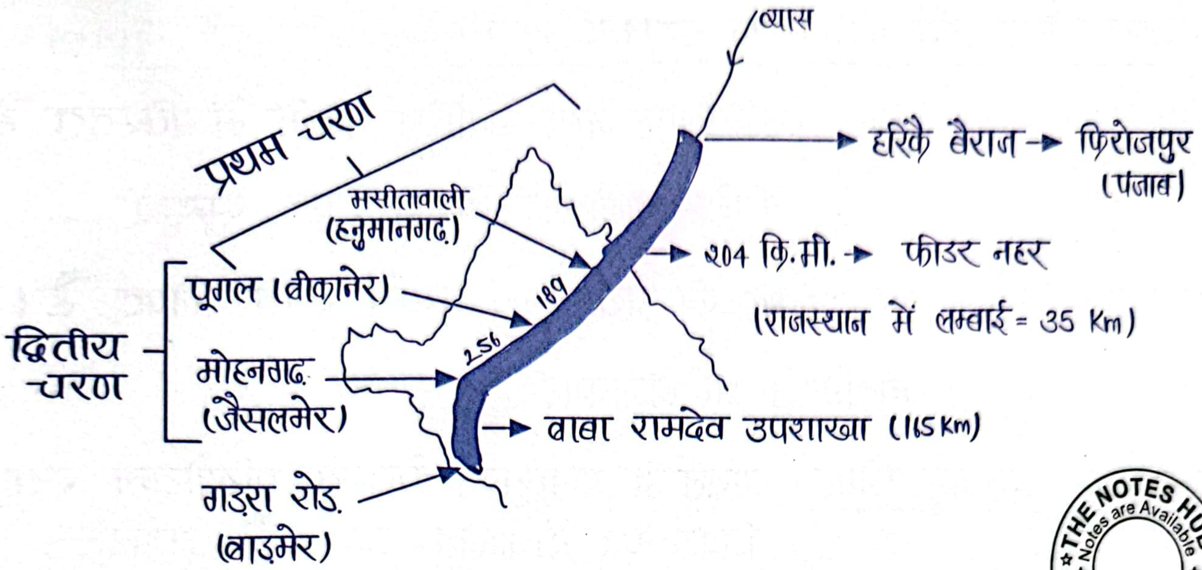

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

→ IGNP की कुल लम्बाई = 649 किमी
- → मुख्य नहर = 445 किमी
- → फीडर नहर = 204 किमी (राज. में 35 km)
- → राजस्थान में लम्बाई = 445 + 35 = 480 KM

→ सिंचाई हेतु IGNP पर कुल 7 लिफ्ट नहरों एवं 9 शाखाओं का निर्माण किया गया है।

*** IGNP की लिफ्ट नहरें– (50 words)**

IGNP की सभी लिफ्ट नहरें बाँयी ओर स्थित है।
→ कारण- क्योंकि बाँयी ओर धरातल उच्च है।

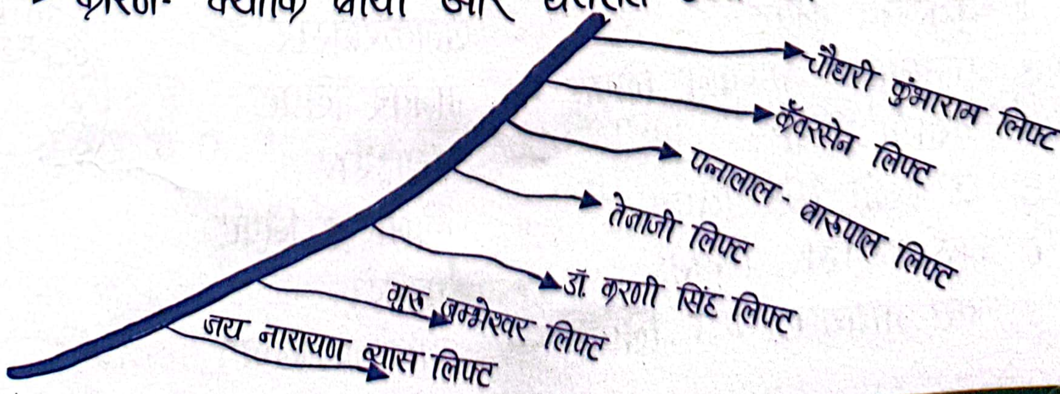

↳ सभी लिफ्ट नहरों की लम्बाई = 1495 कि.मी

1. चौधरी कुंभाराम लिफ्ट- • यह लिफ्ट नहर सर्वाधिक जिलों में विस्तृत है।
• जिले- हनुमानगढ़, बीकानेर, चुरू, झुन्झुनूं

2. कंवरसेन लिफ्ट- • यह IGNP की प्रथम एवं सबसे लम्बी लिफ्ट है।
• बीकानेर + श्री गंगानगर

3. पन्नालाल - बारूपाल लिफ्ट- जायल डी फ्लोराइड पेयजल परियोजना इस लिफ्ट पर संचालित है। → नागौर
↳ वितरण- बीकानेर + नागौर

4. तेजाजी लिफ्ट- यह लिफ्ट IGNP की सबसे छोटी लिफ्ट है।
↳ विस्तार- यह केवल बीकानेर में वितरित है।

5. डॉ. करणी सिंह लिफ्ट:- → विस्तार- बीकानेर + जोधपुर

6. गुरु जम्भेश्वर लिफ्ट:- → विस्तार- जोधपुर + जैसलमेर + बीकानेर

7. जय नारायण व्यास लिफ्ट→ जोधपुर + जैसलमेर +

* इन लिफ्ट नहरों के पुराने नाम -

1. चौधरी कुंभाराम लिफ्ट → गंधेली- साहवा
2. कँवरसेन लिफ्ट → लूणकरणसर
3. पन्नालाल - बारूपाल लिफ्ट → गजनेर लिफ्ट
4. तेजाजी लिफ्ट → बांगड़सर
5. डॉ. करणी सिंह लिफ्ट → कोलायत लिफ्ट
6. गुरु जम्भेश्वर लिफ्ट → फलौदी
7. जय नारायण व्यास लिफ्ट → पोकरण लिफ्ट

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

IGNP की शाखाएँ-

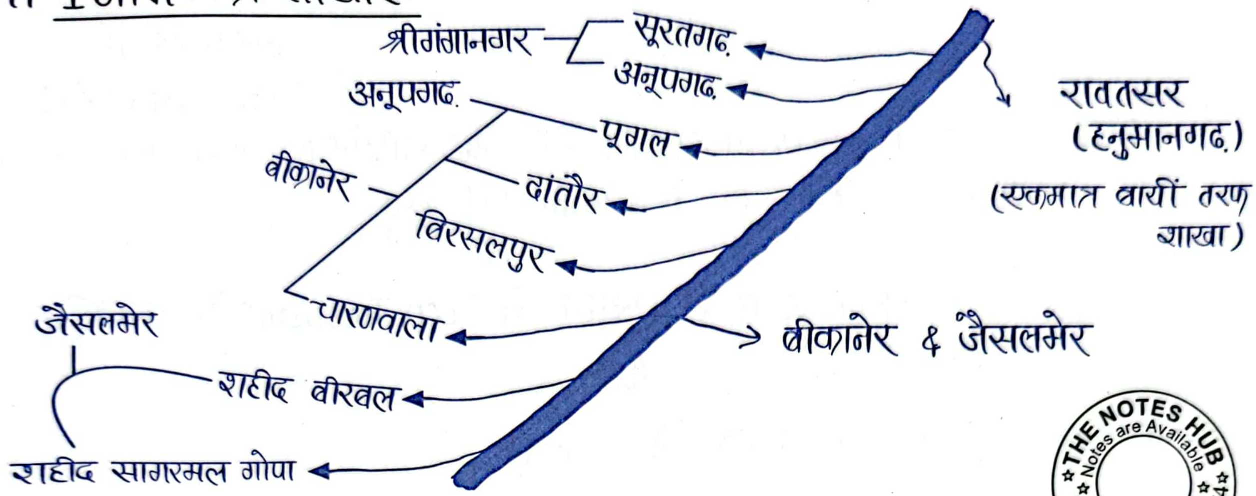

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

IGNP के लाभ एवं हानियाँ- (100 words)

IGNP के लाभ-

1. **हरित क्रान्ति-** IGNP के कारण उ. प. राजस्थान में खाद्यान्न उत्पादन में बढ़ोतरी हुई।

2. **चारागाह भूमि-**

→ IGNP के कारण प. राजस्थान में चारागाह भूमियों में बढ़ोतरी हुई है।

3. **सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति-**

IGNP के कारण उ. प. राजस्थान में किसानों की सामाजिक व आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

4. **जैव विविधता-**

IGNP के कारण उ. प. राजस्थान में जैव विविधता में बढ़ोतरी हुई है।

5. **मत्स्य पालन-**

→ श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में मत्स्यपालन की शुरुआत।

6. जल विद्युत- IGNP की जल विद्युत उत्पादन क्षमता = २4 MW
(२3.5 MW)
(25 = Approx)

7. उद्योग-
IGNP के कारण प. राजस्थान में नये औद्योगिक युग की शुरुआत हुई है। Ex. Petroleum Refinery

8. पर्यटन-
IGNP के कारण उ. प. राजस्थान में "ECO Tourism" में बढ़ोतरी हुई है।

9. IGNP मरुस्थलीकरण को रोकती है।

* IGNP की हानियाँ-

(i) सेम/ जलाक्रांता (Water Loging)- IGNP के कारण उ. प. राजस्थान में सेम की समस्या बढ़ी।

→ कारण- जल रिसाव एवं अधिक सिंचाई।

→ अर्थ - भूमि का दलदली होना।

→ उपाय- सफेदे/ युकेलिप्टस का वृक्षारोपण।
↑ (इंडो-डच प्रोग्राम)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

2. लवणीयता-
IGNP के कारण प. राजस्थान में लवणीयता की समस्या मे बढ़ोतरी हुई है।

उपाय- जिप्सम खादों का उपयोग या बूंद- बूंद/ फव्वारा सिंचाई तकनीक का उपयोग।

3. मरु जैव विविधता- IGNP के कारण मरु जैव विविधता में कमी आई है।
→ उपाय - डेजर्ट थीम पार्क, किशन बाग = जयपुर
कैक्टस पार्क - जैसलमेर (कुलधरा)
नेचर/ प्रकृति पार्क - चुरू, सीकर (लक्ष्मणगढ़)

MAHECHA PUBLICATION

4. भूमि की उर्वरता-

IGNP के कारण उ. प. राजस्थान की भूमि उर्वरता में कमी आई है।

- कारण- रासायनिक खादों का अधिक उपयोग।
- उपाय- जैविक खादों का अधिक उपयोग।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

5. भूमि विवाद-

- IGNP के कारण भूमि विवाद बढ़े है।
- उपाय - "न्याय आपके द्वार" or "प्रशासन गाँवों के संग"

- उपरोक्त समाधानों के बाद IGNP राजस्थान के लिए एक वरदान है। इस कारण इसे "पश्चिमी राजस्थान या मरुस्थल की गंगा" कहते है।

3. राजीव गाँधी सिद्धमुख नहर- (नोहर नहर)

- शुरुआत- 1989 - 2002 ई.
- नदियाँ- रावी, व्यास का अतिरिक्त जल।
- लाभान्वित जिले- 1. नोहर-भादरा (हनुमानगढ़)
  2. चुरू (राजगढ़/सादुलपुर)
- आर्थिक सहयोग → यूरोपियन संघ (1989- 1998)
  → NABARD (1998- 2002)

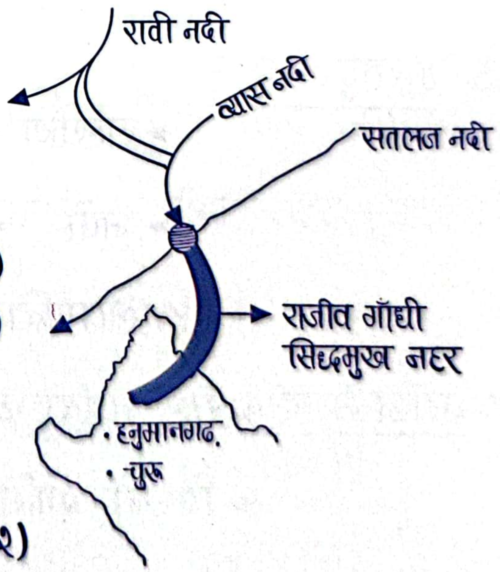

NOTE- परमाणु परीक्षण (May-1998) के बाद यूरोपियन संघ के द्वारा आर्थिक संघ ने सहयोग बंद कर दिया है।

- इसके बाद आर्थिक सहयोग NABARD के द्वारा दिया गया।

4. यमुना लिंक नहर (गुड़गांव नहर)-

- सहयोग - राजस्थान + हरियाणा
- नदी - यमुना
- लाभान्वित जिले - (ओखला बाँध) भरतपुर, शेखावाटी
- NOTE - यमुना नहर = प्रस्तावित
  - सहयोग = राजस्थान + हरियाणा
  - लाभान्वित जिले = शेखावाटी

THE NOTES HUB ☆ Notes are Available ☆ All Competition Books ☆ 7300134518, 7610010054

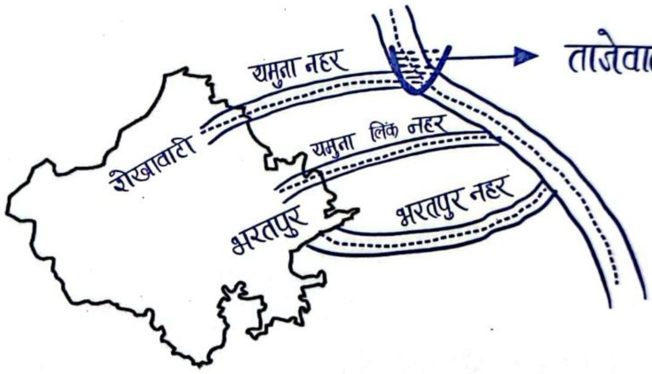

5. भरतपुर नहर-

- सहयोग = राजस्थान + U.P
- नदी = यमुना
- लाभान्वित जिला = भरतपुर

6. नर्मदा नहर-
- यह नर्मदा बहुउद्देशीय परियोजना का हिस्सा है।
- जिसमें शामिल राज्य - M.P, गुजरात, महाराष्ट्र, RAJ
- राजस्थान के लाभान्वित जिले - 1. जालौर (सांचौर)
  2. बाड़मेर

NOTE ➜ बाड़मेर IGNP एवं नर्मदा नहर दोनों से जुड़ा है।

MAHECHA PUBLICATION

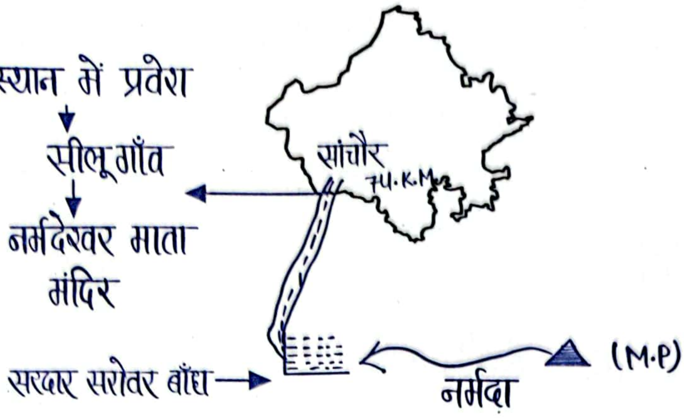

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- नर्मदा नहर की कुल लम्बाई → 458 + 74 (गुजरात + राज.)
  = 532 कि.मी

<u>विशेषताएँ-</u>

- नर्मदा नहर सरदार सरोवर बाँध (गुजरात) से राजस्थान में आती है।
- नर्मदा नहर पर बूंद-बूंद/फव्वारा सिंचाई तकनीक को अनिवार्य रूप से लागू किया गया है।

- <u>नर्मदा नहर की लिफ्ट नहरें-</u>
  (i) सांचौर लिफ्ट नहर
  (ii) भादरेड़ा लिफ्ट नहर (सांचौर)
  (iii) पनोरिया लिफ्ट नहर (बाड़मेर)

7. <u>ERCP</u> [Eastern Rajasthan Canal Project]-
(पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना) कालीसिंध-पार्वती नहर (M.P)

- ERCP राजस्थान के लिए एक महत्वकांक्षी परियोजना है।
- मानसून के दौरान कुनू, कुराल, कालीसिंध, चाकण, पार्वती, मेज नदियों के अतिरिक्त जल को चम्बल, बनास, बाणगंगा व गम्भीरी नदी में वितरित किया जायेगा।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

*** ERCP के लक्ष्य-**

- २६ बाँधों का निर्माण करना।
- सिंचित क्षेत्र = २.8 लाख हैक्टेयर
- लाभान्वित जिले = २१ (old data के अनुसार - 13)
  - कोटा सम्भाग - कोटा, बूँदी, बारां, झालावाड़
  - ABCD - अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर, स. माधोपुर
  - नये जिले - खैरतल-तिजारा, गंगापुर सिटी, डीग
  - जयपुर - दौसा, जयपुर शहर, जयपुर ग्रामीण, दूदू कोटपुतली बहरोड़
  - टोंक- अजमेर - ब्यावर, केकड़ी

मुख्य उद्देश्य-

1.) पूर्वी राजस्थान में पेयजल आपूर्ति।

2.) पूर्वी राजस्थान को सिंचाई के लिए जलापूर्ति।

3.) DMIC (दिल्ली-मुम्बई औद्योगिक गलियारे) को जलापूर्ति।

(ERCP - Update)

अन्य महत्वपूर्ण परियोजनाएँ-

1. नवनेरा (कालीसिंध) → कोटा
2. हरिशचन्द → कोटा
3. गोपालपुरा → कोटा
4. तकली → कोटा
5. सावण-भादो → कोटा
6. आलणिया → कोटा
7. जिगजैग → बूंदी
8. जैतसागर → बूंदी
9. गुढ़ा → बूंदी
10. गरदड़ा → बूंदी
11. चाकण → बूंदी
12. मेज → बूंदी

NOTE → मेजा = कोठारी नदी (भीलवाड़ा)

13. बैंथली → बारां
14. बिलास → बारां, कोटा
15. परवन → बारां, कोटा, झालावाड़
16. अंधेरी → बारां
17. ल्हासी → बारां
18. हथियादेह → बारां
19. राजगढ़ → झालावाड़
20. भीमसागर → झालावाड़
21. मनोहरथाना → झालावाड़
22. गागरीन → झालावाड़
23. पीपलाद → झालावाड़
24. परवन → झालावाड़
25. कालीसिंध → झालावाड़, बारां, कोटा
26. चोली → झालावाड़

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

27. छापी → झालावाड़.
28. रेवा → झालावाड़.
29. ईसरदा → सवाई माधोपुर
30. पीपलदा → सवाई माधोपुर
31. इंदिरा गाँधी लिफ्ट नहर परियोजना → सवाई माधोपुर, करौली
32. बिसलपुर (बनास) → टोंक
33. गलवा डैम → टोंक
34. टोरड़ी सागर → टोंक
35. माधो सागर → दौसा
36. मोरेल → दौसा, सवाई माधोपुर
37. रेडियोसागर → दौसा
38. चिरमिरी → दौसा
39. झिलमिली → दौसा
40. पार्वती बाँध → धौलपुर
41. धौलपुर लिफ्ट (चंबल) → धौलपुर
42. बांकली डैम (सुकड़ी नदी) → जालौर
43. बांडी - सेदड़ा → जालौर
44. बत्तीसा नाला → सिरोही
45. सुकली सेलवाड़ा → सिरोही
46. टिड्डी बाँध → उदयपुर
47. मदार बाँध → उदयपुर
48. मानसी वाकल → उदयपुर
49. सोम कागदार → उदयपुर
50. सोम कमला अम्बा → डूँगरपुर
51. भीखाबाई सागवाड़ा (माही नदी) → डूँगरपुर
52. कडाना बैक वॉटर → डूँगरपुर
53. अनास बाँध परियोजना → बांसवाड़ा
54. नारायण सागर → अजमेर
55. ओराई → भीलवाड़ा, चित्तौड़.

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

CamScanner

संसाधन भूगोल

मिट्टी

1. मृदा का अर्थ
2. मिट्टी का संगठन
3. मिट्टी के प्रकार
4. मृदा की समस्याएँ

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054 ★

1. मृदा का अर्थ–

↳ असंगठित चट्टानों की परत

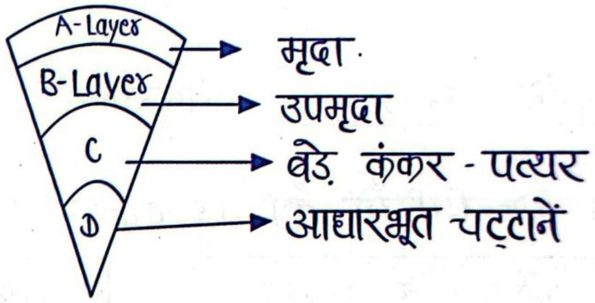

↳ पृथ्वी की ऊपरी सतह पर असंगठित चट्टानों की परत को मिट्टी या मृदा कहते हैं।

Note→ पेडोलॉजी = मृदा के अध्ययन या मृदा विज्ञान को पेडोलॉजी कहते हैं।

2. मिट्टी का संगठन–

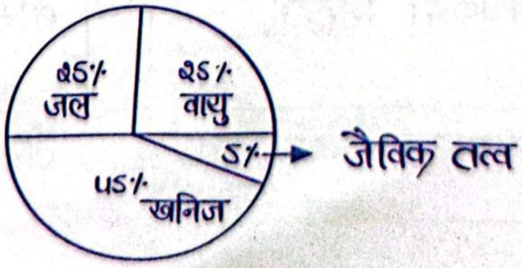

3. मिट्टी के प्रकार-

- भारत (ICAR)
  - मुख्य प्रकार — 8
  - गौण प्रकार — 27
- राजस्थान
  - राज्य कृषि विभाग — 14
  - (USDA) वैज्ञानिक वर्गीकरण — 12

NOTE→ [Indian Council Of Agricultural Research
भारतीय अनुसंधान कृषि परिषद्]
—1929 (नई दिल्ली).

[USDA→ United State Department of Agriculture
— 1862]

1. राज्य कृषि विभाग का वर्गीकरण-

राज्य कृषि विभाग द्वारा राजस्थान की मिट्टियों को 14 भागों में बाँटा गया है-

मिट्टी के प्रकार	जिले
1. साई रोजेम्स	श्री गंगानगर
2. रेवेरिना	श्री गंगानगर
3. जिप्सीफेरस	बीकानेर
4. पर्वतीय मिट्टी	उदयपुर, कोटा
5. लाल चिकनी मिट्टी	बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़ (माही बेसीन)
6. केल्सी ब्राउन डेजर्ट मृदा	जैसलमेर, बीकानेर

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 761001...

CamScanner

7. नॉन केल्सी ब्राउन मृदा	नागौर, अजमेर, सीकर, झुंझुनूं जयपुर, अलवर
8. नवीन भूरी मिट्टी	अजमेर, भीलवाड़ा
9. ग्रे - ब्राउन मिट्टी/ धूसर भूरी जलोढ़ मृदा (लूनी बेसीन)	पाली, जोधपुर, नागौर, जालौर, सिरोही
10. पीली-भूरी मिट्टी (बनास बेसीन)	राजसमंद, भीलवाड़ा, चित्तौड़ उदयपुर, अजमेर, टोंक, स. माधोपुर
11 मरुस्थलीय मृदा	जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर, जोधपुर + शेखावाटी
12. मरुस्थलीय बालूका स्तूप मृदा	जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर, जोधपुर
13 जलोढ़ मिट्टी	अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर स. माधोपुर, टोंक
14. काली मिट्टी (मध्यम गहरी काली मिट्टी)	हाड़ौती - कोटा, बूँदी, बारां, झालावाड़

वैज्ञानिक वर्गीकरण–

- मिट्टियों का वैज्ञानिक वर्गीकरण USDA के द्वारा किया गया।
- वैज्ञानिक वर्गीकरण का मुख्य आधार मिट्टी के कणों का आकार है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

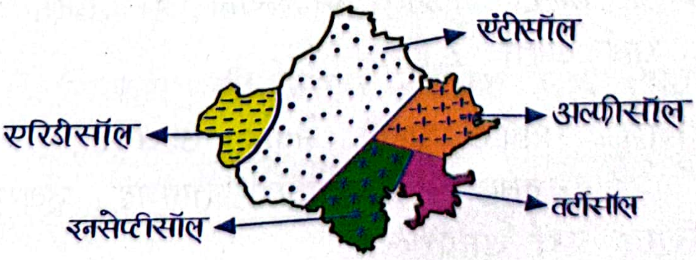

1. एरिडीसॉल-

- यह मिट्टी मुख्यतः प. राजस्थान में पाई जाती है।
- जिसका विस्तार JBBJ (जोधपुर, बीकानेर, बाड़मेर, जैस.) में विस्तृत है
- जलवायु- यहाँ शुष्क जलवायु पाई जाती है।
- उपसमूह- • केल्सी ऑरथिड्स • सेल ऑरथिड्स
  • कैम्बो ऑरथिड्स • पेलिऑरथिड्स

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

2. एंटीसाल-

एंटीसॉल मुख्यतः राजस्थान के उ. प. भाग में अधिक पाई जाती है।

जलवायु- शुष्क एवं अर्द्धशुष्क

उपसमूह- सामेन्टस और टोरीफ्लूवेंटस

NOTE- एंटीसॉल राजस्थान में सर्वाधिक पाई जाती है।
दूसरी सर्वाधिक पाई जाने वाली मृदा = एरिडीसॉल

3. अल्फीसॉल-

- यह मिट्टी मुख्यतः राजस्थान के पूर्वी मैदान में अधिक पा जाती है।
- जलवायु - आर्द्र एवं उपार्द्र
- उपसमूह - हेप्लुस्तालफस

4. इनसेप्टीसॉल- (लाल-भूरी)

- यह मिट्टी मुख्यतः राजस्थान के दक्षिणी भाग में अधिक पाई जाती है।
- जिसमें प्रमुख जिले- • RBCU, पाली (मेवाड़) उदयपुर,
  • वागड़ — बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, डूँगरपुर
- जलवायु - अर्द्धशुष्क एवं आर्द्रतुल्य

- उपसमूह - उस्टोक्रेप्ट्स

5 वर्टीसाल-
- वर्टीसॉल मुख्यतः द. पू. राजस्थान / हाड़ौती क्षेत्र (कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़) में पाई जाती है।
- जलवायु - आर्द्र एवं अतिआर्द्र
- उपसमूह - पेल्युस्टर्टस् & क्रोमस्टर्टस्

राजस्थान की मिट्टियों का सामान्य वर्गीकरण

1. बलुई/ रेतीली मिट्टी-

उपनाम —
- मरुस्थलीय
- शुष्क मिट्टी
- प्यासी मिट्टी

निर्माण- इस मिट्टी का निर्माण बलुआ पत्थर के अपरदन से हुआ है।

- विस्तार/ वितरण- इस मिट्टी का विस्तार मुख्यतः प. राजस्थान में है।
  Max.- जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर, जोधपुर व शेखावाटी

- मुख्य फसल/ कृषि उत्पादन-
  - बाजरा
  - चना
  - मूंगफली
  - दलहन फसलें

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- मिट्टी की विशेषताएँ-

1. बलुई मिट्टी राजस्थान में सर्वाधिक पाई जाती है।
2. इसमें Ca (कैल्सियम) की मात्रा अधिक पाई जाती है।
3. इस मिट्टी के कण सर्वाधिक मोटे होते है। इस कारण इसमें बार-बार सिंचाई की आवश्यकता होती है।

CamScanner

2. भूरी-रेतीली मिट्टी- (सिरोजम मिट्टी)

- **निर्माण-** लूनी बेसीन एवं बलुआ पत्थर
- **विस्तार-** पाली, जोधपुर, नागौर, जालोर, चुरु, सीकर, झुंझुनूं (चुरु, सीकर, झुंझुनूं → शेखावाटी)
- **फसल उत्पादन-** जीरा, ईसबगोल, मूँग, मोठ, अरण्डी, चंवला आदि।
- **विशेषताएँ-** इस मिट्टी में फॉस्फेट की मात्रा अधिक पाई जाती है।

3. लवणीय मिट्टी-

- उपनाम —
  - खार
  - रेह
  - कल्लर
  - ऊसर (अनुपजाऊ मृदा)
- **निर्माण-** शुष्क क्षेत्रों में अधिक सिंचाई के कारण इस मिट्टी का निर्माण होता है।
- **विस्तार-** IGNP → श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर
  नर्मदा नहर → सांचौर-जालोर, बाड़मेर
- **फसल उत्पादन-** चावल, अनार, गन्ना
- इस मिट्टी में NaCl की मात्रा अधिक होती है।
- न्यूनतम उपजाऊ मृदा होती है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

4. जलोढ़ मिट्टी-

उपनाम —
- डेल्टाई मिट्टी
- कछारी मिट्टी
- दोमट मिट्टी → (खादर - बांगर)
  - खादर ↓ नवीन जलोढ़
  - बांगर ↓ पुरानी जलोढ़

- **निर्माण**- नदियों के द्वारा जमा किये गये अवसादों से।
- **विस्तार**- अलवर- भरतपुर, करौली, धौलपुर, टोंक, स. माधोपुर
- **उत्पादित फसलें**- सरसों, गेहूँ, गन्ना, चावल

विशेषताएँ-

(i) जलोढ़ मिट्टी सर्वाधिक उपजाऊ मिट्टी है।
(ii) भारत में जलोढ़ मिट्टी सर्वाधिक पाई जाती है।
(iii) इसमें पोटाश की मात्रा अधिक पाई जाती है।

5. काली मिट्टी-

- उपनाम
  - कपासी मिट्टी
  - रेगुर मिट्टी
  - स्वतः जुताई मिट्टी
  - ज्वालामुखी / लावा मिट्टी

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- **निर्माण**- इस मिट्टी का निर्माण बेसाल्ट लावा चट्टानों से हुआ है।
- **विस्तार**- कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़ (हाड़ौती क्षेत्र)
- **कृषि उत्पादन**- कपास, सोयाबीन, मसाला फसलें।

विशेषताएँ-

(i) काली मिट्टी में क्ले/ चीका अधिक पाई जाती है।
(ii) काली मिट्टी की जलधारण क्षमता सर्वाधिक होती है।
(iii) इस मिट्टी में लोहा, एल्युमिनियम एवं चुना पत्थर ($CaCO_3$) अधिक पाया जाता है।
(iv) काली मिट्टी को चेरनोजम व वर्टीसॉल भी कहा जाता है।

CamScanner

6. लाल-चिकनी मिट्टी-

- निर्माण- कायान्तरित व रूपान्तरित चट्टानों से निर्मित।
- विस्तार - बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़ (वागड़) और उदयपुर चित्तौड़गढ़ के दक्षिणी भाग।
- फसलें- मक्का, चावल, गन्ना।

विशेषताएँ-

- इस मिट्टी में आयरन ऑक्साइड की मात्रा अधिक पाई जाती है, इस कारण इसका रंग लाल होता है

7. लाल-काली मिट्टी-

- निर्माण- कायान्तरित एवं बेसाल्ट चट्टानो से निर्मित।
- विस्तार - बूंदी, भीलवाड़ा, चित्तौड़, प्रतापगढ़ (BBCP)
- उत्पादित फसलें- मक्का, कपास, अफीम

8. लाल-पीली मिट्टी-

- विस्तार – बनास बेसिन
  - मेवाड़ मैदान (RBCU)
  - मालपुरा, करौली (ATMs)
- उत्पादित फसलें- सरसों, ज्वार

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

मिट्टी की समस्याएँ

- अपरदन
- सेम
- लवणीयता
- क्षारीयता
- मृदा अवकर्षण

1. अपरदन-

अर्थ- पृथ्वी की ऊपरी सतह का कटाव 'मृदा अपरदन' कहलाता है।

MAHECHA PUBLICATION

अपरदन का कारण-

- वनों की अत्यधिक कटाई ।
- अति पशुचारण
- अवैज्ञानिक कृषि (बार-बार कृषि करना)
- खनन

अपरदन के कारक-

हवा | वर्षा जल | नदी

अपरदन के प्रकार-

(i) परतदार अपरदन (हवा से) → सर्वाधिक- प. राजस्थान, जैसलमेर

(ii) चादरी अपरदन (वर्षा जल) → सिरोही, राजसमंद

(iii) अवनालिका अपरदन (नदी जल से) → चंबल बेसिन

> NOTE- अपरदन का मुख्य कारक
> राजस्थान = हवा
> भारत व विश्व = जल

* उपाय-

i) वृक्षारोपण
ii) चारागाहों का विस्तार
iii) खेत की मेड़बंदी
iv) वैज्ञानिक खनन

> NOTE- अपरदन को 'मृदा की रेंगती हुई मौत' या 'किसान की मौत' कहा जाता है।

२. सेम / Water loging (जलाक्रांतता)-

अर्थ- मिट्टी का दलदली होना ।
or
नमी की समस्या

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

- कारण- अधिक सिंचाई, जल रिसाव।
- प्रभावी क्षेत्र - हनुमानगढ़ - बड़ोपल, श्रीगंगानगर
- उपाय - सफेदा/ यूकेलिप्टिस का वृक्षारोपण।
  (इन्डो - डच प्रोग्राम)
  (India - Netherland/Holland)

3. लवणीयता-

- अर्थ- शुष्क क्षेत्रों में अधिक सिंचाई होने के कारण एक सफेद परत का निर्माण होता है।
- प्रभावी क्षेत्र- श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर, जालौर (सांचौर), बाड़मेर।
- उपाय
  - उर्वरक → जिप्सम
  - विधि → निक्षालन (लीचिंग)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

4. क्षारीयता-

- अर्थ- मिट्टी का Ph मान 8 से अधिक होना क्षारीय कहलाता है।
- कारण- रासायनिक उर्वरकों/ खादों का अधिक उपयोग।
- उपाय- ग्वार व ढेंचा की हरी खाद।

5. मृदा अवकर्षण-

- अर्थ- मिट्टी की भौतिक, रासायनिक व जैविक गुणवत्ता में ह्रास होना 'मृदा अवकर्षण' कहलाता है।

- कारण - रासायनिक खादों का अधिक उपयोग।
- उपाय - जैविक खादों का उपयोग।

जैविक

- राज्य (भारत में) → सिक्किम
- जिला (Rajasthan) → डूँगरपुर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

खनिज

1. खनिज दृष्टिकोण
2. खनिज चट्टानें
3. खनिजों का वर्गीकरण
4. खनिज उत्पादन एवं उपयोग
5. खनिज नीतियाँ

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

1. खनिज दृष्टिकोण-

- (a) खनिज विविधता — Raj- Ist → 81 प्रकार के खनिजों का भण्डारण
- (b) खनिज भंडारण — 2nd → 1st (झारखण्ड)
- (c) खनिज उत्पादन — 3rd
- (d) खनिज आय — 3rd

(c), (d): Ist - ओड़िशा, IInd - छत्तीसगढ़

NOTE- राजस्थान से कुल उत्पादित खनिज = 58

(a) खनिज विविधता-

देश में सर्वाधिक खनिज विविधता राजस्थान में पाई जाती है। इस कारण राजस्थान को 'खनिजों का अजायबघर' कहा जाता है।

- राजस्थान में कुल 81 प्रकार के खनिज भण्डारित है।

(b) खनिज भण्डारण-

राजस्थान में खनिजों का सर्वाधिक भण्डारण अरावली में है इस कारण अरावली को 'खनिजों का भण्डारगृह' कहते है।

(C) खनिज उत्पादन-

देश के कुल खनिज उत्पादन में राजस्थान का योगदान- २२%

जिसमें –
- धात्विक - 15%
- अधात्विक - 25%
- अन्य - 60%

NOTE- अधात्विक खनिज उत्पादन में राजस्थान का देश में प्रथम स्थान है।

(D) खनिज आय-

खनिज आय की दृष्टि से राजस्थान का देश में तीसरा स्थान है। क्योंकि राजस्थान में कीमती अधात्विक खनिजों का उत्पादन होता है।

EX.
- पेट्रोलियम
- ग्रेनाइट
- मार्बल

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

२. खनिज चट्टानें-

A. अवसादी चट्टानें
B. धारवाड़ चट्टानें
C. विन्ध्यन चट्टानें

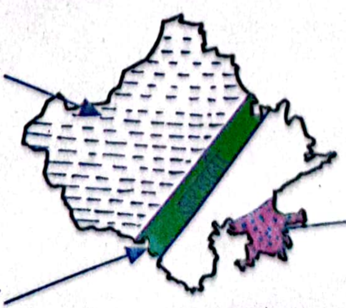

CamScanner

A. अवसादी चट्टानें –

- यह चट्टानें मुख्यतः राजस्थान के उ. प. में अधिक पाई जाती है।
- इन चट्टानों में ऊर्जा खनिज अधिक पाए जाते है।
  जैसे - पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस, कोयला।

B. धारवाड़ चट्टानें –

- यह चट्टानें मुख्यतः अरावली क्षेत्र में अधिक पाई जाती है।
- इन चट्टानों में मुख्यतः धात्विक खनिज अधिक पाए जाते है।
  जैसे - तांबा, लोहा- अयस्क, सीसा- जस्ता, चाँदी।

C. विन्ध्यन चट्टानें –

- यह चट्टानें द. पू. राजस्थान में अधिक पाई जाती है।
- इन चट्टानों में पत्थर वाले खनिज अधिक पाए जाते है।
  जैसे- बलुआ पत्थर, चूना पत्थर, कोटा स्टोन, लाल पत्थर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

3. खनिजों का वर्गीकरण-

धात्विक खनिज

लोह धातु (K-2 LMNT)

- K- कोबाल्ट
- K- क्रोमाइट
- L- लोहा
- M- मैग्नीज
- N- निकल
- T- टाईटेनियम

अलोह धातु

- सोना
- चाँदी
- प्लेटिनम
- सीसा- जस्ता (Pb) (Zn)
- (जुड़वा खनिज)
- टीन
- तांबा
- बॉक्साइट
- एल्युमिनियम
- मैग्नीशियम
- पारा (Hg)

अधात्विक खनिज

उत्पादन में राज. का प्रथम स्थान

- अभ्रक
- जिप्सम
- पत्थर वाले खनिज
- क्ले खनिज
- ब्लीचिंग क्ले (मुल्तानी मिट्टी)
- ऊर्जा खनिज
  - Ex. पेट्रोलियम
- प्राकृतिक गैस
- कोयला

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

4. खनिज उत्पादन एवं उपयोग-

अरावली पेटी के खनिज (धात्विक)

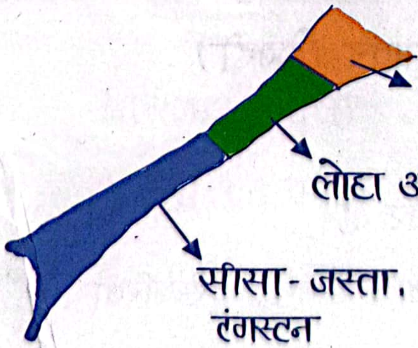

- अरावली क्षेत्र में धात्विक खनिज अधिक पाए जाते है, क्योंकि अरावली का निर्माण धारवाड़ चट्टानों से हुआ है।

MAH[…] PUBLIC[…]

(A) ताँबा– (भण्डारण, उत्पादन, क्षेत्र एवं उपयोग)

भण्डारण– ताँबा एक धात्विक खनिज है।

जो कि शेखावाटी (चुरू, सीकर, झुंझुनूं, नीम का थाना), अजमेर, अलवर, उदयपुर, चितौडगढ़, भीलवाड़ा व राजसमंद, सिरोही मे[…] भण्डारित है।

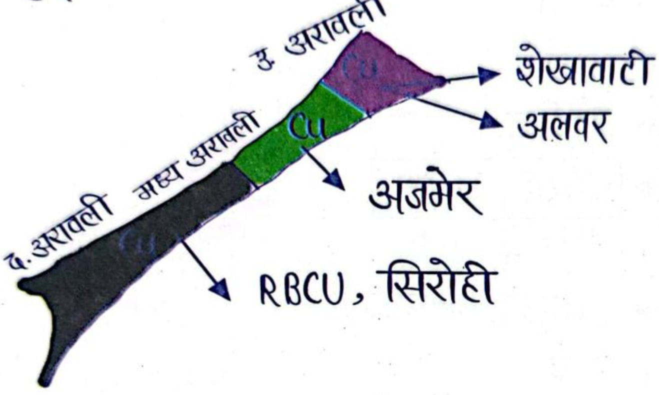

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

उत्पादन क्षेत्र-

(i) झुंझुनू →
- अकावली, कोहल्न
- खेतड़ी (नीम का थाना)
- चाँदमारी
- मदान-कूदान

(ii) सीकर → वन्नो की ढाणी (नीम का थाना)

(iii) चुरू → बिदासर

(iv) अजमेर → हनोतिया, सावर (केकड़ी)

(v) अलवर → खो-दरिबा

(vi) उदयपुर → अंजनी-सलूम्बर क्षेत्र

(vii) भीलवाड़ा → देवतलाई (ताँबा व सीसा), पुर-दरिबा

(viii) सिरोही → बसंतगढ़

(ix) चितौडगढ़ → भगिल, वारी क्षेत्र

MAHECHA PUBLICATION

* ताँबे के उपयोग-

- विद्युत तार बनाने में उपयोगी।
- उपकरण / मशीनरी
- बर्तन बनाने में
- ऑटोमोबाइल / मोटरगाडी बनाने में।
- रंग उद्योग में रंग बनाने में।

(B) लोह अयस्क- (भण्डारण, उत्पादन, क्षेत्र एवं उपयोग)

भण्डारण- लौह अयस्क धात्विक खनिज का उदाहरण है।

- राजस्थान में मुख्यतः मैग्नेटाइट व हेमेटाइट श्रेणी का लोहा पाया जाता है।
  (मैग्नेटाइट → सर्वोच्च गुणवत्ता)

- लोहा अयस्क जयपुर, दौसा, करौली, सीकर, झुंझुनू, उदयपुर व भीलवाड़ा में पाया जाता है।

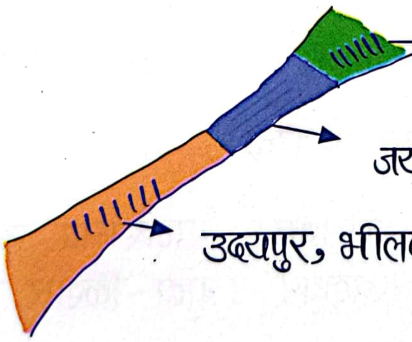

THE NOTES HUB Notes are Available All Competition Books 7300134518, 7610010054

उत्पादन क्षेत्र-

(a). जयपुर – मोरिजा-बानोला

(b) दौसा – नीमला (वर्तमान- जयपुर), रायसेला

(c) करौली – देदरौली, टोडपुरा, लीलोटी/लीलोती, खोरा

(d) सीकर – डाबला

(e) झुंझुनूं – सिंघाना

(f) उदयपुर - नाथरा की पाल, थूर हुण्डेर

(g) भीलवाड़ा– तिरंगा क्षेत्र, पुर बनेड़ा

MAH PUBLIC

उपयोग-

(i) मोटर गाड़ी उद्योग में

(ii) भवन निर्माण / इमारतें बनाने आदि में

(iii) उपकरण / मशीनरी बनाने में

(iv) इस्पात (आयरन + मैग्नीज) बनाने में उपयोगी

(v) रेल की पटरियाँ बनाने में उपयोगी।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

NOTE- लोहा धातु के उद्योगों का आधार / उद्योगों की रीढ़ कहा जा[ता] है।

(C) सीसा-जस्ता एवं चाँदी- (भण्डारण, उत्पादन, क्षेत्र एवं उपयोग)

भण्डारण-

- सीसा-जस्ता एवं चाँदी धात्विक खनिज का उदाहरण है।
- सीसा-जस्ता एवं चाँदी का मुख्य अयस्क- गैलेना
- सीसा-जस्ता एवं चाँदी मुख्यतः भीलवाड़ा, राजसमंद, उदयपुर, स. माधोपुर (चौथ का बरवाड़ा) अलवर (गुढ़ा-किशोर दास) में भण्डारित है।

उत्पादन क्षेत्र-

- भीलवाड़ा → रामपुरा-आगुचा और गुलाबपुरा आगुचा
- राजसमंद → राजपुरा दरिबा, सिंदेसर-खुर्द, सिंदेसर कलाँ
- उदयपुर → जावरमल (राणा लाखा) और देबारी → HZL (हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड)

CamScanner

उपयोग-

- सीसा →
  - (i) रंग उद्योग में
  - (ii) कारतूस बनाने में उपयोगी
  - (iii) वायुयान निर्माण में उपयोगी
- जस्ता →
  - (i) विद्युत उपकरण, तार बनाने में उपयोगी
  - (ii) ऑटोमोबाइल उद्योग में
  - (iii) औषधि निर्माण में उपयोगी
  - (iv) उर्वरक बनाने में उपयोगी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- चाँदी →
  - (i) आभूषण बनाने में उपयोगी
  - (ii) विद्युत उपकरण बनाने में उपयोगी
  - (iii) सिक्के एवं पदक बनाने में उपयोगी
  - (iv) औषधि निर्माण में उपयोगी।
  - (v) बर्तन निर्माण में उपयोगी।

(D.) टंगस्टन – (भण्डारण, उत्पादन, क्षेत्र एवं उपयोग)

भंडारण-

- टंगस्टन एक धात्विक खनिज का उदाहरण है।
- जिसके मुख्य अयस्क 'वोल्फ्रामाइट' व 'शीलाइट' है।
- जो मुख्यतः नागौर, पाली, एवं सिरोही में भण्डारित है।

उत्पादन क्षेत्र-

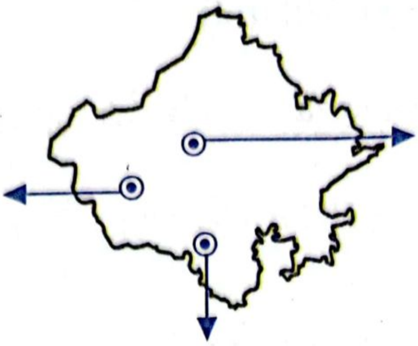

NOTE→ डेगाना देश में टंगस्टन की सबसे बड़ी खान है जो नागौर में स्थित है।

↳ डेगाना खान वर्तमान में बंद है।

THE NOTES HUB ☆ Notes are Available ☆ All Competition Books ☆ 7300134518, 7610010054

उपयोग-

(i) कारतूस बनाने में उपयोगी।

(ii) बल्ब एवं अन्य विद्युत उपकरण बनाने में उपयोगी।

(iii) मोटर गाड़ी उद्योग में उपयोगी।

(E) मैंग्नीज- (भंडारण, उत्पादन क्षेत्र एवं उपयोग)

↳ **भंडारण-** मैग्नीज एक धात्विक खनिज का उदाहरण है जो मुख्य रूप से बांसवाड़ा, राजसमन्द, व उदयपुर में भंडारित है।

- **बांसवाड़ा→** लीलवाणी, कालाखूंटा, तलवाड़ा, ताम्ब्रेसा, इटाला
- **राजसमंद→** नेगड़िया
- **उदयपुर→** छोटी सार, बड़ी सार

उपयोग-
(i) इस्पात बनाने में उपयोगी।
(ii) रंग बनाने में उपयोगी।
(iii) मोटर गाड़ी उद्योग के लिए उपयोगी।
(iv) रासायनिक अभिक्रियाओं में

(F.) सोना- (भंडारण, उत्पादन क्षेत्र एवं उपयोग)

➤ भंडारण-

सोना धात्विक खनिज का उदाहरण है। जिसका भंडारण राजस्थान में मुख्यत:
- बांसवाड़ा, डूंगरपुर (भारकुंडी)
- उदयपुर (डागोचा)
- भीलवाड़ा, अलवर (खेड़ा मुंडिया वास)
- दौसा (ढाणी बासड़ी)
- नीम का थाना (खेतड़ी) में भण्डारित है।

➤ उत्पादन क्षेत्र-

बांसवाड़ा →
- आनन्दपुरा भूकिया
- जगपुरा-भूकिया
- घोटिया-अंबा
- देलवाड़ा

भीलवाड़ा → देवतलाई (सोना व ताँबा)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

➤ उपयोग-
1. आभूषण बनाने में
2. सिक्के व पदक बनाने में
3. तकनीकि उपकरण बनाने में Ex. लैपटॉप चिप

वागड़ पेटी के खनिज

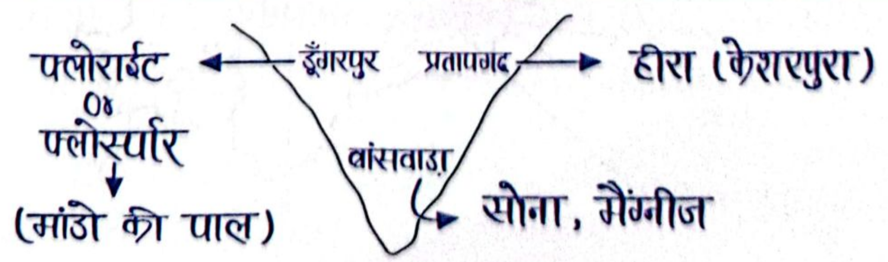

क्ले खनिज

1. बॉल क्ले
   or
   बीकानेर क्ले → बीकानेर

2. फायर क्ले → बीकानेर

3. चाईना क्ले (केओलिन) (चीनी मिट्टी) → 1st बीकानेर, 2nd सीकर

4. मुल्तानी मिट्टी/ ब्लीचिंग क्ले/ फुलर्स अर्थ - Ist - बाड़मेर, IInd - बीकानेर

NOTE → सिलिका सेंड / रेत → 1st = बूँदी (बाड़ोदिया), 2nd = जयपुर

↳ काँच उद्योग में उपयोग।

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

पत्थर वाले खनिज

(भंडारण, उत्पादन क्षेत्र और उपयोग)

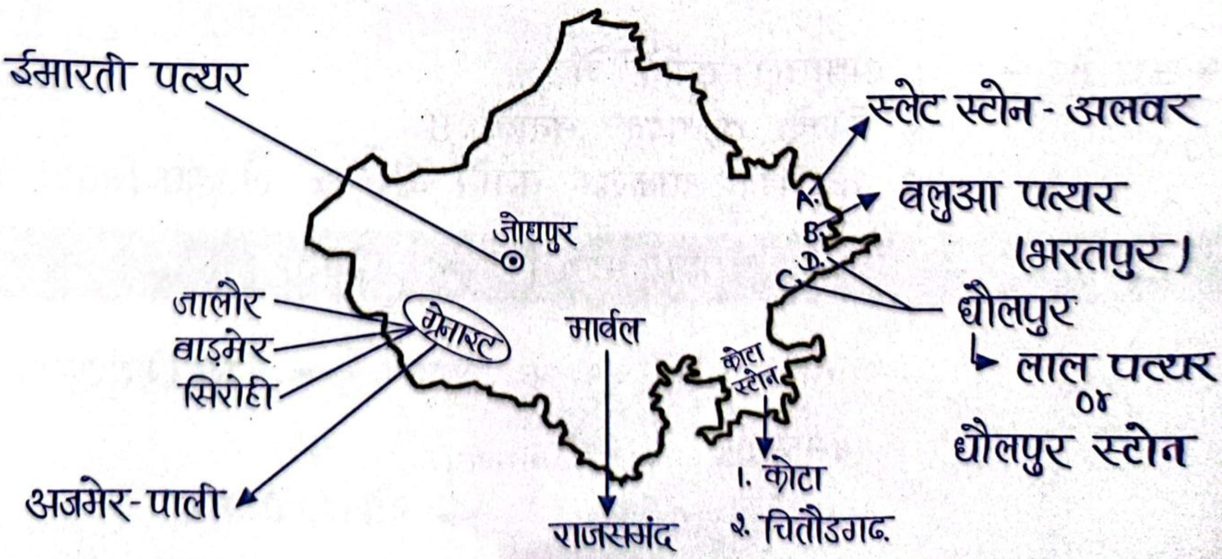

भंडारण-

पत्थर वाले खनिज / इमारती पत्थर अधात्विक खनिजों का उदाहरण है।

- जो राजस्थान में मुख्यतः — अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर, चित्तौड़, जालौर, सिरोही, बाड़मेर, जैसलमेर, नागौर, पाली, राजसमन्द, अजमेर, जयपुर

उत्पादन क्षेत्र-
(i) स्लेट स्टोन = अलवर

(ii) सैंड स्टोन/ बलुआ पत्थर = बंसी पहाड़पुर (भरतपुर)

(iii) धौलपुर स्टोन (लाल पत्थर) = धौलपुर (1st), करौली (2nd)

(iv) कोटा स्टोन = कोटा (1st), चित्तौड़ (2nd)

(v) ग्रेनाइट स्टोन = जालौर (ग्रेनाइट सिटी), बाड़मेर, सिरोही, अजमेर, पाली

(vi) इमारती पत्थर = जोधपुर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

मार्बल / संगमरमर

→ कायान्तरित चट्टान का उदाहरण है।

- जो चूना पत्थर (अवसादी चट्टान) से निर्मित होता है।
- राजस्थान में मार्बल का सर्वाधिक उत्पादन राजसमन्द से होता है। क्योंकि यहाँ मार्बल की सर्वाधिक उत्पादन इकाईयाँ है।
- मार्बल मुख्यतः राजसमन्द, जैसलमेर, जोधपुर, नागौर, कोटपुतली, बहरोड़, पाली, उदयपुर, भरतपुर में भण्डारित है।

मार्बल की अन्य किस्में–

1. सफेद संगमरमर → मकराना (नागौर)
2. काला संगमरमर → भैंसलाना (जयपुर ग्रामीण)
3. पीला संगमरमर → पीथला (जैसलमेर)
4. बादामी संगमरमर → जोधपुर ग्रामीण
5. हरा संगमरमर → ऋषभदेव (उदय.)
6. गुलाबी संगमरमर → ऋषभदेव, बाबरमाल (उदय.)
   → जालौर
   → भरतपुर
7. सतरंगी संगमरमर → खांदरा (पाली)

चूना पत्थर

→ अवसादी चट्टान का उदाहरण है।

- राजस्थान में इसका सर्वाधिक उत्पादन जोधपुर से होता है।
- राजस्थान में चूना पत्थर की प्रमुख किस्में–

1. स्टील ग्रेड → जैसलमेर → सोनू क्षेत्र
2. कैमिकल ग्रेड → जोधपुर, नागौर
3. सीमेंट ग्रेड → चित्तौड़-कोटा

- पत्थरों के उपयोग–
  1. भवन निर्माण में उपयोगी
  2. M-सैंड बनाने में उपयोगी

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054 ★

CamScanner

3. सड़क बनाने में उपयोगी
4. मूर्तियाँ बनाने में उपयोगी
5. फर्श बनाने में उपयोगी।

अरावली क्षेत्र के खनिज

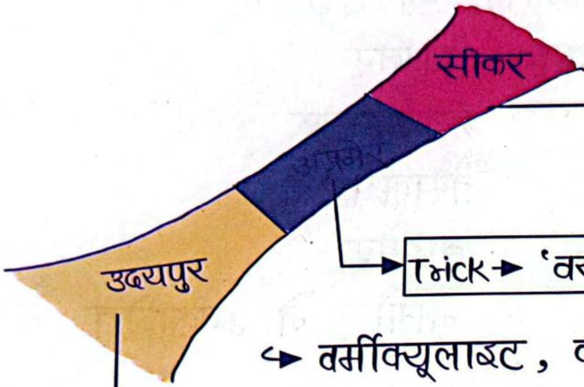

{ क = केल्साइट
{ प = पाईराइट्स (सलादीपुरा)

Trick → 'वरुण क्वार्ट्ज लेकर फेल गया'

→ वर्मीक्यूलाइट, क्वार्ट्ज, लिथियम, फेल्सपार
ग्रेफाइट (2nd- अलवर)

→ एसबेस्टॉस = खेरवाड़ा, ऋषभदेव (Udaipur)
→ घीया पत्थर (सोप स्टोन) = देवपुरा = सालोज क्षेत्र
→ रॉक फॉस्फेट = झामर-कोटड़ा (उदयपुर)
लाठी - बिरमानिया (जैसलमेर)

उर्वरक वाले खनिज

1. पोटाश
2. जिप्सम
3. रॉक फॉस्फेट
4. पाईराइट्स
5. जस्ता

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

MAHEC PUBLICATI

1. पोटाश-

भण्डारण एवं उत्पादन क्षेत्र - हनुमानगढ़ - बीकानेर

श्रीगंगानगर - चुरू व करौली

2. जिप्सम- भण्डारण

- जिप्सम एक अधात्विक खनिज का उदाहरण है। जो राजस्थान में मुख्यतः- बीकानेर
  श्रीगंगानगर
  जैसलमेर
  बाड़मेर
  नागौर में भण्डारित है।

उत्पादन क्षेत्र-

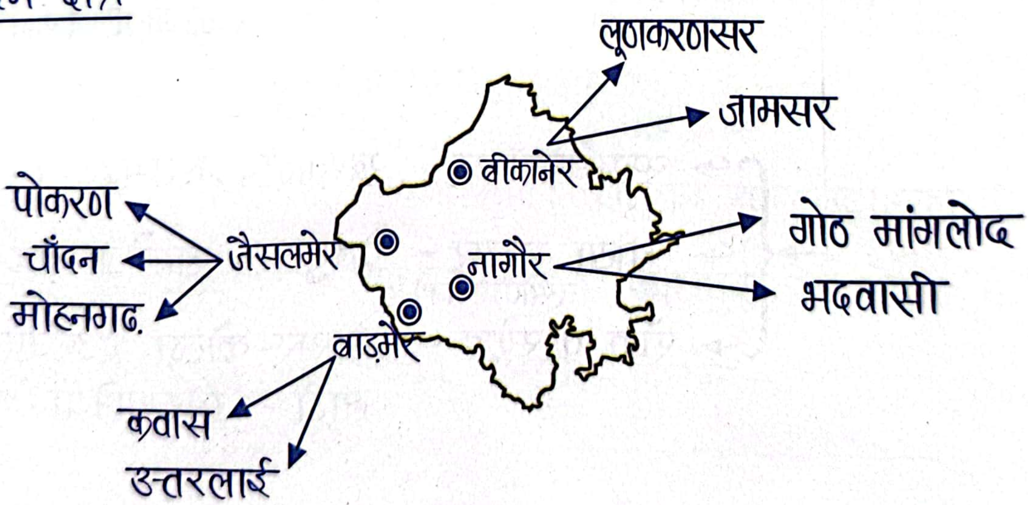

उपयोग-

1. सीमेन्ट उद्योग में उपयोगी
2. प्लास्टर ऑफ पेरिस में उपयोगी
3. उर्वरक बनाने में
4. रंग बनाने में

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

एकाधिकार वाले खनिज / पूर्णतः राजस्थान में उत्पादित खनिज

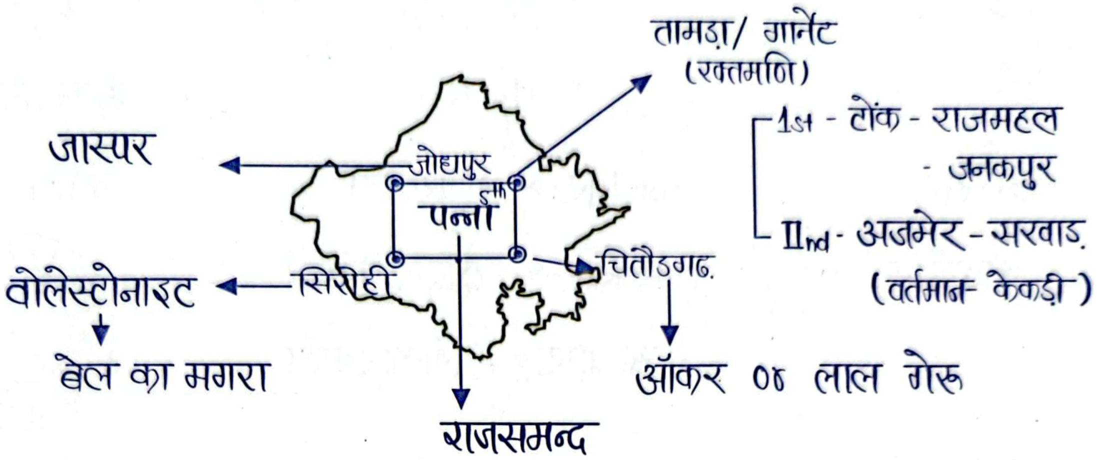

* पन्ना / एमरल्ड -

पन्ना को हरी अग्नि भी कहा जाता है।

उत्पादन क्षेत्र -

राजसमंद — देवगढ़
आमेट
*कालागुमान खान, *टिक्की

अजमेर -
बुबानी - मुहानी क्षेत्र

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

NOTE- According to Eco-Survey 2023-24-
राजस्थान के एकाधिकार वाले खनिज -
→ सीसा - जस्ता, वोलेस्टोनाइट, सेलेनाइट (जिप्सम)

आण्विक / परमाणु ऊर्जा खनिज

1. यूरेनियम

अयस्क - पिचब्लैंड
- खंडेला - रोहिला क्षेत्र (सीकर)
- उमरा (उदयपुर)
- रामगढ़ (बारां)

2. थोरियम
(राजस्थान में केवल भंडारण)

अयस्क - मोनोजाइट

भंडारण - भद्रावन (पाली)
सरदारपुरा (भीलवाड़ा)

CamScanner

BBB वाले खनिज

- बेंटोनाइट
  - बाड़मेर
  - बीकानेर
- बेरीलियम
  - जयपुर → गुजरवाड़ा
  - अजमेर → बांदर-सिंदरी
  - उदयपुर → शिकारबाड़ी
- बॉक्साइट
  - कोटा

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

ऊर्जा खनिज (100 words)

→ अवसादी चट्टानों में भण्डारित, जिनका निर्माण टर्शियरी काल में हुआ है।

कार्बनिक ऊर्जा खनिज

- पेट्रोलियम (100 Words)
- प्राकृतिक गैस
- कोयला (50 Words)

1. पेट्रोलियम → (भण्डारण, उत्पादन क्षेत्र एवं उपयोग)

भंडारण - पेट्रोलियम जीवाश्म ईंधन का उदाहरण है। जो राज. में 4 बेसिन एवं 15 जिलों में भण्डारित है। जिनका कुल क्षेत्रफल 1,50000 वर्ग कि.मी है।

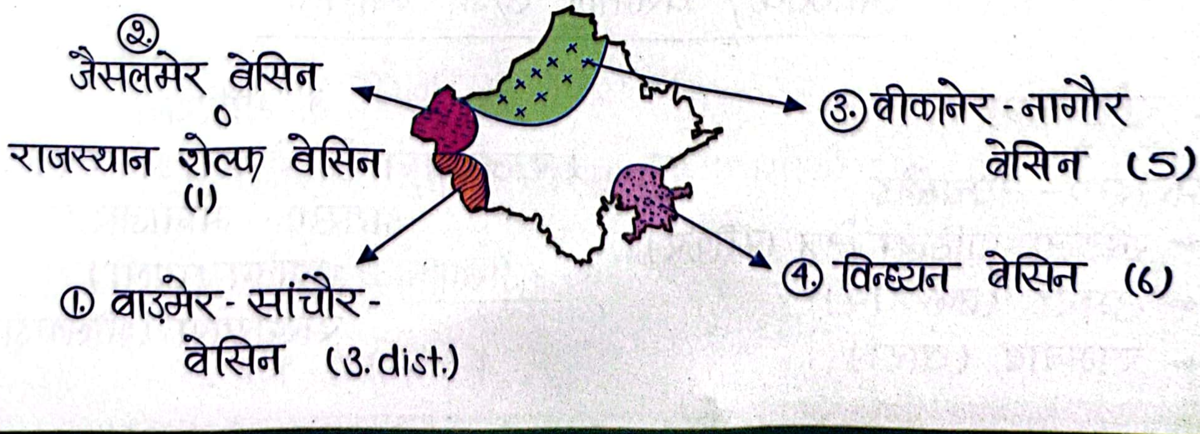

1. **बाड़मेर - सांचौर बेसिन–**

- यह मुख्यतः बाड़मेर (बालोतरा), सांचौर व जालौर में विस्तृत है।
- प्रमुख प्राधिकरण = कैयर्न एनर्जी (वेदांता लिमिटेड) & ONGC

NOTE- यहाँ पेट्रोलियम का भण्डारण सर्वाधिक है।

2. **जैसलमेर बेसिन Or राजस्थान शेल्फ बेसिन –**

- जैसलमेर में विस्तृत
- प्रमुख प्राधिकरण– ONGC, PDVSA (वेनेजुएला)

3. **बीकानेर - नागौर बेसीन→**

- विस्तार = बीकानेर, नागौर, गंगानगर, हनुमानगढ़, चुरु।
- प्रमुख प्राधिकरण [OIL (Oil India Limited), ESSAR (NAYARA)

4. **विन्ध्यन बेसिन–**

- विस्तार - कोटा, बूँदी, बारां, झालावाड़, भीलवाड़ा, चित्तौड़
- Main Authority– ONGC & कैयर्न एनर्जी (वेदान्ता)

उत्पादन क्षेत्र–

1st → बाड़मेर →

स्थान	पेट्रोलियम कुएँ
नागाना	मंगला
कोसलू	सरस्वती
बायतू	ऐश्वर्या
गुडा मलानी	रागेश्वरी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

- अन्य कुएँ– विजया, शक्ति, दुर्गा, भाग्यम, कामेश्वरी

* **मंगला–**

- मंगला राजस्थान का प्रथम पेट्रोलियम कुआँ है।
- जो 'बाड़मेर- सांचौर बेसीन' में स्थित है।
- मंगला को 2004 में खोजा गया।
- पेट्रोलियम उत्पादन की शुरुआत = 29 Aug. 2009

2nd– जैसलमेर →

B = बाघेवाला (PDVSA)
S = साधेवाला
T = तनोट
C = चिन्नेवाला

(साधेवाला, तनोट, चिन्नेवाला → ONGC)

3rd बीकानेर →
- तुवरीवाला/ टावरेवाला (वर्तमान- जैसलमेर)
- पूनम क्षेत्र

NOTE- 1 बैरल = 159 लीटर

- पूनम क्षेत्र बीकानेर (बीकानेर - नागौर) बेसिन में स्थित है।
- इस क्षेत्र को OIL के द्वारा खोजा गया।
- पेट्रोलियम उत्पादन क्षमता = 30000 बैरल प्रतिदिन

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

भारत में पेट्रोलियम उत्पादित क्षेत्र

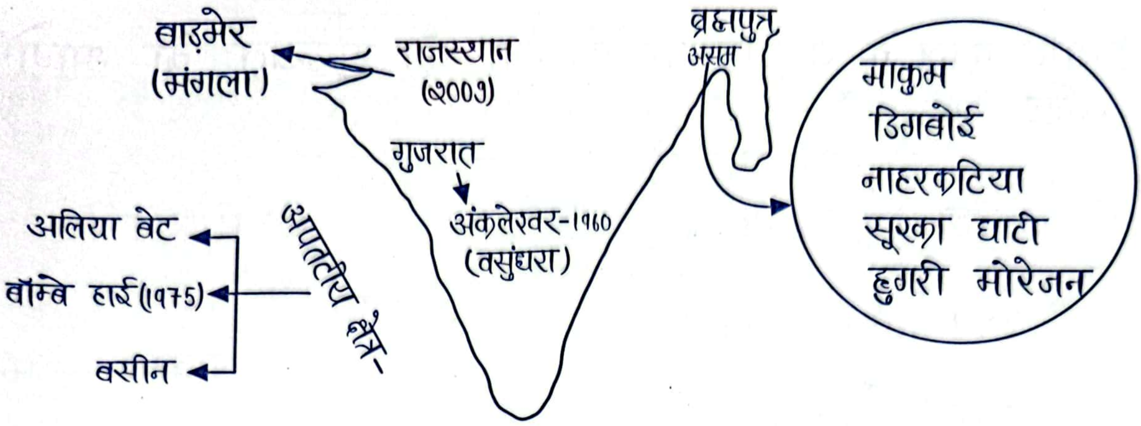

उपयोग-

1. ईंधन के रूप में उपयोगी।
2. सड़क (तारकोल/डामर) बनाने में उपयोगी।
3. स्नेहक के रूप में उपयोगी।
4. रंग उद्योग में

NOTE- भारत में पेट्रोलियम का सर्वाधिक उत्पादन-

1st - अपतटीय क्षेत्र = 40% (Bombay High)

2nd - राजस्थान = 14.95%

3rd - गुजरात

4th - असम

THE NOTES HUB ★Notes are Available★ All Competition Books 7300134518, 7610010054

* प्राकृतिक गैस-

→ भंडारण एवं उत्पादन - 1st - बाड़मेर → रागेश्वरी, गुडा-मालानी
2nd - जैसलमेर

Trick- 'डंडे का गम राम तने मन में घोटा'

डंडेवाला, गुमानेवाला, रामगढ़, तनोट, मनिहारी टिब्बा, घोटारू

कोयला

- निर्माण काल के आधार पर कोयला को मुख्यतः दो भागों मे बाँटा गया है-
  - गोंडवाना लैंड काल Or कार्बोनिफेरस काल → भारत में 98%
  - टर्शियरी काल → भारत में 2% (राजस्थान = 100%)

- कार्बन की मात्रा के आधार पर कोयला चार प्रकार का होता है-

प्रकार	कार्बन की मात्रा	रंग
1. एंथ्रासाइट	→ 95%	→ काला व चमकीला
2. बिटुमिनस	→ 60-70%	→ काला व भूरा
3. लिग्नाइट	→ 50-60%	→ भूरा
4. पीट कोयला	→ 50% से कम	→ हल्का भूरा

NOTE- सर्वाधिक कोयला
- भारत → बिटुमिनस
- (अत:) राजस्थान में → लिग्नाइट

- कोयला भण्डारण एवं उत्पादन क्षेत्र एवं उपयोग-

1st – बाड़मेर → 'कपूर जा गिरा भादरेस' – Trick
कपूरड़ी, जालीपा, गिरल, भाद्रेश

2nd – बीकानेर → B B P G – Trick
बीठनोक, बरसिंहसर, पलाना (सर्वश्रेष्ठ कोयला), गुढ़ा (गुरहा)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010058

CamScanner

3rd – नागौर → मेड़ता सिटी , ईग्यार
माता सुख - कसनाऊ

NOTE→ भारत में सर्वाधिक लिग्नाइट उत्पादन = तमिलनाडु - Ist
गुजरात - IInd
राजस्थान - IIIrd
(राजस्थान में मुख्यत: लिग्नाइट कोयला पाया जाता है)

* कोयले के उपयोग-

1.> ईंधन के रूप में उपयोगी।
2.> तापीय ऊर्जा उत्पादन में उपयोगी।
3.> सीमेन्ट उद्योग में उपयोगी।
4.> सब्जियों में उपयोगी।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

अन्य खनिज

1. अभ्रक / माइका-

माइका अधात्विक खनिज का उदाहरण है। जिसका भंडारण राजस्थान में तीन क्षेत्रों में है-

- भीलवाड़ा-उदयपुर क्षेत्र
- जयपुर-टोंक क्षेत्र
- अन्य क्षेत्र ↓ अलवर, अजमेर, राजसमंद, नीम का थाना

➤ उत्पादन क्षेत्र-

1st - भीलवाड़ा – • दांता भूणास
↓ • नात की नेरी
अभ्रक नगरी • दोगास & चापरी

2nd-उदयपुर- मालवा & चंपागढ़

3rd- टोंक– बारेली, शंकरवाड़ा   4th- जयपुर– बंजारी, लक्ष्मी

NOTE→ भीलवाड़ा को अभ्रक नगरी भी कहते है।

*उपयोग-
1.) भवन निर्माण में उपयोगी।
2.) विद्युत उपकरणों में उपयोगी।
3.) ईंट बनाने में उपयोगी।

NOTE→ माइका को 'खनिजों का बीमार बच्चा' भी कहा जाता है क्योंकि देश की 20 बड़ी खानों में से केवल 50% माइका का उत्पादन होता है।

खनिज नीतियाँ

सामान्य खनिज नीतियाँ
- 1st – 1978
- 2nd – 1990
- 3rd – 1994
- 4th – 2011
- 5th – 5 जून 2015
- 6th – Update

मार्बल व ग्रेनाइट नीति
↓
2002

M-सैंड नीति-2020
↓
25 Jan. 2021

THE NOTES HUB
All Notes are Available
Competition Books
7300134518, 7610010054

M- Sand Policy- 2020
अर्थ→ M- Sand कृत्रिम बजरी है।
(Manufacture Sand)

जिसे पत्थरों या खनिज को पीसकर तैयार किया जाता है।

➡ M- सैंड नीति राजस्थान में २५ जनवरी २०२१ को जारी कि गई। जिसके मुख्य उद्देश्य-

1.) यह बजरी का सस्ता एवं आसान विकल्प है।

2.) पर्यावरण संरक्षण

3.) जैव विविधता में सुधार करना।

4.) खनिज आधारित उद्योगों को बढ़ाना तथा स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़ाना।

अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

1. खनिज संबंधी संस्थान-

- RSMML [Rajasthan State Mines And Minerals Limited] (राजस्थान राज्य खान एवं खनिज निगम)
  - स्थापना - 1975
  - मुख्यालय- उदयपुर

2. हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड-

- स्थापना- 1966, देबारी (उदयपुर)
  राजपुरा दरीबा (राजसमंद - 2010)

NOTE- जिंक स्मेल्टर प्लांट-
- स्थिति- चंदेरिया (चितौड़)
- स्थापना- 2005
- सहयोग- ब्रिटेन

THE NOTES HUB ★ All Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

3. हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड-

- स्थापना- 1967,
- स्थान- खेतड़ी (नीम का थाना)

CamScanner

- **हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड की ताम्र परियोजनाएँ-**

1.) खेतड़ी (नीम का थाना)
2.) चान्दमारी (झुन्झुनू)
3.) खो-दरीबा (अलवर)

4. **HPCL** (हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड)-

- स्थिति- पचपदरा (बालोतरा)
- सहयोग- केन्द्र : राज्य = 74:26
- बजट - 72,937 करोड़ ₹
- क्षमता - 9MMTPA (मिलियन मैट्रिक टन प्रति वर्ष)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

विशेषताएँ-

1.) पेट्रोलियम रिफाइनरी राज्य की प्रथम एवं देश की 26 वीं पेट्रोलियम रिफाइनरी है।

2.) इस रिफाइनरी का BS (Bharat Stage) मानक 6 है।

3.) पेट्रोलियम रिफाइनरी के निकट Petro Chemical Complex स्थापित किया जायेगा। (शुभारंभ- 16 जनवरी 2018)

वनस्पति

A. वन नीतियाँ
B. वन गणना
C. वनों का वर्गीकरण
D. प्रमुख वन सम्पदा एवं घास
E. वानिकी कार्यक्रम
F. वानिकी व पर्यावरण संबंधी पुरस्कार
G. प्रमुख अधिनियम एवं परियोजनाएँ
H. वानिकी व पर्यावरण संबंधी दिवस
I. अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु / तथ्य

वन नीतियाँ

भारत सरकार
- 1894
- 1952
- 1988
  - उद्देश्य
    - भौगोलिक क्षेत्र 33%
    - पर्वत 60%
    - मैदान 20%

राज्य सरकार
- 18 Feb. 2010
- 5 June 2023
  - भौगोलिक क्षेत्र
    - 20%

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

वनगणना

- संस्थान- वन सर्वेक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, देहरादून (उत्तराखण्ड)
- समय - प्रति दो वर्ष में एक बार
  - ↳ प्रथम वनगणना = 1987
  - ↳ 2007 मे वनगणना जारी नहीं हुई।

नवीनतम - 2021 (17वीं)

CamScanner

17 वीं वनगणना-२०२१ (ISFR) के अनुसार-

[ISFR = Indian State forest Report]

राजस्थान में कुल वन (२०२१)

- 7.४3%
  - वनाच्छादित (FC) (Forest Covered) — ४.87%
  - वृक्षाच्छादित (TC) (Tree covered) — २.56%
- २5388 Km²
  - FC — 16655 Km
  - TC — 8733 Km²

NOTE-

वन
- 10% से अधिक → वनाच्छादित
- 10% से कम → वृक्षाच्छादित

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

*17 वीं वनगणना २०२१ के अनुसार सर्वाधिक वन-

क्षेत्रफल

1. उदयपुर – २753 Km²
२. अलवर – 1196 Km²
3. प्रतापगढ़ – 1034 Km²
4. बारां – 1010 Km²

प्रतिशत (%)

1. उदयपुर – २3.४9%
२. प्रतापगढ़ – २3.२४%
3. सिरोही – 17.४9%
4. करौली – 15.२8%

*17 वीं वनगणना २०२१ के अनुसार न्यूनतम वन-

क्षेत्रफल

चुरू – 78 Km²
हनुमानगढ़ – 93 Km²
जोधपुर – 109 Km²
श्रीगंगानगर – 115 Km²

प्रतिशत (%)

जोधपुर – 0.४8%
चुरू – 0.56%
जैसलमेर – 0.8४%
बीकानेर – 0.९२%

NOTE- राजस्थान में अभिलेखित वन-

- प्रतिशत → ९.६१%
- क्षेत्रफल →
  - ३२८६५ (कि.मी)^2 = २०२१-२२
  - ३२८६९ (कि.मी)^2 = २०२२-२३
  - ३२९२१ (कि.मी)^2 = २०२३-२४

ISFR-२०२३ Report (18 वीं वनगणना)-

→ Report आने के बाद स्वयं करंट से Update करें।
Website- 'Forest Survey of india.'

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

वनों का वर्गीकरण

- कानूनी / प्रशासनिक वर्गीकरण
- भौगोलिक वर्गीकरण

1. कानूनी / प्रशासनिक वर्गीकरण-

राज्य वन अधिनियम 1953 के अनुसार इन वनों को तीन भागों में बाँटा गया है-

आरक्षित वन	रक्षित वन	अवर्गीकृत वन
लकड़ी काटना, पशुचारण एवं शिकार पर पूर्णतः प्रतिबंध	लकड़ी काटना, पशुचारण की सीमित छूट	कोई प्रतिबंध नहीं
सर्वाधिक- उदयपुर 36.99%	बारां 56.51%	बीकानेर 6.50%

THE NOTES HUB Notes are Available All Competition Books 7300134518, 7610010054

2. भौगोलिक वर्गीकरण-

राजस्थान में भौगोलिक वनों का वर्गीकरण सामान्यतः 5 भागों में किया जाता है।

➤ इस वर्गीकरण का मुख्य आधार = वर्षा, तापमान व उच्चावच है।

- उपोष्ण सदाबहार वन
- उष्ण सागवान वन
- उष्ण शुष्क मानसूनी वन
- उष्ण धोक वन
- उष्ण मरुद्भिद वन

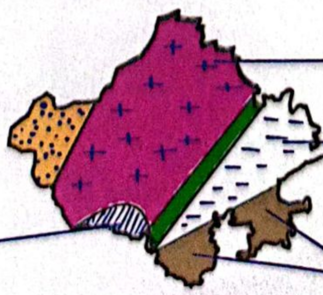

1. उपोष्ण सदाबहार वन-

- वर्षा- इन वनों में वर्षा की आवश्यकता 150 cm है।
- क्षेत्र- इन वनों का योगदान राजस्थान के कुल भौगोलिक वनों का 1% है।
- विस्तार- मुख्यतः माउंट आबू (सिरोही) में
- वृक्ष/घास- डिक्लिपटेरा आबू एंसिस/अम्बरतरी
  बाँस
  जामुन
- महत्व/विशेषता- इन वनों में जैव विविधता अधिक पाई जाती है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

2. उष्ण सागवान वन-

- वर्षा- इन वनों में वर्षा की आवश्यकता 75-110 cm होती है।
- क्षेत्र- इन वनों का योगदान राजस्थान के कुल भौगोलिक वनों का 7% है।
- विस्तार- यह वन मुख्यतः वागड़ (डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़) व हाड़ौती (कोटा, बारां, झालावाड़) क्षेत्र में पाए जाते है।
- वृक्ष- सागवान, गूलर, महुआ, तेंदु (SGMT)
- महत्व- यह वन औद्योगिक क्षेत्र में अधिक उपयोगी है।

3. उष्ण शुष्क मानसूनी / पतझड़ वन-

- वर्षा- इन वनों में वर्षा की आवश्यकता 50-80 cm होती है।
- क्षे.- कुल भौगोलिक वनों का 28% हिस्सा।

CamScanner

- विस्तार- मेवाड़ क्षेत्र व मैदानी क्षेत्र (अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर)
  - ↳ राजसमन्द, उदयपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़
- वृक्ष – साल, सागवान, शीशम, रोजवुड, खैर, पलाश, आम, चंदन
- विशेषता- फर्नीचर उद्योग में सर्वाधिक उपयोग।

NOTE- रोहिड़े को राजस्थान में मरु सागवान (मरुटीक) कहा जाता है।

4. उष्ण धोक वन-

- वर्षा- इन वनों में वर्षा की आवश्यकता 30-60 cm होती है।
- क्षेत्र- कुल भौगोलिक वनों का 58% भाग।
- विस्तार- अर्द्धशुष्क मरुस्थल, अरावली क्षेत्र, स. माधोपुर, करौली
- वृक्ष - खेजड़ी, रोहिड़ा, बबूल, कैर, बेर, धोक
- महत्व- यह वन ईंधन की लकड़ी के रूप में उपयोगी है।

5. उष्ण कंटीले वन / मरुद्भिद वन / जीरोफाइट्स वन-

- वर्षा– इन वनों में वर्षा की आवश्यकता 0-30 cm होती है।
- क्षेत्र– कुल भौगोलिक वनों का 6% है।
- विस्तार- जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर, जोधपुर
- वृक्ष - कंटीली झाड़ियाँ, कैक्टस, डंडा थोर
- महत्व - यह वन मरुस्थलीकरण को रोकते है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CS CamScanner

➢ प्रमुख वन सम्पदा एवं घास

1. <u>खेजड़ी</u> → (प्रोसोपिस सिनेरेरिया)

- सर्वाधिक पश्चिमी राजस्थान में
- अन्य नाम – राज्य वृक्ष (1983 ई.) / राज्य का गौरव / शमी वृक्ष / राज्य का कल्पवृक्ष / जांटी (स्थानीय भाषा में)

Note- विजयादशी / दशहरा के अवसर पर खेजड़ी की पूजा की जाती है।

2. <u>रोहिड़ा</u> → (टीकामेला अंडूलेटा)

- सर्वाधिक पश्चिमी राजस्थान में
- अन्य नाम – राज्य पुष्प (1983 ई.) मरुस्थल का सागवान।

3. <u>महुआ</u> → (मधुका लोंगिफोलिया)

- सर्वाधिक – डूँगरपुर
- "आदिवासियों का कल्पवृक्ष"
- महुआ के फूलों का उपयोग – शराब बनाने में

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054 ★

4. <u>पलाश / ढ़ाक / खाखरा</u> → (ब्युटिया मोनोस्पर्मा)

- सर्वाधिक – राजसमंद में
- इसे 'जंगल की ज्वाला' कहते है।
- इसके फूलों से 'प्राकृतिक रंग' बनाया जाता है।

5. <u>डिक्लिप्टेरा आबू ऐंसिस (अम्बरतरी)</u> –
यह एक औषधीय पादप है जो विश्व में केवल माउंट आबू पर पाया जाता है।

6. खैर →
- सर्वाधिक - उदयपुर, चित्तौड़गढ़
- कथौड़ी जनजाति द्वारा इस वृक्ष की छाल से 'कत्था' तैयार किया जाता है।

7. शहतूत →
- सर्वाधिक - उदयपुर
- इस वृक्ष पर रेशमकीट से रेशम उत्पादित किया जाता है।
  - "रेशमकीट पालन - सेरीकल्चर"

8. तेंदू →
- सर्वाधिक - प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ एवं हाड़ौती
- इसकी पत्तियों का उपयोग बीड़ी बनाने में किया जाता है।
- 'टिमरू' → तेंदू फल को 'टिमरू' कहा जाता है।
- 1974 में तेंदू पेड़ का राष्ट्रीयकरण किया गया।

9. जामुन -
- सर्वाधिक - माउंट आबू, सिरोही, अजमेर
- मधुमेह के उपचार में उपयोगी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

10. सागवान -
- सर्वाधिक - बांसवाड़ा
- इसकी लकड़ी का उपयोग मुख्यतः फर्नीचर बनाने में किया जाता है।

11. साल / सालर - मुख्यतः अरावली क्षेत्र (अलवर, अजमेर, राजसमंद एवं सिरोही) में पाया जाता है।

इन वनों का विस्तार 450 मीटर से अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों में होता है।

CamScanner

प्रमुख घास-

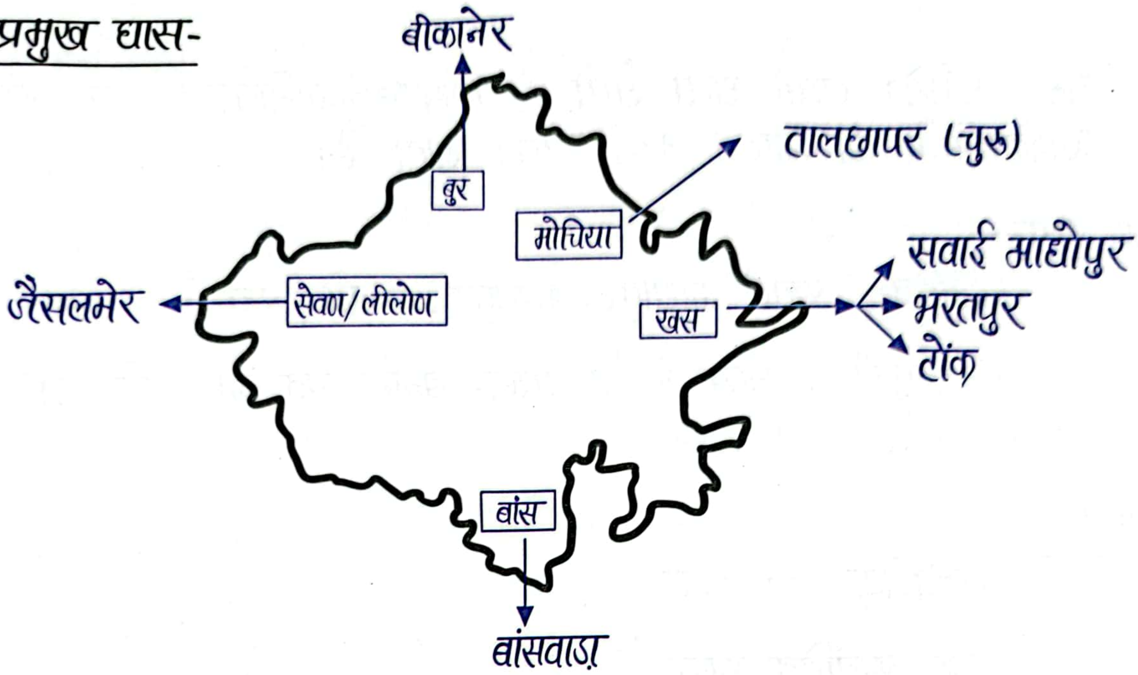

(i) सेवण/लीलोण-

- वैज्ञानिक नाम- लेसियुरस सिंडिकश
- सर्वाधिक - जैसलमेर
- दुधारू पशुओं के चारे के रूप में उपयोगी।
- इसे गोडावण की शरणस्थली भी कहा जाता है।

(ii) धामण →

वैज्ञानिक नाम- सेन्क्रस सेटीजेरस

सर्वाधिक -जैसलमेर

दुधारू पशुओं के चारे के रूप में उपयोगी।

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(iii) बांस →

वैज्ञानिक नाम- बम्बुसा वल्गरिस

सर्वाधिक- बांसवाड़ा

यह सर्वाधिक लम्बी घास होती है जिसे "आदिवासियों का हरा सोना"/ "आदिवासियों की ईमारती लकड़ी" कहा जाता है।

(iv) खस→
सर्वाधिक - सवाई माधोपुर, भरतपुर, अजमेर एवं टोंक
यह सुगंधित घास है जो शरबत बनाने एवं इत्र बनाने में उपयोगी होती है।

(v) बुर→
सर्वाधिक - बीकानेर
यह सुगंधित घास है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(vi) मोचिया घास→
सर्वाधिक - चुरू (तालछापर अभ्यारण्य)

E. वृक्षारोपण कार्यक्रम

1. मरुस्थल वृक्षारोपण कार्यक्रम→

शुरुआत- 1977-78

जिले - 10

वित्तीय भागीदारी - केन्द्र : राज्य = 75 : 25

NOTE :- मरुस्थल विकास कार्यक्रम (DDP)
- शुरु 1977-78
- जिले - 16
- वित्तीय सहयोग - केन्द्र : राज्य - 75 : 25

2. ऑपरेशन खेजड़ी→

शुरुआत- 1991

उद्देश्य - मरुस्थलीकरण को रोकना।

3. अरावली वृक्षारोपण योजना- (सहयोग- जापान)

शुरुआत- 1992

10 जिले शामिल- अलवर, जयपुर, सीकर, झुंझुनूं, नागौर, पाली सिरोही, उदयपुर, चित्तौड़ एवं बांसवाड़ा।

4. राज्य वानिकी क्रियान्वयन योजना-

→ 1996 से 2016 (20 वर्षीय कार्यक्रम)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

उद्देश्य- • वनों एवं जैव विविधता को बढ़ाना।
• मिट्टी एवं जल संरक्षण
• गरीबी उन्मूलन एवं आजीविका कार्यक्रम

चरण

- फेज- Ist (2003-10) → 18 जिले
- फेज- IInd (2011-22) → 15 जिले (10 मरुस्थलीय + 5 गैर मरुस्थलीय)

नोट :- फेज-IInd के गैर-मरुस्थलीय जिलों में जयपुर, सिरोही, बाँसवाड़ा, डूँगरपुर एवं भीलवाड़ा शामिल थे।

6. हरित राजस्थान कार्यक्रम- (2009-2014)

→ यह वृक्षारोपण की एक पंचवर्षीय योजना है।

7. वन धन योजना- (राज्य सरकार)

→ 12 Aug., 2015 से शुरू।

उद्देश्य- वन क्षेत्रों के निकट रहने वाले लोगों के विकास एवं उनकी वनों पर निर्भरता कम करने व रोजगार उपलब्ध करवाना।

8. वन धन विकास योजना (केन्द्र सरकार) →

शुरुआत - 14 अप्रैल, 2018

उद्देश्य - गैर लकड़ी आधारित उत्पादों द्वारा आदिवासियों की आय बढ़ाना।

9. घर-घर औषधि योजना -

शुरुआत - 1 अगस्त 2021 (2021 से 2026)

उद्देश्य -
- रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाना।
- औषधीय पादपों को बढ़ाना।

> Note - इस योजना में 4 पादपों को शामिल किया गया है -
> तुलसी, अश्वगंधा, कालमेघ, गिलोय

F. वन संरक्षण पुरस्कार

1. अमृता देवी बिश्नोई पुरस्कार - प्रारम्भ - 1994

उद्देश्य -
- वृक्षारोपण
- वन संरक्षण
- वन्य जीव संरक्षण

यह पुरस्कार तीन स्तर पर दिया जाता है

- व्यक्तिगत वन संरक्षण
  - ↓ राशि - 50 हजार
  - ↓ ओम सिंह राजावत (2018 में)
- व्यक्तिगत वन्य जीव संरक्षण
  - ↓ राशि - 50 हजार
  - ↓ सतनाम सिंह
- संस्थागत वन सुरक्षा एवं प्रबन्धन
  - ↓ राशि - 1 लाख
  - (i) वंडर सीमेंट कम्पनी R.K.नगर, चित्तौड़
  - (ii) वन सुरक्षा एवं प्रबंधन समिति - उदयपुर
  - (iii) मानव सेवा संस्थान, हनुमानगढ़

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

२. इंदिरा प्रियदर्शनी वृक्ष मित्र पुरस्कार- (शुरुआत -1986)

यह पुरस्कार भारत सरकार के पर्यावरण और वन मंत्रालय द्वारा उन व्यक्तियों और संस्थानों को दिया जाता है, जिन्होंने वनीकरण और बंजर भूमि विकास के क्षेत्र में अग्रणी और अनुकरणीय कार्य किया है।

राशि- २,50,000 रु.

3. राजीव गांधी पर्यावरण संरक्षण पुरस्कार- शुरुआत- २०१२ (5 जून)

यह पुरस्कार तीन स्तर पर दिया जाता है

	व्यक्तिगत	नगरीय निकाय	संस्थागत
राशि-	२ लाख + रजत कमल	3 लाख + रजत कमल	5 लाख + रजत कमल

4. कैलाश सांखला वन्यजीव संरक्षण पुरस्कार-

राशि- 50,000 रुपये (वन्य जीवों की सुरक्षा हेतु)

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

5. वनपालक पुरस्कार- यह पुरस्कार सरकारी विभाग में कार्य करने वाले वन रक्षक और वन विभाग के कर्मचारियों को दिया जाता है।

ज. वनस्पति एवं वन्य जीवों के संरक्षण संबंधी अधिनियम एवं परियोजनाएँ

- ⇒ वन्य जीव संरक्षण अधिनियम - 1972
- ⇒ बाघ संरक्षण परियोजना - 1973
- ⇒ मगरमच्छ संरक्षण परियोजना - 1975

CamScanner

→ वन संरक्षण अधिनियम - 1980 (संशोधित - 1988)

→ पर्यावरण संरक्षण अधिनियम - 1986

→ हाथी संरक्षण अधिनियम - 1992

→ जैव विविधता संरक्षण अधिनियम - २००२
↳ नियम - २०10

→ डॉल्फिन संरक्षण अधिनियम - २००9

NOTE :- राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड का गठन 14 सितम्बर, २010 जयपुर में किया गया।

H. प्रमुख दिवस

- 14 जनवरी, 31 जनवरी → जीव जंतु पखवाड़ा
- २ फरवरी → रामसर/ विश्व आर्द्रभूमि दिवस
- २1 मार्च → विश्व वानिकी दिवस
- २२ मार्च → जल दिवस
- २२ अप्रैल → पृथ्वी दिवस
- २२ मई → जैव विविधता दिवस
- 5 जून → विश्व पर्यावरण दिवस
- 1 जुलाई- 7 जुलाई → वन महोत्सव एवं वन सप्ताह
- 16 सितम्बर → ओजोन दिवस
- 1 अक्टूबर से 7 अक्टूबर → वन्य जीव सप्ताह

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

थीम - २०२५

- ➤ २ फरवरी → Wetlands and Human Wellbeing
- ➤ २१ मार्च → Forest and Innovation
- ➤ २२ मार्च → Water for Peace
- ➤ २२ अप्रैल → Planet v/s Plastics
- ➤ २२ मई → Build Back Biodiversity : From Agreement to action.
- ➤ 5 जून → Land restoration, desertification and drought Resilience
- ➤ 16 सितम्बर → Ozone for Life

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

I. अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- वनों संबंधित संस्थान
- राजस्थान के प्रमुख बायो लॉजिकल पार्क
- राजस्थान के थीम पार्क

(a) वनों के संबंधित संस्थान-

काजरी (CAZRI- Central Arid Zone Research Institute)-
- स्थापना - 1959, जोधपुर
- 5 उपकेन्द्र- बीकानेर, जैसलमेर, पाली, भुज (कच्छ-गुजरात) व लेह (लद्दाख)

आफरी (AFRI- Arid forest Research Institute)
स्थापना- 1987, जोधपुर

(b) राजस्थान के प्रमुख बायो लॉजिकल पार्क (जैविक उद्यान) - (5)

1. सज्जनगढ़ → उदयपुर
2. माचिया सफारी → जोधपुर
3. नाहरगढ़ → जयपुर
4. अभेड़ा → कोटा (नांता) - निर्माणाधीन
5. मरुभरा → बीकानेर (बीछवाल) - निर्माणाधीन

(c) राजस्थान के थीम पार्क-

1. प्रकृति पार्क → चुरु, लक्ष्मणगढ़ (सीकर)
2. कैक्टस गार्डन → कुलधारा (जैसलमेर)
3. बटरफलाई पार्क → जयपुर
4. बोगनवेलिया थीम → उदयपुर एवं जयपुर
5. जैव विविधता पार्क → गमधर (उदयपुर)
6. किशनबाग जयपुर के धोरे → जयपुर
7. सिटी पार्क → जयपुर

NOTE :- * Monkey Vally of Rajasthan - गलता जी (जयपुर)
* बटरफ्लाई वैली - कुलिश स्मृति वन (जयपुर)

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

CamScanner

राजस्थान में जैव विविधता एवं वन्य जीव संरक्षण

✔ पारिस्थितिकी तंत्र

✔ राजस्थान में पारिस्थितिकी समस्याएँ

✔ वन्यजीव / पारिस्थितिकी संरक्षण

पारिस्थितिकी तंत्र (100 words)

➥ राजस्थान राज्य को 4 पारिस्थितिकी तंत्रों में बाँटा गया है-

1. मरू पारिस्थितिकी तंत्र
2. अरावली पारिस्थितिकी तंत्र
3. पूर्वी मैदान पारिस्थितिकी तंत्र
4. हाड़ौती पारिस्थितिकी तंत्र

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

1. मरू पारिस्थितिकी तंत्र-

➥ राजस्थान में उत्तर-पश्चिम राजस्थान में विस्तृत।

➥ वनस्पति- इस पारिस्थितिकी तंत्र में जीरोफाइट्स या मरुद्भिद/ कंटीली वनस्पति पाई जाती है।
जैसे- कैक्टस, कंटीली झाड़ियाँ, डंडा थोर

➥ वन्यजीव→ मरु लोमड़ी, गोडावण, चिंकारा, कुरजा, छोटा किलकिला काला हिरण।

2. अरावली पारिस्थितिकी तंत्र-

➥ यह राजस्थान के द० प० से उ० पू० की ओर विस्तृत है।

➥ Vegetation→ उपोष्ण सदाबहार, उष्ण धोक, उष्ण शुष्क मानसूनी

→ वन्यजीव → कब्र बिज्जु (उदयपुर), जंगली मुर्गे, भेड़िये (राजसमंद), खड़मोर (अजमेर), चीतल (जयपुर), सांभर (अलवर), खरगोश (दौसा)

NOTE- इस पारिस्थितिकी तंत्र में जैव विविधता सर्वाधिक पाई जाती है। क्योंकि यहाँ वनस्पति सघनता अधिक होती है।

3. पूर्वी मैदान पारिस्थितिकी तंत्र-

- यह पारिस्थितिकी अरावली के पूर्व में स्थित है।
- इस पारिस्थितिकी तंत्र में उष्ण शुष्क मानसूनी वनस्पति (पतझड़ वन) पाई जाती है, जैसे- साल, सागवान, शीशम।
- वन्य जीव- इस पारिस्थितिकी तंत्र में पक्षी जैव विविधता अधिक पाई जाती है। जैसे-
  - जलपीपी - बांसवाड़ा
  - जांघिल - डूँगरपुर
  - सारस - भरतपुर
  - मोर - भीलवाड़ा
  - हंस - टोंक
  - इंडियन स्कीमर (पंछीडा) - धौलपुर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

4. हाड़ौती पारिस्थितिकी तंत्र-

- यह पा० तंत्र राजस्थान के द० पू० क्षेत्र में स्थित है।
- इस पारिस्थितिकी तंत्र में उष्ण सागवान वन पाए जाते है।
- वन्यजीव- इसमें जलीय जैव विविधता अधिक पाई जाती है। जैसे घड़ियाल (करौली), मगरमच्छ (बारां), गांगेय सूंस, उदबिलाव (कोटा), सुर्खाब (बूंदी)
- वनस्पति- सागवान, गूलर, महुआ, तेन्दु।

राजस्थान में पारिस्थितिकी की समस्याएँ/चुनौतियाँ

चुनौतियाँ- (50 words)

- राजस्थान में क्षेत्रफल की तुलना मे वन्य जीव कम पाए जाते है।
- जिसका कारण–

मानवीय कारण	जलवायु/ पर्यावरणीय कारण
1. बढ़ती हुई जनसंख्या एवं पशु सम्पदा।	1. राजस्थान में अल्प वर्षा का होना।
2. वनों एवं वृक्षों की कटाई।	2. सतही एवं भूमिगत जल की कम उपलब्धता
3. बढ़ता हुआ नगरीकरण एवं औद्योगिकरण।	3. प्राकृतिक वनस्पति की कमी।
4. मानव व वन्यजीवों के मध्य बढ़ते हुए आपसी संघर्ष।	4. बढ़ता हुआ मरुस्थलीकरण।
5. अरावली क्षेत्र में बढ़ता हुआ खनन।	5. वन्यजीवों के मध्य बढ़ते हुए आपसी संघर्ष।

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

वन्यजीव / पारिस्थितिकी संरक्षण

असम के बाद, राजस्थान वन्य जीवों में दूसरा स्थान रखता है। आजादी से राजस्थान को "शिकारियों के स्वर्ग" के रूप में जाना जाता था। आजादी के बाद, पेड़ों की अनियंत्रित कटाई और अवैध शिकार के कारण, केन्द्र और राज्य सरकार दोनों वन और वन्यजीव संरक्षण के लिए संयुक्त रूप से प्रयासरत है।

वन्य जीवों को दो तरीकों से संरक्षित किया जा सकता है-

वन्यजीव संरक्षण

स्वः स्थाने संरक्षण (In-Situ)	बाह्य स्थाने संरक्षण (Ex-Situ)
जीवों को उनके प्राकृतिक आवास में संरक्षित करना।	जीवों को उनके प्राकृतिक आवास के बाहर संरक्षित करना।

उदा.
- राष्ट्रीय उद्यान
- वन्यजीव अभयारण्य
- बाघ संरक्षण परियोजना
- रामसर साइट
- कन्जर्वेशन रिजर्व
- आखेट निषेध क्षेत्र एवं जैव मण्डल

उदा.-
- जंतुआलय
- मृग उद्यान
- पशु जीन बैंक एवं एक्वेरियम

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

I. स्वः स्थाने संरक्षण-

राष्ट्रीय उद्यान- राजस्थान में तीन राष्ट्रीय उद्यान है, जो निम्न लिखित है-
(a) रणथम्भौर
(b) केवलादेव
(c) मुकुंदरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान

CamScanner

(a) रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान- (1980)

- सवाई माधोपुर
  २8२.03 Km²
- राजस्थान का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान (बाघों का घर)
- राजस्थान की प्रथम बाघ परियोजना (प्रमुख बाघिन - मछली / T-16)
- त्रिनेत्र गणेश मन्दिर, जोगी महल एवं कुक्कुर घाटी (डॉग वैली) स्थित।
- धोक वृक्ष की अधिकता
- रणथम्भौर में स्थित तालाब- काला तालाब, जंगली तालाब, सुख तालाब

(b) केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान / घाना पक्षी विहार (1981)-

- भरतपुर, क्षेत्र.→ (२8.73 Km²)
- यूनेस्को धरोहर सूची में शामिल राज्य की एकमात्र प्राकृतिक धरोहर (1985)
- शीत ऋतु में साइबेरियन सारस यहाँ आते है।
- इसे पक्षियों का स्वर्ग भी कहते है।
- 1981 में रामसर सूची में शामिल।
- डॉ. सलीम अली की कर्मस्थली
- अजान बाँध इसी अभयारण्य में स्थित है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(C). मुकुंदरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान- (२01२)

- राजस्थान का नवीनतम राष्ट्रीय उद्यान।
- राजस्थान का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्यान (२97.6२ वर्ग कि.मी)
- गागरोनी तोते एवं बाघों के लिए प्रसिद्ध।

CamScanner

- राज्य की तीसरी बाघ परियोजना
- सागवान वनस्पति अधिक पाई जाती है।

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

राज्य अभयारण्य

राज्य अभयारण्य

सबसे बड़ा

1. राष्ट्रीय मरुउद्यान (3162 Km²)
2. कैलादेवी अभयारण्य (677 Km²)
3. कुम्भलगढ़ अभयारण्य (611 Km²)

सबसे छोटा

1. सरिस्का - अ (3 Km²)
2. सज्जनगढ़ अभयारण्य (5 Km²)
3. तालछापर अभयारण्य (7 Km²)

प्रमुख अभयारण्य

नाम	क्षेत्र	वर्ष	विशेषताएँ
रामसागर	धौलपुर	1955	
वन विहार	धौलपुर	1955	
केसरबाग	धौलपुर	1955	
सरिस्का	अलवर	1955	• राज॰ की दूसरी बाघ परियोजना
सरिस्का-अ	अलवर	2012	मोर व हरे कबूतर के लिए प्रसिद्ध पांडुपोल, भृतहरि मंदिर, नीलकण्ठ महादेव एवं नारायणी माता मन्दिर।
सवाई माधोपुर	सवाई माधोपुर	1955	
जयसमंद	सलूम्बर	1955	"जलचरों की बस्ती"

CamScanner

दर्रा	कोटा, झालावाड़	1955	• गागरोनी तोते
तालछापर	चुरू	1962	• काले हिरण एवं कुरजा पक्षी गुरु द्रोणाचार्य आश्रम स्थित।
कुंभलगढ़	उदयपुर, पाली व राजसंमद	1971	• भेड़ियों एवं रणकपुर जैन मंदिर के लिए प्रसिद्ध।
जवाहर सागर	बूंदी, कोटा, चित्तौड़गढ़	1975	• घड़ियालों के लिए प्रसिद्ध। • गरड़िया महादेव मन्दिर, गेपरनाथ मन्दिर
राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल	धौलपुर, करौली बूंदी, कोटा, स. माधोपुर	1979	• घड़ियाल, मगरमच्छ, डॉल्फिन के लिए प्रसिद्ध।
सीतामाता वन्य जीव अभयारण्य	प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ व सलूम्बर	1979	• यहाँ अधिकतम जैव विविधता पाई जाती है। • सागवान वृक्ष अधिक पाए जाते है। • उड़न गिलहरी, पैंगोलिन, चीतल और चौसिंगा के लिए प्रसिद्ध
नाहरगढ़	जयपुर व जयपुर ग्रामीण	1980	• जैविक उद्यान के रूप में विकसित • जयपुर जन्तुआलय (रामनिवास बाग से) स्थानांतरित • इसे एक्जोटिक पार्क के रूप में स्थापित किया जायेगा। • लॉयन सफारी की शुरुआत की।
राष्ट्रीय मरु उद्यान	जैसलमेर, बाड़मेर (3162 Km²)	1980	• राज्य का सबसे बड़ा अभयारण्य, सेवण घास सर्वाधिक, गोडावण एवं चिंकारा अधिक • इसमें फॉसिल पार्क स्थित है।
रामगढ़ विषधारी	बूंदी	1982	• इसमें अजगर पाए जाते है। • इसमें मेज नदी बहती है। • कनक सागर झील (दुगारी बाँध) • राज्य की 4th बाघ परियोजना

THE NOTES HUB Notes are Available All Competition Books 7300134518, 7610010054

CamScanner

जमवारामगढ़	जयपुर ग्रामीण	1982	• धोक वन पाए जाते है • जमवाय माता का मन्दिर
टॉडगढ़ अरावली	ब्यावर, पाली, राजसमंद	1983	
फुलवारी की नाल	उदयपुर	1983	• सोम, मानसी व वाकल नदियां बहती है।
भैंसरोडगढ़	चित्तौड़गढ़	1983	• घड़ियालों के लिए प्रसिद्ध • चम्बल + ब्राह्मणी नदी के किनारे स्थित
शेरगढ़	बारां	1983	• ये सांपों, शेरगढ़ दुर्ग, परवन नदी के लिए प्रसिद्ध।
कैलादेवी	करौली सवाई माधोपुर	1983	सर्वाधिक धोक वन
सवाई मानसिंह	सवाई माधोपुर	1984	
बंध बारेठा	भरतपुर	1985	"पक्षियों का घरौंदा"
सज्जनगढ़	उदयपुर	1987	• "प्रथम बॉयोलॉजिकल पार्क" • राजस्थान का दूसरा छोटा अभयारण्य
बस्सी	चित्तौड़गढ़	1988	जलेश्वर महादेव
माउंट आबू	सिरोही	2008	• 'डिकलप्टेरा आबू ऐंसिस' वनस्पति पाई जाती है।

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

बाघ परियोजनाएँ

↓

राजस्थान में 5 बाघ परियोजनाएँ

- रणथम्भौर
- सरिस्का
- मुकुंदरा हिल्स
- रामगढ़ विषधारी
- धौलपुर-करौली

MAHECHA PUBLICATION

1. रणथम्भौर	1974	स. माधोपुर करौली बूंदी टोंक	1530.23 Km²	रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान, स. माधोपुर अभयारण्य, कैलादेवी, राष्ट्रीय चम्बल अभ.
2. सरिस्का	1978	अलवर, जयपुर, जयपुर ग्रामीण	1213.34 Km²	सरिस्का और जमवारामगढ़ अभयारण्य
3. मुकुंदरा हिल्स	2013	कोटा, बूंदी, झालावाड़, चित्तौड़	1135.78 Km²	मुकुंदरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान, दर्रा अभयारण्य, चम्बल अभयारण्य, जवाहरसागर अभयारण्य
4. रामगढ़ विषधारी	2021	बूंदी, कोटा, झालावाड़	1496.49 Km²	रामगढ़ विषधारी
5. धौलपुर-करौली	2023	धौलपुर-करौली	599.64 Km²	

रामसर साइट

↪ वर्तमान में राज्य में दो रामसर साइट है।

1. केवलादेव 1981 → साइबेरियन सारस
2. सांभर 1990 → कुरजा एवं राजहंस

THE NOTES HUB *Notes are Available* All Competition Books 7300134518, 7610010054

कंजर्वेशन रिजर्व

↪ राज्य में कुल 36 कंजर्वेशन रिजर्व है,-

1. जोड़बीड़ गढ़वाला ——→ बीकानेर

२. जवाई बाँध लैपर्ड-I → पाली
3. जवाई बाँध लैपर्ड-II → पाली
4. बीड. → झुंझुनूं
5. बांसियाल-खेतडी → नीम का थाना
6. बांसियाल-खेतडी बागार → नीम का थाना
7. मनसा माता → झुंझुनूं, नीम का थाना
8. बीसलपुर → केकडी
9. सुंधा माता → जालौर-सिरोही
10. शाकम्भरी → सीकर, नीम का थाना
11. गोगेलाव → नागौर
12. रोटू → नागौर
13. गुढ़ा विश्नोईयां → जोधपुर
14. उम्मेदगंज पक्षी विहार → कोटा
15. शाहबाद कन्जर्वेशन → बारां (राज्य में सबसे बड़ा)
16. बीड घास फुलिया खुर्द → भीलवाड़ा
17. बागदरा मगरमच्छ → उदयपुर
18. रणखार → सांचौर
19. शाहबाद-तलहटी → बारां
20. वाड़ाखेड़ा → सिरोही
21. झालाना-आमागढ़ → जयपुर
22. रामगढ़-कुंजी-सुनवास → बारां
23. अरवर गाँव (खड़मोर) → अजमेर
24. खीचन (कुरजा) → जोधपुर
25. हमीरगढ़ → भीलवाड़ा
26. बांझ आम्ली → बारां
27. सोरसन-I → बारां
28. सोरसन-II → बारां
29. सोरसन-III → बारां
30. महसीर → उदयपुर

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books 7300134518, 7610010054

31. बीड़ फतेहपुर → सीकर
32. बीड़ मुहाना -A → जयपुर
33. बीड़ मुहाना -B → जयपुर
34 अमरख महादेव लैपर्ड → उदयपुर
35. बालेश्वर → सीकर एवं नीम का थाना
36. गंगा भैरव घाटी → अजमेर

आखेट निषेध क्षेत्र (राज्य में कुल 33)

सबसे बड़ा - कोल्सर सम्वतसर - चुरु - बीकानेर
सबसे छोटा - कनक सागर (बूँदी)

अन्य
- जोधपुर – डोली, गुढा विश्नाई
- बीकानेर – जोड़बीड़, मुकाम, बज्जू, देशनोक
- अजमेर – सोखलिया, तिलोरा
- जयपुर – सन्थाल, महला

II. बाह्य स्थाने संरक्षण :-

A. जन्तु आलय – राजस्थान में 5 जन्तु आलय है।

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

(i) जयपुर जन्तुआलय-
राज्य का प्रथम जन्तुआलय।

निर्माण - रामसिंह-II, (1876) राम निवास बाग
वर्तमान में नाहरगढ़ अभयारण्य में स्थानांतरित।
यहाँ घड़ियाल प्रजनन केन्द्र स्थित है।

(ii) उदयपुर जन्तुआलय- 1878, गुलाबबाग (उदयपुर) में स्थापित।
→ राज्य का दूसरा जन्तुआलय
वर्तमान- सज्जनगढ़ जैविक उद्यान में स्थानांतरित।

(iii) बीकानेर जन्तुआलय- स्थापना - 1922

CamScanner

(iv) जोधपुर जन्तुआलय-

स्थापना- 1936

पक्षीशाला एवं गोडावन प्रजनन केन्द्र स्थित है।

(v) कोटा जन्तुआलय- इसकी स्थापना- 1954

(B) मृग उद्यान- राजस्थान में कुल 7 मृग उद्यान है।

1. अशोक → जयपुर
2. संजय → जयपुर ग्रामीण
3. अमृता देवी → जोधपुर
4. माचिया सफारी → जोधपुर
5. पुष्कर → अजमेर
6. सज्जनगढ़ → उदयपुर
7. दुर्ग → चित्तौड़

THE NOTES HUB ☆ Notes are Available ☆ All Competition Books 7300134518, 7610010054

आर्थिक भूगोल

कृषि

- ✔ परिचय
- ✔ कृषि जलवायु प्रदेश
- ✔ कृषि के प्रकार (Indian / World Geo)
- ✔ कृषि का वर्गीकरण
- ✔ कृषि फसलों के अनुकूल भौगोलिक दशाएँ
- ✔ कृषि विकास के प्रयास

✔ परिचय-

कृषि प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा है।
भारत / राजस्थान की कृषि मुख्यत: मानसून पर आधारित है इस कारण कृषि को 'मानसून का जुआ' कहते है।

↳ पूर्वी मैदान को 'कृषि का हृदय स्थल कहा जाता है क्योंकि यहाँ कृषि उत्पादकता अधिक होती है।

✔ कृषि जलवायु प्रदेश-

- भारत → 15
- राजस्थान → 10

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

↳ कृषि जलवायु प्रदेशों का आधार-
- फसल चक्रण
- मिट्टी
- जल उपलब्धता
- वर्षा

CamScanner

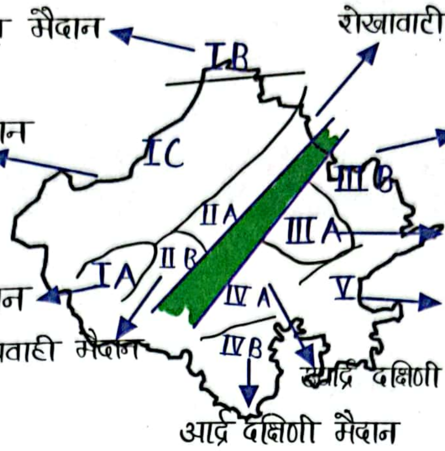

1. IA→ पश्चिमी शुष्क मैदान

- विस्तार- जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, फलौदी, बाड़मेर एवं बालोतरा
- वर्षा - 20-35 cm
- फसल प्रारूप
  - रबी = गेहूँ, चना, सरसों, ईसबगोल एवं जीरा
  - खरीफ = बाजरा, ग्वार

2. IB→ उत्तरी-पश्चिमी सिंचित मैदान

- विस्तार - श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ एवं अनूपगढ़
- वर्षा - 10-30 सेमी.
- फसल प्रारूप
  - रबी = गेहूँ, सरसों, चना
  - खरीफ = कपास, गन्ना, चावल

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

3. IC→ अतिशुष्क एवं आंशिक सिंचित मैदान-

- विस्तार - जैसलमेर, बीकानेर, चुरू आंशिक (रतनगढ़, सरदारशहर, बीदासर एवं सुजानगढ़ तहसिल)
- वर्षा - 10-30 सेमी.
- फसल प्रारूप
  - रबी = गेहूँ, चना, सरसों
  - खरीफ = बाजरा, ग्वार, मूंगफली

4. II A (शेखावाटी अन्तः प्रवाह मैदान)–

- विस्तार – सीकर, झुंझुनू, नागौर, आंशिक चुरू (रतनगढ़, सरदारशहर, बीदासर एवं सुजानगढ़ तहसिल को छोड़कर) झुन्झुनू, नागौर, डीडवाना एवं कुचामन।
- वर्षा – 30-50 cm
- फसल प्रारूप → रबी = गेहूँ, सरसों, चना
  → खरीफ = बाजरा, ग्वार, दलहनी फसलें (मूंग, मोठ, चंवला)

5. II B (लूनी अन्तःप्रवाही मैदान)–

- विस्तार – पाली, जालौर, सिरोही (पिण्डवाड़ा, आबूरोड तहसिल को छोड़कर), पाली, ब्यावर आंशिक (जैतारण एवं रायपुर तहसिल)
- वर्षा – 30-50 सेमी
- फसल प्रारूप → रबी = गेहूँ, सरसों, चना, ईसबगोल, जीरा, अरण्डी
  → खरीफ = बाजरा, ग्वार, तिल, अरण्डी

6. III A (अर्द्धशुष्क पूर्वी मैदान)–

- विस्तार – अजमेर, ब्यावर आंशिक (जैतारण एवं रायपुर तहसिल को छोड़कर) जयपुर, जयपुर ग्रामीण, दौसा, टोंक, दूदू, केकड़ी, खैरथल-तिजारा, कोटपूतली-बहरोड़
- वर्षा – 50-70 cm
- फसल प्रारूप → रबी = गेहूँ, सरसों, चना, जौ
  → खरीफ = बाजरा, ज्वार, ग्वार

7. III B → बाढ़ सम्भाव्य पूर्वी मैदान–

- विस्तार – अलवर, डीग, भरतपुर, करौली, धौलपुर, सवाई माधोपुर, गंगापुर सिटी
- वर्षा – 50-70 सेमी
- फसल प्रारूप → रबी = गेहूँ, सरसों
  → खरीफ = बाजरा, ग्वार

THE NOTES HUB · All Notes are Available · All Competition Books · 7300134518, 7610010054

CamScanner

8. IV A→ उपार्द्र दक्षिणी मैदान-

- विस्तार – उदयपुर, चित्तौड़गढ़ (बड़ी सादड़ी तहसिल छोड़कर) राजसमन्द, भीलवाड़ा, शाहपुरा, सिरोही आंशिक (पिण्डवाड़ा एवं आबूरोड तहसिल)
- वर्षा – 50-90 सेमी.
- फसल प्रारूप → रबी = गेहूँ, चना, अफीम
  → खरीफ = , गन्ना, ज्वार मक्का

9. IV B→ आर्द्र दक्षिणी मैदान-

- विस्तार – बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, सलुम्बर एवं चितौड़गढ़ की बड़ी सादड़ी तहसिल)
- वर्षा – 50-110 सेमी.
- फसल प्रारूप → रबी = गेहूँ, अफीम, चना
  → खरीफ = मक्का, चावल, गन्ना

10. V→ आर्द्र द. पू. मैदान-

- विस्तार – कोटा, बूँदी, बारां, झालावाड़
- वर्षा – वर्षा - 65-110 सेमी
- फसल प्रारूप → रबी = गेहूँ, चना, सरसों, मसाला फसलें
  → खरीफ = मक्का, गन्ना, चावल, सोयाबीन

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

NOTE- कृषि जलवायु प्रदेश में

सबसे बड़ा	सबसे छोटा
Ist - IC	Ist - IV B
2nd - IA	2nd - I B

✔ कृषि के प्रकार – (Indian/World Geo.)

✔ कृषि का वर्गीकरण

- मौसम/ऋतु के आधार पर वर्गीकरण
  - खरीफ या स्यालू
  - रबी या उनालू
  - जायद
- उपयोग के आधार पर वर्गीकरण
  - खाद्यान्न फसलें
  - दलहन फसलें
  - तिलहन फसलें
  - रेशेदार फसलें
  - व्यापारिक फसलें
  - पेय फसलें

	खरीफ या स्यालू	रबी या उनालू	जायद
बुआई –	जून-जुलाई	Oct. Nov.	मार्च-अप्रेल
कटाई –	Sep. Oct.	मार्च-अप्रेल	May-June

मौसम/ऋतु के आधार पर वर्गीकरण

1. खरीफ या स्यालू फसलें –

- अनाज- बाजरा, ज्वार, चावल, मक्का, रागी
- दलहन- मूंग, मोठ, चंवला, अरहर (तूर) उड़द
- तिलहन- तिल, सोयाबीन, मूँगफली, अरण्डी, सूरजमुखी, सूर्यमुखी
- नकदी/व्यापारिक फसलें- कपास, गन्ना, ग्वार, जूट (सुनहरा रेशा)

2. रबी फसलें/उनालू फसलें-

- अनाज- गेहूँ, जौ
- दलहन- मसूर, चना, मटर
- सब्जी प्रारूप- सरसों, जीरा/राई/सौंफ, लहसुन, प्याज, अदरक, मिर्च मसाला फसलें, मैथी
- नकदी फसलें– तारामीरा, ईसबगोल, अफीम, तंबाकू, अलसी।

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

3. जायद फसलें- खरबूजा, तरबूज, सब्जियाँ, ककड़ी, पशुओं का चारा।

उपयोग के आधार पर वर्गीकरण

1. अनाज/ खाद्यान्न फसलें-

वे फसले जो खाने या भोजन के रूप में उपयोगी होती है, उन्हे खाद्यान्न/ अनाज फसले कहते है।

उदाहरण-

- खरीफ → बाजरा, ज्वार, मक्का, चावल
- रबी → गेहूँ, जौ

NOTE → प्रमुख खाद्यान्न फसल
- भारत/ विश्व → चावल
- राजस्थान → बाजरा

२. दलहनी फसलें / भूमि उर्वरक फसलें-

वे फसलें जो कृषि भूमि की उर्वरकता को बढाती है, उन्हें दलहन / भूमि उर्वरक फसले कहते है।

उदाहरण- खरीफ- मूंग, मोठ, चंवला, उड़द।
रबी - चना, मसूर, मटर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

NOTE- राजस्थान की प्रमुख दलहन फसल चना है।

3. तिलहन फसल-

वे फसलें जिनसे तेल प्राप्त होता है उन्हें तिलहन फसलें कहते है।

उदाहरण- खरीफ → तिल, मूँगफली, सोयाबीन, सूरजमुखी, अरण्डी
रबी → सरसों, राई, अलसी, तारामीरा

NOTE → राजस्थान की प्रमुख तिलहन फसल सरसों है।

अन्य तिलहन पादप

- Olive/ जैतून → उपयोग/ use → खाद्य तेल एवं औषधी में
- HoHoba-or-Jojoba → स्नेहक
- रतनजोत/ जेट्रोफा एवं करंज → बायोडिजल

4. **रेशेदार फसलें-**

1. कपास (सफेद सोना) → 'प्रमुख रेशेदार फसल'
2. जूट/ पटसन (गोल्डन फाईबर/ सुनहरा रेशा)
3. बाँस (आदिवासियों का हरा सोना/ ईमारती लकड़ी)
4. अलसी (तीसी)

5. **नकदी/ व्यापारिक फसलें-** वे फसलें जो औद्योगिक क्षेत्र में अधिक उपयोगी है, उन्हें नकदी/ व्यापारिक फसलें कहा जाता है।

→ **उदाहरण-** कपास, ग्वार, गन्ना, तिलहन
→ देश या राज्य की प्रमुख व्यापारिक फसल कपास है।

6. **पेय फसलें-** वे फसले जो पेय/ पीने के रूप में उपयोगी हो, उन्हें पेय फसलें कहा जाता है।

→ जैसे - चाय, कॉफी (कहवा) तंबाकू, गन्ना ।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

प्रमुख फसलों की भौगोलिक दशाएँ

फसल	वर्षा	तापमान	मिट्टी
बाजरा	25-50	25°C- 35°C	रेतीली, जलोढ़
जौ	50-100	15°C-20°C	जलोढ़
गेहूँ	50-100	15°C-20°C	जलोढ़
सरसों	50-100	15°C- 20°C	जलोढ़
कपास	50-100	21°C- 28°C	काली
मक्का	50-100	21°C- 28°C	लाल चिकनी
गन्ना	125-150	21°C- 28°C	जलोढ़
चावल	150-200	21°C- 28°C	जलोढ़

NOTE- रबी = 15°C - 20°C
खरीफ = 21°C - 28°C

बाजरे की भौगोलिक दशाएँ एवं वितरण-

- बाजरा खरीफ की फसल का उदाहरण है। जिसकी प्रमुख भौगोलिक दशाएँ—
  1. वर्षा- 25-50 सेमी. वर्षा की आवश्यकता
  2. तापमान- बाजरे के लिए अनुकूल तापमान 25°C-35°C होता है।
  3. मिट्टी- बाजरा मुख्यतः जलोढ़ एवं रेतीली मिट्टी में उत्पादित होता है।

वितरण-

- बाजरा राजस्थान में मुख्यतः उत्तरी-पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र व पूर्वी मैदान में उत्पादित होता है।

जिसमें प्रमुख जिले-

1st - अलवर
2nd - बाड़मेर
3rd - जयपुर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

बाजरे की प्रमुख उच्च गुणवत्ता वाली किस्में-

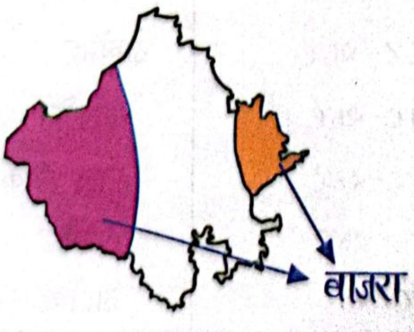

- राज 171
- RCB-2
- RCB-911
- RHB-30

प्रमुख फसलों के उत्पादन वाली किस्में-

उत्पादन- (२०२०-२१)

1. गेहूँ = Ist हनुमानगढ़ , IInd श्री गंगानगर
२. कपास = Ist हनुमानगढ़ , IInd श्री गंगानगर
3. गन्ना = Ist श्री गंगानगर , IInd चित्तौड़ , IIIrd बूँदी
4. जौ = Ist श्री गंगानगर , IInd जयपुर
5. मक्का = Ist भीलवाड़ा , IInd-चित्तौड़ , IIIrd उदयपुर
6. बाजरा = Ist अलवर , IInd बाड़मेर , III जयपुर
7. चावल =
   - चम्बल बेसिन → कोटा, बूँदी
   - घग्घर बेसिन → हनुमानगढ़ , श्री गंगानगर
   - माही बेसिन → बांसवाड़ा, डूंगरपुर

सरसों - उ. पू. राजस्थान, श्रीगंगानगर, अलवर, भरतपुर, टोंक

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

> कोटा-बूंदी- बासमती
> बांसवाड़ा = माही सुगंधा

प्रमुख फसलों की उच्च गुणवत्ता वाली किस्में-

1. बाजरा
   - RAJ-171
   - RCB-2
   - RCB-911
   - RHB-30

२. कपास
   - नरमा
   - बीकानेरी नरमा
   - PST-9
   - US-81
   - US-51
   - US-71

3. गेहूँ
   - MG-नवी (मरू गेहूँ-नवी)
   - लेमी (काला गेहूँ)
   - कल्याण सोना (1482)
   - सोनालिका
   - मालविका
   - कोहिनूर
   - दुर्गापुरा-65

4. चावल
   - बासमती
   - माहीसुगंधा
   - परमल
   - चम्बल
   - पद्मा
   - जमुना

CamScanner

5. गन्ना
   - CO-419
   - CO-449
   - CO-1007
   - CO-1111

6. सरसों
   - पूसा बोल्ड
   - राजविजय सरसों-२
   - पूसा सरसों-२५
   - पूसा सरसों-२१

7. मक्का
   - माही धवल
   - माही कंचन
   - HM-4
   - HM-8
   - HM-9
   - अरुण

8. जौ
   - करण
   - कैलाश
   - केदार
   - ज्योति

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

कृषि विकास

- कृषि अनुसंधान केन्द्र
- कृषि उत्कृष्टता केन्द्र
- कृषि विश्वविद्यालय
- कृषि नीतियाँ
- K-3 → 'कृषक कल्याण कोष'
- कृषि निवेश कार्यक्रम (GRAM)

1. कृषि अनुसंधान केन्द्र-

- (a.) केन्द्र सरकार (ICAR)
- (b) राज्य सरकार

(a.) केन्द्र सरकार

• **ICAR** [Indian Council Of Agricultural Research]
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)

शुष्क बागवानी, बीछवाल (बीकानेर), (1993)

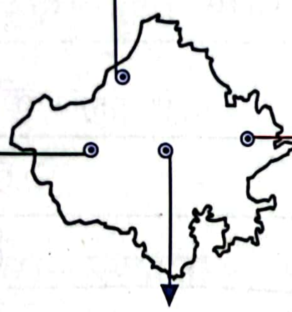

CAZRI → 1959 (जोधपुर)

रेपसीड एवं सरसों अनु॰ केन्द्र (सेवर, भरतपुर) - 1993

बीजीय अनुसंधान केन्द्र, तबीजी (डुमाडा) -अजमेर, 2000

(b) राज्य सरकार

• **RARI** = [Rajasthan Agricultural Research Institute]
↳ दुर्गापुरा, जयपुर → 1943

- बेर अनुसंधान केन्द्र
- खजूर अनुसंधान केन्द्र
  } → बीछवाल (बीकानेर)
- बाजरा अनुसंधान केन्द्र - जोधपुर & बाड़मेर
- ईसबगोल अनुसंधान केन्द्र - जोधपुर

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

CamScanner

- मक्का अनुसंधान केन्द्र - बांसवाड़ा
- चावल अनुसंधान केन्द्र - बांसवाड़ा
- ज्वार अनुसंधान केन्द्र - वल्लभनगर (उदयपुर)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

२. कृषि उत्कृष्टता केन्द्र-

उत्कृष्टता केन्द्र ↓	जिले ↓
1. खजूर	सगरा भोज का (जैसलमेर)
2. बाजरा	जोधपुर
3. अंजीर	सिरोही (प्रस्तावित)
4. नींबू वर्गीय पादप/ मसाला एवं औषधीय पादप	झालावाड़
5. नींबू वर्गीय पादप	कोटा
6. सब्जी	बूंदी
7. सीताफल	चित्तौड़
8. अमरूद	1st - देवडावास - टोंक 2nd - स. माधोपुर
9. एपीकल्चर	टोंक (प्रस्तावित)
10. फूल/ पुष्प	S. माधोपुर
11. अनार 12. ड्रेगन फ्रूट 13. ऑलिव / जैतून	बस्सी (जयपुर ग्रामीण)
14. आँवला, आम, जैतून	खेमरी (धौलपुर)

3. कृषि विश्वविद्यालय-

1st → केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय = बीछवाल (1987)

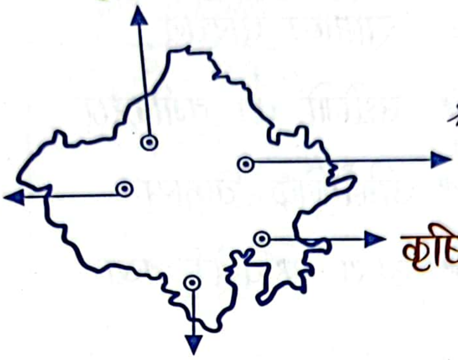

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्व (जोबनेर, जयपुर) - 2013

जोधपुर कृषि विश्व. (मंडोर), 2013

कृषि विश्वविद्यालय, बोरखेड़ा, (कोटा) - 2013

2nd → महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (उदयपुर) (1999)

4. कृषि नीतियाँ-

- राज्य कृषि नीति → 26 जून 2013
- जैविक कृषि नीति → जून 2017
- कृषि प्रसंस्करण नीति, कृषि व्यवसाय, कृषि निर्यात प्रोत्साहन नीति - 2019

5. K-3 (कृषक कल्याण कोष) - स्थापना - dec. 2019

उद्देश्य- किसानों को उनकी कृषि फसल/ उपज की उचित कीमत उपलब्ध करवाना।

→ कुल कोष - 7500 करोड़ ₹

6. राजस्थान में आयोजित GRAM = Global Rajasthan Agritech Meet

- → Ist - Gram → जयपुर NOV. 2016
- → IInd - Gram → कोटा May - 2017
- → IIIrd - Gram → उदयपुर NOV. - 2017

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

उद्योग / Industries

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- ✔ सामान्य परिचय
- ✔ उद्योगों का वर्गीकरण
- ✔ औद्योगिक विकास
- ✔ अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

A. सामान्य परिचय -

औद्योगिक विकास की दृष्टि से राजस्थान पिछड़ा हुआ राज्य है क्योंकि-

- राजस्थान में जलवायु की विपरित दशाएँ पाई जाती है।
- आधारभूत अवसंरचना का अल्प विकास
- औद्योगिक क्षेत्र में निवेश कम होना।
- कुशल श्रमिकों का अभाव।

कोटा को तीव्र औद्योगिक विकास के कारण राजस्थान की "औद्योगिक नगरी" कहा जाता है।

↳ वर्तमान में राजस्थान में-

- सर्वाधिक उद्योग / फैक्ट्री - जयपुर
- सर्वाधिक वृहद उद्योग - अलवर

B. उद्योगों का वर्गीकरण-

उद्योगों का वर्गीकरण

- आकार के आधार पर
- विनिर्माण के आधार पर
- स्वामित्व के आधार पर

1. आकार के आधार पर- आकार के आधार पर उद्योगों को तीन भागों में बाँटा गया है, जिसका आधार पूंजी एवं टर्नओवर है।

उद्योग	पूँजी / निवेश	टर्नओवर
(i) अति लघु उद्योग	1 करोड़	5 करोड़
(ii) लघु	1 - 10 करोड़	5 - 50 करोड़
(iii) मध्यम	10 - 50 करोड़	50 - 250 करोड़

कुटीर उद्योग- निम्न तकनीक पर आधारित उद्योग जिनका उद्देश्य लाभ प्राप्त करने के स्थान पर आजीविका चलाना होता है।

विनिर्माण के आधार पर- विनिर्माण के आधार पर उद्योगों का कच्चे माल के आधार पर वर्गीकरण किया जाता है।

विनिर्माण के आधार पर

- कृषि आधारित उद्योग
- खनिज आधारित उद्योग
- वनोत्पाद आधारित उद्योग
- इंजीनियरिंग / तकनीकी उद्योग
- रासायनिक उर्वरक उद्योग

I. कृषि आधारित उद्योग-

1. सूती वस्त्र उद्योग
2. चीनी उद्योग
3. ऊन उद्योग
4. वनस्पति घी एवं सरसों तेल उद्योग
5. डेयरी उद्योग
6. बायोडिजल
7. जैतून तेल उद्योग

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

1. सूती वस्त्र उद्योग- (कच्चा माल - कपास)
↳ प्रथम सूती वस्त्र मिल- 'दी कृष्णा कॉटन मिल'

स्थापना- 1889 (ब्यावर, अजमेर)

संस्थापक- सेठ दामोदर दास राठी एवं कर्नल डिक्सन

उद्योगों का वर्गीकरण

- एडवर्ड (ब्यावर-1906)
- विजयनगर (ब्यावर)
- महालक्ष्मी (ब्यावर) (1925)

राजस्थान की सहकारी सूती वस्त्र मिलें

- राजस्थान सहकारी कताई मिल, गुलाबपुरा (भीलवाड़ा - 1965)
- गंगापुर सहकारी कताई मिल, (भीलवाड़ा, 1981)
- श्रीगंगानगर सहकारी कताई मिल (हनुमानगढ़ - 1978)
- गुलाबपुरा स्पिनिंग & जिनिंग सहकारी मिल

SPINFED (स्पिनफैड) - Rajasthan State Cooperative Spinning & Ginning Mills federation Ltd.

स्थापना- 1 अप्रैल, 1993

यह सहकारी सूती वस्त्र मिलों का संघ है।

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

➤ अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

1. सूती वस्त्र उद्योग कृषि आधारित सबसे बड़ा उद्योग।
2. यह एक परम्परागत उद्योग है।
3. महिलाएँ इस उद्योग में सर्वाधिक कार्यरत है।

- महाराजा उम्मेद मिल्स लिमिटेड- (पाली)
  - 1939 (राजस्थान की सबसे बड़ी सूती वस्त्र मिल)

NOTE:- भीलवाड़ा को 'राजस्थान का मैनचेस्टर'/ वस्त्रनगरी/ टैक्सटाइल सिटी कहा जाता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

२. चीनी उद्योग-

(कच्चा माल- गन्ना एवं चुकन्दर)

राजस्थान में चीनी मिलें

- मेवाड़ शुगर मिल
  - १९३२ (चित्तौड़)
  - प्रथम निजी चीनी मिल
- उदयपुर शुगर मिल (1976)
- गंगानगर शुगर मिल (1937) श्री गंगानगर
  - प्रथम- सार्वजनिक चीनी मिल (1956)
- केशोरायपाटन शुगर मिल (1965 बूंदी)
  - प्रथम- सहकारी चीनी मिल

NOTE:- गंगानगर शुगर मिल एकमात्र शुगर मिल है जहाँ 1968 में चुकन्दर व गन्ने से चीनी बनाई गई। वर्तमान में यह बन्द है। जिसके द्वारा वर्तमान में निम्नलिखित उपक्रमों का संचालन किया जा रहा है,

गंगानगर शुगर मिल

- देशी शराब का निर्माण
- हैरिटेज लिकर का निर्माण (जयपुर)
- दी हाइटेक प्रिसिजन ग्लास फैक्ट्री (धौलपुर)
- सैनिटाइजर का निर्माण

३. ऊन उद्योग :-

ऊन उत्पादन में राजस्थान (47.98 %) का देश में प्रथम स्थान है। → २०२२-२३ के अनुसार

प्रमुख ऊन उद्योग-

1. केन्द्रीय ऊन बोर्ड - जोधपुर

2. राजस्थान में सर्वाधिक ऊन उत्पादन - जोधपुर
3. राजस्थान में सबसे बड़ी ऊन मण्डी - बीकानेर
4. वूल टेस्टिंग प्रयोगशाला - बीकानेर
5. स्टेट वूल मिल - बीकानेर
6. ऊन प्रशिक्षण केन्द्र - जयपुर
7. केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान केन्द्र - अविकानगर (टोंक)
8. वर्स्टेड स्पिनिंग मिल्स - लाडनूं (डीडवाना-कुचामन) एवं चुरू

4. वनस्पति घी एवं सरसों तेल उद्योग-

- राजस्थान में प्रथम वनस्पति घी फैक्ट्री - भीलवाड़ा (स्थापना - 1964)
- वर्तमान में वनस्पति घी का सर्वाधिक उत्पादन - जयपुर
- सरसों तेल का सर्वाधिक उत्पादन - जयपुर
- सरसों तेल के प्रमुख कारखानें -
  - चम्बल - जयपुर
  - वीर बालक - जयपुर
  - नेताजी - जयपुर
  - इंजन मार्का - भरतपुर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

5. डेयरी उद्योग-

राजस्थान में डेयरी उद्योग का सर्वाधिक विकास - जयपुर में

राजस्थान राज्य डेयरी विकास निगम - 1975 (जयपुर)

→ विश्व बैंक के सहयोग से।

MAHECHA PUBLICATION

डेयरी विकास के लिए राज्य में त्रिस्तरीय ढाँचा बनाया गया-

- **शीर्ष** – RCDF - 1977, राज. राज्य सहकारी संघ (जयपुर)
- **जिला स्तर पर-** – जिला दुग्ध सहकारी संघ - 24
- **ग्रामीण स्तर पर-** – प्राथमिक सहकारी दुग्ध समितियाँ - 18,781

RCDF (Rajasthan co-operative dairy federation) को राजस्थान डेयरी विकास निगम के स्थान पर बनाया गया।

NOTE :-

➤ राजस्थान में संचालित प्रमुख डेयरी-

- राजस्थान की प्रथम डेयरी - पद्मा (अजमेर), 1938
- वरमूल (WRMUL) – Western Rajasthan Milk Union Ltd (जोधपुर)
- उरमूल (URMUL) – Uttari Rajasthan Milk Union Ltd. (बीकानेर)
- गंगमूल (Gangmul)– Ganganagar Milk Union Ltd.
- कैमल मिल्क डेयरी - Ist = बीकानेर, 2009 (जोड़बीड़)
  IInd = जैसलमेर, 2021 (पोकरण)
- मेट्रो डेयरी - गोविंदगढ़ (जयपुर ग्रामीण) → क्षमता - 11 लाख लीटर

➤ ऊँटनी के दुग्ध विपणन का केन्द्र जयपुर में स्थापित किया गया है।
क्षमता - 2000 लीटर/day

6. बायोडिजल-

कच्चा माल - रतनजोत/ जैट्रोफा एवं करंज

बायोडीजल रिफाइनरी - कलड़वास (उदयपुर)

बायोडीजल प्लांट - झामर कोटड़ा (उदयपुर)

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

CamScanner

7. जैतून तेल/ ऑलिव ऑयल-

कच्चा माल- जैतून

जैतून रिफाइनरी - लुणकरणसर (बीकानेर)

> नोट:- ऑलिव टी-प्लांट जयपुर (बस्सी) में स्थापित किया गया है।

II. खनिज आधारित उद्योग-

- सीमेंट उद्योग
- काँच उद्योग
- नमक उद्योग
- मार्बल उद्योग
- ग्रेनाइट उद्योग
- अभ्रक उद्योग

1 सीमेंट उद्योग- स्थान- लाखेरी (बूँदी)

- कच्चा माल - चूना पत्थर, जिप्सम व सिलिका
- प्रथम सीमेंट फेक्ट्री - ACC (एसोसिएट सीमेंट कम्पनी)
- स्थापना - 1915 ई. (उत्पादन 1917 ई.)

सफेद सीमेंट फैक्ट्री-

1. J.K व्हाइट सीमेंट फैक्ट्री - गोटन (नागौर)
2. J.K व्हाइट सीमेंट फैक्ट्री - मांगरोल (चित्तौड)
3. बिरला व्हाइट सीमेंट फैक्ट्री - खारियाखंगार (जोधपुर)

सीमेंट उत्पादन की प्रमुख इकाईयाँ-

- ✔ J.K सीमेंट फैक्ट्री - निम्बाहेडा (चित्तौडगढ़)
- ✔ अल्ट्राटेक सीमेंट फैक्ट्री - चित्तौडगढ़
- ✔ चेतक सीमेंट फैक्ट्री - चित्तौडगढ़

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

- ✔ लाफार्ज सीमेंट फैक्ट्री - चित्तौड़गढ़
- ✔ एसोसिएट सीमेंट फैक्ट्री - लाखेरी (बूँदी)
- ✔ बांगड़ सीमेंट फैक्ट्री - पाली
- ✔ बिनानी सीमेंट फैक्ट्री - पिंडवाड़ा (सिरोही)
- ✔ श्री सीमेंट फैक्ट्री = ③ → श्री गंगानगर, झुंझुनूं, ब्यावर
- ✔ श्री राम सीमेंट फैक्ट्री - श्री राम नगर (कोटा)
- ✔ ग्रासिम सीमेंट फैक्ट्री - कोटपुतली - बहरोड़
- ✔ मंगलम सीमेंट फैक्ट्री - मोड़क (कोटा)
- ✔ जयपुर सीमेंट फैक्ट्री - सवाई माधोपुर
- ✔ अम्बुजा सीमेंट फैक्ट्री - • राबड़ियाबास (ब्यावर) → पहले पाली में स्थित
  • मुंडवा - मारवाड़ (नागौर)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

3. **काँच उद्योग-**

कच्चा माल- सिलिका सैंड, सोडियम सल्फेट, शोरा

राजस्थान में काँच उद्योग का सर्वाधिक विकास - धौलपुर व अलवर

प्रमुख काँच फैक्ट्री

- **धौलपुर**
  - धौलपुर
  - दी हाइटेक प्रिसिजन ग्लास फैक्ट्री
- **कोटा**
  - सेमकोर ग्लास फैक्ट्री
- **अलवर**
  - सेंट गोबेन ग्लास फैक्ट्री (भिवाड़ी, खैरथल-तिजारा)

3. **नमक उद्योग-** इस उद्योग का प्रमुख आधार राजस्थान में खारे पानी की झीलें हैं।

CamScanner

नमक उद्योग

- सांभर (जयपुर ग्रामीण)
- पचपदरा (बालोतरा)
- डीडवाना (नागौर)

4. मार्बल उद्योग-

मार्बल उद्योग में राजस्थान का प्रथम स्थान है।

राजसमंद मे सर्वाधिक मार्बल उत्पादन।
↳ सर्वाधिक मार्बल प्रोसेसिंग इकाईयाँ

किशनगढ़ (अजमेर) मार्बल मण्डी का सबसे बड़ा केन्द्र।

राजस्थान का सफेद मार्बल (मकराना, डीडवाना कुचामन) विश्व प्रसिद्ध माना जाता है।

5. ग्रेनाइट उद्योग-

इस पत्थर का उत्पादन सर्वाधिक राजस्थान के जालोर, बाड़मेर सिरोही क्षेत्र से होता है।

जालोर को राजस्थान में ग्रेनाइट सिटी कहा जाता है।

6. अभ्रक उद्योग-

राजस्थान में अभ्रक ईंट बनाने का कारखाना - भीलवाड़ा

भीलवाड़ा का अभ्रक/ माईका सिटी भी कहा जाता है।

उपयोग- अभ्रक से इलेक्ट्रॉनिक उपकरण बनाए जाते है।

III. वनोत्पाद आधारित उद्योग-

- लकड़ी का नककाशीदार फर्नीचर - बाड़मेर
- गोंद उत्पादन - चौहटन (बाड़मेर)
- टसर रेशम उत्पादन (कार्यक्रम - 1986)
  ↳ उदयपुर, बांसवाड़ा, कोटा में संचालित किया गया।

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

IV. इंजीनियरिंग या तकनीकी उद्योग-

उद्योग	उत्पाद	स्थान
नेशनल इंजीनियरिंग कम्पनी	बॉल एवं बेरिंग	जयपुर
जयपुर मेटल्स	बिजली के मीटर	जयपुर
केप्सटन मीटर	पानी के मीटर	जयपुर, पाली
राजस्थान इले॰ कॉर्पोरेशन	टी.वी	जयपुर
मान इण्डस्ट्रीज	लोहे के दरवाजे एवं टॉवर निर्माण	जयपुर
केबल इण्डस्ट्रीज	केबल	कोटा
इंस्ट्रूमेंटेशन	यंत्र/ मशीन	
J&K इलेक्ट्रॉनिक्स	टी.वी.	कोटा
फ्लोर्सपार संयंत्र	लोहे के साथ मिलाकर संयंत्र निर्माण	डूँगरपुर
सिमको वैगन फैक्ट्री (1957)	रेलवे डिब्बों का निर्माण	भरतपुर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

V. रासायनिक उर्वरक उद्योग-

- चम्बल फर्टिलाइज़र्स एवं केमिकल्स - गढ़ेपान (कोटा)
- राष्ट्रीय केमिकल्स एवं फर्टिलाइज़र्स (DAP - डाई-अमोनियम फॉस्फेट) - कपासन (चित्तौड़गढ़)
- राजस्थान स्टेट केमिकल वर्क्स - डीडवाना (नागौर)
- पाइराइट एण्ड फॉस्फेट लिमिटेड - सलादीपुरा (सीकर)

CamScanner

स्वामित्व के आधार पर

- **निजी उद्योग** – व्यक्तिगत आधार
- **सार्वजनिक उद्योग** – सरकार का अधिकार
- **सहकारी उद्योग** – व्यक्तिगत एवं सरकार दोनों का अधिकार

सार्वजनिक उद्योग

1. केन्द्र सरकार के उपक्रम - 7
2. राज्य सरकार के उपक्रम - 23
   - 6 – वैधानिक बोर्ड
   - 17 – कम्पनी अधिनियम

1. केन्द्र सरकार के उपक्रम-

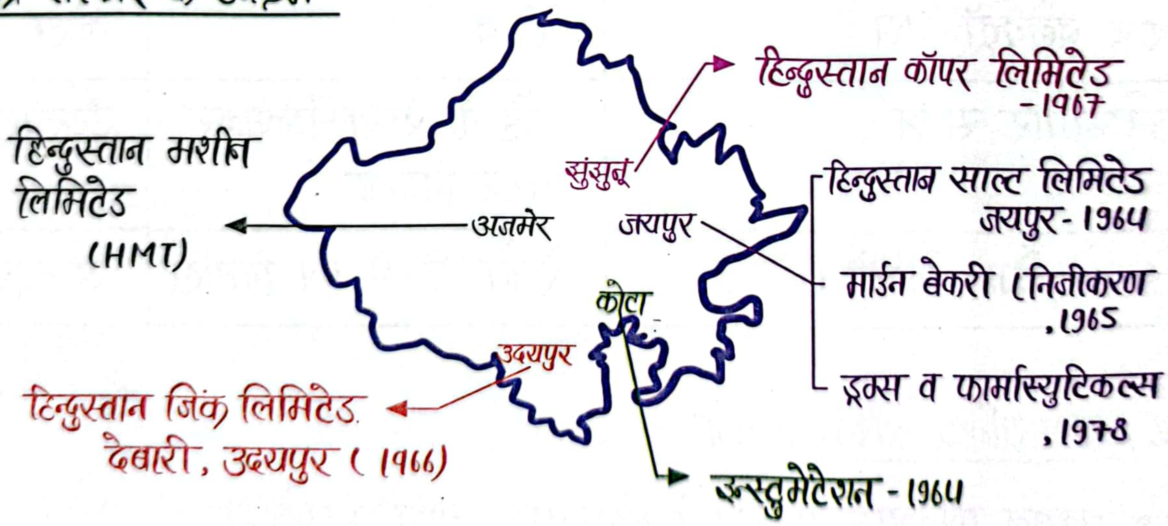

2. राज्य सरकार के उपक्रम-

वैधानिक बोर्ड- 6

1955 → राजस्थान वित्त निगम
1957 → कृषि भण्डारण निगम
1 Oct. 1964 → राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम (RSRTC)

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

CamScanner

1970 → राजस्थान राज्य हाउसिंग बोर्ड निगम (RHB)
1974 → राज्य कृषि विपणन बोर्ड
1975 → राज्य भूमि विकास निगम

कम्पनी अधिनियम - 17

राजस्थान के कम्पनी अधिनियम में संचालित उपक्रम - 17 है, जिसमें से प्रमुख-

1. RSMML- Raj State Mines & Minerals Ltd. (1974) - उदयपुर
2. राज्य विद्युत वितरण निगम - जोधपुर, अजमेर, जयपुर
3. REIL - Rajasthan electronics & Instruments Ltd.- कनकपुर (जयपुर)
   ↳ इसके द्वारा सॉफ्टवेयर IT, नवीकरणीय ऊर्जा संयंत्रों का निर्माण किया जाता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

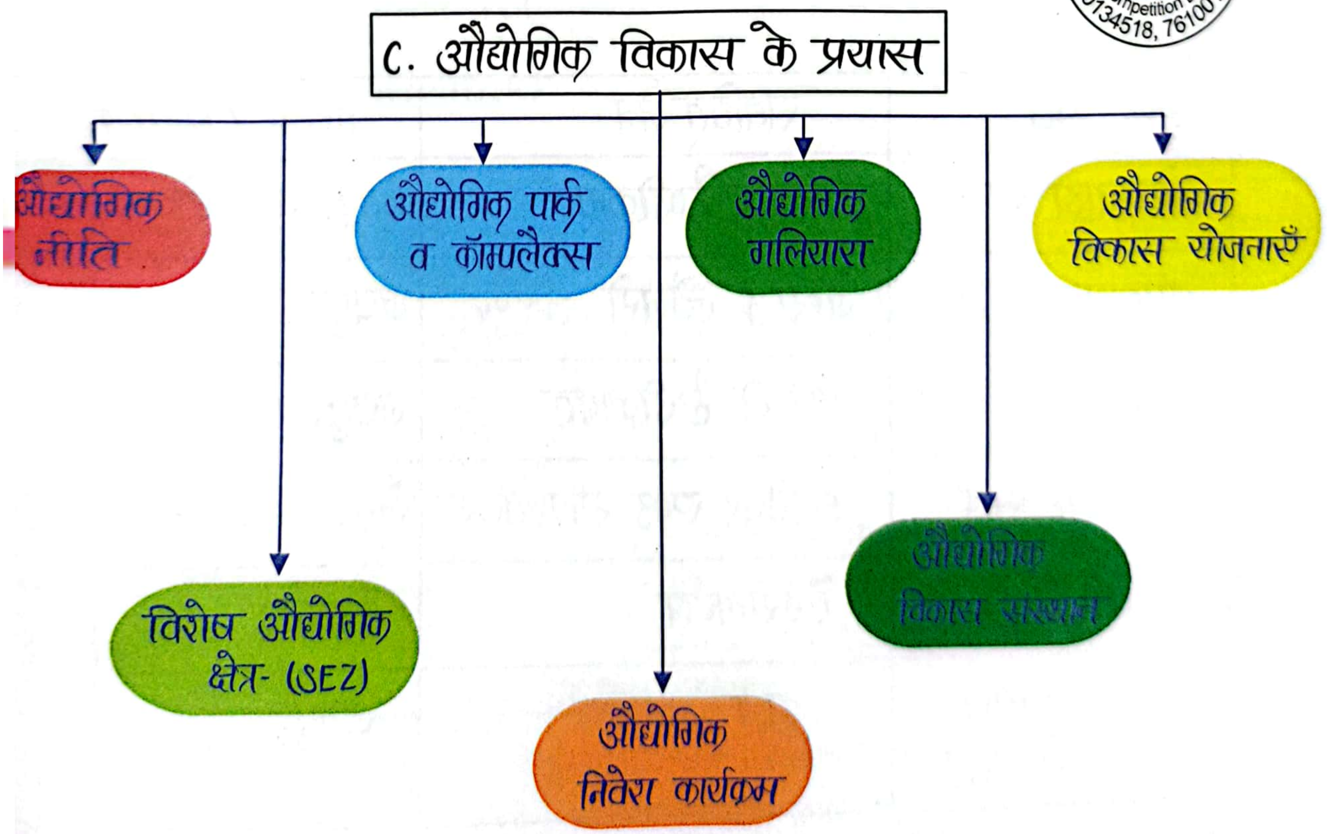

CamScanner

I. राजस्थान में औद्योगिक नीतियाँ-

- सामान्य नीतियाँ
  - 1978
  - 1991
  - 1994
  - 1998
  - 2010
  - 1 जुलाई 2019 (नई औद्योगिक नीति)
- MSME नीति (Micro Small Medium Enterprises Policy)
  - 20 नवम्बर, 2015
  - 17 सितम्बर, 2022
- हैंडीक्राफ्ट/हस्तशिल्प नीति
  - 17 सितम्बर, 2022

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

II. विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ)- क्रियान्वयन- RIICO द्वारा

प्रमुख सेज	संबंधित क्षेत्र	जिला / स्थिति
बोरानाडा सेज	ग्वारगम, हैण्डीक्राफ्ट	जोधपुर (मानसरोवर)
सीतापुरा सेज	जेम्स & ज्वैलरी	जयपुर
महिन्द्रा सेज	आई. टी. हैण्डीक्राफ्ट	जयपुर (कलवाड़ा)
सोमानी सेज	हार्डवेयर एण्ड सॉफ्टवेयर	खैरथल-तिजारा
RNB सेज	टैक्सटाईल	बीकानेर
वाटिका सेज (प्रस्तावित)	I.T	जयपुर

II. औद्योगिक पार्क एवं कॉम्पलैक्स-

1. जापानी पार्क (जेट्रो) (JETRO - Japan External Trade Organization) →	1. नीमराना (कोटपुतली-बहरोड़) 2. घिलोट (कोटपुतली-बहरोड़)
2. कोरियन पार्क (KOTRA - Korea Trade Investment Promotion Agency) →	घिलोट (कोटपुतली-बहरोड़)
3. सिरेमिक जोन →	घिलोट
4. एग्रो फूड पार्क (राज्य सरकार) →	श्रीगंगानगर, जोधपुर, कोटा, अलवर
5. मेगा फूड पार्क (केन्द्र सरकार) →	रूपनगढ़ (अजमेर) प्रस्तावित - मथानिया (जोधपुर) पलाना (बीकानेर)
6. सूचना तकनीकी पार्क (I.T पार्क) →	जयपुर, कोटा, उदयपुर, जोधपुर
7. मसाला पार्क (Spice Park) →	1st- मथानिया, जोधपुर, 2nd- रामगंज मण्डी, कोटा
8. परिधान पार्क/अपैरल पार्क →	जगतपुरा (महल रोड), जयपुर
9. स्टोन पार्क →	मण्डोर (जोधपुर), मासलपुर (करौली), विसनोदा (धौलपुर) मण्डाना (कोटा)
10. साफ्टवेयर पार्क →	कनकपुरा (जयपुर)
11. पुष्प पार्क →	खुशखेड़ा (खैरथल-तिजारा)
12. होजरी पार्क →	चौपनकी (खैरथल-तिजारा)

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

CamScanner

13. निर्यात संवर्द्धन औद्योगिक पार्क →	सीतापुरा (जयपुर), बोरानाडा (जोधपुर), नीमराना (कोटपुतली-बहरोड़)

NOTE- देश का प्रथम निर्यात संवर्द्धन औद्योगिक पार्क – सीतापुरा, जयपुर (1997)

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

कॉम्पलैक्स-

1. ऊन कॉम्पलैक्स →	खारा (बीकानेर), ब्यावर, गोहाना (ब्यावर) नरबदखेड़ा (ब्यावर)
2. सिरेमिक कॉम्पलैक्स →	खारा (बीकानेर)
3. लेदर कॉम्पलैक्स →	मानपुरा माचेड़ी (जयपुर-ग्रामीण)
4. पेट्रो कॉम्पलैक्स →	बालोतरा

IV. औद्योगिक निवेश कार्यक्रम-

1. रिसर्जेंट राजस्थान → 2008
2. रिसर्जेंट राजस्थान → 2015
3. निवेश/ इन्वेस्ट राजस्थान समिट → 2022
4. राईजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट (2024) (9-10-11 दिसम्बर)

↳ उपरोक्त सभी कार्यक्रमों में सर्वाधिक निवेश 'उर्जा क्षेत्र' में हुआ है।

↳ राजस्थान राइजिंग के आँकड़े आना अभी बाकी है। (Update)

MAHECHA PUBLICATION

नोट:- निवेश कार्यक्रम का आयोजन करवाने वाली नोडल एजेंसी- BIP (ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टमेंट प्रमोशन)
- गठन- 1991
- उद्देश्य- 10 करोड़ से अधिक के औद्योगिक निवेश

(V) दिल्ली मुम्बई-इंडस्ट्रीयल कॉरिडोर -

वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडॉर-
- 1504 कि.मी.
- दादरी (U.P) से JLN पोर्ट (मुम्बई)
- 38% (लम्बाई लगभग-570 कि.मी) राजस्थान से गुजरता है (कुल 6 राज्य व U.T से)
- सहायता - जापान
- उद्देश्य - औद्योगिक निर्यात को बढ़ावा देना।

DMIC के दोनों तरफ 150 कि.मी. की पट्टी को DMIC के रूप में विकसित किया जायेगा, जिसमें 24 औद्योगिक क्षेत्र एवं 8 औद्योगिक निवेश क्षेत्र बनाए जायेंगे, जिसमें से राजस्थान में-

निवेश क्षेत्र
- (i) अजमेर - किशनगढ़
- (ii) खुशखेड़ा - भिवाड़ी - नीमराना (28 Dec. 2020 को 'विशेष निवेश क्षेत्र' के रूप मे अधिसूचित)

औद्योगिक क्षेत्र
- (i) जयपुर - दौसा औद्योगिक क्षेत्र
- (ii) राजसमंद - भीलवाड़ा औद्योगिक क्षे:
- (iii) जोधपुर - पाली - मारवाड़ (RIICO की जिम्मेदारी) (12 oct 2020 को 'विशेष निवेश क्षेत्र' के रूप मे अधिसूचित)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

राजस्थान में DMIC का प्रथम चरण-

(a) खुशखेड़ा - भिवाड़ी - नीमराना (165 कि.मी.²)

(b) जोधपुर - पाली - मारवाड़ (154 कि.मी.²)

इनके विकास हेतु एक संयुक्त स्पेशल पर्पज व्हीकल कंपनी - "राजस्थान इंडस्ट्रीयल डवलपमेंट कॉरपोरेशन" (RIDCO) की स्थापना - 15 मार्च, 2023

NOTE - प्रथम चरण में पूर्णतः राजकीय भूमि (Gov. Land) शामिल है।

VI. औद्योगिक संस्थान -

RFC	RAJSICO	RIICO	RUDA
1955	1961	1969	1995
(जयपुर)	(जयपुर)	(जयपुर)	(जयपुर)

(a) RFC (Rajasthan financial Corporation / राज्य वित्त निगम-

स्थापना - जनवरी, 1955

मुख्यालय - जयपुर

उद्देश्य - अतिलघु, लघु एवं मध्यम उद्योगों को अल्पकालीन ऋण उपलब्ध करना। (ऋण राशि 2000-20 करोड़)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

RFC की योजनाएँ-

(i) फ्लैक्सी ऋण योजना - इस योजना के तहत (MSME) अतिलघु, लघु व मध्यम उद्योगों को सस्ती दर पर ऋण उपलब्ध करवाना।

(२) टॉप-अप योजना- अतिलघु उद्योगों को तकनीकी व मशीनरी विकास के लिए ऋण उपलब्ध करवाने की योजना।

(३) सैमफैक्स योजना / SEMFEX SCHEME-

(Self Employed for Ex-Serviceman Scheme)

- भूतपूर्व सैनिकों को उद्योग स्थापित करने के लिए सहयोग करने वाली योजना।

नोट:- RFC के द्वारा विश्वसनीय ऋणियों को सिल्वर, गोल्ड, प्लेटिनम कार्ड जारी किया जाता है।

(b) राजसीको (RAJSICO- Rajasthan Small Industries Corporation Limited)

स्थापना- जून, 1961

मुख्यालय - जयपुर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

उद्देश्य-
- आदिवासी क्षेत्रों में प्रशिक्षण उपलब्ध कराना।
- लघु उद्योगों को कच्चा माल, मशीनरी व तकनीकी सुविधा उपलब्ध करवाना।
- राजसीको लघु उद्योगों से उत्पादित माल के विपणन का कार्य करता है।

(c) रीको (Riico- Rajasthan State Industrial development and Investment Corporation Limited)

- स्थापना- 1969 (पुनर्गठन-1980)
- मुख्यालय- जयपुर

➡ उद्देश्य - • मध्यम एवं वृहद उद्योगों को मध्यकालीन ऋण उपलब्ध करवाना।
• उद्योगों के लिए भूमि उपलब्ध करवाना।

• सेज कार्यक्रम का संचालन

• राजस्थान में उद्योगों की यह शीर्ष संस्था है।

(d) रूडा (RUDA- Rural Non-farm/Agriculture development Agency)

➡ स्थापना- 1995

➡ मुख्यालय- जयपुर

➡ उद्देश्य- गैर कृषि क्षेत्रों में विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित प्रशिक्षण उपलब्ध कराना।

➡ रूडा के प्रशिक्षण क्षेत्र- ऊन एवं वस्त्र उद्योग, चमड़ा उद्योग, लघु व गौण खनिज संबंधित होते है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

VII. औद्योगिक विकास योजनाएँ-

(a) एसाईड योजना-

औद्योगिक निर्यात को बढावा देने के लिए शुरु कि गई योजना।

शुरुआत- मार्च, 2022

(b) मुख्यमंत्री स्वलाम्बन योजना-

शुरुआत- 2013

उद्देश्य- इस योजना के तहत हस्त आधारित व दस्तकारों को स्वयं का उद्योग स्थापित करने के लिए 10 लाख रु तक ऋण उपलब्ध करवाना।

(c) मुख्यमंत्री युवा उद्यमिता योजना-

- शुरुआत- 1 अप्रैल, 2013 (आदेश मार्च 2023 के अनुसार 31 जुलाई 2024 तक लागू)
- उद्देश्य- जिन युवाओं के पास लीक से हटकर उद्योग स्थापित करने की योजना है, उन्हें आर्थिक सहयोग व ऋण उपलब्ध करवाना।
- योग्यता- • आयु- 18-35 वर्ष
  - 10 वीं + ITI या ग्रेजुएट
- ऋण राशि- 25 लाख- 1 करोड़ (ऋण लौटाने की अवधि 7 वर्ष)

(d.) मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना-

- शुरुआत - 17 dec. 2019 (प्रभावी- 31 मार्च, 2024)
- योजना- लघु उद्योगों के ऋण पर ब्याज अनुदान संबंधित योजना।

	ऋण राशि	ब्याज अनुदान
1.	25 लाख	8%
2.	25 लाख- 5 करोड़.	6%
3.	5 करोड़ - 10 करोड़.	5%

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

D. अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

(i) औद्योगिक विकास के लिए-
जिला स्तर पर - जिला उद्योग केन्द्र - 36
उपकेन्द्र - 8

(ii) सिंगल विण्डो क्लियरेंस एक्ट - 2011
↳ संशोधित 2020

(iii) ई- गवर्नेंस व IT नीति- नवम्बर 2015

(iv) राज्य के विशेष औद्योगिक संस्थान-

कम्प्यूटर एडेड कार्पेट (Carpet) डिज़ाइन सेंटर - जयपुर

कम्प्यूटर एडेड टैक्सटाईल डिजाइन सेंटर - भीलवाड़ा

ब्रह्मगुप्त अनुसंधान व विकास संस्थान - जोधपुर

फुट वियर डिजाईन सेंटर - मंडोर (जोधपुर)

NIFT (National Institute of fashion Technology) - जोधपुर

सिरेमिक अनुसंधान व विकास केन्द्र - बीकानेर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(v) राजस्थान में निवेश प्रोत्साहन नीति-

- ✔ निवेश प्रोत्साहन नीति - 2003
- ✔ राजस्थान उद्योग व निवेश प्रोत्साहन नीति - 2010
- ✔ राजस्थान निवेश प्रोत्साहन नीति - 2014
- ✔ राजस्थान निवेश प्रोत्साहन नीति - 17 dec. 2019
- ✔ राजस्थान निवेश प्रोत्साहन नीति - 7 oct. 2022

RIPS 2022 के उद्देश्य -

- विनिर्माण और सेवा क्षेत्र में 15% वार्षिक वृद्धि।
- संतुलित और समावेशी क्षेत्रीय विकास।
- 2027 तक 10 लाख रोजगार सृजित।
- पर्यावरण संरक्षण हेतु हरित हाइड्रोजन एवं वैकल्पिक ऊर्जा को प्रोत्साहन।

NOTE- राजस्थान में सर्वाधिक औद्योगिक निर्यात क्रमशः-

1st इंजीनियरिंग/अभियांत्रिकी 2. जवाहरात व आभूषण 3. धातुएँ 4. कपड़ा

ऊर्जा/ Energy

- ✔ ऊर्जा का वर्गीकरण
- ✔ राजस्थान के प्रमुख ऊर्जा प्रोजेक्ट
- ✔ ऊर्जा संबंधी संस्थान
- ✔ ऊर्जा संबंधित योजनाएँ
- ✔ अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

A. ऊर्जा संसाधनों का वर्गीकरण

संभावना के आधार पर

नवीकरणीय

1. हाइड्रो/जल
2. सौर ऊर्जा
3. पवन ऊर्जा
4. बायो गैस
5. बायो मास
6. ज्वारीय ऊर्जा
7. भू-तापीय ऊर्जा

अनवीकरणीय

1. तापीय ऊर्जा
   - कोयला
   - प्राकृतिक गैस
   - पेट्रोलियम
2. परमाणु ऊर्जा
   - यूरेनियम
   - थोरियम

उत्पादन के आधार पर

परम्परागत

1. कोयला
2. प्राकृतिक गैस
3. पेट्रोलियम
4. हाइड्रो/ जलीय ऊर्जा

गैर-परम्परागत

1. परमाणु ऊर्जा
2. सौर ऊर्जा
3. पवन ऊर्जा
4. बायो मास
5. बायो गैस
6. ज्वारीय ऊर्जा

1) **परम्परागत उर्जा संसाधन**–

वे ऊर्जा संसाधन जिनका उपयोग लम्बे समय से किया जा रहा हो और जिनसे ऊर्जा पुरानी तकनीक से उत्पादित की जाती है।

उदाहरण- जल ऊर्जा, तापीय ऊर्जा (कोयला, गैस, पेट्रोलियम)

CamScanner

MAHE... PUBLICAT...

(b.) गैर-परम्परागत ऊर्जा स्त्रोत- वे ऊर्जा संसाधन जिनका उपयोग लम्बे समय से किया जा रहा हो और जिनसे ऊर्जा नवीन/ उन्नत तकनीक से उत्पादित की जाती है।

उदा०- परमाणु ऊर्जा, पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा, बायोगैस ऊर्जा आदि।

NOTE :-

उत्पादन क्षमता के आधार पर ऊर्जा स्टेशन के प्रकार

- सुपर स्टेशन → 1000 MW से अधिक ऊर्जा उत्पादन वाला स्टेशन।
- सुपर क्रिटिकल स्टेशन → 500 MW से अधिक ऊर्जा उत्पादन वाली इकाई।
- अल्ट्रा मेगा पॉवर प्रोजेक्ट (UMPP) → 4000 MW से अधिक ऊर्जा उत्पादन वाला स्टेशन।

8. राजस्थान के प्रमुख ऊर्जा प्रोजेक्ट

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

राजस्थान में ऊर्जा परियोजनाएँ

- I. परम्परागत ऊर्जा
- II. गैर-परम्परागत ऊर्जा

I. परम्परागत ऊर्जा- जलीय ऊर्जा एवं तापीय ऊर्जा

जलीय ऊर्जा

- (a.) राज्य सरकार
- (b.) राज्य : राज्य
- (c.) केन्द्र सरकार

(i) राज्य सरकार की जल ऊर्जा-

1. जाखम लघु की जल ऊर्जा परियोजनाएँ - प्रतापगढ़.
उत्पादन क्षमता- 5.4 मेगावाट

2. अनास जल विद्युत परियोजना- बांसवाड़ा
उत्पादन क्षमता - 140 मेगावाट

3. इंदिरा गाँधी लघु जल विद्युत परियोजना- श्री गंगानगर, बीकानेर
उत्पादन क्षमता- २3.85 मेगावाट

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(ii) राज्य : राज्य सहयोग की जल विद्युत परियोजनाएँ-

- भाखड़ा-नांगल जल विद्युत परियोजनाएँ-
  - लाभान्वित राज्य - राजस्थान, पंजाब, हरियाणा
  - उत्पादन क्षमता - 1493 मेगावाट
  - राजस्थान की हिस्सेदारी - 15.२ प्रतिशत (२२7 Mw)

- व्यास जल विद्युत परियोजना-
  - राज्य- राजस्थान + पंजाब
  - राजस्थान का हिस्सा - 4२२ Mw

- माही- बजाज सागर जल विद्युत परियोजना-
  - लाभान्वित राज्य - राजस्थान और गुजरात (45:55)
  - यह परियोजना दो चरणों में निर्मित है।
    - २ x २5 मेगावाट = 50 मेगावाट
    - २ x 45 मेगावाट = 90 मेगावाट

इस परियोजना में उत्पादित 100% ऊर्जा राजस्थान के आदिवासी क्षेत्र में वितरित कि जाती है। (140 Mw)

MAHE PUBLICA

- **चम्बल जल विद्युत परियोजना-**

राजस्थान और M.P की संयुक्त परियोजना
↳ दोनों राज्यों का योगदान (50 : 50)

इस परियोजना में तीन बांधों से कुल 386 मेगावाट जल विद्युत उत्पादन है-

गाँधी सागर	राणा प्रताप सागर	जवाहर सागर
२३ मेगावाट x 5 (115 मेगावाट)	43 मेगावाट x 3 (172 मेगावाट)	33 मेगावाट x 3 (99 मेगावाट)

↳ कुल = 386 मेगावाट (राजस्थान - 193 MW : मध्यप्रदेश - 193 MW)

- **राहुघाट परियोजना - करौली**
  - ↳ चम्बल नदी पर स्थित परियोजना।
  - ↳ राजस्थान + मध्यप्रदेश की संयुक्त परियोजना (50 : 50)
  - ↳ उत्पादन क्षमता - 79 मेगावाट

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(C) केन्द्र सरकार की जल विद्युत परियोजनाएँ-

- **सलाल परियोजना - (जम्मू और कश्मीर)**
  - ↳ चिनाब नदी पर
  - ↳ NHPC (राष्ट्रीय जल विद्युत निगम) द्वारा संचालित है।
  - ↳ जम्मू और कश्मीर, राजस्थान, U.P, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली H.P और चंडीगढ़ को इस परियोजना से लाभ मिलता है।

- **दुलहस्ती परियोजना - (जम्मू और कश्मीर)**
  - ↳ NHPC द्वारा संचालित है।

CamScanner

- चिनाब नदी पर
- जम्मू और कश्मीर, राजस्थान, U.P, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तराखण्ड और चंडीगढ़ को इस परियोजना से लाभ मिलता है।

- **उरी परियोजना** (जम्मू और कश्मीर)
  - झेलम नदी पर
  - NHPC द्वारा संचालित है।
  - जम्मू और कश्मीर, राजस्थान, U.P, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, H.P, उत्तराखण्ड और चंडीगढ़ को इस परियोजना से लाभ मिलता है।

- **पार्वती परियोजना** - (हिमाचल प्रदेश)
  - पार्वती नदी पर।
  - NHPC द्वारा संचालित है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- **चमेरा परियोजना** - (हिमाचल प्रदेश)
  - रावी नदी पर (NHPC द्वारा संचालित)

- **नाथपा झाकरी परियोजना** (हिमाचल प्रदेश)
  - सतलज नदी पर (NHPC द्वारा संचालित)

टिहरी परियोजना -(उत्तराखण्ड)

- यह परियोजना टिहरी जल विद्युत विकास निगम लिमिटेड द्वारा भागीरथी एवं भीलांगना नदी पर संचालित है।

टनकपुर परियोजना - (उत्तराखण्ड)

- NHPC द्वारा शारदा (काली) नदी पर संचालित।

धौलीगंगा परियोजना -(उत्तराखण्ड)

- इस परियोजना NHPC द्वारा धौली गंगा नदी पर संचालित है।

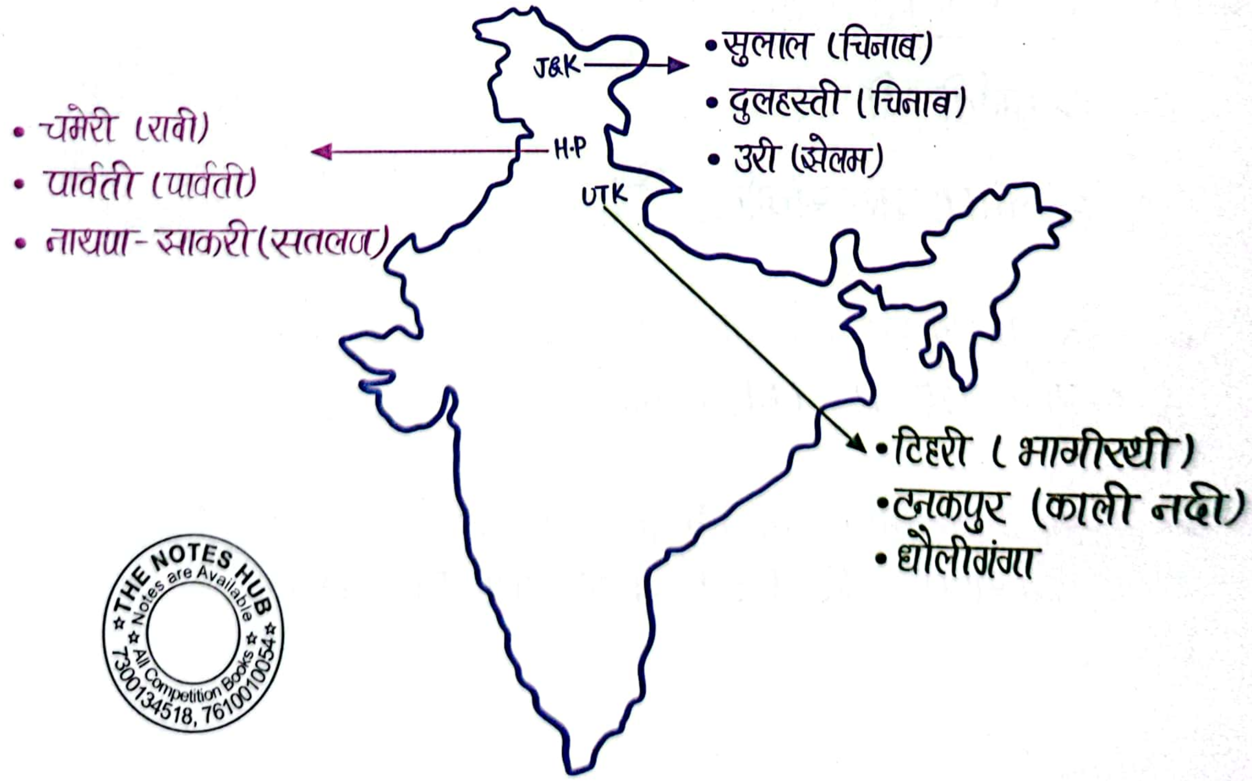

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

निष्कर्ष- जल विद्युत परियोजनाओं में अधिक विकास एवं नियोजन की आवश्यकता है ताकि ऊर्जा उत्पादन को बढ़ाकर राजस्थान में ऊर्जा सुरक्षा बढ़ाई जा सके।

तापीय ऊर्जा- (राजस्थान राज्य की ताप विद्युत परियोजनाएँ-)

इस ऊर्जा का मुख्य स्रोत कोयला, पेट्रोलियम, एवं प्राकृतिक गैस है।

थर्मल/ तापीय परियोजनाओं में विद्युत उत्पादन में कोयले का योगदान सर्वाधिक है।

A. कोयला/ लिग्नाइट आधारित परियोजनाएँ

- (a) राज्य सरकार की योजनाएँ
- (b) राज्य : राज्य की योजना
- (c) केन्द्र सरकार की योजना

(a) राज्य सरकार की योजनाएँ-

1. सूरतगढ़ सुपर क्रिटिकल थर्मल पावर प्लांट - श्री गंगानगर

सूरतगढ़ थर्मल प्लांट से पाँच चरणों में 8 इकाईयों से कुल 2820 MW ऊर्जा उत्पादित होती है।

जिसमें-

चरण	इकाईयाँ	उत्पादन क्षमता
I	Unit-1st	250 MW
	Unit-2nd	250 MW
II	Unit-3rd	250 MW
	Unit-4th	250 MW
III	Unit-5	250 MW
IV	Unit-6	250 MW
V	Unit-7	660 MW
	Unit-8	660 MW

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books * 7300134518, 7610010054

यह राजस्थान का पहला सुपर थर्मल (२००२) पावर प्लांट है। जो वर्तमान (२०२५) में राजस्थान की सबसे बड़ी ताप विद्युत परियोजना है।

२. कोटा सुपर थर्मल पावर प्लांट -

- यह राजस्थान का पहला (1983) थर्मल (कोयला) पावर प्लांट है।
- राजस्थान की प्रथम ताप विद्युत परियोजना है जबकि दूसरी सुपर ताप विद्युत परियोजना है।
- कोटा थर्मल प्लांट से पाँच चरणों में 7 इकाईयों से कुल १२४० MW ऊर्जा उत्पादित होती है।

जिसमें-

चरण	इकाईयाँ	उत्पादन क्षमता
I	Unit-1st	110 MW
	Unit-2nd	110 MW
II	Unit-3rd	210 MW
	Unit-4th	210 MW
III	Unit-5	210 MW
IV	Unit-6	195 MW
V	Unit-7	195 MW

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

३. छबड़ा सुपर क्रिटिकल पावर प्लांट- बारां

उत्पादन क्षमता – २३२० मेगावाट

यह राजस्थान की प्रथम क्रिटिकल ताप विद्युत परियोजना है।

चरण	इकाईयाँ	उत्पादन क्षमता
I	Unit-1st	250 MW
	Unit-2nd	250 MW
II	Unit-3rd	250 MW
	Unit-4th	250 MW
III	Unit-5	660 MW
	Unit-6	660 MW

CamScanner

11. कवाई सुपर क्रिटिकल पावर प्लांट- बारां

- उत्पादन क्षमता - 1320 मेगावाट
- सहयोग - अडानी ग्रुप

चरण	इकाईयाँ	उत्पादन क्षमता
I	Unit-1st	660 MW
	Unit-2nd	660 MW

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

5. कालीसिंध क्रिटिकल पावर प्लांट- झालावाड़

उत्पादन क्षमता- 1200 मेगावाट

प्रस्तावित - 800 मेगावाट (अल्ट्रा पॉवर प्रोजेक्ट)

6. भादेश सुपर पावर प्लांट- बाड़मेर

- उत्पादन क्षमता - 1080 मेगावाट

7. कपूरड़ी - जालीपा सुपर थर्मल पावर प्लांट - बाड़मेर

- उत्पादन क्षमता - 1080 मेगावाट

8. गिरल थर्मल पावर प्लांट- थुम्बली गाँव, बाड़मेर

- उत्पादन क्षमता - 250 MW
- सहयोग - जर्मनी

9. दानपुर सुपर थर्मल पावर प्रोजेक्ट- बांसवाड़ा

- उत्पादन क्षमता = 1600 मेगावाट

10. बरसिंगसर थर्मल पावर प्रोजेक्ट- बीकानेर

- उत्पादन क्षमता = 250 MW
- यह नेवेली लिग्नाइट कॉर्पोरेशन (भारत सरकार) द्वारा संचालित है।

(b) राज्य : राज्य की योजना-

1. सतपुड़ा तापीय विद्युत परियोजना –

- स्थिति - जिला बैतूल, मध्यप्रदेश
- लाभान्वित राज्य = राजस्थान + मध्यप्रदेश

THE NOTES HUB ★ All Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

(c) केन्द्र सरकार की परियोजना-

योजना	स्थान	रन-वाय
✔ सिंगरोली थर्मल प्लांट	U.P	NTPC
✔ रिहंद सुपर थर्मल पावर प्लांट	U.P	NTPC
✔ ऊंचाहार सुपर थर्मल पावर प्लांट	U.P	NTPC
✔ कहल गांव सुपर थर्मल पावर प्लांट	बिहार	NTPC
✔ तलचर सुपर थर्मल पावर प्लांट	ओडिशा	NTPC

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

गैस विद्युत परियोजना

- (a) राज्य सरकार की परियोजनाएँ
- (b) केन्द्र सरकार की परियोजनाएँ

a. राज्य सरकार की परियोजनाएँ-

गैस विद्युत परियोजना	स्थिति	उत्पादन क्षमता
1. रामगढ़	जैसलमेर	270.5 MW
2. कम्बाईंड साईकिल	धौलपुर	330 MW
3. झामर-कोटड़ा	उदयपुर	—

NOTE :- राज्य सरकार की प्रथम गैस विद्युत परियोजना- रामगढ़ (1996) है।

MAHECHA PUBLICATIONS

(b) केन्द्र सरकार (NTPC) की गैस विद्युत परियोजनाएँ-

1. –
2. –
3. –

गैस विद्युत परियोजना	स्थिति	उत्पादन क्षमता
1. अंता (HBJ हजीरा, बिजापुर, जगदीशपुर गैस पाइप लाइन)	बारां	419.3 MW
2. दादरी	U.P	829.78 MW
3. औरैया	U.P	652 MW

NOTE- • राजस्थान में प्रथम (1989) गैस विद्युत परियोजना जो NTPC (केन्द्र सरकार) द्वारा संचालित → अंता गैस पावर प्लांट

नेप्था/ तरल ईंधन आधारित परियोजनाएँ-

1. धौलपुर पावर प्लांट-
   - 1st चरण = 330 मेगावाट
   - IInd चरण = 372.7 मेगावाट
   - कुल = 702.7 मेगावाट

2. केशोरायपाटन थर्मल पावर प्लांट- बूँदी

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

B. गैर परम्परागत ऊर्जा

1. परमाणु ऊर्जा-

राजस्थान परमाणु या आण्विक ऊर्जा स्टेशन - रावतभाटा (चित्तौड़)

शुरुआत - दिसम्बर, 1973 (सहयोग - कनाडा)

संचालन - नाभिकीय ऊर्जा निगम (NPCIL)

इस संयंत्र की 6 इकाइयों की स्थापित कुल क्षमता 1180 मेगावाट है।

इकाई	उत्पादन
• प्रथम इकाई	100 मेगावाट
• द्वितीय इकाई	२०० मेगावाट
• तृतीय इकाई	२२० मेगावाट
• चतुर्थ इकाई	२२० मेगावाट
• पंचम इकाई	२२० मेगावाट
• छठी इकाई	२२० मेगावाट
कुल क्षमता	1180 मेगावाट

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

रावतभाटा परमाणु विद्युत गृह में 700 MW की दो यूनिट प्रस्तावित है।

राजस्थान को रावतभाटा (राजस्थान) व नरोरा (उ.प्र.) से परमाणु ऊर्जा प्राप्त होती है।

राजस्थान में दूसरा परमाणु ऊर्जा विद्युत गृह - बाँसवाड़ा (प्रस्तावित)

700 MW x 4 यूनिट = २800 MW

२. सौर ऊर्जा-

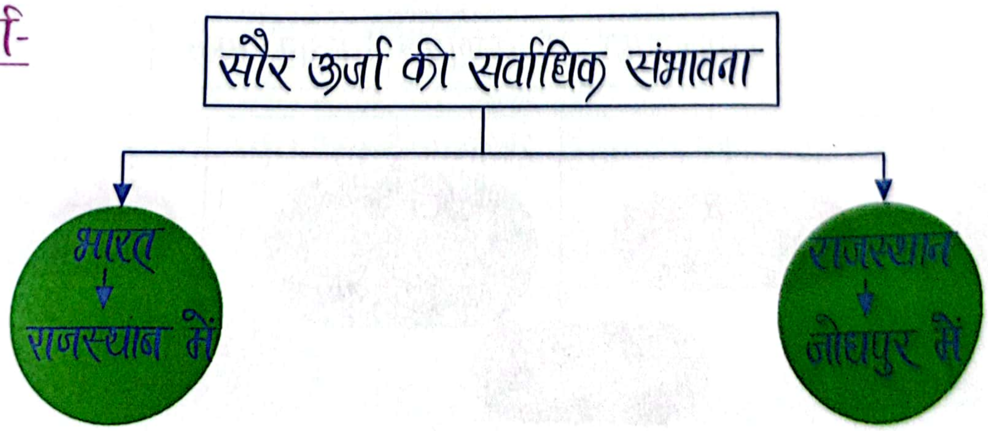

राजस्थान में सौर ऊर्जा की सर्वाधिक सम्भावना के कारण निम्नलिखित कारण है–

- सौर विकिरण की तीव्रता अधिक होना।
- राज्य में एक वर्ष में लगभग ३२५ स्पष्ट धूप के दिन होते है।
- निवेशक सौर ऊर्जा परियोजनाओं में अधिक निवेश करते है।
- मरुस्थलीय विस्तार अधिक होने के कारण उच्च तापमान की प्राप्ति।

NOTE- राजस्थान में नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार के आंकलन के अनुसार सौर स्रोतों से 142 गीगावाट (1,42,000 मेगावाट) सौर ऊर्जा प्राप्त करने की क्षमता है।

राजस्थान में सौर ऊर्जा विकास के लिए किये जा रहे प्रयास–

1. सोलर पार्क निर्माण योजना-

इस योजना हेतु राजस्थान के जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर को चुना गया है।

2010 में क्लिंटन फाउंडेशन और राज्य सरकार के मध्य समझौते के तहत क्लिंटन फाउंडेशन सौर पार्क के विकास हेतु आवश्यक सहायता प्रदान करेगा।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

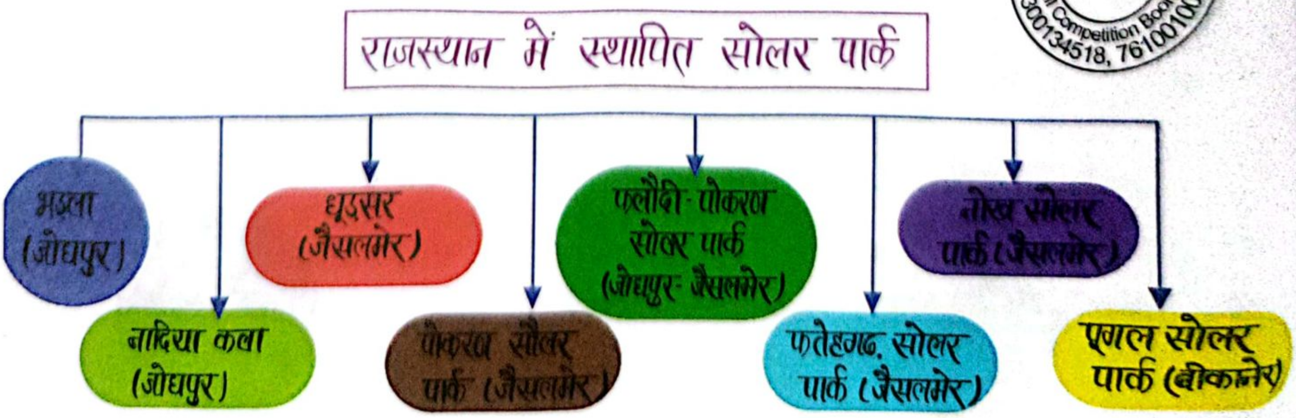

भड़ला सौलर पार्क-

स्थित - जोधपुर में

भड़ला में २२४५ मेगावाट का सोलर पार्क चार चरणों में विकसित किया गया है।

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

भड़ला सौलर पार्क फेज —

चरण	उत्पादन	सहयोग
Ist	65 मेगावाट	राजस्थान सोलर पार्क डवलपमेंट कंपनी लिमिटेड
IInd	680 मेगावाट	राजस्थान सोलर पार्क डवलपमेंट कंपनी लिमिटेड
IIIrd	1000 मेगावाट	IL & FS + राज्य सरकार
IVth	500 मेगावाट	मेसर्स अडानी + राज्य सरकार

राजस्थान की पहली निजी क्षेत्र की सौर परियोजना रिलायंस द्वारा खींवसर (नागौर) में शुरू की गई.

२. सोलर सिटी का निर्माण-

जिन शहरों में सौर ऊर्जा की क्षमता सर्वाधिक है, उन्हें सोलर सिटी के रूप में विकसित किया जायेगा।

इसमें जयपुर, जोधपुर व अजमेर को शामिल किया जायेगा

▶ प्रस्तावित जिले - पुष्कर (अजमेर), जैसलमेर

3. SEEZ- (Solar Energy Enterprises Zone/सौर ऊर्जा उपक्रम जॉन)

राजस्थान में सर्वाधिक सौर ऊर्जा की सम्भावना वाला क्षेत्र SEEZ कहलाता है।

इसमें सम्मिलित क्षेत्र- जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर है।

4. सौर ऊर्जा मिशन-

सौर ऊर्जा के विकास के लिए देश में जवाहर लाल नेहरू राष्ट्रीय सोलर मिशन शुरू किया गया था।

शुरुआत- जनवरी, २०१० से

लक्ष्य= २०२२ तक 1 लाख मेगावाट (100 गीगावाट) सौर ऊर्जा उत्पादन

यह मिशन तीन चरणों में चलाया जायेगा.

तीन चरण

- प्रथम चरण (२०१०-१३)
- द्वितीय चरण (२०१३-१७)
- तृतीय चरण (२०१७-२२)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

6. सौर ऊर्जा नीति-

राजस्थान में

- प्रथम सौर ऊर्जा नीति - २०११
- द्वितीय सौर ऊर्जा नीति - २०१४
- नवीनतम सौर ऊर्जा नीति - 18 dec. २०१९

सौर ऊर्जा नीति

- सौर ऊर्जा नीति
- लक्ष्य
- दृष्टि एवं उद्देश्य
- नोडल एजेंसी

* सौर ऊर्जा नीति-

इस नीति को सौर ऊर्जा नीति २०१९ के नाम से जाना जाता है।

लागू → 18 dec २०१९

लक्ष्य → 1. २०२४-२५ तक ३०,००० मेगावाट सौर ऊर्जा परियोजनाओं का लक्ष्य हासिल करना।

2. सौर ऊर्जा के उत्पादन क्षेत्र में भावी निवेशकों के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना।

3. राष्ट्रीय स्तर पर ऊर्जा सुरक्षा प्राप्त करना।

4. जलवायु परिवर्तन की चुनौतियाँ का सामना करने जैसे लक्ष्यों को पूरा करना।

(i) Utility / Grid scale solar parks → 24,000 MW

(ii) Distributed Generation → 4000 MW

(iii) Solar Rooftop → 1000 MW

(iv) Solar Pumps → 1000 MW

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

3. **पवन ऊर्जा-** नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ विंड एनर्जी द्वारा 150 मी. ऊँचाई पर किए गये अध्ययन के अनुसार, राजस्थान में पवन ऊर्जा की उत्पादन क्षमता लगभग = २८४ गीगावाट है।

CamScanner

नोट:- राजस्थान में जैसलमेर में पवन ऊर्जा की सम्भावना सर्वाधिक है।

मुख्य पवन ऊर्जा संयंत्र –

- अमर सागर → जैसलमेर (राजस्थान में 1st)
- सोढा बाँधन → जैसलमेर
- पोहरा → जैसलमेर
- आकल → जैसलमेर
- हंसुआ → जैसलमेर
- देवगढ़ → प्रतापगढ़ (राजस्थान में 2nd)
- बीठड़ी → फलौदी (राजस्थान में 3rd)
- हर्ष विंड एनर्जी → सीकर
- बड़ा बाग → जैसलमेर
- हाईब्रिड विंड एनर्जी प्लांट → जैसलमेर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

नोट:-

1. मेसर्स कालानी इंडस्ट्रीज, ने बड़ा बाग (जैसलमेर) में निजी क्षेत्र की प्रथम पवन ऊर्जा परियोजना की स्थापना की है।

राजस्थान में

- सबसे बड़ा विंड एनर्जी पार्क → "बड़ा बाग" (जैसलमेर)
- रेलवे का पहला पवन ऊर्जा संयंत्र → कोडियासर (जैसलमेर)
- पवन ऊर्जा में सर्वाधिक योगदान → सुजलॉन एनर्जी

पवन ऊर्जा नीति

- पवन ऊर्जा नीति
- लक्ष्य
- दृष्टि एवं उद्देश्य
- नोडल एजेंसी

पवन ऊर्जा-

इस नीति को राजस्थान पवन एवं हाईब्रेड ऊर्जा नीति - 2019 के नाम से जाना जायेगा।

- लागू → 18 dec. 2019 को।
- लक्ष्य → 2024-25 तक 3500 मेगावाट पवन एवं हाइब्रिड उर्जा परियोजनाओं का लक्ष्य हासिल करना है।

1. Hybridization of existing wind/ solar plants → 200MW
2. New Wind-Solar Hybrid project → 2000MW
3. Wind-Solar Hybrid With Storage System → 500MW
4. Hybridization of existing Conventional Plants → 800MW

- दृष्टि एवं उद्देश्य-

पवन ऊर्जा परियोजनाओं और आवश्यक भण्डारण प्रणालियों को बढावा देना।

पवन ऊर्जा परियोजनाओं को बढावा देना।

अक्षय ऊर्जा एकीकरण के लिए राज्य में ट्रांसमिशन एवं वितरण नेटवर्क को मजबूत करना।

पवन संसाधन आंकलन को बढावा देना।

पवन ऊर्जा उपकरणों के निर्माण सम्बन्धित उद्योगों को बढावा देना।

भूमि संसाधनों और पारेषण प्रणालियों के उच्चतम उपयोग के साथ ग्रिड सुरक्षा और स्थिरता की चुनौतियों का सामना करने के लिए पवन और सौर प्रौद्योगिकियों का हाइब्रिडाइजेशन।

CamScanner

सौर ऊर्जा व पवन ऊर्जा के लिए राजस्थान रिन्यूबल एनर्जी कॉरपोरेशन नोडल एजेंसी के रूप में निम्नलिखित कार्य करेगा-

- परियोजनाओं का पंजीकरण
- परियोजनाओं की स्वीकृति
- पवन पार्कों / सौर पार्कों का विकास
- सरकारी भूमि के आवंटन की सुविधा।

4. बायोमास ऊर्जा-

- राजस्थान में बायोमास ऊर्जा के मुख्य स्रोत सरसों का तेल, विलायती बबूल, चावल की भूसी है।
- बायोमास ऊर्जा की सर्वाधिक सम्भावनाएँ श्री गंगानगर जिले में है।

प्रमुख बायोमास ऊर्जा संयंत्र :-

बायोमास संयंत्र	स्थान
पदमपुर	→ श्री गंगानगर
खातोली	→ उनियारा (टोंक)
रंगपुर	→ कोटा
चंदेरिया	→ चित्तौड़गढ़
संगरिया	→ हनुमानगढ़
कचेला - बागसरी	→ सांचौर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* राजस्थान में प्रथम बायोमास एनर्जी प्लांट - पदमपुर (श्री गंगानगर)

5. बायो गैस ऊर्जा-
- स्रोत - गाय का गोबर
- सर्वाधिक सम्भावना = उदयपुर में

CamScanner

बायोगैस का रासायनिक संगठन-

मिथेन = 65%
CO_2 = 30%
हाइड्रोजन = 5%

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

6. बायोफ्यूल / बायोडीजल ऊर्जा-

- डीजल के रूप में बायोफ्यूल/ बायोडीजल महत्वपूर्ण माना जाता है।
- बायोडीजल का मुख्य स्रोत 'जेट्रोफा'/ रतनजोत एवं करंज है।
- राजस्थान में बायोडीजल के विकास के लिए, कलरावास (उदयपुर) में एक बायोडीजल रिफाइनरी स्थापित।
- राज्य में एक बायोडीजल संयंत्र- झामरकोटड़ा (उदयपुर)

C. ऊर्जा संबंधित संस्थान-

1. राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम-

- उद्देश्य- राज्य में गैर-परम्परागत ऊर्जा स्रोतों का विकास और संरक्षण करना।
- स्थापना- 7 Aug. 2002
- राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम की स्थापना REDA + RSPCL को मिलाकर की गई है।

REDA →	Rajasthan Energy Development Agency : 1985
RSPCL →	Rajasthan State Power Corporation Ltd: 1995

NOTE :- RSDCL → Rajasthan Solarpark Development Company

↳ स्थापना- 2 Nov. 2011 (जयपुर)

↳ यह राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम की सहयोगी कम्पनी है।

२. राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम - जयपुर

3. राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम- जयपुर

4. राजस्थान राज्य विद्युत वितरण निगम - जयपुर

5. राजस्थान राज्य विद्युत वितरण निगम - अजमेर

6. राजस्थान राज्य विद्युत वितरण निगम - जोधपुर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

७. ऊर्जा संबंधित प्रमुख योजनाएँ

1. उज्ज्वल डिस्कॉम एश्योरेंस योजना-

- शुरुआत = 5 नवम्बर, 2015 (भारत सरकार के ऊर्जा मंत्रालय द्वारा)
- इस योजना के तहत भारत सरकार ने २७ जनवरी 2016 को राज्य सरकार और प्रत्येक डिस्कॉम के साथ त्रिकोणीय MoU पर हस्ताक्षर किए।
- इस योजना का मुख्य उद्देश्य विभिन्न कम्पनियों (डिस्कॉम) की वित्तीय स्थिति को सुधारना।

२. सौभाग्य योजना (PM सहज हर घर बिजली योजना) — २5 sep. 2017

- उद्देश्य- देश के हर घर में बिजली पहुँचाना। (लक्ष्य वर्ष- 31 मार्च, २019)

3. कुसुम योजना (KUSUM - किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान योजना)

प्रारम्भ - 2018-19

लक्ष्य ऊर्जा - 30800 मेगावाट

उद्देश्य- (i) सौलर पंपों को स्थापित कर ग्रिड से जोड़ना।
(ii) किसानों को ऊर्जा सुरक्षा प्रदान करना।

MAHECHA PUBLICATION

(a.) कुसुम घटक- ए –

- स्थापना- 0·5MW से 2MW क्षमता तक के विकेन्द्रीकृत सौर ऊर्जा संयंत्र
- स्थान - 33/11 किलोवाट सबस्टेशनों के 5 किमी. की परिधि में स्थित किसानों की बंजर भूमि पर
- संचालन - राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम

(b.) कुसुम घटक - बी :- 7·5 H·P. तक की क्षमता वाले कृषि पम्प सेटों को सौर ऊर्जाकृत हेतु 12,500 पम्प सेटों का लक्ष्य रखा गया है।

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054 ★

(c.) कुसुम घटक -सी :- (फीडर लेबल सोलराइजेशन)

↳ लक्ष्य- 2,00,000 पम्प सेटों का सॉलराइजेशन

↳ किसान / भूमि मालिकों और डवलपर्स के सहयोग और आवश्यक भूमि की व्यवस्था करने के लिए सौर कृषि आजीविका योजना (SKay) पोर्टल (www.skayrajasthan.org.in)

4. मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना-

- शुरुआत- 17 जुलाई, 2021
- उद्देश्य- कृषि उपभोक्ता को 1000 ₹/ माह, 1-वर्ष में अधिकतम 12000 ₹ का अनुदान।

- जून, 2023 से इसे मुख्यमंत्री निः शुल्क बिजली योजना (कृषि अनुदान) में मिला दिया गया है।

जिसके तहत वर्तमान में (कृषि उपभोक्ताओं को) –
- → 2000 यूनिट प्रतिमाह मुफ्त बिजली
- → 2000 यूनिट प्रतिमाह से अधिक होने पर
  ↓
  मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना के तहत उस माह विशेष में 1000₹ सब्सिडी

CamScanner

5. मुख्यमंत्री निः शुल्क बिजली योजना (घरेलू अनुदान) -

लाभ प्रारम्भ - June, 2023

विद्युत उपभोग	रियायत
• 100 यूनिट तक	मुफ्त बिजली
• 200 यूनिट तक	पहले 100 यूनिट के विद्युत शुल्क, फिक्स चार्ज और नगरीय उपकर के बिल में छूट
• 200 यूनिट से अधिक	पहली 100 यूनिट मुफ्त लेकिन अन्य शुल्क उपभोक्ता को वहन करने होंगे।

6. PM सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना -

THE NOTES HUB ☆ Notes are Available ☆ All Competition Books ☆ 7300134518, 7610010054

- शुरुआत - 13 फरवरी 2024
- बजट - 75,000 करोड़ ₹
- उद्देश्य - (i) हर महीने 300 यूनिट मुफ्त बिजली उपलब्ध करवाने के लिए एक करोड़ घरों पर सौर संयंत्र स्थापित करना।

(ii) इस योजना में अनुदान -

1 से 2 KW	₹ 30,000 से 60,000
3 KW	78,000 (अधिकतम)

लक्ष्य - राजस्थान सरकार ने 5 लाख घरों में सोलर रूफटॉप संयंत्र लगाने का लक्ष्य रखा है।

CamScanner

E. अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

1. राजस्थान में ऊर्जा सम्बन्धित नीतियाँ–

- **सौर ऊर्जा नीतियाँ**
  - 1st – 2011
  - 2nd – 2014
  - 3rd – 18 dec. 2019
- **पवन ऊर्जा नीतियाँ**
  - 2012
  - 18 dec. 2019
- **अक्षय ऊर्जा नीतियाँ**
  - 6 अक्टूबर, 2023
  - अक्षय ऊर्जा नीति का 2029-30 तक ऊर्जा लक्ष्य–
    - सौर = 65,000 MW
    - विंड & हाइब्रिड = 15,000 MW
    - हाइड्रो/जल, पम्प स्टोरेज प्लांट = 10,000 MW
    - कुल लक्ष्य = 90,000 MW
- **बायोमास नीतियाँ**
  - 2010
  - 2023 → बायोमास वेस्ट टू एनर्जी नीति, 2023 (29 सितम्बर, 2023)
- **राजस्थान ग्रीन हाइड्रोजन नीति**
  - 29 सितम्बर, 2023

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

राजस्थान ग्रीन हाइड्रोजन नीति
- 29 सितम्बर, 2023
- 31 मार्च, 2030 तक/ नई नीति तक
- 2030 तक राज्य में 2000 KTPA का लक्ष्य (KTPA = Kilo tones Per Annum)

Note :- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत सरकार 2030 तक 500 GW नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन के लक्ष्य के लिए प्रतिबद्ध है।

2. राजस्थान में वर्तमान में ऊर्जा–

अधिष्ठापित क्षमता (Installed capacity) – 24783.64 MW (मार्च, 2024)

जिसमें मुख्य उत्पादन –
- तापीय ऊर्जा – 12,000 MW (लगभग)
- पवन ऊर्जा = 4359.63

MAHECHA PUBLICATIONS

राजस्थान में मार्च, २०२४ तक कुल विद्युतीकरण गाँव = 43,965

- सौर ऊर्जा = 4010.50
- हाइड्रो/जलीय ऊर्जा = 3,000 MW (लगभग)
- परमाणु ऊर्जा = 456.74
- बायोमास ऊर्जा = 109.95 MW

राजस्थान की कुल स्थापित विद्युत क्षमता में

परम्परागत ऊर्जा योगदान	अक्षय/नवीकरणीय ऊर्जा योगदान
78–79%	२०–२१%

NOTE:- नवीकरणीय (अक्षय) ऊर्जा में सर्वाधिक वार्षिक वृद्धि २०२३ में - **राजस्थान** (प्रथम)

3. ऊर्जा संबंधित महत्वपूर्ण दिवस-

- २० अगस्त → अक्षय ऊर्जा दिवस
- 14 दिसम्बर → राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस
- अर्थ आवर डे
  - यह मार्च के किसी भी शनिवार को सायः 8:30-9:30 तक मनाया जाता है।
  - इस दिन आवश्यक उपकरण को छोड़कर अन्य सभी उपकरण बन्द करने की अपील की जाती है।
  - यह पर्यावरण संरक्षण और ऊर्जा की बचत का सन्देश देने के लिए ऑस्ट्रेलिया से शुरू किया गया था जिसमें भारत २००१ में शामिल हुआ।

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

CamScanner

जनसंख्या

जनगणना का इतिहास-

- ✔ प्राचीन काल → अर्थशास्त्र = चाणक्य (मौर्य काल)
- ✔ मध्य काल → "आइने-अकबरी" = अबुल फज़ल (मुगल काल)
- ✔ आधुनिक काल → 1872 ई. लॉर्ड मेयो द्वारा आधुनिक जनगणना की शुरुआत।

NOTE :-
- 1881 में लॉर्ड रिपन के काल में व्यवस्थित और दशकीय जनगणना की शुरुआत हुई।
- जनगणना संघ सूची का विषय है।
- जनगणना संविधान की सातवीं अनुसूची में शामिल है।
- जनसंख्या जनगणना अधिनियम - 1948 में पारित।
- राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग - 11 मई, 2000
- जनगणना गृह मंत्रालय के जनगणना विभाग द्वारा करवाई जाती है।

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

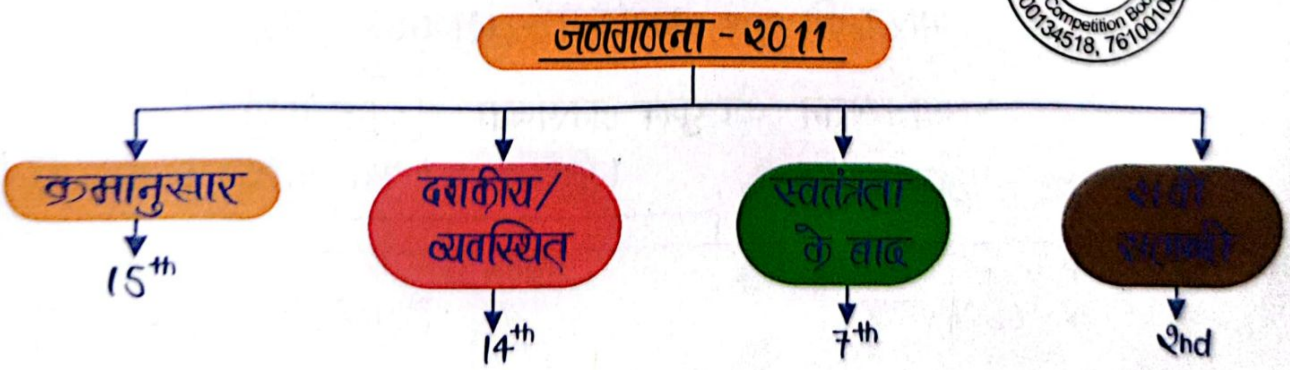

15वीं जनगणना बजट - 2200 करोड़

प्रति व्यक्ति लागत - 18.19 ₹

2011 की जनगणना में शामिल कुल जिले - 640 (राजस्थान - 33 जिले)

जनगणना शुंभकर- प्रगणक शिक्षिका

जनगणना आदर्श वाक्य - "हमारी जनगणना, हमारा भविष्य"

➤ विशेष बिन्दु-

राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर पहली बार बनाया गया है।

प्रथम बार घरों की गणना

किन्नरों को इस जनगणना में पहली बार शामिल किया गया।

प्रथम पेपरलेस जनगणना।

जातीय जनगणना दूसरी बार 2011 में की गई। (प्रथम बार- 1931)

2011 की जनगणना दो चरणों में सम्पन्न हुई-

- पहला चरण- 15 मई से 30 जून, 2010
- दूसरा चरण - 9 फरवरी - 28 फरवरी, 2011

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

1. कुल जनसंख्या-

भारत की कुल जनसंख्या - 121.085 करोड़

राजस्थान की कुल जनसंख्या - **6.85 करोड़**

(पुरुष - 51.86% एवं महिलाएँ - 48.14%)

जयपुर - 66.26 लाख

जोधपुर - 36.87 लाख

जैसलमेर - 6.69 लाख

प्रतापगढ़ - 8.67 लाख

अलवर - 36.75 लाख
नागौर - 33.07 लाख
उदयपुर - 30.68 लाख

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

सिरोही - 10.36 लाख
बूँदी - 11.10 लाख
राजसमंद - 11.56 लाख

- राजस्थान में भारत की कुल जनसंख्या का 5.67 प्रतिशत और विश्व की कुल जनसंख्या का लगभग 1% हिस्सा है।
- 2011 के अनुसार, जनसंख्या की दृष्टि से 8 वां स्थान रखता है जबकि वर्तमान में भारत में 7 वां स्थान (आन्ध्रप्रदेश के विभाजन के कारण) रखता है।
- शिशु जनसंख्या (0-6 वर्ष) → राजस्थान की कुल जनसंख्या का 15.54% है।

कुल जनसंख्या वृद्धि दर-

किसी निश्चित स्थान पर निश्चित समय में (10 वर्ष) प्रति 100 व्यक्तियों पर होने वाली वृद्धि, 'जनसंख्या वृद्धि दर' कहलाती है।

जनसंख्या वृद्धि दर

सर्वाधिक

1. बाड़मेर - 32.5 प्रतिशत
2. जैसलमेर - 31.8 प्रतिशत
3. जोधपुर - 27.7 प्रतिशत
4. बांसवाड़ा - 26.58 प्रतिशत

न्यूनतम

1. श्री गंगानगर - 10 प्रतिशत
2. झुंझुनूं - 11.7 प्रतिशत
3. पाली - 11.9 प्रतिशत
4. बून्दी - 15.4 प्रतिशत

ग्रामीण (19%) व नगरीय (२९%) जनसंख्या वृद्धि दर

- **सर्वाधिक**
  - **ग्रामीण**
    1. जैसलमेर
    २. बाड़मेर
    3. बांसवाड़ा
  - **नगरीय**
    1. अलवर
    २. दौसा
    3. बारां
- **न्यूनतम**
  - **ग्रामीण**
    1. कोटा
    २. श्री गंगानगर
    3. झुंझुनूं
  - **नगरीय**
    1. डूँगरपुर
    २. प्रतापगढ़
    3. हनुमानगढ़

- राजस्थान में सर्वाधिक ऋणात्मक जनसंख्या वृद्धि दर 1911-२1 (-6.२1%) के दशक में रही।

  इसे "जनसंख्या विभाजक दशक" भी कहते है।

✱ राजस्थान में 1911-२1, के दशक में जनसंख्या घटने के कारण-

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

1. प्लेग महामारी (मुख्य कारण)
२. प्रथम विश्व युद्ध
3. राष्ट्रीय आन्दोलनों की शुरुआत

- राजस्थान में 1951 से 1981 के दशकों को 'जनसंख्या विस्फोटक दशक' कहा जाता है। जिसमें — राजस्थान की जनसंख्या की सर्वाधिक वृद्धि दर- 1971-81 (32.97%) बढ़ी।

- 1991-2001 में राजस्थान की जनसंख्या में सर्वाधिक वृद्धि दर्ज की गई।

- जनसंख्या वृद्धि के प्रमुख कारक - उच्च जन्म दर, न्यूनतम मृत्यु दर एवं आप्रवास।

3. जनसंख्या घनत्व- प्रति वर्ग कि.मी. में रहने वाली जनसंख्या।

↳ 2001 में राजस्थान का जनघनत्व 165 था.

जबकि 2011 में → जनसंख्या घनत्व - 200/वर्ग कि.मी.

सर्वाधिक

1. जयपुर - 595
2. भरतपुर - 503
3. दौसा - 476
4. अलवर - 438

न्यूनतम

1. जैसलमेर - 17
2. बीकानेर - 78
3. बाड़मेर - 92
4. चुरु - 147

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

100 से कम जनसंख्या घनत्व वाले जिले - जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर

* मरुस्थलीय जिलों (पश्चिमी राजस्थान) में जनसंख्या घनत्व सबसे कम मिलता है।

4. लिंगानुपात- प्रति हजार पुरुषों की संख्या पर महिलाओं की संख्या को लिंगानुपात कहा जाता है।

कुल औसत लिंगानुपात = 928

सर्वाधिक

डूंगरपुर - 994
राजसमंद - 990
पाली - 987
प्रतापगढ़ - 983

न्यूनतम

धौलपुर - 846
जैसलमेर - 852
करौली - 861
भरतपुर - 880

2001 (921) की तुलना में 2011 (928) में 7 अंकों की बढ़ोतरी हुई।

राज्य में लिंगानुपात

ग्रामीण - 933

सर्वाधिक
1. पाली - 1003
2. राजसमंद - 998
3. डूंगरपुर - 996

न्यूनतम
1. धौलपुर - 841
2. करौली - 856
3. जैसलमेर - 853

शहरी - 914

सर्वाधिक
1. टोंक - 985
2. बांसवाड़ा - 964
3. प्रतापगढ़ - 963

न्यूनतम
1. जैसलमेर - 807
2. धौलपुर - 864
3. अलवर - 872

2011 में शिशु लिंगानुपात - 888

सर्वाधिक
- बांसवाड़ा - 934
- प्रतापगढ़ - 933
- भीलवाड़ा - 928
- उदयपुर - 924

न्यूनतम
- झुंझुनूं - 837
- सीकर - 848
- करौली - 852
- श्री गंगानगर - 854

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

NOTE- राजस्थान में 2001 में शिशु लिंगानुपात 909 था जिसमें 2011 में (909-888) 21 अंकों की कमी हुई।

राज्य में शिशु लिंगानुपात

ग्रामीण - 892

सर्वाधिक
1. बाँसवाड़ा - 937
2. प्रतापगढ़ - 936
3. भीलवाड़ा - 933

न्यूनतम
1. झुंझुनूं - 832
2. सीकर - 843
3. करौली - 850

शहरी - 874

सर्वाधिक
1. नागौर - 907
2. बीकानेर - 906
3. भीलवाड़ा - 904

न्यूनतम
1. धौलपुर - 841
2. गंगानगर - 842
3. दौसा - 847

CamScanner

NOTE :-
- राजस्थान के सभी जिलों में लिंगानुपात 1000 से कम है।
- राजस्थान का औसत लिंगानुपात (928) भारत के औसत लिंगानुपात (943) से कम है।
- राजस्थान में सामान्य लिंगानुपात में औसत लिंगानुपात से कम वाले जिले = 15
- राजस्थान में शिशु लिंगानुपात से औसत शिशु लिंगानुपात से कम वाले जिले = 12

THE NOTES HUB ☆ Notes are Available ☆ All Competition Books ☆ 7300134518, 7610010054

न्यूनतम और अधिकतम लिंगानुपात के पीछे कारण

सर्वाधिक
- प्रति व्यक्ति कम आय।
- तकनीकी ज्ञान एवं सुविधा कम होना।
- कम साक्षरता दर
- संयुक्त परिवार
- दहेज प्रथा प्रचलित नही

न्यूनतम
- प्रति व्यक्ति अधिक आय
- तकनीकी सुविधा एवं जानकारी अधिक होना।
- उच्च साक्षरता दर
- एकल परिवार
- दहेज प्रथा का प्रचलन

5. **साक्षरता**- "6 वर्ष से अधिक आयु का व्यक्ति जो किसी भी भाषा को पढ़ने या लिखने में सक्षम हो उसे 'साक्षर' कहा जाता है।"

2011 में साक्षरता दर - 66.1 प्रतिशत

2001 में साक्षरता दर = 60.41 %

सर्वाधिक
- कोटा - 76.6 %
- जयपुर - 75.5 %
- झुंझुनूं - 74.1 %
- सीकर - 71.9 %

न्यूनतम
- जालौर - 54.9 %
- सिरोही - 55.3 %
- प्रतापगढ़ - 56.0 %
- बांसवाड़ा - 56.3 %

राजस्थान में पुरुष साक्षरता दर= 79.2%

सर्वाधिक

1. झुन्झुनूं = 86.9%
2. कोटा = 86.3%
3. जयपुर = 86.1%
4. सीकर = 85.1%

न्यूनतम

1. प्रतापगढ़ = 69.5%
2. बांसवाड़ा = 69.5%
3. सिरोही = 70.0%
4. जालौर = 70.7%

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

राजस्थान में महिला साक्षरता दर= 52.1%

सर्वाधिक

1. कोटा 65.9%
2. जयपुर 64.0%
3. झुंझुनूं 61.0%
4. गंगानगर 59.7%

न्यूनतम

1. जालौर 38.5%
2. जैसलमेर 39.7%
3. सिरोही 39.7%
4. बाड़मेर 40.6%

ग्रामीण एवं शहरी साक्षरता

ग्रामीण 61.4 प्रतिशत

- पुरुष 76.2%
- महिला 45.8%

शहरी 79.7 प्रतिशत

- पुरुष 87.9%
- महिला 70.7%

	सर्वाधिक	न्यूनतम
ग्रामीण साक्षरता	झुंझुनूं	सिरोही
ग्रामीण पुरुष साक्षरता	झुंझुनूं	सिरोही
ग्रामीण महिला साक्षरता	झुंझुनूं	सिरोही

	सर्वाधिक	न्यूनतम
शहरी साक्षरता	उदयपुर	नागौर
शहरी पुरुष साक्षरता	उदयपुर	धौलपुर
शहरी महिला साक्षरता	उदयपुर	जालौर

- बाड़मेर और चुरु में साक्षरता दर में कमी आई है, शेष सभी ने साक्षरता दर में वृद्धि हुई है।
- देश में पुरुष और महिला साक्षरता दर के बीच का अन्तर सर्वाधिक है।
- राजस्थान में औसत साक्षरता (66.1%) से कम साक्षरता वाले जिले = 19

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

6. ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या-

ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या

- ग्रामीण 5.15 करोड़
  - सर्वाधिक
    1. जयपुर
    2. अलवर
    3. नागौर
    4. उदयपुर
  - न्यूनतम
    1. जैसलमेर
    2. कोटा
    3. प्रतापगढ़
    4. सिरोही
- शहरी 1.70 करोड़
  - सर्वाधिक
    1. जयपुर
    2. जोधपुर
    3. कोटा
    4. अजमेर
  - न्यूनतम
    1. प्रतापगढ़
    2. डूंगरपुर
    3. जैसलमेर
    4. बांसवाड़ा

CamScanner

ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या

ग्रामीण 75.1 प्रतिशत
- सर्वाधिक प्रतिशत (डूंगरपुर)
- न्यूनतम प्रतिशत (कोटा)

शहरी २४.९ प्रतिशत
- सर्वाधिक प्रतिशत (कोटा)
- न्यूनतम प्रतिशत (डूंगरपुर)

राजस्थान के अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति–

अनुसूचित जनजाति (17.8%)
(कुल जनसंख्या = 1२२.२1 लाख)

ST लिंगानुपात ९२3

सर्वाधिक जनसंख्या
1. उदयपुर
२. बांसवाड़ा
3. डूँगरपुर

न्यूनतम जनसंख्या
1. बीकानेर
२. नागौर
3. चुरु

सर्वाधिक प्रतिशत
1. बांसवाड़ा
२. डूँगरपुर
3. प्रतापगढ़

न्यूनतम प्रतिशत
1. नागौर
२. बीकानेर
3. चुरु

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- ST २8% से अधिक = 5 जिलों में (बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, सिरोही, उदयपुर)
- ST 50% या 60% से अधिक = 3 जिले (बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़)

CamScanner

अनुसूचित जाति (13.5 %)
(कुल जनसंख्या = १२.३८ लाख)

SC लिंगानुपात ९५८

सर्वाधिक जनसंख्या
1. जयपुर
२. गंगानगर
3. नागौर

सर्वाधिक प्रतिशत
1. गंगानगर
२. हनुमानगढ़
3. करौली

न्यूनतम जनसंख्या
1. डूँगरपुर
२. प्रतापगढ़
3. बांसवाड़ा

न्यूनतम प्रतिशत
1. डूँगरपुर
२. बांसवाड़ा
3. उदयपुर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- SC, २५% से अधिक = २ जिले (श्री गंगानगर, हनुमानगढ़)
- २०% से अधिक = १२ जिले

8. राजस्थान में विभिन्न धर्मों की जनसंख्या–

धर्म	प्रतिशत	सर्वाधिक जनसंख्या	सर्वाधिक प्रतिशत
हिन्दु	88.51	जयपुर	दौसा
मुस्लिम	9.07	जयपुर	जैसलमेर
सिक्ख	1.27	श्री गंगानगर	श्री गंगानगर
जैन	0.91	जयपुर	उदयपुर
ईसाई	0.15	बांसवाड़ा	बांसवाड़ा
बौद्ध	0.02	अलवर	अलवर

NOTE-
- राजस्थान राज्य की जनसंख्या नीति - २० जनवरी, २०००
- राष्ट्रीय जनसंख्या नीति - 15 फरवरी, २०००

CamScanner

जनसंख्या नीति के उद्देश्य

- **तात्कालिक** → गर्भ निरोधक एवं स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध करवाना।
- **मध्यकालीक** → 2010 तक TFR (कुल प्रजनन दर) को 2.1 तक लाना।
- **दीर्घकालीक** → 2045 तक स्थिर जनसंख्या के लक्ष्य को प्राप्त करना।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

पर्यटन- परिपथ/ सर्किट एवं स्थल

- परिचय
- पर्यटन आगमन
- पर्यटन परिपथ
- पर्यटन स्थल
- पर्यटन संस्थान
- पर्यटन नीति
- पर्यटन योजना

1. परिचय-

- पर्यटन को उद्योग का दर्जा मोहम्मद यूनुस समिति की सिफारिश पर 4 मार्च 1989 को दिया गया।
- राजस्थान में कुल पर्यटन सम्भाग :- 4
  [जोधपुर, उदयपुर, अजमेर, कोटा]

पर्यटन विभाग का

- प्रतीकात्मक पशु → ऊँट
- स्लोगन → 'पधारो म्हारे देस'
- टैग लाइन → 'Rajasthan' The Incredible State of India.

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

2. पर्यटन आगमन

- कुल पर्यटन आगमन = २०२२-२३ → 1८६.२२ लाख
  - घरेलू पर्यटक (183.24 लाख)
  - विदेशी पर्यटक (3.08 लाख)
- राजस्थान में कुल पर्यटन आगमन = २०२३-२४ → 1,807.52 लाख
  - घरेलू पर्यटक (1,790.52 लाख) — वृद्धि → 82.10%
  - विदेशी पर्यटक (17 लाख) — 451.95%

राजस्थान में पर्यटन आगमन का समय-

- सर्वाधिक
  - स्वदेशी — Oct.- dec.
  - विदेशी — Oct.- dec.
- न्यूनतम
  - स्वदेशी — Apr.- June
  - विदेशी — Apr.- June

पर्यटन आगमन स्थल-

- स्वदेशी
  - अजमेर
  - पुष्कर
  - माउंट आबू
- विदेशी
  - जयपुर
  - उदयपुर
  - जोधपुर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

3. पर्यटन परिपथ

1.) पर्यटन सर्किट = 10	4.) वाईल्ड लाइफ सर्किट = 7
2.) पुरातात्विक सर्किट = 7	5.) ट्रायबल सर्किट = 4
3.) इको एडवेंचर सर्किट = 10	6.) आध्यात्मिक सर्किट = 4

(i) पर्यटन सर्किट-

- शेखावाटी सर्किट ⟶ झुन्झुनूं, चुरू, सीकर
- अलवर सर्किट ⟶ सिलीसेढ़ एवं सरिस्का
- भरतपुर सर्किट ⟶ भरतपुर, डीग, धौलपुर
- रणथम्भौर सर्किट ⟶ स० माधोपुर, टोंक

- हाड़ौती सर्किट → कोटा, बूंदी, झालावाड़
- ढूंढाड़ सर्किट → जयपुर- आमेर- रामगढ़
  दौसा - आभानेरी
- मरू त्रिकोण सर्किट → जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर
- मेरवाड़ा सर्किट → अजमेर - पुष्कर, नागौर - मेड़ता
- मेवाड़ सर्किट → उदयपुर - चित्तौड़
  कुम्भलगढ़ - नाथद्वारा
- माउंट आबू सर्किट → सिरोही-पाली (रणकपुर) और जालौर

NOTE- राजस्थान से संबंधित अन्य पर्यटन सर्किट

- प्रस्तावित → गोड़वाड़ सर्किट → *पाली - जालौर - बाड़मेर - सिरोही
- स्वर्णिम त्रिकोण → जयपुर-दिल्ली- आगरा

2. पुरातात्विक सर्किट-

a. बीकानेर पुरातात्विक सर्किट
b. जोधपुर पुरातात्विक सर्किट
c. अजमेर पुरातात्विक सर्किट
d. जयपुर पुरातात्विक सर्किट
e. भरतपुर पुरातात्विक सर्किट
f. उदयपुर पुरातात्विक सर्किट
g. कोटा पुरातात्विक सर्किट

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books * 7300134518, 7610010054

CamScanner

3. इको एडवेंचर सर्किट-

शामिल जिले- 10

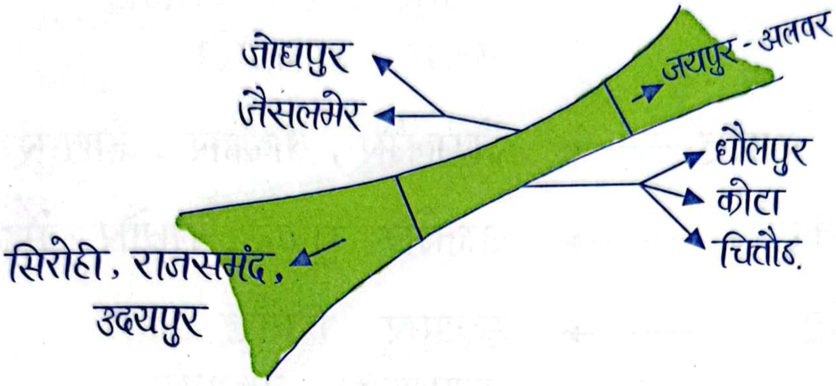

4. वाइल्ड लाइफ सर्किट-

शामिल जिले = 7

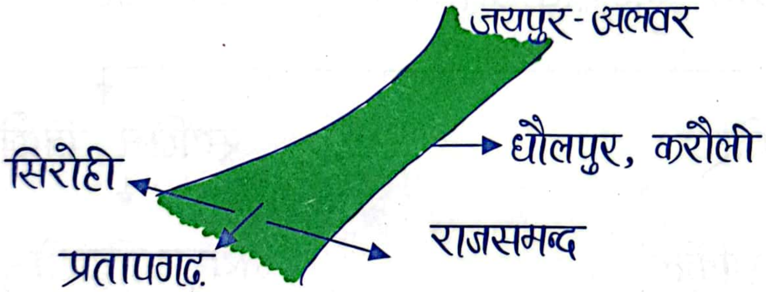

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

5. ट्राइबल सर्किट-

शामिल जिले = 4 →

- डूंगरपुर
- बांसवाड़ा
- प्रतापगढ़
- उदयपुर

6. आध्यात्मिक सर्किट-

- बुद्धा सर्किट → 2
- बालाजी सर्किट → 4
- तीर्थ सर्किट → 4
- कृष्णा सर्किट → 3

* **बुद्धा सर्किट-**

- जयपुर- बैराठ
- झालावाड़ - कोल्वी गुफा

* **बालाजी सर्किट-**

- चुरू = सालासर
- जयपुर ग्रामीण = वीर हनुमान जी - सामोद
- दौसा = मेहन्दीपुर बालाजी
- अलवर = पांडूपोल (सरिस्का)

* **तीर्थ सर्किट-**

- अजमेर
- पुष्कर
- नाथद्वारा (राजसमंद)
- महावीर जी (करौली)

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

* **कृष्णा सर्किट-**

स्वदेश दर्शन योजना (2014-15) के तहत कृष्णा सर्किट में शामिल-

- राज्य → 5
  - राजस्थान
  - हरियाणा
  - U.P
  - गुजरात
  - ओडिशा
- स्थल → 12
  - NOTE- 3 Sites in Rajasthan
    1. सीकर → खाटू श्याम जी
    2. राजसमंद → श्री नाथ जी
    3. जयपुर → गोविन्द देव जी, गलता जी, कनक वृन्दावन

CamScanner

4. पर्यटन स्थल

ऐतिहासिक स्थल
- सभ्यता स्थल
- युद्ध भूमि

सांस्कृतिक स्थल
- धार्मिक स्थल
- पर्यटन महोत्सव एवं मेले
- प्रमुख दुर्ग एवं महल
- पर्यटन महोत्सव

भौगोलिक स्थल
- हिल स्टेशन
- नदियाँ – बाँध
- झीलें
- राष्ट्रीय पार्क व अभयारण्य

★ प्रमुख पर्यटन महोत्सव –

जनवरी	
• ऊँट महोत्सव	→ बीकानेर
• जयपुर लिट्रेचर फेस्टिवल	→ डिग्गी पैलेस (जयपुर)
फरवरी	
• बेणेश्वर मेला	→ डूँगरपुर
• मरु महोत्सव	→ जैसलमेर
• उदयपुर वर्ल्ड म्यूजियम फेस्टिवल	→ उदयपुर
मार्च	
• ब्रज महोत्सव	→ भरतपुर
• धुलण्डी महोत्सव	→ होली के अगले दिन
• राजस्थान महोत्सव	→ २७ मार्च से 30 मार्च
अप्रैल	
• गणगौर उत्सव	→ जयपुर का प्रसिद्ध
• मेवाड़ महोत्सव	→ उदयपुर
मई	
• ग्रीष्म महोत्सव	→ माउण्ट आबू

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

CamScanner

अगस्त

- तीज उत्सव → जयपुर (श्रावण शुक्ल तृतीया)
- कजली तीज → बूँदी (भाद्रपद कृष्ण तृतीया)

अक्टूबर

- राजस्थान कबीर यात्रा → बीकानेर
- आभानेरी उत्सव → दौसा
- मारवाड़ उत्सव (मांड उत्सव) → जोधपुर

अक्टूबर-नवम्बर

- दशहरा उत्सव → कोटा
- पुष्कर उत्सव → अजमेर
- कोलायत मेला → बीकानेर
- मत्स्य महोत्सव → अलवर
- चन्द्रभागा महोत्सव → झालावाड़
- बूँदी उत्सव → बूँदी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

दिसम्बर

- कुम्भलगढ़ उत्सव → राजसमंद (1-3 दिसम्बर)
- रणकपुर उत्सव → पाली (21-22 दिसम्बर)
- शीतकालीन उत्सव → माउंट आबू (29-30 dec.)

5. पर्यटन संस्थान

- पर्यटन विभाग- 1956
  - पर्यटन विभाग द्वारा संचालित संस्थान-
    - पर्यटन प्रबंधन संस्थान
      - जयपुर
      - जोधपुर
      - उदयपुर
    - फूड क्राफ्ट संस्थान
      - अजमेर
      - पाली (सुमेरपुर)

MAHECHA PUBLICATION

NOTE- पर्यटन विभाग के स्वागत / सूचना केन्द्र -

राज्य में → ५२

राज्य के बाहर (5) → 1. दिल्ली 2. मुम्बई 3. चेन्नई 4. कोलकाता 5. अहमदाबाद

- पर्यटन विभाग के अधीन संचालित संस्थान - 4

1. राजस्थान राज्य होटल निगम - (RSHC)
   स्थापना- 7 जून 1965, जयपुर

2. RTDC - (Rajasthan tourism Development Corporation)
   - स्थापना- 1 अप्रैल 1979 (जयपुर)
   - उद्देश्य- पर्यटकों को आवास, भोजन एवं यातायात सुविधाएँ प्रदान करता है।

3. RITTMAN- (Rajasthan Institute of tourism & Travel Management)
   - राजस्थान पर्यटन एवं परिवहन संस्थान निगम
   स्थापना- २७ अप्रैल, १९९६

4. राज्य मेला प्राधिकरण-
   - देवस्थान विभाग के अधीन २०११ में गठन।
   - दिसम्बर २०१९ तक ५२ मेले पंजीकृत है।

NOTE - • राष्ट्रीय पर्यटन दिवस - २५ जनवरी
• विश्व पर्यटन दिवस - २७ सितम्बर

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books * 7300134518, 7610010054

6. पर्यटन नीतियाँ

- पर्यटन नीति
  - वर्ष 2001
  - वर्ष 2007
  - वर्ष 2015
  - वर्ष 9 Sep.2020
- इको टूरिज्म नीति या पारिस्थितिकी नीति
  - 1st → 4 feb. 2010
  - 2nd → 15 July, 2021
- होटल नीति
  - वर्ष 2006

पर्यटन संबंधी अन्य नीतियाँ-

1. राजस्थान फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन नीति 2022 :-

- लागू → 18 अप्रैल, 2022
- फिल्म डेस्टिनेशन / शूटिंग को बढ़ावा देने हेतु
- कुल उत्पादन लागत का 15% अनुदान या अधिकतम 2 करोड़ रु.

THE NOTES HUB ☆ Notes are Available ☆ All Competition Books ☆ 7300134518, 7610010054

7. पर्यटन संबंधी योजनाएँ

(i) पेइंग गेस्ट योजना-

- शुरुआत - 27 सितम्बर, 1991
- 2012 में इसे सम्पूर्ण राज्य में लागू कर दिया।

CamScanner

(ii) हेरिटेज होटल योजना-

- 1991 में भारत सरकार द्वारा हेरिटेज होटल की नवीन श्रेणी को मान्यता दी गई।

- हेरिटेज के लिए आवश्यक शर्तें-

(i) 50 वर्ष से पुरानी ईमारतों जैसे- किलों, महलों, हवेलियों एवं दुर्गों को बनाया जाता है।

(ii) हेरिटेज होटलों को सेवा एवं सुविधाओं के आधार पर तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है -

1. हेरिटेज
2. हेरिटेज क्लासिक
3. हेरिटेज ग्रैंड

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

NOTE :- राजस्थान में "अजीत भवन, जोधपुर" को प्रथम हेरिटेज होटल बनाया गया।

(iii) मेवाड़ काम्पलैक्स योजना-

महाराणा प्रताप की 400 वीं पुण्यतिथि (1997) पर उनके जीवन से संबंधी स्थानों (गोगुन्दा, चावण्ड, दिवेर, हल्दीघाटी) का पर्यटन की दृष्टि से विकास करना।

(iv) वरिष्ठ नागरिक तीर्थ यात्रा योजना-

- शुरुआत - 2013 (देवस्थान विभाग द्वारा)

(v) हृदय योजना-

(HRIDAY = Heritage city development & Augmentation Yojana)

- शुरुआत - 2015

- उद्देश्य- देश के राष्ट्रीय विरासत स्थलों के विकास एवं संवर्द्धन के लिए।

इस योजना में राजस्थान के अजमेर को शामिल किया गया है।

(ii) प्रसाद योजना-

(PRASHAD= Pilgrimage Rejuvenation & Heritage Spiritual Augmentation Drive)

- शुरुआत - जनवरी 2015
- पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा।
- उद्देश्य - तीर्थ स्थलों, आध्यात्मिक एवं विरासत स्थलों का परिवर्धन करना।
- इसके तहत राजस्थान के अजमेर-पुष्कर का विकास किया जायेगा।

(iii) पेइंग गेस्ट योजना-

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- शुरुआत- 21 अक्टूबर 2021
- पेइंग गेस्ट हाउस के लिए आवश्यक शर्तें-
  - (i) न्यूनतम 6 व अधिकतम 20 कमरों की अनुमति।
  - (ii) होम स्टे आवास क्षेत्र में 23 से अधिक कमरों की अनुमति नहीं।
  - (iii) पेइंग गेस्ट हाउस का क्षेत्र = 167 वर्ग कि.मी.
  - (iv) पेइंग गेस्ट हाउस के सामने न्यूनतम 30 फीट रोड।
  - (v) एक से अधिक मालिकों/ स्वामित्व वाले फ्लेट को शामिल नहीं किया जायेगा।
  - (vi) fire NOC व Food Licence अनिवार्य।

CamScanner

(viii) गेस्ट हाउस योजना (होम स्टे) -

- शुरुआत - 16 अप्रैल, 2021

(ix) राजस्थान ग्रामीण पर्यटन योजना, 2022 :-

- ग्रामीण क्षेत्रों मे पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु।
- 30 नवम्बर, 2022 को लागू।
- 25 लाख ₹ तक का ऋण 9% ब्याज सब्सिडी
- न्यूनतम ₹ 1 करोड़ निवेश करने वाली ग्रामीण पर्यटन इकाईयों को 10 वर्ष SGST का 100% पुनर्भरण।

अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

पर्यटन संबंधित प्रमुख केन्द्र

- टूरिज्म कन्वेंशन सेन्टर, जोधपुर (राजस्थान का प्रथम)
- इंस्टीट्यूट ऑफ हेरिटेज कन्जर्वेशन, (विरासत संरक्षण संस्थान), जयपुर
- CETT (सेन्टर ऑफ एक्सीलेंस फॉर टूरिज्म ट्रेनिंग) - 2016 उदयपुर
  - सहयोग - सिंगापुर

* राजस्थान की अर्थव्यवस्था में पर्यटन का लगभग 5.6 प्रतिशत योगदान है। (बजट 2025-26 के अनुसार)

* बजट 2020-21 में 'पर्यटन विकास कोष' के लिए 500 करोड़ की घोषणा की। जिसे बजट 2023-24 में बढ़ाकर 1500 करोड़ कर दिया।

* ढोला मारु टूरिज्म काम्पलेक्स - जैसलमेर में स्थापित किया जायेगा।

* बेस्ट टयूरिज्म वीलेज, 2024 - देवमाली (ब्यावर)

यूनेस्को – भू-पार्क / Geo-Park, विश्व विरासत स्थल / Geo heritage site

- ✔ यूनेस्को
- ✔ भू-पार्क एवं भू-धरोहर स्थल संकल्पना
- ✔ राजस्थान में सम्भावनाएँ
- ✔ निष्कर्ष

A. यूनेस्को–

(United Nations Educational, Scientific Cultural Organization)

(संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृति संगठन)

- स्थापना- 16 NOV. 1945 (लन्दन, ब्रिटेन)
- मुख्यालय -पेरिस फ्रांस
- भारत यूनेस्को का सदस्य "1946" में बना।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

B. भू-पार्क एवं भू-धरोहर स्थल संकल्पना–

↳ यूनेस्को की जियोपार्क एवं जियो हेरिटेज साईट संकल्पना निम्नलिखित है-

यूनेस्को
- ↓ ग्लोबल भू-पार्क
- ↓ भू-धरोहर स्थल

(a) ग्लोबल भू- पार्क- (Geo Park)

➜ जियो पार्क क्या है?

- यूनेस्को द्वारा "भू-पार्क" अवधारणा 2001 में दी गई।
- एकल एकीकृत भौगोलिक क्षेत्र है, जहाँ अन्तर्राष्ट्रीय भू- वैज्ञानिक महत्व के स्थलों एवं परिदृश्यों का सुरक्षा, शिक्षा एवं सतत् विकास की समग्र अवधारणा के साथ यूनेस्को द्वारा प्रबन्धन किया जाता है।
- Bottom to up दृष्टिकोण के तहत इन स्थलों के "सतत् विकास एवं संरक्षण" में स्थानीय समुदायों (भू-मालिकों, समुदायिक समूहों एवं पर्यटन सेवा प्रदाताओं) को शामिल किया जाता है।

वर्तमान में जियो पार्क-

- वर्तमान तक यूनेस्को द्वारा 48 देशों के 213 क्षेत्रों को 'ग्लोबल जियो पार्क' का दर्जा दिया गया है।

➜ वर्तमान में भारत में प्रस्तावित प्रथम जियो पार्क 'लम्हेटा घाट' जो मध्यप्रदेश में स्थापित किया जायेगा यह स्थल डायनासोर के जीवाश्म एवं प्राचीन चट्टानों के लिए प्रसिद्ध है।

क्या जियो पार्क पद स्थायी है?

➜ यूनेस्को द्वारा किसी स्थल को 'ग्लोबल जियो-पार्क' का दर्जा 4 साल के लिए दिया जाता है।

➜ जियो पार्क के क्रियाकलाप व गुणवत्ता का 4 साल के बाद पुनर्मूल्यांकन किया जाता है।

➜ यूनेस्को ग्लोबल जियो पार्क की गुणवत्ता का आंकलन करने के लिए 2 मूल्यांकनकर्ताओं द्वारा एक फील्ड मिशन चलाया जाता है।

➜ इस मिशन के बाद मूल्यांकनकर्ता ग्लोबल जियोपार्क पर एक 'प्रगति रिपोर्ट' तैयार करता है, जिसके आधार पर कार्ड जारी करता है, जिसमें –

हरा कार्ड	पीला कार्ड	लाल कार्ड
(मानदण्डों को पूरा करने पर पुनः 4 साल के लिए जियो पार्क सूची में शामिल)	(मानदण्डों को पूरा नहीं करता है तो उचित कदम उठाने के लिए सूचित किया जायेगा।	पीले कार्ड के बाद यदि २ वर्ष में मानदण्डों को पूरा नहीं करता तो, वह स्थल 'जियो-पार्क' का दर्जा खो देगा।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- यूनेस्को जियो पार्क की चार मुलभूत विशेषताएँ है-

1.> वैश्विक स्तर का भू-वैज्ञानिक विरासत स्थल- किसी क्षेत्र को भू-पार्क बनाने के लिए आवश्यक है कि वह स्थल अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भू-वैज्ञानिक महत्व का स्थल हो।

ii> प्रबन्धन- जियो पार्क प्रबन्धन का कार्य स्थानीय वैधानिक संगठन के द्वारा किया जायेगा।

iii> दृश्यता- जियो पर्यटन के द्वारा सतत पोषणीय स्थानीय आर्थिक विकास को बढ़ाना।

iv> नेटवर्क- प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक स्थलों की सूचनाओं का स्थानीय स्तर के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर आदान प्रदान करना।

CamScanner

6. जियो हेरिटेज साइट–

- यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत स्थल संकल्पना को 1972 में अपनाया गया।
- इस संकल्पना के तहत यूनेस्को प्राकृतिक, सांस्कृतिक स्थल एवं अमूर्त कलाओं के संरक्षण को बढ़ावा देता है।
- वर्तमान में भारत के 40 स्थल यूनेस्को "भू- विरासत स्थल" में शामिल है।

जिसमें राजस्थान के शामिल–

सांस्कृतिक धरोहर	प्राकृतिक धरोहर	अमूर्त कला
जन्तर- मन्तर (2010)	केवलादेव - भरतपुर (1985)	कालबेलिया नृत्य (2010)

- 6 दुर्ग (2013) → 1. आमेर (जयपुर)
  2. गागरोन (झालावाड़)
  3. सोनार (जैसलमेर)
  4. रणथम्भौर (स. माधोपुर)
  5. चित्तौड़गढ़
  6. कुंभलगढ़ (राजसमंद)

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- जयपुर परकोटा

राजस्थान में सम्भावनाएँ-

- भारतीय भू- वैज्ञानिक सर्वेक्षण विभाग / Geological Survey of India (GSI- 1851, कोलकाता) द्वारा राजस्थान की 12 स्थलों को जियो हेरिटेज साइट घोषित किया गया है।

1. जावर	उदयपुर
2. स्ट्रोमेटोलाईट (नील हरित शैवाल द्वारा निर्मित चट्टानें)	झामर कोटडा (उदयपुर)
3. स्ट्रोमेटोलाईट	भोजुण्डा (चित्तौड़)
4. ग्रेट बाउण्ड्री फॉल्ट	सातूर (बूंदी)
5. रामगढ़ उल्कापिण्ड क्रेटर	रामगढ़ (बारां)
6. जोधपुर मालानी ग्रुप आग्नेय चट्टानें	जोधपुर
7. वेल्डेड टफ	जोधपुर
8. सेंदड़ा ग्रेनाईट	पाली
9. बर कांग्लोमैरेट (अवसादी चट्टानें)	पाली
10. आकल वुड फॉसिल पार्क (जुरासिक काल की लकड़ी के अवशेष)	जैसलमेर
11. गोसाण राजपुरा दरिबा	राजसमंद
12. नेफेलाइन साइनाइट	किशनगढ़

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

निष्कर्ष-

यूनेस्को एवं स्थानीय समुदाय के सहयोग से प्राकृतिक सांस्कृतिक स्थलों एवं अमूर्त कलाओं को संरक्षण देना एवं आर्थिक विकास व पर्यटन की सम्भावनाओं को बढ़ाना।

INTACH-

(Indian National trust for Art & Cultural Heritage)

- स्थापना - 27 जनवरी, 1984 (नई दिल्ली)
- उद्देश्य- विरासत संरक्षण एवं जागरूकता को बढ़ावा देना।

CamScanner

जल संरक्षण तकनीक

- ✔ जल संरक्षण
- ✔ जल संरक्षण की तकनीक
- ✔ अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

A. जल संरक्षण-

व्यर्थ बहते हुए पानी को रोकने व उपयोग में लिए जाने वाले पानी का सीमित उपयोग करना, "जल प्रबंधन" कहलाता है।

जल प्रबंधन की तकनीक

परम्परागत तकनीक

1. नाड़ी
2. टोबा
3. बावड़ी
4. झालरा
5. खड़ीन
6. बेरी / कुई
7. टांका / कुंड
8. जोहड़
9. तालाब
10. झील

आधुनिक तकनीक

1. बाँध
2. नहर
3. बूँद-बूँद फव्वारा तकनीक

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

I. परम्परागत तकनीक-

1. नाडी-

- एक तरह का तालाब जिसमें वर्षा जल संग्रहण किया जाता है।
- यह तकनीक पश्चिमी राजस्थान में प्रचलित।
- 1520 ई. में राजस्थान में प्रथम नाडी का निर्माण किया गया।

२. टोबा-

- नाडी से गहरे जल संग्रहण के स्त्रोत है जिसमें वर्षा जल संग्रहण किया जाता है।
- इसमें संग्रहित जल का उपयोग - पेयजल एवं सीमित सिंचाई के लिए किया जाता है।

३. बावडी-

- बावडी गोलाकार एवं कलात्मक सीढ़ीनुमा कुएँ होते है।
- जल के ये कुएँ, वर्षा जल पर निर्भर।
- सर्वाधिक बावड़ी- बूंदी में स्थित है जिसे "बावडियों का शहर" कहा जाता है।

प्रमुख बावड़ियाँ-

1. नवलखा बावडी → डूँगरपुर
2. लाहिनी बावडी → सिरोही
3. भूत बावडी → जोधपुर ग्रामीण (रणसी गाँव)
4. अनारकली बावडी → बूंदी
5. चाँद बावडी → आभानेरी (दौसा)
6. बडी बावडी/ छोटी बावडी → दौसा

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

MAHECHA PUBLICATION

7. दूध बावड़ी → सिरोही
8. त्रिमुखी बावड़ी → उदयपुर
9. रानी की बावड़ी → बूंदी
10. गुलाब बावड़ी → बूंदी
11. हाड़ी रानी की बावड़ी → टोडारायसिंह (केकड़ी)
12. नौ मंजिला बावड़ी → नीमराणा (कोटपुतली)

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

4. झालरा-

- जल संग्रहण हेतु निर्मित आयताकार कुंड जो किसी झील या तालाब से जल प्राप्त करता है।
- इसके पानी का उपयोग धार्मिक रीति-रिवाजों के स्नान के लिए किया जाता है, पेयजल के लिए नहीं।
  उदा॰ - तूर जी झालरा (जोधपुर)

5. खड़ीन (प्लाया)-

- पश्चिमी राजस्थान में पालीवाल ब्राह्मणों द्वारा जल संग्रहण के लिए जो अस्थाई पानी की झील बनाई जाती है, उसे खड़ीन या प्लाया कहते है।
- ये सर्वाधिक उत्तरी जैसलमेर में स्थित है।

6. बेरी (कुई)-

- पश्चिमी राजस्थान / अन्तर्राष्ट्रीय सीमावर्ती क्षेत्रों (जैसलमेर, बीकानेर) में जल संग्रहण के लिए बनाये गए छोटे, गोलाकार या कम गहरे खड्डे को बेरी / कुई कहते है।
- ये जल के लिए तालाब एवं जोहड़ पर निर्भर होते है।

7. टांका / कुंड-

इसका निर्माण मुख्यतः पेयजल के उद्देश्य से घरों या सार्वजनिक स्थानों पर किया जाता है, जिसमें वर्षा जल

(पालर पानी) संग्रहित होता है।

जल की शुद्धता के लिए इसे ऊपर से ढका जाता है।

8. जोहड़:-

ग्रामीण क्षेत्र में ढाल की ओर बहता हुआ वर्षा जल निम्न भूमि में एकत्रित होता है, जिसे जोहड़ कहते है।

शेखावाटी में अधिक प्रचलित।
↳ 'पानी के कच्चे कुएँ' कहा जाता है।

NOTE- जोहड़ पद्धति को पुनर्जीवित करने का श्रेय श्री राजेन्द्र सिंह (अलवर) को जाता है, इन्हें "जोहड़ वाले बाबा" के नाम से जाना जाता है, जिन्हें 'रमन मैग्सेसे' दिया गया।

9. तालाब-

कृत्रिम/ प्राकृतिक जलाशय होता है, जिसका विस्तार एक वर्ग मीटर से दो हैक्टेयर के मध्य होता है।

जिसमें वर्ष में कम से कम चार माह जल उपलब्ध होता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

प्रमुख तालाब-

- पदम तालाब
- जंगली तालाब
- काला तालाब
- सुख तालाब

} रणथम्भौर

- सरेरी तालाब
- खारा तालाब
- माण्डल तालाब (राजस्थान का सबसे बड़ा तालाब)

} भीलवाड़ा

NOTE- राजस्थान में तालाबों से सर्वाधिक सिंचाई भीलवाड़ा में होती है।

10. झील-

वर्षा जल व नदी बेसिन के जल द्वारा निर्मित जल बेसिन जो मुख्यतः चारों ओर स्थलीय भाग से घिरे रहते है, उसे झील कहते है।

सर्वाधिक झीलें - उदयपुर में

NOTE- राष्ट्रीय झील संरक्षण परियोजना- शुरुआत = 2001

↳ राजस्थान की 6 झीलें शामिल-

1. फतेह सागर
2. पिछोला
3. आनासागर
4. पुष्कर
5. नक्की
6. मानसागर

↳ बजट = केन्द्र : राज्य (60:40)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

आधुनिक विधियाँ

1. डैम/बाँध परियोजना-

बहते हुए व्यर्थ पानी को रोककर विभिन्न उद्देश्य (सिंचाई, पेयजल, जल विद्युत) को पुरा करने के लिए डैम का प्रयोग किया जाता है।

2. नहर- राजस्थान में नहरों द्वारा सर्वाधिक सिंचाई श्री गंगानगर में होती है।

3. फव्वारा एवं बूंद-बूंद सिंचाई तकनीक-

राजस्थान में नर्मदा नहर क्षेत्र में इस तकनीक को अनिवार्य रूप से लागू किया गया है।

इस तकनीक को इजराइल से ग्रहण किया गया है।

अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

(a) प्रमुख योजनाएँ-

(i) **स्वजल धारा योजना**- शुरुआत- 2002

केन्द्र सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति हेतु शुरु।

(ii) **जल स्वावलम्बन योजना**-

- शुरुआत- 27 Jan., 2016
  - ↳ गर्दनखेड़ी (झालावाड़) से
- उद्देश्य
  - → ग्रामीण क्षेत्रों में तालाब एवं कुएँ के जल स्तर में सुधार।
  - → चारागाहों का विस्तार।
  - → कृषि उत्पादन को बढ़ावा।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

यह योजना 4 चरणों मे चलाई गई

- प्रथम चरण (27 Jan-2016)
- द्वितीय चरण (9 dec. 2016)
- तृतीय चरण (9 dec. 2017)
- चतुर्थ चरण (3 oct. 2018)

(iii) **राजीव गाँधी जल संचय योजना**-

- → शुरुआत- 20 Aug. 2019
- → उद्देश्य- ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजलापूर्ति, वर्षा जल सग्रहण व संरक्षण, भू-जल स्तर में वृद्धि करना, कृषि योग्य क्षेत्र को बढ़ाना।

MAHECH PUBLICATI

- इस योजना को दो चरणों में चलाया गया है।

प्रथम चरण	द्वितीय चरण
२० Aug, २०19	२२ मार्च, २०२३

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(iv) अटल भू-जल योजना-

- भारत सरकार : विश्व बैंक (50 : 50)
- शुरुआत - 1 अप्रैल, २०२०
- योजना २०२०-२१ से २०२४-२५, 5 वर्षों के लिए है।
- 7 राज्यो में - हरियाणा, गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश

NOTE:- इसमें राजस्थान के 16 जिलों की 38 पंचायत समितियों को शामिल किया गया है।

- उद्देश्य - सामुदायिक भागीदारी से गिरते भूजल स्तर को रोकना।
- नोडल विभाग- भू-जल विभाग

(V) मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान २.0- (शुरुआत = २०२४-२5)

- इसके अर्न्तगत अगले 4 वर्षों में २०,000 गाँवों में 5,00000 जल संचय संरचनाओं का निर्माण। जिनका बजट 11,२00 करोड़ ₹ है।
- प्रथम चरण (२ वर्ष) - 349 पंचायत समीतियाँ (सभी जिलो की)
  - 5,135 गाँव चयनित
  - राशि = 3500 करोड़ ₹
- उद्देश्य- भू-जल स्तर को बढ़ाना, ग्रामीण क्षेत्रों में जलापूर्ति व हरित क्षेत्र को बढ़ाना।

(b) राज्य जल नीति-

↳ 18 feb. 2010

- इस नीति के अनुसार जल उपलब्धता की प्राथमिकता का क्रम- मानव पेयजल, पशु पेयजल, घरेलू कार्यों के लिए एवं कृषि कार्यों के लिए जलापूर्ति रखा गया है।

(C) भूमिगत जल संसाधन मूल्यांकन - (2023)

1. अतिदोहित क्षेत्र	— 216
2. गंभीर / विषम	— 23
3. अर्द्ध गंभीर/अर्द्ध विषम	— 22
4. सुरक्षित	— 38
5. लवणीय	— 3
	कुल = 302

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- अन्तर्राष्ट्रीय जल दिवस - 22 मार्च (Theme- 2024 "Water for Peace"
- जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम - 1974

पशु सम्पदा

A. परिचय

B. पशुगणना

C. पशुओं की प्रमुख नस्लें

D. पशुओं के अनुसंधान केन्द्र

E. पशुओं से सम्बन्धित प्रमुख रोग

F. पशु मेले

G. पशुओं से सम्बन्धित योजनाएँ

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

A. परिचय

- पशु सम्पदा अर्थव्यवस्था में प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा है जो मिश्रित एवं शुष्क कृषि का महत्वपूर्ण हिस्सा है।
- अर्थव्यवस्था में कृषि एवं सम्बन्धित क्षेत्रों में पशुधन क्षेत्र का अंश/योगदान 48.58 प्रतिशत है।
- राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में पशुपालन का योगदान लगभग 10.99% है।

कृषि सम्बन्धित क्षेत्र -

- कृषि फसल = 44.53%
- पशुधन = 48.58%
- वानिकी क्षेत्र = 6.40%
- मत्स्य क्षेत्र = 0.49%

B. पशुगणना

- पशुगणना, पशुपालन विभाग (1958), जयपुर के द्वारा करवाई जाती है।
- पशुगणना का समय = 5 वर्ष में 1 बार (प्रथम पशुगणना = 1919)
- नवीनतम पशुगणना = 2019 (20 वीं पशुगणना) के अनुसार–

राजस्थान में कुल पशु सम्पदा

2012	2019
577.32 लाख	568.01 लाख

कमी
–1.61 %
(9.31 लाख)

- 20 वीं पशुगणना के अनुसार राजस्थान मे पशु सम्पदा देश की कुल पशु सम्पदा का = 10.60 प्रतिशत
- 20 वीं पशुगणना के अनुसार राजस्थान में सर्वाधिक पाए जाने वाले पशु –

1st	बकरी	= 36.70 %
IInd	गाय	= 24.47 %
IIIrd	भैंस	= 24.10 %
IVth	भेड़	= 13.91 %

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

देश की वह पशु सम्पदा जो राजस्थान में सर्वाधिक पाई जाती है – ऊँट, गधा, बकरी इत्यादि।

पशु	राज० का देश में योगदान
ऊँट	84.43 %
गधे	18.91 %
बकरी	10.64 %

CamScanner

२० वीं पशुगणना के अनुसार राजस्थान में पशुघनत्व -166/Km²

सर्वाधिक

1. डूँगरपुर - 433
2. बाँसवाड़ा - 386
3. दौसा - 308
4. जयपुर - 208

न्यूनतम

1. जैसलमेर - 62
2. बीकानेर - 90
3. बारां - 110
4. चुरु - 117

२० वीं पशुगणना के अनुसार सर्वाधिक बढ़ोतरी वाले पशु

संख्या के आधार पर

1. भैंस
2. गाय

प्रतिशत के आधार पर

1. भैंस (5.53%)
2. गाय (4.60%)

२० वीं पशुगणना के अनुसार सर्वाधिक कमी वाले पशु

संख्या के आधार पर

1. भेड़
2. बकरी
3. ऊँट
4. सुअर
5. गधा

प्रतिशत के आधार पर

1. गधा - 71.31%
2. खच्चर - 60.33%
3. सुअर - 34.87%
4. ऊँट - 34.69%
5. भेड़ - 12.95%

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books * 7300134518, 7610010054

CamScanner

८. राजस्थान की पशु नस्लें

18 वीं पशुगणना (2007) पहली बार पशुओं की नस्ल के आधार पर की गई पशुगणना थी।

1. बकरी (सर्वाधिक - बाड़मेर, न्यूनतम - धौलपुर)

नस्ल	क्षेत्र	विशेष
1. मारवाड़ी / लोही	उत्तरी-पश्चिमी राजस्थान (जोधपुर, पाली, जालौर)	• मांस के लिए प्रसिद्ध
२. जखराना / अलवरी	अलवर, बहरोड़	• सर्वाधिक दूध देने वाली नस्ल।
3. शेखावाटी	सीकर, झुंझुनूं	• बीना सींग वाली बकरी • काजरी वैज्ञानिकों द्वारा विकसित नस्ल
4. परबतसरी	नागौर, अजमेर टोंक	• पौष्टिक दूध देने वाली नस्ल
5. बारबरी	पूर्वी राजस्थान (अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर)	• सर्वाधिक सुन्दर
6. सिरोही	सिरोही, जालौर	• मांस के लिए प्रसिद्ध
7. जमनापरी	हाड़ौती (कोटा, बूंदी, झालावाड़)	• मांस व दूध के लिए प्रसिद्ध

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

NOTE - 1. वरुण गाँव (नागौर) की बकरियां सर्वश्रेष्ठ नस्ल की मानी जाती है।
२. बकरी को गरीब की गाय या चलता-फिरता फ्रिज कहा जाता है।

CamScanner

NOTE: बकरी के मांस को 'चेवण' कहा जाता है।

२. गौवंश - (सर्वाधिक - बीकानेर, जोधपुर व न्यूनतम - धौलपुर)

नस्ल	क्षेत्र	विशेष
1. राठी	बीकानेर, जैसलमेर, गंगानगर	• सर्वाधिक दूध देने वाली • राजस्थान की कामधेनु • यह लाल सिंधी व साहीवाल का मिश्रण है।
२. थारपारकर	जैसलमेर, बाड़मेर व जोधपुर	सिन्ध प्रान्त (पाक) व मालानी (बाड़मेर) की नस्ल
3. गिर	अजमेर, भीलवाड़ा, चित्तौड़	मूलतः गुजरात (गिर) की नस्ल
4. नागौरी	नागौर	• नागौरी बैल दौड़ने में, भारवहन में तथा कृषि कार्यों में सर्वश्रेष्ठ माने जाते है।
5. कांकरेज	बाड़मेर व जालौर	मूल स्थान- गुजरात
6. मेवाती	अलवर, भरतपुर	बोझा ढोने हेतु
7. हरियाणवी	सीकर, झुंझुनू	मूल स्थान- हरियाणा
8. मालवी	द. पूर्वी राजस्थान	मूल स्थान- मालवा (M.P)
9. सांचौरी	जालौर, सिरोही	डेयरी उद्योग हेतु प्रसिद्ध

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

CamScanner

गायों की विदेशी नस्लें-

1. जर्सी → मूल स्थान- अमेरिका
2. रेड डेन → मूल स्थान- डेनमार्क
3. हॉलिस्टिन → मूल स्थान- हॉलेण्ड + अमेरिका
   - → शरीर पर काले व सफेद चकते।
   - → सर्वाधिक दूध देने वाली गाय की नस्ल।

3. भैंस :- (सर्वाधिक - जयपुर, न्यूनतम - जैसलमेर)

नस्ल	क्षेत्र	विशेष
1. मुर्रा (खुंडी)	पूर्वी राजस्थान	राज. में सर्वाधिक पाए जाने वाली व सर्वाधिक दूध देने वाली नस्ल।
2. सूरती	उदयपुर, जालौर, सिरोही	मूल स्थान - गुजरात
3. जाफराबादी	द. पश्चिमी राजस्थान	मूल स्थान - गुजरात
4. मेहसाना	द. पश्चिमी राजस्थान	मूल स्थान - गुजरात
5. भदावरी	पूर्वी राजस्थान	मूल स्थान - उत्तरप्रदेश "सर्वाधिक वसा वाला दूध"

भैंसों की अन्य नस्लें-

1. नागपुरी
2. रथ
3. राठ

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

CamScanner

५. भेड़ (सर्वाधिक - बाड़मेर, न्यूनतम - बांसवाड़ा

नस्ल	क्षेत्र	विशेष
मालपुरी	जयपुर, टोंक, स. माधोपुर	ऊन मोटी होने के कारण गलीचों के लिए उपयुक्त
चोकला	झुंझुनूं, सीकर, बीकानेर	सर्वश्रेष्ठ किस्म की ऊन प्राप्त होती है, जिसे 'भारत की मेरिनो' कहते है।
सोनाड़ी/ चनोथर	उदयपुर, डूंगरपुर, चित्तौड़	लम्बे कान वाली
नाली	हनुमानगढ़, गंगानगर	घग्घर नदी क्षेत्र में पाई जाने वाली नस्ल।
पूगल	बीकानेर	
मगरा	बीकानेर	'बीकानेरी चोकला' कहते हैं
मारवाड़ी	जोधपुर, बाड़मेर, नागौर, पाली	राजस्थान में सर्वाधिक पाई जाने वाली, सर्वाधिक रोग प्रतिरोधक क्षमता
जैसलमेरी	जैसलमेर, जोधपुर	• सर्वाधिक ऊन प्राप्त
खैरी	जोधपुर, पाली, नागौर	• ऊन गलीचों के लिए उपयुक्त

→ भेड़ की विदेशी नस्लें -

1. रूसी मैरिनो – टोंक, जयपुर, सीकर
2. रेम्बुल – टोंक
3. डोरसेट – टोंक
4. कोरिडेल – चित्तौड़

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

(5.) <u>ऊँट</u> (सर्वाधिक - जैसलमेर, न्यूनतम - प्रतापगढ़)

राजस्थान के राज्य पशु →
- वन्यजीव में = चिकारा (1981)
- पशुधन में = ऊँट (Sep. 2014)

नस्ल	क्षेत्र	विशेष
बीकानेरी	बीकानेर	• भार/बोझा ढोने के लिए, • आँख व कानो पर बाल
नाचना	जैसलमेर	सुंदरता व दौड़ के लिए प्रसिद्ध।
गोमठ	जोधपुर	ऊँट सवारी के लिए प्रसिद्ध।

* अन्य नस्लें - सिंधि, कच्छी, मेवाती, मेवाड़ी

6. <u>अश्व</u> (सर्वाधिक - बीकानेर, बाड़मेर व न्यूनतम - डूंगरपुर)

नस्ल	क्षेत्र	विशेष
1. मालाणी	बाड़मेर (गुड़ा मालानी), बालोतरा (सिवाणा)	सर्वश्रेष्ठ घोड़े की नस्ल
2. मारवाड़ी	पश्चिमी राजस्थान	
3. काठियावाड़ी	बाड़मेर, जालौर	इसका सिर अरबी घोड़े जैसा होता है।

7. गधा (सर्वाधिक - बाड़मेर)

8. कुक्कुट (सर्वाधिक - अजमेर, उदयपुर)

9. सुअर (सर्वाधिक - जयपुर, भरतपुर)

10. खच्चर (सर्वाधिक - अलवर)

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

CamScanner

7. पशु प्रजनन एवं अनुसंधान केन्द्र

- राष्ट्रीय ऊँट अनुसंधान केन्द्र - जोहड़बीड़ (बीकानेर)
- केन्द्रीय पशु अनुसंधान केन्द्र - सूरतगढ़ (श्री गंगानगर)
- भेड़ एवं ऊन अनुसंधान केन्द्र - अविकानगर (टोंक)
- भेड़ प्रजनन केन्द्र - फतेहपुर (सीकर), इसकी एक इकाई = बांकलिया (डीडवाना कुचामन)
- भैंस अनुसंधान केन्द्र - वल्लभनगर (उदयपुर)
- भैंस प्रजनन केन्द्र - डग (झालावाड़), कुम्हेर (डीग)
- बुल मदर फार्म - चाँदन गाँव (जैसलमेर)
- बकरी प्रजनन केन्द्र - रामसर (अजमेर)
- सुअर प्रजनन केन्द्र - अलवर
- अश्व प्रजनन एवं अनुसंधान केन्द्र - केरू (जोधपुर)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

8. पशुओं से सम्बन्धित प्रमुख रोग

पशु रोग	प्रभावित पशु	पशु रोग	प्रभावित पशु
1. शीप पॉक्स	भेड़, बकरी	5. बर्ड फ्लू (H5N1)	मुर्गियों में
2. ब्लू टंग	भेड़	6. सर्रा (तिबरसा)	मुख्यतः ऊँटों में
3. स्वाइन फ्लू (H1N1)	सूअर	7. रानीखेत	मुर्गियों में
4. रैबीज	श्वान (कुत्ता)	8. खुरपका-मुँहपका	गाय व बैल

F. राजस्थान के प्रमुख पशु मेले

पशु मेला	स्थान	पशु गौवंश
1. श्री बलदेव पशु मेला	मेड़ता (नागौर)	नागौरी
2. श्री तेजाजी पशु मेला	नागौर (नागौर)	नागौरी
3. श्री रामदेव पशु मेला	मानासर (नागौर)	नागौरी
4. श्री मल्लीनाथ पशु मेला	तिलवाड़ा (बाड़मेर)	थारपारकर, कांकरेज
5. चन्द्रभागा पशु मेला	झालरापाटन (झालावाड़)	मालवी
6. श्री गोमतीसागर पशु मेला	झालरापाटन (झालावाड़)	मालवी
7. श्री जसवन्त पशु मेला	भरतपुर	हरियाणवी
8. गोगामेड़ी पशु मेला	हनुमानगढ़	हरियाणवी
9. महाशिवरात्री पशु मेला	करौली	हरियाणवी
10. कार्तिक पशु मेला	पुष्कर	गिर

* उपरोक्त सभी पशु मेले पशुपालन विभाग, जयपुर द्वारा आयोजित।

G. पशु विकास से संबंधित योजनाएँ

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010004

1. गोपाल योजना –

- शुरुआत - 2 अक्टूबर, 1990 (दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान, 10 जिले)
- उद्देश्य - ग्रामीण क्षेत्र में पशुओं की नस्लों में सुधार करना और युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करना।

CamScanner

२. कामधेनू योजना-

- शुरुआत- 1997-98 में
- उद्देश्य- गौवंश संबंधी उन्नत नस्ल के प्रजनन केन्द्रों की स्थापना करना।

3. ADMAS स्कीम- (Animal Diseases Monitoring and Surveillance)

- शुरुआत- 1999
- उद्देश्य- ICAR (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्) के माध्यम से गाय और भैंस की नस्लों को रोगमुक्त करना।

4. राजीव गाँधी कृषि एवं पशुपालन विकास मिशन-

- शुरुआत- 19 जनवरी, २०10
- उद्देश्य- पशु विकास नीति में निर्धारित उद्देश्यों को पुरा करना।

5. मुख्यमंत्री पशुधन निःशुल्क दवा योजना-

- शुरुआत- 15 Aug. २०1२
- उद्देश्य- राज्य सरकार द्वारा पशु विकास के लिए आवश्यक दवाईयाँ निःशुल्क उपलब्ध करवाना।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

6. अविका कवच योजना-

- शुरुआत- २004, पुनः २009, पुनः २018
- यह भेड़ों की बीमा योजना है जिसमें सब्सिडी—
  - SC/ST और BPL = 80%
  - अन्य पशुपालकों को = 70%

8. भामाशाह पशु बीमा योजना :-

- शुरुआत- २३ जुलाई २016
- उद्देश्य- भामाशाह कार्ड धारक पशुपालकों के पशुओं का बीमा अनुदान—
  - SC/ST/BPL को = 70%
  - सामान्य श्रेणी को=50%

बीमा राशि = • गाय 40,000 ₹
• भैंस 50,000 ₹
• भेड़/बकरी/सुअर (10 यूनिट)= 50,000 ₹

- एक परिवार अधिकतम 5 बड़े/ 50 छोटे पशुओं का बीमा करवा सकता है।

8. कामधेनु बीमा योजना- (शुरुआत- 6 सितम्बर, २0२3)

- दुधारू पशु (गाय, भैंस) के लिए
- निःशुल्क बीमा - 40,000 ₹ प्रति पशु (एक परिवार में अधिकतम २ पशु)
- यदि किसी पशुपालक के पास दो से अधिक गाय, भैंस है तो अपेक्षाकृत अधिक दुधारू व स्वस्थ पशु का बीमा किया जाएगा।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

9. गौशाला बायोगैस सहभागिता योजना :-

- 1 अप्रैल, २018 से प्रारम्भ
- उद्देश्य - गौशाला को आत्मनिर्भर बनाना
- एक गौशाला में एक बायोगैस संयंत्र लगाया जाएगा।
- इसके लिए लागत का 50% या अधिकतम 40 लाख तक अनुदान।

10. मुख्यमंत्री दुग्ध उत्पादक संबल योजना- (शुरुआत- 1 जून, २019)

- अनुदान राशि= २ ₹/लीटर से 5 ₹/लीटर (सरस डेयरी में वितरण पर)

CamScanner

11. नंदी गौशाला जनसहभागिता योजना :-

- प्रारम्भ - 29 अगस्त, 2019
- 90:10 में सरकारी सहायता
- 16 नंदी गौशाला स्थापित की जा चुकी है।

12. मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना-

- 5 लाख ₹ – दुधारू गाय, भैंस, भेड़, बकरी
- 1 लाख ₹ - ऊँट
- अनुदान राशि 50% से बढ़ाकर 75%

H. अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

1. पशुपालन विकास कोष = 250 cr. ₹

2. ऊँट → ऊँट संरक्षण एवं विकास मिशन
   → नवजात ऊँट के पालन पोषण की राशि 10,000 ₹ → 20,000 ₹

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

CamScanner

OUR TOPPERS RAS-2021

Kiran Pal Rank-3rd | Vishwajeet Rank-4th | Bharti Gupta Rank-5th | Aakansha Dubey Rank-6th | Satya Narayan Rank-10th | Shaheen Anjum Rank-12th | Deepshikha Rank-13th

Karamveer Singh Rank-15th | Divya Soni Rank-16th | Gaurav Sarswat Rank-18th | Divya Bishnoi Rank-19th | Sejal Shekhawat Rank-20th | Ishwar Lal Gurjar Rank-22nd | Pooja Pareek Rank-23rd

Narendra Rank-24th | Mohan Choudhary Rank-25th | Taniya Rinwa Rank-26th | Paramjeet Singh Rank-27th | Rajat Rank-28th | Neeraj Gupta Rank-31st | Kaushalya Bishnoi Rank-32nd

Vikash Sharma Rank-34th | Suhasi Jain Rank-36th | Ram Kumar Bhadu Rank-38th | Bhajan Lal Jangir Rank-39th | Bindia Bishnoi Rank-40th | Himanshu Singh Panwar Rank-41st | Prateek Sharma Rank-42nd

Shishpal Singh Rank-44th | Mukesh Kumar Rank-46th | Arjun Singh Rathore Rank-48th | Jagvindra Pal Singh Rank-51st | Vijay Pal Yadav Rank-56th | Swati Buri Rank-57th | Tarun Kant Tiwari Rank-58th

Suresh Bishnoi Rank-59th | Vinod Kumar Rank-60th | Shiva Joshi Rank-61st | Anusha Jain Rank-62nd | Om Prakash Godara Rank-64th | Ankit Kuri Rank-66th | Paras Mal Rank-67th

MAHECHA PUBLICATION

Contact Now:
7610010054
7300134518

ORDER NOW
SCAN QR CODE

NRT
Fix Price
240/-

Plot No. 58, West Way Heights, Bhankrota, Jaipur (Raj.)-302026

CamScanner